DIGITAL EDITION

मायापुरी

#27

WEEKLY ENTERTAINMENT

25 SEP

Happy Birthday

Dr. Yogesh Lakhani Ji

BRIGHT
OUTDOOR MEDIA PVT. LTD.

फिल्म एवं टीवी साप्ताहिक
मायापुरी

संस्थापक
स्व. श्री ए.पी. बजाज

प्रधान संपादक
पी. के. बजाज

व्यवस्थापक एवं संपादक
अमन बजाज

स्वामी प्रकाशक व मुद्रक
पी.के. बजाज
प्रेस का नाम व पता -
अरोड़बंस प्रेस ए-5, माया पुरी, फेस-1,
नई दिल्ली - 110064

प्रकाशक: श्री.एस.एल. प्रकाशन
ए-5, माया पुरी, फेस-1,
नई दिल्ली-110064
दूरभाष- 011-28116120, 28117636

Member I.N.S

प्रकाशित लेखों के लेखकों की राय से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं, किन्तु छपे लेखों पर अगर किसी को आपत्ति हो तो वह अपनी प्रतिक्रिया हमें लिखकर मेज दें। मिलने पर सहर्ष छाप दी जाएगी। इस पत्रिका के संबंध में किसी भी प्रकार के मतभेद एवं विवाद आदि केवल दिल्ली कोर्ट्स में ही निपटाए जा सकते हैं।

Email: edit@mayapurigroup.com

For Advertising :
Shekhar Chopra
E-mail: shekhar@mayapurigroup.com

संपादकीय

उत्तर प्रदेश में 'फिल्मसिटी' का सपना योगी आदित्यनाथ पूरा कर सकेंगे?

पिछले दो–तीन माह से जिस तरह की बातें और चर्चाएं होने के साथ ही बॉलीवुड पर आरोप–प्रत्यारोप लग रहे हैं, उससे एक ही बात उभर कर आती है कि हर किसी को बॉलीवुड से दुश्मनी हो गयी है। इसकी मूल वजह यह भी है कि एक खास विचारधारा, सोच रखने वाले लोग जिस तरह से टीवी चैनलों पर बयानबाजी कर रहे हैं, उससे भी बॉलीवुड विरोध की ही बात उभरकर सामने आ रही है। परिणामतः बॉलीवुड भी दो खेमों में विभाजित हो गया है। ऐसे माहौल में जब पिछले सप्ताह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश में नोएडा के पास फिल्मसिटी बनाने की घोषणा करने के साथ जिस तत्परता से कुछ निर्माता, निर्देशकों, कलाकारों, नोएडा व ग्रेटर नोएडा के सीईओ के साथ मंगलवार, 22 सितंबर को बैठक की, उससे टीवी चैनलों पर "बॉलीवुड के बंटवारे" की चर्चा गर्म हो गयी। जबकि 'बॉलीवुड का बंटवारा' तो हो ही नहीं सकता।

वर्तमान समय में भी भोपाल, महेश्वर, लखनऊ, मिर्जापुर, आजमगढ़, प्रयागराज, जयपुर, जैसलमेर, दिल्ली, आगरा सहित उत्तर भारत के कई शहरों में फिल्मकार अपनी फिल्मों, सीरियलों और वेब सीरीज की शूटिंग कर रहे हैं। ऐसे में उत्तर प्रदेश के नोएडा में फिल्म सिटी बनने पर 'बॉलीवुड का बंटवारा' की बात क्यों की जा रही है? यह सारी बयानबाजी पूर्णरूपेण राजनीतिक है। और जब किसी शुभ कार्य की शुरुआत किसी राजनीतिक एजेंडे के तहत होती है, तो उस पर सवाल उठने स्वाभाविक हैं। इसलिए यह सवाल भी तेजी से उठ रहा है कि क्या उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ वास्तव में फिल्म सिटी बनाएंगे? अथवा कुछ दिन की नौटंकी के बाद सब कुछ शांत हो जाएगा।

देखिए, बॉलीवुड तो भारतीय सिनेमा का प्रतीकात्मक नाम है। और हम सभी चाहते हैं कि भारतीय सिनेमा का बेहतर विकास हो। भारत के हर प्रदेश की संस्कृति, वहां की बोलचाल की भाषा, तहजीब वगैरह भारतीय सिनेमा का हिस्सा बने। इसके लिए यदि हर प्रदेश में 'फिल्म सिटी' बन जाए और निर्माता निर्देशकों को अपनी फिल्म की शूटिंग करने की सुविधाएं मुहैया हो जाए। तो इससे बेहतर क्या हो सकता है? यदि राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश में भी 'फिल्मसिटी' बन जाए,तो इन प्रदेशों में रहने वाले छोटे–छोटे निर्माता– निर्देशक, तकनीशियन व कलाकार को मुंबई भागने की बजाय अपने निवास स्थान के नजदीक की 'फिल्मसिटी' में जाकर काम कर सकते हैं। इससे उसके धन के साथ उसकी श्रम शक्ति व रचनात्मक प्रतिभा का सिनेमा की बेहतरी के लिए उपयोग हो सकेगा। ऐसी स्थितियों में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उत्तर प्रदेश में "फिल्मसिटी" बनाने की योजना का स्वागत किया जाना चाहिए। इसे 'बॉलीवुड का बंटवारा' नाम देना सर्वथा गलत है। बल्कि इस तरह की बातें सिनेमा के दुश्मन व तुच्छ बुद्धि के लोग ही कर रहे हैं। मुंबई का फिल्मकार व कलाकार उत्तर प्रदेश की 'फिल्मसिटी' में भी जाकर अपनी फिल्म का निर्माण कर सकता है।

मगर महज फिल्म सिटी बना देने से कुछ नहीं होगा। इसी के साथ शूटिंग के लिए आवश्यक हर तरह की सुविधाएं भी मुहैया कराना जरूरी है। सरकार को इस तरह के नियम बनाने पड़ेंगे कि हर निर्माता –निर्देशक,तकनीशियन व कलाकार को किसी तरह की असुविधा न हो। बेवजह के बिचौलियों का साम्राज्य स्थापित ना होने पाए, जिनकी वजह से रचनात्मक काम करने वालों के लिए परेशानियां पैदा हो जाएं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा उत्तर प्रदेश में फिल्मसिटी बनाने की घोषणा और जमीन आवंटन के साथ ही पूरे प्रदेश और बॉलीवुड में सरगर्मियां शुरू हो गई हैं। इस बीच कुछ पुरानी जमीनी हकीकत भी सामने आने लगी कि पहले भी ऐसी घोषणाओं के बावजूद फिल्मसिटी उत्तर प्रदेश में अभी तक क्यों नहीं बनी।

जी हां!उत्तर प्रदेश में और वह भी नोएडा में 'फिल्मसिटी'बनाने की परिकल्पना कोई नई बात नहीं है। सबसे पहले 1993 में उत्तरप्रदेश के नोएडा में 'फिल्मसिटी' बनायी गयी थी। उस वक्त सुभाष घई, एफ सी मेहरा, संदीप मारवाह सहित कई फिल्मकारों को प्लॉट आबंटित हुए थे। मगर उसकी क्या परिणीति हुई? यह किसी से छिपा नही है। कोई भी फिल्मकार वहां पर स्टूडियो बनाकर फिल्मों की शूटिंग करने आज तक नहीं गया। मगर हर किसी ने अपने अपने प्लॉट को विकसित कर दूसरी कंपनियों को किराए पर दे दिया। वर्तमान समय में तथाकथित उस 'नोएडा फिल्मसिटी' में अखबारों के दफ्तर, टीवी चैनलों के दफ्तर व स्टूडियो, एक्टिंग स्कूल व अन्य कंपनियां स्थापित हैं। क्या इसे जायज ठहराना सही है?

इतना ही नहीं 2015 में जब उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार थी। और अखिलेश यादव मुख्यमंत्री थे, तब भी उत्तर प्रदेश में 'फिल्मसिटी' बनाने की योजना पर काम शुरू हुआ था। उस वक्त

भोजपुरी फिल्मों के अभिनेता रविकिशन, (जो कि वर्तमान समय में योगी आदित्य नाथ के ही क्षेत्र गोरखपुर से भाजपा के सांसद हैं) समाजवादी पार्टी से जुड़े हुए थे। तब उत्तर प्रदेश में दो 'फिल्मसिटी' बनाना प्रस्तावित हुआ था, जिस पर तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, निर्माता–निर्देशक बोनी कपूर और अभिनेता रवि किशन ने हस्ताक्षर किए थे। तब भी रवि किशन ने वर्तमान की ही भांति अखिलेश यादव की तारीफ में कसीदे पढ़ते हुए 'फिल्मसिटी' के निर्माण को बहुत बड़ा कदम बताया था। मगर कुछ दिन बाद यह धराशायी हो गया। और इसके लिए रवि किशन पर ही उंगली उठी थी, जिसे रवि किशन ने आज तक स्वीकार नहीं किया।

वास्तव में 2015 में अखिलेश यादव की सरकार द्वारा प्रस्तावित दो 'फिल्मसिटी में से एक 'फिल्मसिटी' लखनऊ आगरा एक्सप्रेस वे पर और दूसरी उन्नाव के ट्रांस–गंगा सिटी प्रोजेक्ट में बननी थी।सरकार ने दोनों 'फिल्म सिटी'के लिए तीन तीन सौ एकड़ जमीन देने का वादा किया था। पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल पर यह तैयार होनी थी। जिनमें करीब 700 करोड रूपए का निवेश होता। मगर बोनी कपूर और रवि किशन दोनों ने ही इन प्रोजेक्ट से अपने कदम पीछे खींच लिए थे।

तब खबर आयी थी कि उस वक्त खुद को भोजपुरी फिल्मों का सुपरस्टार मानने वाले और उत्तर प्रदेश के जौनपुर के मूल निवासी अभिनेता रवि किशन (वर्तमान में गोरखपुर से भाजपा सांसद) 'फिल्मसिटी' को जौनपुर में बनाने के लिए जमीन आवंटित करने की मांग रख दी थी मगर इस पर मुख्यमंत्री अखिलेश यादव तैयार नहीं थे। कहा जाता है कि वहीं से रवि किशन का समाजवादी पार्टी से मोहभंग हुआ था। मगर बोनी कपूर का मामला अलग था। सूत्रों की माने तो बोनी कपूर को जमीन की कीमत बहुत ज्यादा लगी, इसलिए उन्होने 'फिल्मसिटी' में निवेश करने में दिलचस्पी नहीं दिखाई थी।

अब 2020 में एक बार फिर उत्तर प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री ने योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश में 'फिल्मसिटी'बनाने की घोषणा करने के साथ ही इस योजना पर काम शुरू कर दिया है। इस बार यह 'फिल्मसिटी', गौतम बुद्ध नगर में यमुना एक्सप्रेसवे इंडस्ट्रीयल डेवलपमेंट अथॉरिटी से लगी एक हजार एकड़ भूमि में 'फिल्मसिटी' बनेगी। इस बार फिर अभिनेता व भाजपा सांसद रवि किशन बढ़– चढ़कर श्रेय लूटने का प्रयास करते हुए 'बॉलीवुड का बंटवारे' की बातें कर पूरी तरह से अपनी राजनीति करने पर आमादा है।

मगर मुख्यमंत्री योगी ने कहा–"यहां विश्वस्तरीय तकनीकी सुविधाओं के साथ 50 साल आगे की सोच रखते हुए फिल्मसिटी का निर्माण किया जाएगा। यह भारत को अंतरराष्ट्रीय फिल्म मानचित्र पर मजबूती से जमा देगी। यह फिल्मसिटी कई मायनों में बहुत अहम होगी, क्योंकि यहां से नई दिल्ली और एशिया के सबसे बड़े प्रस्तावित जेवर इंटरनेशनल एयरपोर्ट की दूरी बमुश्किल एक घंटे की होगी। यहां से आगरा का ताजमहल और भगवान श्रीकृष्ण की नगरी मथुरा भी नजदीक है।"

उन्होने अपनी बात को स्पष्ट करने के साथ साथ भारतीय संस्कृति से जोड़ते हुए कहा–"उत्तर प्रदेश भारतीय संस्कृति, सभ्यता और समृद्ध परंपरा का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र है। यमुना एक्सप्रेस–वे क्षेत्र में जहां यह फिल्मसिटी विकसित करने का विचार है, वह भारत के ऐतिहासिक, पौराणिक इतिहास से सम्बद्ध है। यह हस्तिनापुर का क्षेत्र है। हमारे दिव्य –भव्य कुंभ से पूरी दुनिया आह्लादित है। फिल्म सिटी भी सभी की उम्मीदों को पूरा करने वाली होगी।"

जबकि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपनी तेज गति से काम करने की शैली के साथ 22 सितंबर, मंगलवार को बॉलीवुड की कुछ हस्तियों के साथ मुलाकात कर डाली।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात के लिए कुछ फिल्म बिरादरी के सदस्य लखनऊ पहुंचे थे।जबकि अनुपम खेर और परेश रावल जैसे दिग्गज कलाकार एक वीडियो कॉन्फ्रेंस में बातचीत में शामिल हुए थे।

इस बैठक में मशहूर कला निर्देशक व निर्देशक तथा मुंबई से डेढ़ सौ किलोमीटर दूर कर्जत में "एन डी स्टूडियो" स्थापित करने वाले नितिन देसाई ने मुंबई के पास कर्जत में स्थापित 'एन डी स्टूडियो' की ही तर्ज पर उत्तर प्रदेश में भी एक पूरी 'फिल्मसिटी'स्थापित करने की पेशकश की।

उत्तर प्रदेश फिल्म "बंधु" के अध्यक्ष राजू श्रीवास्तव ने कहा– "उत्तर प्रदेश में 'फिल्मसिटी' की परिकल्पना छोटे–छोटे शहरों की अद्भुत प्रतिभाओं के हौसलों, सपनों को पंख देने वाली होगी। मैं हर समय, पूरी क्षमता के साथ सेवा के लिए प्रस्तुत रहूंगा।

जबकि कुछ फिल्मकार दावा कर रहे हैं कि मुख्यमंत्री कार्यालय के बयान में कहा गया है कि मुंबई फिल्म उद्योग में लगभग 80 प्रतिशत तकनीशियन और कार्यबल यूपी से हैं और उद्योग के बाद जनशक्ति की उपलब्धता कभी भी समस्या नहीं होगी।तो वहीं सिंगापुर स्थित "विस्टास मीडिया" के संदीप सिंह ने दस मिलियन डालर (लगभग 73.51 करोड़ रुपये) के शुरुआती निवेश के साथ एक फिल्म अकादमी स्थापित करने की पेशकश की है।

फिल्म निर्माता संघ के अध्यक्ष अशोक पंडित ने राज्य सरकार के फैसले का स्वागत किया और कहा कि किसी को हिंदी फिल्मों से परे देखना चाहिए और यहां तक कि बहुभाषी फिल्में भी बनाई जा सकती हैं। उन्होंने कहा, "आखिरकार, भोजपुरी फिल्में पहले से ही यहां बनी हैं।"

अनुपम खेर ने कहा– "प्रस्तावित फिल्म शहर को वैश्विक पहचान मिलनी और होनी चाहिए। इसी के साथ फिल्म विधा व अभिनय के प्रशिक्षण पर भी जोर दिया जाना चाहिए।"

फिल्म निर्माता और अभिनेता सतीश कौशिक जिन्होंने अपनी फिल्म 'कागज' की शूटिंग उत्तर प्रदेश में की है,ने कहा कि राज्य ने फिल्म पेशेवरों और उम्मीदवारों के लिए एक बढ़िया विकल्प पेश किया है।उन्होंने कहा–"प्रस्तावित फिल्म सिटी का विशाल स्थान उत्तरी क्षेत्र के बड़े भूगोल और जनसांख्यिकी को पूरा करता है।"

गीतकार मनोज मुंतशिर ने हिंदी फिल्म उद्योग को हिंदी भाषी बेल्ट में ले जाने के लिए राज्य सरकार के कदम का स्वागत करते हुए कहा–"अगर यूपी में फिल्म इंस्टीट्यूट और म्यूजिक एकेडमी बनाई जाए तो स्थानीय लोकाचार और पच्चीकारी संस्कृति को और बढ़ावा मिलेगा।"

तमिल फिल्म निर्माता सौंदर्या ने कहा कि एनीमेशन, डिजिटल प्रौद्योगिकी और अन्य सुविधाओं को समय की आवश्यकता है और कहा कि वह पहले से ही उत्तर प्रदेश के फिल्म शहर में प्रस्तावित हैं।

मगर जिस तरह के हालात एक सप्ताह के अंदर बने हैं,उससे यही आभास हो रहा है कि इतिहास तीसरी बार पुनः दोहराने वाला है।क्योंकि इस बार फिर निर्माताओं और निवेशकों की तरफ से मांग उठ रही है कि यूपी सरकार उन्हें 'फिल्मसिटी'में निवेश के लिए सब्सिडी दे, जिसमें जमीन की कीमतें भी शामिल हैं। इस बारे में जल्द ही उत्तर प्रदेश सरकार से फैसले की उम्मीद की जा रही है।

इस तरह देखा जाए,तो उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा "फिल्मसिटी" बनाए जाने के साथ जो लंबी लंबी घोषणाएं की गयी हैं,उनको लेकर शक की दीवारें भी उठनी लगी हैं। योगी आदित्यनाथ के लिए अपने इस मकसद पर खरा उतरना सरल राह नही है। उन्हे अतीत में घटित घटनाओं से सबक लेते हुए ऐसे ठोस व कड़े कदम उठाने होंगे,जिससे सिनेमा की बेहतरी के लिए वह कुछ कर सकें। उत्तर प्रदेश में "फिल्मसिटी" बनाने के अपने सपने को "बालीवुड का बंटवारा" मानने की बजाय सिनेमा के विस्तार की बात सोचने के साथ मुंबई ही नही बल्कि पूरे देश व विश्व पटल पर यही संदेश देना होगा। मुख्यमंत्री योगी जी को हर छोटे बड़े फिल्म निर्माता, निर्देशक, लेखक, गीतकार, कलाकार, तकनीशियन, स्पॉट ब्वॉय आदि को साथ लेकर "फिल्मसिटी" को विकसित करने की दिशा में कार्य करना होगा..यह उनके लिए छोटी चुनौती नही है....

-संपादक

हालांकि कोविड इन दिनों बढ़ा हुआ है, लेकिन मैं हमेशा ब्राइट हूँ

योगेश लखानी

—ज्योति व्यंकटेश

ब्राइट एडवरटाइजिंग एजेंसी के सदाबहार और ऊर्जावान एम.डी. योगेश लखानी हमेशा से ब्राइट हैं। हालांकि मुंबई शहर भारत और दुनिया के हर दूसरे स्थान की तरह, घातक नॉवेल कोरोना वायरस से पीड़ित है, लेकिन योगेश भाई बोरीवली से हर दिन अपने कार्यालय में उपस्थित होने के लिए एक पॉइंट बनाते हैं जहां वह अंधेरी तक रुकते हैं, ट्रैफिक को रोकते हैं।

वह अपने जन्मदिन के मौके पर हमारी शुभकामनाएं स्वीकार करते है क्योंकि उनका जन्मदिन 25 सितंबर को मनाया जाता है, और हमें बताते है कि स्पष्ट कारणों के लिए उन्होंने इस साल अपने जन्मदिन के उत्सव की

भव्यता को प्रदर्शित किया है, हालांकि हर साल सामान्य तौर पर, उन्होंने सितारों की उपस्थिति में अपने जन्मदिन की पार्टियों को भव्यता से मनाया है। हालाँकि उन्होंने अपनी वास्तविक आयु काफी अधिक है, लेकिन उनका कहना है कि वह केवल यह बताना चाहेंगे कि वह हमेशा ब्राइट हैं, चाहे उनकी उम्र कोई भी हो, क्योंकि उन्हें लगता है कि वह हमेशा दिल से बहुत यंग है।

योगेश भाई ने कहा कि ड्रग्स से लेकर रिधेस तक की अपनी यात्रा के बारे में पूछे जाने पर, 'मुंबई के एक निम्न मध्यम वर्गीय सौराष्ट्र परिवार से सलाम, मैंने कई असफलताओं का सामना किया, जिसके परिणामस्वरूप मैं एक बहुत मजबूत व्यक्ति बन गया। परिवार की देखभाल की सारी जिम्मेदारी मेरे कोमल कंधों आ पड़ी। मुझे आजीविका कमाने के लिए दिन–रात काम करना पड़ता था लेकिन इस स्थिति ने मेरे लिए एक उपलब्धि हासिल करने के सपने को दूर नहीं किया।"

यह लगातार कड़ी मेहनत और दृढ़ स्वभाव के साथ था, कि योगेशभाई ने वर्ष 1980 में ब्राइट आउटडोर मीडिया की नींव रखने में कामयाबी हासिल की और आउटडोर विज्ञापन क्षेत्र में अग्रणी नेताओं में से एक बन गए। "एक कमरे के कार्यालय से एक अच्छी तरह से प्रसिद्ध प्रतिष्ठान तक, मैं भाग्यशाली हूं कि ईश्वर ने मुझे एक शानदार विकास करने के लिए आशीर्वाद दिया, जो आश्चर्यजनक होने के साथ–साथ प्रशंसनीय भी है। साढ़े तीन दशक से अधिक की साहसिक यात्रा के बाद, मुझे खुशी है कि मेरी कंपनी ब्राइट एडवरटाइजिंग उद्योग में एक त्रुटिहीन टॉवर की तरह मजबूती के साथ खड़ी है।"

उनकी कंपनी की सबसे बड़ी ताकत यह है कि उनके नाम को 'एडवरटाइजिंग' का पर्याय माना जाता है। "एक पैन मुंबई उपस्थिति के साथ, मैं गर्व के साथ विनम्रता के साथ कह सकता हूं कि कोई भी इस सपने के शहर को

कवर नहीं करता है जैसे हम करते हैं। पूरे शहर में 1400 से अधिक होर्डिंग्स पर ब्राइटस का होल्ड है। हम पूरे देश में आउटडोर मीडिया सेवाएं प्रदान करते हैं। कंपनी के पास मनोरंजन, टेलीकॉम, रिटेल, फाइनेंस, टूर एंड ट्रैवल आदि जैसे विविध क्षेत्रों के 600 से अधिक प्रतिष्ठित ग्राहकों की लिस्ट है।"

आउटडोर होर्डिंग एजेंसियों के बीच मार्केट लीडर और ट्रेंड सेटर के रूप में, योगेशभाई कहते हैं कि उन्होंने बॉम्बे की सभी सुपर हिट फिल्मों का आउटडोर प्रचार किया है। "सभी हस्तियों का मानना है कि मैं उनका भाग्यशाली आकर्षण हूं क्योंकि मैं भाग्यशाली हूं जिसने शाहरुख खान, सलमान खान, रणबीर कपूर, ऋतिक रोशन, अक्षय कुमार, दीपिका पादुकोण आदि जैसे सभी प्रसिद्ध बी–टाउन सेलेब्स की पहली फिल्म का आउटडोर प्रचार किया है।"

हालांकि आज उन्होंने इंडस्ट्री में एक बड़ा नाम बनाया है और सेलेब्स के बीच पसंदीदा बन गए है, यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि उन्होंने चालीस साल पहले कैसे इंडस्ट्री में सेंध लगाई। "मैंने वर्ष 1990 में वीनस फिल्म्स की फिल्म 'प्यार किया तो डरना क्या' के बाहरी विज्ञापन के साथ ग्लैमरस बॉलीवुड इंडस्ट्री में प्रवेश किया। तब से, मेरी कंपनी बड़े पर्दे पर रिलीज होने वाली लगभग हर फिल्म के लिए एक स्टॉप डेस्टिनेशन बन गई है। पिछले ढाई दशक से मैं प्रतिष्ठित पुरस्कार समारोह जैसे फेमिना, आईफा, फिल्मफेयर आदि के साथ भी काम कर रहा हूं।"

योगेश भाई बड़े बैनर जैसे यशराज फिल्म्स, धर्मा प्रोडक्शंस, यूटीवी, इरोस, विशेष फिल्म्स आदि के साथ एक बहुत अच्छा बॉन्ड साझा करने में सफल रहे हैं। उनकी सफलता का रहस्य सरल है। "मैं अवार्ड्स भी स्पोंसर करता हूं। मैं स्व–निर्मित हूं 1980 से मेरा अपना ऑफिस है। मैं फ्रेश स्लॉट में भी प्रशिक्षित करता हूं, कई कॉलेज के छात्र मेरे द्वारा प्रशिक्षित होना चाहते हैं। मैं सफल हूं। मैं कहता हूं कि पूरा श्रेय मेरे माता–पिता को जाना चाहिए। मैं रोजाना 15 घंटे काम करता हूं। किसी भी स्टार से पूछें कि वह आउटडोर प्रचार के लिए किसके पास जाते है और अधिकतम संख्या सिर्फ मेरा नाम लेगी।"

यह पूछे जाने पर कि क्या उन्हें लगता है कि यह उनकी प्रतियोगिता है, योगेश भाई सिर्फ मुस्कुराते हैं। "कई हैं लेकिन सभी पैसे वाले हैं और केवल व्यावसायिक आधार पर काम करते हैं जो मेरे बस की बात नहीं है। कभी–कभी जब फिल्म बॉक्स ऑफिस पर अच्छा स्कोर नहीं कर पाते है तो मैं उनके लिए अपना रेट घटा देता हूं। आजकल हर कोई अहंकारी है।"

योगेश भाई ने स्वीकार किया कि उन्होंने वास्तव में अपने करियर की शुरुआत शून्य से की थी। "मैं यह बिल्कुल नहीं भूलता कि मैंने अपने करियर की शुरुआत शून्य से हीरो तक की है। मुझे याद है मैं अखबार और माचिस भी बेचता था। अब मैं टॉप थ्री में हूं। मैंने ट्वीटर, फेसबुक और अन्य सोशल मीडिया पर ध्यान केंद्रित करके ब्राइट आउटडोर डिजिटल मीडिया भी शुरू किया था। हम अपने काम में सुधार करते रहते हैं। हम क्षेत्रीय फिल्मों का समर्थन करते हैं और साथ ही यह मराठी या भोजपुरी या कोई अन्य है। यदि कोई किसी काम से मेरे कार्यालय में आता है, तो मैं किसी को भी खाली हाथ नहीं जाने देता।

स्माइल प्लीज और रफू चक्कर बनाने के बाद, उन्हें एक निर्माता के रूप में किसी और फिल्म के साथ आना बाकी है। क्यों? वह ईमानदार है। हालांकि मैंने दो छोटे बजट की फिल्में बनाई थीं, लेकिन मैं ईमानदारी से स्वीकार करता हूं कि असफलता का सामना करने के बाद मैंने निर्माण की योजना को छोड़ने का फैसला किया है। मेरे पास अनुभव नहीं था इसलिए मैंने छोटे बजट की फिल्मों से शुरुआत की क्योंकि उसके बाद मैंने एक बड़े बजट की फिल्म करने की सोची।"

योगेश भाई खुश और गौरवान्वित हैं कि इस वर्ष, उन्होंने मुंबई शहर में लगभग दस हजार गरीब लोगों के लिए डायलिसिस ऑपरेशन पूरा किया है। "मैं गरीब लोगों से उनके ऑपरेशन के लिए पैसे नहीं लेता, लेकिन मैं इसे डायलिसिस के संचालन के लिए मध्यम वर्ग के लोगों के लिए 500 रुपये की फीस लेने का एक पॉइंट बनाता हूं। साथ ही चल रहे लॉकडाउन के दौरान, मैंने विभिन्न गरीब लोगों को, जिनमें बेरोजगार हैं, विशेषकर फ्रीलांसरों को 2500 रुपये से लेकर 10,000 रुपये तक की रकम दान करने का पॉइंट बनाया।"

योगेश भाई, जो अपने माता–पिता की धार्मिक रूप से देखभाल करने में गर्व महसूस करते हैं, कहते हैं कि समाज में गरीबों के लिए ही नहीं, बल्कि उनके होर्डिंग्स के व्यवसाय के लिए भी उन्हें लंदन संसद में एक पुरस्कार मिला था। वह परोपकारी व्यक्ति हैं, योगेश भाई ने अपने कर्मचारियों को पीछे नहीं हटाया और आज भी उनका ऑफिस चलता है। कर्मचारी सदस्य वैकल्पिक दिनों में कार्यालय में उपस्थित होते हैं और वह उन्हें 50 प्रतिशत वेतन देने का

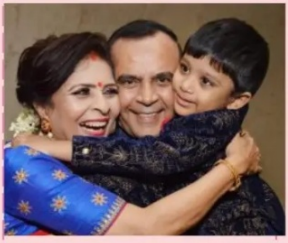

प्रबंधन करते है, भले ही वह मुनाफा नहीं कमा रहे हो, क्योंकि वह कहते है कि देश में कोरोनोवायरस की शुरुआत के कारण उनका व्यवसाय 30 प्रतिशत कम हो गया है।

उन लोगों के कष्टों को दूर करने के लिए आपने क्या किया जो चल रहे लॉकडाउन के दौरान कोरोना वायरस से पीड़ित थे? मैंने योगेश भाई से पूछा। उन्होंने दिल से कहा, "जब भारत में नॉवेल कोरोना वायरस की शुरुआत हुई थी, तो पहली बात यह थी कि बीएमसी के बारे में जागरूकता अभियान चलाया गया था कि वास्तव में बीमारी क्या है और जब आप बाहर जाते हैं और लोगों से मिलते हैं तो मास्क पहनकर और मास्क लगाकर कैसे सावधानी बरतें। मैं पूरे मुंबई शहर और उपनगरों में नागरिकों के लिए मुफ्त होर्डिंग्स लेकर आया था। वास्तव में, मुझे एक मेहनती कोरोना योद्धा होने के लिए सम्मानित करने वाले कुछ प्रमाणपत्रों से भी सम्मानित किया गया है।

"एक सामाजिक रूप से जागरूक नागरिक के रूप में, हालांकि मैं अपने ब्राइट एडवरटाइजिंग के साथ होर्डिंस बिजनेस में हूं, मैंने हमेशा अपने उदार योगदान और दान के साथ समय–समय पर मुंबई में आयोजित होने वाले सभी सामाजिक और धार्मिक कार्यों का समर्थन करने के लिए इसे एक पॉइंट बनाया है। मैंने अपने माता–पिता से बहुत कुछ सीखा है कि अगर मैं दूसरों की उदारतापूर्वक मदद करूँ तो वहाँ भी मेरी मदद के लिए आगे आएंगे जहाँ तक स्वास्थ्य और धन की बात है। मैं अभी भी इसे हर सुबह कम से कम एक या दो किलोमीटर चलने के लिए एक पॉइंट बनाता हूं क्योंकि मुझे लगता है कि अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए यह बहुत आवश्यक है।"

योगेश भाई ने आगे कहा, "मैं सभी प्रकार के दोषों से दूर रहता हूं। मैं शराब, चाय या कॉफी को नहीं छूता, ड्रग्स तो भूल ही जाओ। अगर मैं चाहूं तो मैं आज भी रिटायर हो सकता हूं क्योंकि मैंने 40 साल की शानदार सेवा की है और अपने जीवन के हर दिन का आनंद लेता हूं और एक खुशहाल और संतुष्ट परिवार रखता हूं, जिसमें मेरी पत्नी, मेरा पांच साल का बेटा और मेरे माता–पिता शामिल हैं, लेकिन मैं इसे आसान बनाने के मेरे निर्णय के कारण दूसरों को पीड़ित नहीं करना चाहता। आप देखते हैं कि मेरे व्यवसाय के लिए धन्यवाद के रूप में 500 से अधिक लोग जुड़े हुए हैं, यदि मैं अपने व्यवसाय के संबंध में एक दिन इसे कहने का कठोर निर्णय लेता हूं तो मैं बेरोजगार होने के लिए उत्तरदायी हूं।"

योगेश भाई मायापुरी ग्रुप के अध्यक्ष श्री पी.के.बजाज की प्रशंसा करते हैं, जो कंपनी के अथक प्रयासों से परेशान हुए बिना न केवल टीवी पर कार्यक्रम चला रहे हैं बल्कि मायापुरी की तरह एक साप्ताहिक मैगजीन और मायापुरी ऑनलाइन जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के अलावा अंग्रेजी पोर्टल पर भी काम कर रहे हैं। योगेश ने एक वृद्धाश्रम के साथ–साथ अंधेरी स्थित अपने कार्यालय अंधेरी में डी.एन.नगर में एक आश्रम के कैदियों को खाद्यान्न और धन वितरित करके अपना जन्मदिन मनाया हैं।

योगेश भाई अब अपनी इंडस्ट्री को 'जूम' जैसी ऐप के साथ डिजिटल इंडस्ट्री में स्थापित करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं जो व्यवसायों को संचालित करने के लिए लाइन पर जगह देगा और अब प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हैं कि व्यवसायियों के साथ–साथ विभिन्न व्यवसायों में आम लोगों के लिए लॉकडाउन अपने स्वयं के सेट के साथ आया है।

योगेश भाई कहते हैं, "प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, हम ब्राइट

एट इंडिया पहली बार एक विशेष मोबाइल उपकरण ला रहे हैं, जहां आप संपर्क में आ सकते हैं और लाइव वेबिनार के माध्यम से सीधे लोगों, विशेषज्ञों और टॉप सेलिब्रिटीज की विभिन्न श्रेणियों के साथ मीटिंग की व्यवस्था करते हैं। जैसे हम कहते हैं कि देने का निशान छिपा है। वर्तमान समय इसका प्रमाण है जहां हमने आपदा को एक उज्ज्वल अवसर में बदल दिया है। मैं गर्व से कह सकता हूं कि हमारे सौराष्ट्र भावनगर शहर के पांच युवा और उनके एक गुरु और एक टाइटल एक मोबाइल एप्लिकेशन लेकर आए हैं, जहां आप पेशेवर विशेषज्ञों से सीधे एक ही मंच पर वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से मिल सकते हैं। ब्राइट मीटिंग ऐप लाने के लिए पूरी तरह से तैयार है, जहाँ आपको गुणवत्ता के दुर्लभ संगम के साथ–साथ उत्कृष्टता, अनुभव और आत्मविश्वास मिलेगा और अंतिम लेकिन कम से कम उपाय के साथ–साथ प्रशिक्षण भी मिलेगा।"

चल रही महामारी के दौरान कोविड वायरस के खतरे के बारे में बात करते हुए, योगेश का कहना है कि इसने उनकी सामाजिक गतिविधियों को इस अर्थ में प्रभावित किया है कि उन्होंने पिछले छह महीनों से बोरिवली में निचले तबके से आने वाले निवासियों को अनाज के रूप में मासिक प्रावधानों का वितरण बंद कर दिया है, जो उन्होंने दस साल पहले शुरू किया था, हालांकि वह इस साल मार्च में वापस और मुंबई के आसपास कोविड के सेट से पहले हजारों लोगों को इसे वितरित करता था।

योगेश ने अपनी गतिविधि को जल्द से जल्द बहाल करने की योजना बनाई है, जब महाराष्ट्र सरकार ने 20 से अधिक लोगों को एक समय में सार्वजनिक रूप से एकत्र नहीं होने देने के लिए लगाए गए कड़े शर्तों में ढील दी। "मेरे मन में एक भावना है और मुझे पूरा विश्वास है कि कोविड मुझ पर और मेरे परिवार पर कोई प्रभाव नहीं डालेगा क्योंकि मेरे पास सकारात्मकता है और खुशियाँ फैलाने के साथ–साथ मेरे दिन भर के जीवन में मेरे चारों तरफ सकारात्मकता फैलती है और कभी किसी के बारे में बुरा मत सोचो। मैं अपने आस–पास जो कुछ भी पाता हूं उससे मैं बिल्कुल भी ईर्ष्या नही करता हूं क्योंकि मैं कोर से संतुष्ट हूं।

योगेश भाई ने दोहराया कि मुंबई पिछले छह महीने से बंद होने के बाद सामान्य स्थिति में वापस आ जाएगा, अगर केवल महाराष्ट्र सरकार सिनेमाघरों के साथ–साथ स्थानीय ट्रेनों को भी पूरे जोरों पर चलाने की अनुमति दे, क्योंकि आम आदमी के लिए लगातार ट्रेनों के अभाव में, दिन के किसी भी समय भारी यातायात के साथ सड़कों पर अव्यवस्था होती है।

फोन पर इस इंटरव्यू को समाप्त करते हुए योगेशभाई ने कहा, "पिछले 40 वर्षों में जिस तरह से मेरा करियर बना है, उससे मैं ज्यादा खुश हूं। मुझे पब्लिसिटी करते हुए खुशी हो रही है। मैंने रोहित शेट्टी की दिलवाले और मधुर भंडारकर की कैलेंडर गर्ल्स में एक छोटी भूमिका भी निभाई थी, हालांकि मुझे अभिनय में कोई दिलचस्पी नहीं है।

अनु– छवि शर्मा

अक्षय कुमार ने फिल्म 'बेलबॉटम' के लिए तोडा अपना 18 साल का नियम

—ज्योति वेंकटेश

हमेशा की तरह बड़े दिल वाले **अक्षय कुमार 'बेलबॉटम'** के निर्माताओं के लिए उद्धारक बन गए हैं। वर्तमान में फिल्म को स्कॉटलैंड के खूबसूरत हाइलैंड्स में शूट किया जा रहा है, अक्षय कुमार **'बेलबॉटम'** की बड़ी यूनिट के लिए अपने सख्त अनुशासन और कार्य संस्कृति को पेश करने में कामयाब रहे हैं, यह पहली बॉलीवुड फिल्म हैं जिसने इस महामारी के दौरान अपनी इतनी बड़ी यूनिट के साथ स्कॉटलैंड रवाना होने के लिए एक चार्टर्ड प्लेन के साथ उड़ान भरी।

स्कॉटलैंड में उतरने के बाद 14 दिनों के क्वारंटाइन के लिए खोए गए कीमती समय से वाकिफ, अक्षय ने महसूस किया कि वित्तीय हिट से उत्पादकों को यूनिट का विशाल आकार देना होगा। जब अक्षय ने पूजा एंटरटेनमेंट की फिल्म **'बेलबॉटम'** के लिए 18 साल बाद 8 घंटे काम करने के अपने कार्डिनल नियम को तोड़ने का फैसला किया तो उन्होंने डबल शिफ्ट की सिफारिश कर सबको चौंका दिया शूटिंग एक साथ करने वाली दो यूनिट यह सुनिश्चित करने के लिए शूट करती हैं कि शूट फास्ट ट्रैक पर हो जाए और प्रोड्यूसर्स का पैसा बचाए।

यह यूनिट स्थानीय टीमों के साथ एक साथ दो शिफ्टों में शूटिंग कर रही है, जिससे यह अपनी तरह की पोस्ट लॉकडाउन की पहली फिल्म बन गई है। **पूजा एंटरटेनमेंट** का उल्लेख नहीं करने के लिए टीम ने सभी की भलाई सुनिश्चित करने के लिए सेट पर विफल–सुरक्षित सुरक्षा मानकों का पालन करने में एक बेंचमार्क सेट करने में भी कामयाबी हासिल की।

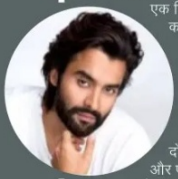

निर्माता **जैकी भगनानी** कहते हैं "अक्षय सर वास्तव में एक निर्माता के अभिनेता हैं और उनके साथ काम करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। वह हर किसी और हर चीज के बारे में लगातार सोच रहे हैं। पूरी यूनिट के लिए सुरक्षा उपायों से लेकर शूटिंग शेड्यूल तक के लिए प्रोड्यूसर्स के सामने चुनौतियां हैं। अक्षय सर 18 साल में पहली बार डबल शिफ्ट कर रहे हैं। इसलिए जब उन्होंने दो यूनिट का सुझाव दिया तो हम बिल्कुल स्तब्ध थे और एक ही समय में उत्साहित थे। और उनके काम के अनुशासन और समय के प्रति सम्मान को देखते हुए, सेट पर हर कोई सुपर ऊर्जावान है और अपने सर्वश्रेष्ठ में भी पिच कर रहा है। यह अच्छी तरह से तेल से सना हुआ मशीनरी है जो इसे बनाने के लिए चौबीसों घंटे काम करता है।"

सेट पर उत्तेजना को देखते हुए, एक अंदरूनी सूत्र ने मजाक में चुटकी ली कि पूरी यूनिट की गति और समर्पण ने आश्चर्यचकित नहीं किया।

अनु–छवि शर्मा

—संज्ञा सिंह

सुशांत सिंह हमेशा मेरे काम की तारीफ किया करते थे

हितेन तेजवानी

—मायापुरी प्रतिनिधि

एक प्रतिभाशाली कलाकार और एक सुनहरे दिल वाले हितेन तेजवानी एक संक्षिप्त अंतराल के बाद टेलीविजन पर वापसी करने के लिए रोमांचित हैं। वर्षों से टीवी पर एक आदर्श बेटे और पति के रूप में नजर आने वाले असाधारण अभिनेता अब कॉमेडी शैली में अपनी एक नई शुरुआत करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। मनोरंजन इंडस्ट्री में अनुभव होने और इसमें अग्रणी होने के नाते, हमने हाल ही में हमें स्टार भारत के अपकमिंग शो 'गुप्ता ब्रदर्स – चार कुंवारे फ्रॉम गंगा किनारे' शो में लीड किरदार निभाने वाले हितेन तेजवानी से बात करने का मौका मिला, जिनसे हुई खास बातचीत के कुछ प्रमुख अंशः

□ अपने शो के बारे में बताएं?

'गुप्ता ब्रदर्स–चार कुंवारे फ्रॉम गंगा किनारे' एक ऐसा शो है, जो चार भाइयों की सादगी के साथ दर्शकों का मनोरंजन करेगा, जिन्हें अपने जीवन में किसी भी महिला की जरूरत नहीं है। वे महिलाओं का अनादर नहीं करते बल्कि उन्हें लगता है कि उन्हें अपने जीवन में महिलाओं की जरूरत नहीं है साथ ही वे अपने आप में सब कुछ करने में सक्षम हैं। यह चारों भाई एक–दूसरे के लिए बने हैं और साथ ही यह अपनी मासूमियत, प्रामाणिकता

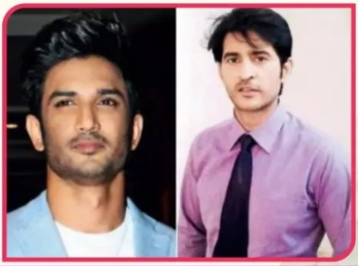

और कॉमेडी के साथ दर्शकों के चेहरे पर मुस्कान लाएंगे। यह शो एक मनोरंजन का पैकेज है जो लोगों को कंजूस और किफायती होने के बीच का अंतर को समझाएगा। अब वे शादी क्यों नहीं करते हैं और इसके पीछे की कहानी क्या है यह एक पेचीदा हिस्सा है जो दर्शकों को देखना होगा । इस शो के माध्यम से दर्शकों को हंसी के साथ–साथ एक भावनात्मक जुड़ाव महसूस होगा जो इन चारों भाइयों के इर्द गिर्द घूमती है।

❑ आपके द्वारा निभाए गए पहले किरदार और इस शो में आपके द्वारा निभाए जाने वाले किरदार में क्या अंतर है?

लगभग बीस साल तक मनोरंजन इंडस्ट्री का एक हिस्सा होने के नाते मुझे कई भूमिकाएँ निभाने का मौका मिला। मेरे सभी पिछले किरदार शिव से बिल्कुल अलग है। मेरा किरदार – शो में शिव नारायण गुप्ता का है जो एक साधारण और एक आत्मनिर्भर व्यक्ति है जो अपने नियमों से जीता है और शादी में विश्वास नहीं करता है या किसी स्त्री से संबंध नहीं रखता है। वह चार भाइयों में सबसे बड़ा और जिम्मेदार है। वह एक सामान्य व्यक्ति है जो अपने पिता के नाम को पुनः प्राप्त करने का लक्ष्य रखता है। उसने अपने विचारों को अपने भाइयों में भी डालें है कि कैसे उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना चाहिए और अपने दम पर काम करना चाहिए। अपने भाइयों के लिए उसका प्यार अपार है, वह उनके लिए एक पिता की तरह है और परिवार के लिए एकमात्र रोटी कमाने वाला है। एक आत्म निर्भर व्यक्ति होने के नाते, वह किसी पर निर्भर नहीं है और वह किसी कार्य को करने के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहता है। उसका मानना है कि हर चीज किफायती होनी चाहिए और पैसा बुद्धिमानी से खर्च होना चाहिए। शो में उसका लुक भी एक बहुत ही साधारण आदमी का है–एक टिपिकल मूंछ वाला लड़का जो हमेशा अपने बहुत ही साधारण पोशाक में हमेशा थैली लटकायें रहता है। मुझे लगता है कि शिव का किरदार मुझे अभिनय के उन नए पहलुओं का पता लगाने की अनुमति देता है जिनमें मैं सक्षम हूं।

❑ इस किरदार में ऐसा क्या था, जिसने आपको हाँ कहने पर मजबूर किया?

सबसे पहले, शो की शानदार कॉन्सेप्ट ने मुझे हां कहने के लिए उकसाया और दूसरी बात यह है कि इसके किरदारों को बहुत अच्छी तरह से लिखा गया है। चार भाइयों में से प्रत्येक के पास अलग–अलग लक्षण हैं जिसे देख दर्शक खुद को कहीं न कहीं जोड़ सकते हैं। कॉमेडी शैली कुछ ऐसी हैं जिसमे मैं हमेशा से काम करना चाहता था और मेरा मानना है यह कठिन शैलियों में से एक है। इसके लिए धैर्य, अभ्यास और उपयुक्त समय की आवश्यकता होती है ताकि हमें दर्शकों को हँसाने की कला में महारत हासिल हो सके। हमारे विनम्र निर्माता महेश पांडेय और निश्चित रूप से स्टार भारत जिसके मंच से मुझे यह शानदार किरदार निभाने का अवसर मिला है इससे हम न सिर्फ दर्शकों के घर बल्कि उनके दिलों तक पहुंच पाएंगे ।

❑ हमें बताएं कि शो में शिव के किरदार के लिए आपने कौन सी विशेष तैयारियाँ की हैं?

शिव के किरदार के लिए मुझे वास्तव में ज्यादा तैयारियाँ नहीं करनी पड़ी क्योंकि यह किरदार बहुत ही सिंपल है । मूंछ वाला सीधा–सादा आदमी। बनारस की पृष्ठभूमि पर बने इस शो के सेटअप को ध्यान में रखते हुए मुझे वास्तव में अपनी हिंदी पर काम करना पड़ा। हमने इस खूबसूरत शहर में इस शो के कुछ एपिसोड्स को शूट किया है इस दौरान मुझे वहां रहकर स्थानीय लोगों से सीखने का अवसर मिला। उनके बोलने का तरीका, शब्दों का प्रयोग और बोली। शहर में हम जो भाषा बोलते हैं, वह पूरी तरह से अलग है इसलिए मैंने अपने किरदार के लिए शुद्ध हिंदी का अभ्यास किया।

❑ लॉकडाउन से पहले इस शो का अलग नाम और कॉन्सेप्ट था?

लॉकडाउन से पहले इस शो का शीर्षक 'हम – एक मकान एक दुकान' था और यह शो चार भाइयों और उनके साथ रह रही उनकी भाभी के इर्द गिर्द घूमता था। यह एक बड़ा परिवार है और इस परिवार में आने वाली उतार–चढ़ाव पर यह कहानी निर्भर थी जहाँ दर्शकों को फैमिली ड्रामा देखने को मिलता। अब अचानक मेकर्स और चैनल ने टेबल चेंज करते हुए शो की पूरी स्टोरी लाइन को बदल दिया है। लॉकडाउन के बाद शो का नाम 'गुप्ता ब्रदर्स चार कुवारें फ्रॉम गंगा किनारे' रखा गया है। अब यह कहानी 4 भाइयों के जीवन के इर्द गिर्द घूमेगी, जो आत्मनिर्भर और खुदपर भरोसा रखने वाले हैं और उन्हें अपने जीवन में किसी भी महिला की जरूरत नहीं है। यह शो लाईट कंटेंट के एक हिस्से को हंसी की खुराक और ड्रामा के साथ पेश किया जाएगा। वैसे, हम पोस्ट लॉकडाउन इस शो के फ्रेश कॉन्सेप्ट को देखने के लिए उत्सुक हैं।

❑ पोस्ट लॉकडाउन ऐसा क्या हुआ जो मेकर्स ने इस शो को पूरी तरह बदल दिया?

मुझे लगता है कि यह समय की आवश्यकता को देखते हुए एक क्रिएटिव निर्णय था। फिलहाल, दर्शकों को इस दौरान सकारात्मकता और हँसी की का डोज चाहिए। शो के पिछले भाग के कुछ एपिसोड्स की शूटिंग होने के बावजूद शो की स्टोरी लाइन और कॉन्सेप्ट में बदलाव करना और इस तरह का कठिन कदम उठाना ही दर्शकों की तरफ इसका समर्पण दिखाता है कि दर्शकों को इस समय क्या चाहिए।

घर का मंदिर

कुतुब

क्योंकि सांस भी कभी बहू थी

कसौटी जिंदगी के

❑ क्या आपने नए किरदार के लिए फिर से ऑडिशन दिया?

नए किरदार के लिए मैंने फिर से ऑडिशन नहीं दिया, बल्कि हमने एक लुक टेस्ट जरूर दिया था जिसे कॉन्सेप्ट को बदलने के साथ–साथ कैरेक्टर के लक्षण को ध्यान में रखते हुए किया गया था । मुझे लगता है कि मेरा नया किरदार सरल है और मुझे यह अधिक पसंद है। मैं अपने किरदार को लेकर दर्शकों द्वारा मिलने वाली प्रतिक्रियाओं को लेकर उत्सुक हूँ।

❑ आपने इससे पहले कभी कॉमेडी नहीं की है तो आप अपने अपकमिंग शो के बारे में क्या महसूस करते हैं?

मैंने इस शैली पर कभी हाथ नहीं आजमाया है और मुझे लगता है कि यह सबसे चुनौती पूर्ण शैलियों में से एक है। परफेक्ट कॉमेडी टाइमिंग की मास्टरी करना, डायलॉग डिलीवरी और पंचेस मारना यह किसी चैलेंज से कम नहीं है और मैं 'गुप्ता ब्रदर्स – चार कुंवारे फ्रॉम गंगा किनारे' का हिस्सा बनकर बहुत एक्साइटेड हूँ जो मेरी शैली की सूची में एक और शैली जोड़ने जा रहा है।

❑ डेली सोप में वापसी करके आपको कैसा महसूस हो रहा है?

यह मुझे घर वापसी जैसा लग रहा है, डेली सोप, एक अभिनेता के रूप में प्रतिदिन आपको सुधारने का अवसर देता है। आपको दर्शकों और अपनी परफॉर्मेंस के अनुसार अपने किरदार में बदलाव करने का मौका मिलता है और खुलकर परफॉर्म करने की आजादी मिलती है। डेली सोप मेरा कम्फर्ट जोन है और मैं बेहद आभारी हूँ 'गुप्ता ब्रदर्स – चार कुंवारे गंगा किनारे' शो का हिस्सा बनकर।

❑ आपका लॉकडाऊन एक्सपीरियंस कैसा रहा?

जब शुरुआत में लॉकडाउन लगा, तो हम इस बात से अनजान थे कि यह लंबे समय तक चलेगा क्योंकि यह तकरीबन 4 महीने तक चलता रहा और मैं बहुत अधिक धैर्यवान बन गया। मैंने अपने बच्चों के साथ बहुत अधिक क्वालिटी टाइम बिताया और यह मेरे लिए एक अवसर से कम नहीं था। मैंने कई ऑनलाइन कक्षाएं लीं जो मेरी व्यक्तिगत और व्यावसायिक वृद्धि में मुझे मदद करेंगी। मुझे लगता है यह लॉकडाउन पूरे परिवार को एक साथ ले आया और मैंने अपने हर पल को अपने परिवार के साथ बड़े प्यार से संजोया है।

❑ लॉकडाऊन के बाद शूट पर लौटकर आपको कैसा लग रहा है? इसपर आपका क्या कहना है?

लॉकडाउन के बाद सबकुछ बिल्कुल अलग और आवश्यक महसूस होता है, रही बात शूट की तो सेट पर हर तरह के दिशा निर्देशों का ख्याल रखा जा रहा है। सैनिटाइजेशन बूथ से लेकर पर्सनल हाइजीन किट तक सभी का ध्यान प्रोडक्शन हाउस द्वारा रखा जाता है। सोशल डिस्टेंसिंग प्रोटोकॉल का पूरी तरह से पालन किया जा रहा है और हमारा प्रोडक्शन हाउस काफी उदार है कि वे नियमित अंतराल के बाद सेट पर अदरक और हल्दी का काढ़ा दिया जाता है और टेम्परेचर और ऑक्सीजन लेवल की समय– समय पर जांच होती है की जांच का भी ध्यान रखा जा रहा है। ऐसे सुरक्षित और स्वच्छ वातावरण में शूटिंग करना बहुत सुकून देता है। इसके अलावा हम सोशल डिस्टेंसिंग प्रोटोकॉल का पालन करते हुए कम से कम कास्ट और क्रू मेम्बर्स के साथ शूटिंग करते हैं।

❑ आपको अपने को–स्टार के साथ काम करके कैसा महसूस हो रहा है?

अब तक मैंने परदे पर अपने तीनों भाइयों के साथ शूटिंग की है और यह अनुभुत अद्भुत है। यह लड़के बहुत ही टैलेन्टेड हैं। जब किरदार के समझ की बात की जाए तो मुझे इन लोगों से कई नई तकनीकें सीखने को मिली हैं। हम एक साथ बहुत सारा समय बिताते हैं और इसलिए मुझे पहले से ही यह एक परिवार की तरह महसूस होता है। इस शो ने मुझे एक जिम्मेदार किरदार दिया है और मुझे लगता है कि मैं सचमुच इनका उनका बड़ा भाई हूं।

❑ इस वक्त आप और अन्य किन प्रोजेक्ट्स पर काम कर रहे हैं?

मेरी आशिकी तुम से ही

बालिका बधु

डॉयन

हैवान

फिलहाल, मैं 'गुप्ता ब्रदर्स – चार कुंवारे गंगा किनारे' शो से स्टार भारत के दर्शकों को अपने कॉन्टेंट और परफॉर्मेंस से खुश करने के मिशन पर हूँ। भविष्य की कोई योजना नहीं क्योंकि मैं इस समय अपने शो के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध हूं।

☐ आपको इस शो के लिए कितना भुगतान किया जा रहा है? क्या पोस्ट लॉकडाउन में कोई बदलाव किए गए हैं?

मेरे लिए केवल यही मायने रखता है कि यह दर्शकों के साथ जुड़ने का बेहतरीन अवसर है और एक अभिनेता के लिए सबसे बड़ी संतुष्टि यह है जब उसे दर्शकों से सराहना और प्यार मिलता है।

☐ आप अपने प्रशंसकों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

मैं सबसे पहले अपने फैन्स को बिना भूले इस शो को स्टार भारत पर देखने का निवेदन करता हूँ। दर्शकों द्वारा मुझे मिल रहे प्यार और उनके निरंतर समर्थन के लिए उनका आभारी हूं। मैं अपनी पिछली भूमिकाओं के लिए आज तक उनके द्वारा मिले प्यार की सराहना करता हूं और मुझे यकीन है कि मेरा किरदार बहुत जल्द उनके चेहरे पर मुस्कान लाएगा।

☐ क्या आपने कोविड के चलते अपनी फीस घटाई है?

मुझे लगता है कि यह समय फीस की कटौती के बारे में सोचने का नहीं है, एक अभिनेता के तौर पर मेरा काम अपने प्रदर्शन से दर्शकों का मनोरंजन करना है। स्टार भारत बहुत ही उदार है इसलिए मैं इसे फीस स्लैश के रूप में नहीं देखता। मैं एक मनोरंजन योद्धा बनकर सभी का आभारी हूं और अगर मुझे अपने प्रदर्शन से दर्शकों को समर्थन मिलता है तो यह मेरे लिए सबसे अनमोल होगा।

☐ सुशांत सिंह राजपूत और समीर के हालिया निधन पर आपके क्या विचार है?

सुशांत सिंह राजपूत और समीर की खबरें सुनकर मैं सदमे में था। वे दोनों बहुत प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। उनके बारे में पढ़कर मेरा दिल बहुत दुखता है। मैं प्रार्थना करता हूं कि वे जहाँ भी हों खुश हों और भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दें।

☐ क्या आप भाई–भतीजावाद में विश्वास करते हैं?

मैं यहां अपने शो के बारे में बात करने के लिए हूं और इसपर कोई टिप्पणी नहीं करना चाहूंगा।

☐ अवसाद को लेकर आपको क्या कहना है?

अवसाद एक ऐसा मुद्दा है जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए व्यक्तिपरक है। जो इससे गुजर रहा है केवल वही इसे समझ सकता है। हम केवल इतना कर सकते हैं कि जो लोग इससे गुजर रहें हैं हम उनकी मदद कर सकते हैं और उन्हें खुश रख सकते हैं। मैं भले ही किसी ऐसे व्यक्ति के संपर्क में नहीं हो सकता हूं जो इससे गुजर रहा है लेकिन मैं अपनी कला के माध्यम से अपना योगदान दे सकता हूँ ताकि उन्हें अच्छा महसूस हो ।

☐ आपने सुशांत को पवित्र रिश्ता में रिप्लेस किया था, जब उन्होंने बॉलीवुड के लिए शो छोड़ दिया था, तब आपके साथ उनकी बातचीत कैसी थी?

मेरा मानना है कि सुशांत प्रतिभा का एक पावर–हाउस था और बॉलीवुड में कुछ बड़ा करने का उनका लक्ष्य हमेशा स्पष्ट था। हम दोनों के बीच कोई भी कठोर भावनाएं नहीं थी। वह एक ऐसे अभिनेता थे, जिन्होंने अपने अभिनय करियर की परिकल्पना पहले से की थी और वह उसी रास्ते पर चले। हम दोनों के बीच सामान्य बात यह थी कि हम दोनों ने पवित्र रिश्ता में मानव का किरदार निभाया था। और यह सभी नहीं जानते कि वह हमेशा मेरे काम की सराहना करते थे और मुझे बताते थे कि आपने वास्तव में यह सीन अच्छे से निभाया। जब भी हम मिले वे बहुत खुश थे। सुशांत बहुत सारे लोगों के लिए एक प्रेरणा थे क्योंकि उन्होंने अपने दम पर सब कुछ किया। उन्होंने टीवी के साथ शुरुआत की और फिल्मों की तरफ बढे। हम विश करते हैं कि हम उन्हें और उनकी प्रतिभा को और अधिक देख पाते। मैं बस इतना ही कह सकता हूं कि मैं उम्मीद करता हूं कि वह बेहतर जगह पर हो और भगवान उसके परिवार को ताकत दें ताकि वह इस हानि को बर्दाश्त कर सकें।

☐ पवित्र रिश्ता की वापसी पर आपके क्या विचार हैं?

मेरा मानना है कि ऐसा करके हम प्रतिभाशाली स्वर्गीय सुशांत सिंह राजपूत को अपना सम्मान और अंतिम विदाई के रूप में दे सकते हैं। उन्होंने अबतक अपनी एक्टिंग से जो अपने फैन्स और दर्शकों को दिया है वह बहुत सराहनीय है।

☐ क्या आप अंकिता लोखंडे के संपर्क में हैं?

नहीं ।

हितेन तेजवानी को शिव नारायण गुप्ता के रूप में देखने के लिए देखिए इस 5 अक्टूबर से सोमवार से शुक्रवार, रात 9:30 बजे गुप्ता ब्रदर्स–चार कुवारे फ्रॉम गंगा किनारे शो केवल स्टार भारत पर।

यह लेख दिनांक 12–04–1981 मायापुरी के पुराने अंक 342 से लिया गया है

HAPPY BIRTHDAY

मैं समझौता पसंद नहीं करता

राज खोसला

–पन्नालाल व्यास

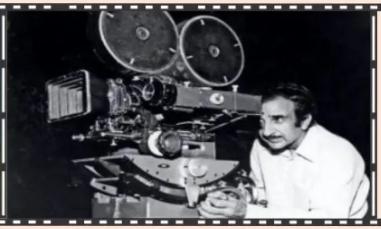

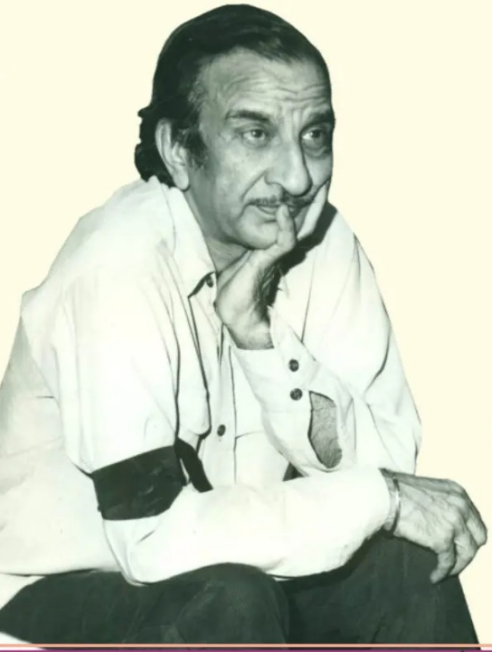

मैंने राज खोसला के यहां फोन किया तो उनके सेकरेट्री वेद प्रकाश ने फोन उठाया। वे तो मेरे पुराने परिचित निकले। मेरा काम सहज हो गया। उन्होंनें तीसरे दिन खोसला जी के ऑफिस में ही मिलने का समय मुकर्र कर दिया।

तीसरे दिन जब मैं तीन बजे उनके ऑफिस गया तो वे खाना खाकर सोये ही थे। वेद प्रकाश जी ने मेरा अभिवादन करके गरम–गरम चाय मंगाई और बताया कि अगले सप्ताह से खोसला जी के निर्देशन में बन रही जॉनी बख्शी की फिल्म 'मेरा दुश्मन" रामायण चित्र की 'माटी मांगे खून! और तीसरी फिल्म 'दासी' की लगातार कई दिनों की शूटिंग होगी और साथ–साथ में उनकी खुद की नयी फिल्म "श्रीमती जी'' की भी दस दिनों की लगातार शूटिंग होगी।

मैंने कहा–'श्रीमती जी' मल्टीकास्ट फिल्म होगी। इस पर वेद प्रकाश जी ने मेरी इस अन्जानकारी पर आश्चर्य जाहिर किया और कहा–'अरे, आपको पता नहीं। इसमें तो राज किरण, पदमिनी कोल्हापुरी, नूतन, अमजद खान आदि हैं।"

ओह ! तो वह मिनी मल्टीकास्ट फिल्म है।" मैंने मजाक में कहा.

इस तरह हम गप–शप कर ही रहे थे कि भीतर से बुलावा आ गया। मैंने समझ लिया–खोसला जी खाना खाने के बाद नींद

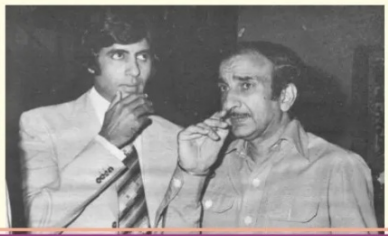

नहीं लेते बस हल्की झपकी भर लेते हैं।"

उनके कैबिन के भीतर घुसते ही उन्होंने हाथ मिला कर सिगरेट ऑफर की। "मैं पीता नहीं" कह कर मैं सोचने लगा–बात शुरू करूं तो कहाँ से करूं। तभी मुझे याद आया–कुछ ही दिनों उनके पिता जी का देहांत हो चुका है। एक विचार बिजली की तरह मस्तिष्क में दौड़ गया। मैंने उनके पिता जी के देहावसान पर शोक अभिव्यक्त करते हुए कहा–घर में जब सबसे बुर्जुग का देहांत हो जाता है तो उनके निकटतम संबंधियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। और कभी–कभी तो फिलॉसफीकल इफेक्ट होता है आदमी तब जीवन और मृत्यु के बारे में सोचते–सोचते किसी और दुनिया में चला जाता है। तो आप पर और आपके मूड पर आपके पिता जी की मृत्यु का क्या असर हुआ।

मेरी इस बात पर उनकी आंखें हल्की–सी बंद हो गयी। फिर कुछ सजल भाव से बोले–मेरे पिता जी बाहर में थे। फिल्म से उनका ताल्लुक नहीं था। पर लिटरेचर में दखल रखते थे। उन्होंने लिटरेचर में एम. ए. किया था। उनकी हर बात में रहबरी होती थी। जब वे चले गये तो मुझे लगा जैसे मैं स्पेस में चला गया हूं। शून्यता का सन्नाटा मुझपर छा गया। फीलिंग हुआ जैसे सडनली हम बड़े हो गये हैं।"

☐ "बड़े होने के साथ–साथ आप अनुभवी भी तो हो गये हैं।" मैंने मजाक में कहा और वहीं से बुनियादी इन्टरव्यू की डोर पकड़ते हुए कहा–आपने अच्छी से अच्छी दिल को छूने वाली फिल्में दी हैं। और ढेर सारी कामर्शियल फिल्में भी दी हैं। आपकी कुछ फिल्में खूब चली और कुछ नहीं चली जैसी आशा थी। तो क्या आप अब अनुभव से आज कोई बॉक्स ऑफिस फार्मूला दे सकते हैं?"

उन्होंने एकदम साफ जवाब दिया–"नहीं, बिल्कुल नहीं। उस बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता। पता नहीं, उसकी चाबी किसके पास है। फिर भी मैं कह सकता हूं कि जो कहानी मुझे अच्छी लगे, जिसे मैं सुनाऊ उसे भी अच्छी लगे, वह कहानी मुझे अच्छी लगे और दूसरों को भी अच्छे लगें तो उस कहानी पर बनी फिल्म अवश्य पसन्द की जायेगी। अच्छी कहानी–जिसे हम सचमुच दिल को छूने वाली, दिल को असर करने वाली कहानी कह सकें। उसकी यूनिवर्सल अपील तो होती ही हैं। हां, एक बात और है कि जैसी वह कहानी है उसका मेकिंग भी वैसा ही होना चाहिए।"

☐ कहानी की बात चलते ही मुझे याद आया कि राज खोसला की हमेशा राइटरों के साथ नोंक–झोंक होती रहती है। दोस्ताना के वक्त उनकी सलीम जावेद से कुछ विवाद हुआ. के. ए. नारायण ने तो उनके खिलाफ अपने एक इन्टरव्यू में बहुत कुछ कह दिया है तो मैंने मुंहफट सवाल किया आप राइटरों से क्यों झगड़ते रहते हैं?"

यह सुनते ही वे चौंके–फिर हल्के से सिगरेट का कश खींचकर बोले–"मैं और झगड़ा–कभी नहीं! यदि राइटरों से झगड़ा होता तो पिछले अठारह साल से मेरे पास एक ही राइटर काम करते नहीं होते। पर हाँ–जब मैंने बाहर के निर्माताओं की फिल्मों का डायरेक्शन लिया तो उनके राइटरों को मैं अपने डिफरेंस ऑफ ऑपोनियन को लेकर उन्हें हमेशा अपना प्वाइंट बताता रहा। आफटर ऑल आई एम द डायरेक्टर. आई एम द कैप्टन ऑफ द शिप यदि कहानी की कमजोरी से, स्क्रिप्ट की कमजोरी से कोई

फिल्म लड़खड़ा जाती है तो उसको जिम्मेदारी आखिर मुझपर ही तो आती हैं। कहानी के मामले में मैं सममौता पसन्द नहीं करता। पर उसका मतलब यह नहीं कि मैं झगड़ालू हूं."

□ कहानी की बात हुई तो स्टार सिस्टम की चर्चा भी जरूरी थी। मैंने कहा–क्या आप भी स्टारवाद के फोलोवर हैं?

उन्होंने तपाक से कहा–कतई नहीं। कहानी वन स्टार की होगी तो मैं जबरदस्ती उसमें दो स्टार नहीं ठूसूंगा। मेरी हमेशा से यही मान्यता रही है कि कहानी पहले–फिर बाद में आर्टिस्टों का सिलेक्शन! मैं मानता हूं कास्टिग इंपोर्टेंट है पर कहानी पर वह हावी नहीं होनी चाहिए। अगर हमें हिस्टोरिकल या कॉस्ट्यूस फिल्म बनानी है या रामायण, महाभारत जैसे किसी धार्मिक ग्रन्थ पर भव्य फिल्में बनानी है तो बड़े–बड़े स्टार करेक्टरस के हिसाब से लेने ही पड़ेंगे। वैसे फिल्में भव्य मल्टीकास्ट फिल्में हो जायेंगी पर सबजेक्ट के कारण केवल मल्टीकास्ट के लिए मल्टीकास्ट फिल्में बनाना वाजिब नहीं है। आप इस तरह की फिल्मों का रिजल्ट देख ही रहे हैं।"

मैंने कहा–आपकी यह बात तो ठीक है समझ में आती है पर हमें आपसे भी शिकायत है।"

"वह क्या ?!

'आपने "मैं तुलसी तेरे आंगन की" जैसे दिल को छूनें वाली भावुक फिल्म बनायी। फिल्म वालों को एक नयी रोशनी दी पर आपने "दोस्ताना" जैसी ठेट मल्टीकास्ट कामर्शियल फिल्म मारा–मारी वाली फिल्म बना कर दिल खट्टा कर दिया।

मेरे कथन पर वे कुछ मुस्करा उठे। फिर थोड़ी देर बाद बोले–'दोस्ताना' दोस्ताना की बात थी। बात यह है कि उस फिल्म के पहले डायरेक्टर और कोई थे। उसके प्रोड्यूसर यश जौहर उसके निर्माण में काफी हाथ जला चुके थे। वे हमारे दोस्त हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि उनकी उस फिल्म का डायरेक्शन मैं ही करूंगा। आखिर मुझे दोस्ती निभानी पड़ी। इसी तरह सुनील दत्त की फिल्म "नहले पे देहला' दोस्ती की खातिर डायरेक्ट की। मैं दत्त साहब से लगातार नौ महीने तक कहता रहा कि मुझें वह कहानी पसन्द नहीं है। पर दोस्त की पिक्चर बनाने के लिए कुछ ज्यादा कहने–सुनने की गुंजाइश नहीं रहती। आज मुझे यह बात स्वीकार करने में संकोच नहीं है कि उस तरह की फिल्में मुझे हाथ में नहीं लेनी चाहिए थी। पर दत्त साहब 'रेशमा और शेरा' को असफलता से परेशान थे। यश जौहर भी संकट में थे। उस हालात में मैं जिद नहीं कर सका। भूल हो ही गयी।

□ तभी मैंने खोसला साहब को ध्यान दिलाया केन्द्रीय सूचना एंव प्रसारण मंत्रालय श्री वी. पी. साठे की उस घोषणा की ओर जिसमें कहा गया कि केन्द्रीय सरकार फिल्म इंडस्ट्री को इंडस्ट्री का दर्जा देने जा रही है और अब फिल्म वालों को बैंक से ऋण आदि की सुविधाएं मिलने वाली हैं। इस बात की ओर ध्यान खींचकर मैंने पूछा–क्या उससे सचमुच फिल्मों के निर्माण में कुछ फर्क आयेगा?"

उन्होंने बड़ी गम्भीरता से मंतव्य प्रकट किया 'वैसे यह घोषणा काफी देर से हुई है–फिर भी उसका स्वागत किया जाना चाहिए। पर मैं सोचता हूं– हकीकत में जब तक आर्टिस्ट खुद सेल्फ

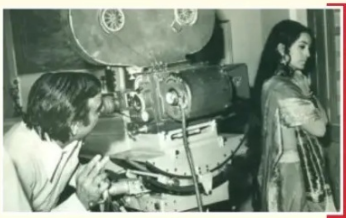

डिसीप्लिन लागू नहीं करेंगे और जब तक फायनेसिंग एजेन्सी को चाहे वह बैंक हो या और कोई, यह विश्वास नहीं होगा कि फिल्म जल्द बन जायेगी। कुछ नहीं होगा संदिग्ध स्थिति में बैंक भी ऋण क्यों देने लगे। इस संबंध में मैं एक्टर्स गिल्ड के प्रमुख देव आनन्द से बात करने वाला हूं। आपको याद होगा पहले हम लोगों ने आर्टिस्टों पर एक साथ छः से अधिक फिल्में न लेने का नियम लागू किया था। पर हुआ क्या। न प्रोड्यूसरों के लिए और न आर्टिस्टों के लिए वह हैप्पी डिसीजन रहा। बात वहीं खत्म हो गयी। इसलिए मैं बार–बार यही कहता हूं कि यदि आर्टिस्ट खुद सेल्फ डिसीप्लिन लागू करके घोषणा कर दें कि वे ज्यादा फिल्में एक साथ साइन नहीं करेंगे। वे एक ही शिफ्ट में काम करेंगे। एक स्ट्रेच में शूटिंग करेंगे तो उससे फिल्म इंडस्ट्री को कुछ लाभ हो सकता है। तब बैंक वालों में भी फिल्मों के निर्माण के प्रति गहरा इंडस्ट्री हो जायेगी।

उसके बाद आज की फिल्म इंडस्ट्री में यहां–वहां की चर्चा हुई तो उन्होंने इस बात को स्वीकार किया कि हमारा प्रोडक्शन सेक्टर बहुत री डिसऑरगेनाइज्ड है। हॉलीवुड में देखिये–वे स्टारों से सीधा छः सप्ताह का कॉन्ट्रेक्ट करते हैं। उस कॉन्ट्रेक्ट के मुताबिक वे फिर अन्य किसी फिल्म में काम नहीं कर सकते। वे मंडे से फ्राइडे तक पब्लिक पार्टी में जा नहीं सकते। वे शूटिंग जब तक खत्म नहीं हो जाती एयर से ट्रेवल नहीं कर सकते। मोटर–साइकिल नहीं चला सकते। वे शूटिंग के दौरान एफेयर नहीं कर सकते। और भी कई खास बातें होती हैं उस कॉन्ट्रेक्ट में। बड़ी सख्ती से काम होता है। यह वहां का सिस्टम है। पर हमारे यहां तो शूटिंग खत्म होने पर कॉन्ट्रेक्ट होता है। शूटिंग डेट्स प्रोड्यूसर नहीं देते–आर्टिस्ट देते हैं। कितनी उल्टी बात है। भला ऐसे डिसआर्गनाइज्ड प्रोडक्शन सेक्टर से लोगों में विश्वास कैसे हो सकता है

☐ "तो क्या इसका इलाज नेशनलाइजेशन नहीं है? मैंने पूछा।

खोसला साहब ने बताया–"कोरे नेशनलाइजेशन से क्या होगा। मूल बात यह है कि देश में ज्यादा से ज्यादा थियेटर्स बनने चाहिए। देखिये रूस में तीस करोड़ लोग हैं जिनके लिए एक लाख से ज्यादा थियेटर्स हैं। पर हमारे देश में साठ करोड़ से ज्यादा लोग हैं पर थियेटर मुश्किल से दस हजार हैं। इसलिए फिल्म इंडस्ट्री को गियर में लाने के लिए एक तो प्रोडक्शन सेक्टर स्ट्रीमलाइज्ड किया जाना चाहिए और दूसरी और ज्यादा से ज्यादा थियेटर्स बनने चाहिए। यह काम हो जाये तो वह नेशनलाइजेशन से भी अधिक प्रभावकारी होगा।

इस संदर्भ में मैंने कहा–देश में जनता थियेटरों के बनाये जाने की बाबत चर्चाएं हो रही हैं। व्ही–शांताराम जी ने उसके लिए एक ट्रस्ट भी बनाया है। क्या जनता थियेटरों के निर्माण का मूवमेंट प्रभावकारी सिद्ध हो सकेगा?"

थे "मुझे नहीं लगता. लाखों के लागत को फिल्में जनता थियेटरों में एक–एक रुपये के टिकट पर कैसे दिखायी जा सकेंगी। हॉं–छोटे बजट की फिल्मों को बड़े थियेटरों की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी. फिर भी मैं समझता हूं कि उनसे कोई खास फायदा नहीं होगा।"

☐ राज खोसला ने जब छोटें बजट की फिल्मों का नाम लिया तो मैंने कहा–इन दिनों आर्ट और कामर्शियल

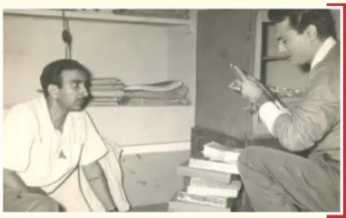

फिल्मों के बीच रेखाएं खींचने को कोशिश हों रही है। आर्ट फिल्मों के नाम पर तो जैसे मूवमेंट चल पड़ा है–आपको इस बारे में क्या राय है?

उन्होंने ओज भरी वाणी में कहा–"मेरी मान्यता है कि जो फिल्म अच्छी है वह भव्य फिल्म है। न्यू थियेटर्स, बॉम्बे टाकीज देवकी बाबू, बिमल राय, गुरूदत्त, राज कपूर, व्ही–शांताराम, महबुब खां आदि को फिल्में जो खूब चली और जिन्होंने फिल्म निर्माण में नयी परम्पराएं स्थापित की–'क्या आर्ट फिल्में नहीं हैं! और जब बार–बार कामर्शियल–कामर्शियल फिल्मों का नाम लिया जाता है तो मुझे हंसी आती है। हकीकत यह है कि सौ फिल्मों में केवल दस फिल्में कामर्शियली हिट होती हैं। इसलिए आर्ट और कामर्शियल फिल्मों के नाम पर रेखा खींचना वाजिब नहीं है फिल्म या तो अच्छी है–या फिर बुरी। गुड और बैड–बस यही दो तरह की फिल्में हो सकती हैं."

☐ "मैंने पूछा–"क्या फिल्म मेकिंग में सारी जिम्मेदारी डायरेक्टर की रहती है?"

हाँ–ही इज द मास्टर।"

पर !?

"पर क्या ?" उन्होंने आश्चर्य से पूछा। मैंने बताया–'इन दिनों यहां–वहां सेट पर घूमते हुए मैंने यही देखा है कि डांस डायरेक्टर्स डांस के सीन्स फिल्माते हैं। फाइट मास्टर्स फाइट सीन्स फिल्माते हैं। आर्ट डायरेक्टर्स सेट बना देते हैं। लाइटिंग वाले अपनी मर्जी से लाइटिंग करते हैं। कैमरामैन अपनी मर्जी से शूट करते हैं–तो फिर डायरेक्टर्स को क्या दुख। वे तो आराम कुर्सी पर बैठे रहते हैं।

मेरी बात सुन कर खोसला साहब को कुछ हंसी आ गयी। फिर थोड़ी देर बाद नयी सिगरेट जलाकर बोले–मैं दूसरों को बात नहीं करता। मैं अपनी बात करता हूं, डांस मास्टर्स फाइटर्स ही नहीं, म्युजिक डायरेक्टर्स भी मेरे बताये अनुसार काम करते हैं। फिल्म के डायरेक्शन में लीडरशिप मेरी ही रहती है। अल्टीमेट रेसपॉन्सिबिलिटी मेरी ही रहती है। राय सबकी हो सकती है पर अंतिम काम मेरी मर्जी से होगा। जिस तरह आर्मी में कैप्टन के कहे अनुसार फौज चलती है–वही बात मेरे फिल्म डायरेक्शन के वक्त रहती है। काम करने वाले लोग अलग–अलग होंगे ही पर मास्टर माईंड मेरा ही होगा। ब्ल्यू प्रिंट मेरा ही होगा। फिल्म में यूनिटो ऑफ टाइम, प्लेस और करेक्टर निहायत जरूरी है–और यह यूनिटी डायरेक्टर के हाथ में है. म्युजिक कम्पोज के वक्त मैं वही ट्यून लेता हूं जो मुझे पसन्द है और जिन्हें मैं अपनी कहानी के मुताबिक ठीक मानता हूं।"

☐ यह बात उन्होंने ज्यों ही समाप्त किया तो मैंने पूछ लिया–तो कहीं आपके इन्टरफियर के कारण आपकी चर्चित फिल्म 'दासी' से राजेश रोशन तो अलग नहीं हुए? या आपने उन्हें खास कारणों से हटा कर उनकी जगह रवीन्द्र जैन को लिया?!

उन्होंने इस कन्ट्रोवर्सी के बारे में अपना मंतव्य स्पष्ट करते हुए कहा–निकाले जाने की बात नहीं है। दरअसल राजेश रोशन ने वेस्टर्न धुनें तैयार की थी। जो मेरी कहानी पर फिट नहीं बैठती थी। हम दोनों ने परस्पर बड़े होमली वातावरण में अलग होने का फैसला किया। इस फिल्म में उनके दो गाने रिकार्ड हो चुके हैं। वे उसमें रहेंगे।"

❑ इन एकेडेमिक बातों से हम दोनों महसूस करने लगे कि हम काफी सीरियस हो गये हैं। तब उस वातावरण को हल्का करने के लिए मैंने पूछा–आप अपनी फिल्मों को औरत को–वूमनहुड को ग्लोरिफाइड क्यों करते हैं?"

उन्होंने अपने दोनों हाथों को माथे पर फेरते हुए कहा–यह प्रभाव मेरी मां का है। मेरी मां का मेरे जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है. और फिर मैंने खुद ने आस–पास की जिंदगी में देखा है कि आदमी का दिल बड़ा बेवफा होता है। जीवन की मुश्किल से मुश्किल घड़ी में औरत सब–सहन करती हुई अकेली खड़ी रहती है। आदमी टूट जाता है–औरत नहीं टूटती। औरत अंत तक त्याग करती है।"

"मैं आपसे सहमत नहीं हूं।"

❑ कैसे?

आज–तो–मॉडर्न पीरियड में यह देखा जा रहा है कि औरत आदमी को डिच करती है।

आप फिल्मी दुनिया की बात करते हैं या बाहर की सोसायटी की!

"दोनों की।

"पर मैं इंडियन वूमनहुड को बात कह रहा हूं वेस्टर्न टाइप वूमन को नहीं. और वहां भी जेनरली औरत का रोल हमेशा ग्रेट रहता है. मैं तो यही समझा हूं।"

इस बारे में मैं उनसे बहस करना चाहता था। पर यह मौका नहीं था।

उसके बाद गास्पिंग की चर्चा छेड़ी तो उन्होंने अपने कान बंद करते हुए कहा–बहुत गलत है। मैं आपको बताऊं–मेरे घर में फिल्म की एक भी मैगजीन नहीं आती। मैं घर–के वातावरण में पौल्यूट नहीं करना चाहता। मेरी तीन बड़ी–बड़ी बेटियाँ हैं जिन्हें मैं फिल्म मैगजीनों से दूर रखता हूं।"

❑ "आप हिन्दी उपन्यासों पर फिल्में क्यों नहीं बनाते?

"बनाना चाहता हूं पर मेरी मुश्किल यह है कि मैंने उर्दू पढ़ी है। हिन्दी उपन्यासों के उर्दू अनुवाद बहुत कम मिलते हैं। और मैंने जिनकी चर्चा सुनकर पढ़े भी है तो वे मुझे फिल्म के लिए ठीक नहीं लगे। फिल्म देखने–सुनने का मीडियम है–पढ़ने का नहीं। फिर भी आपके ध्यान में कोई अच्छा उपन्यास हो तो जरूर बतायें!

बातें काकी हो चुकी थी। अंत में मैंने कहा– "मैं अंत में सबसे महत्वपूर्ण सवाल करना चाहता हूं। आजकल डायरेक्टर बड़े टेन्शन में रहते है और टेन्शन में काम करते है। आप

मेरा वाक्य पूरा होने से पहले ही खोसला साहब ने बड़े आत्म–विश्वास के साथ कहा–"मैं कभी टेन्शन में नहीं रहता। मैं कभी टेन्शन में शूटिंग नहीं करता। यदि सेट पर किसी आर्टिस्ट को भी टेंन्शन में देखता हूं तो मैं शूटिंग कैंसल कर देता हूं। बातें काफी गहरी हो चुकी थी... उठते–उठते मैंने कहा–इस बार आपकी फिल्मों को शूटिंग देखने आऊंगा। 'वेलकम' कह कर उन्होंने हाथ मिलाया।

बस–इन्टरव्यू यहीं खत्म।

मिलाप

सी आई डी

बम्बई का बाबू

चिराग

दो रास्ते

प्रेम कहानी

नेहले पे देहला

दो प्रेमी

बोनी कपूर चकित हैं, कि क्यों राज खोसला को हमारे देश के सबसे प्रशंसनीय फिल्म निर्माताओं में शामिल नहीं किया गया है।

ज्योति वेंकटेश

मुझे फिल्म उद्योग के कुछ महान निर्देशकों के साथ बातचीत करने, काम करने और देखने का सम्मान मिला है। जब हम 50, 60, 70 और 80 के दशक के उस युग के बारे में सोचते हैं, जिसके बारे में आज के कई युवा वास्तव में नहीं जानते होंगे, तो **वी.शांताराम, महबूब खान, राज कपूर, गुरु दत्त, बिमल रॉय, के. आसिफ, बी.आर चोपड़ा, विजय आनंद, हृषिकेश मुखर्जी, नासिर हुसैन, शक्ति सामंत, यश चोपड़ा, मनमोहन देसाई, रमेश सिप्पी और सुभाष घई** जैसे कुछ सबसे उल्लेखनीय नाम अभी भी हमें लुभाते हैं और प्रेरित करते हैं। हालाँकि, मैंने देखा है कि ज्यादातर आर्टिकल और डिस्कशन में एक नाम जो इस अगरत लिस्ट से छूट गया, वह बहुमुखी और प्रतिभाशाली **राज खोसला** का नाम।

राज खोसला की कहानी कहने में उनकी फिल्मोग्राफी पर सिर्फ एक नजर है, और कहानी में गहराई और समृद्धि है। **देव आनंद** के साथ उनका शुरुआती काम थ्रिलर **'सीआईडी'** उस शैली में एक सफलता थी, जिसके बाद **'काला पानी'** थी। ये फिल्में बहुत हिट हुईं क्योंकि उन्होंने नैतिकता और गरीबी की वास्तविक द्वंद्वात्मकता को व्यक्त किया, जिसका आम आदमी को विभाजन के बाद सामना करना पड़ा। ऐसी मानवीय अंतर्दृष्टि वाली फिल्मों से, किसी का भी पूरी तरह से अलग शैली में महारत हासिल करना रेयर है, यह सस्पेंस थ्रिलर है, **'वो कौन थी'**, **'मेरा साया'** जैसी फिल्में। इन फिल्मों के मधुर गीतों को शानदार ढंग से चित्रित किया गया है, और आज भी इन्हें गुनगुनाया जाता है। विभिन्न कहानियों के लिए **राज खोसला** की खोज 'दो बदन' जैसी फिल्मों के साथ अद्भुत प्रेमपूर्ण गीतों के साथ भावनात्मक प्रेम कहानी, शानदार एक्शन के साथ एक नाटक और सुपर हिट संगीत के साथ जारी रहा, जो उनके अनोखे स्टाइल **'मेरा गाँव मेरा देश'**, 'कच्चे धागे' में चित्रित किया गया।

'दो रास्ते' एक पारिवारिक ड्रामा है जो अपने सौतेले परिवार की उपेक्षा करने की कीमत पर अपने परिवार के प्रति सौतेले बड़े भाई की निस्वार्थ प्रतिबद्धता से निपटता है। उन्होंने **'दो चोर'** का निर्माण किया, जिसमें पुरुष और महिला दोनों चोर की भूमिका निभाने वाली मुख्य भूमिका में थे। उनकी **'दोस्ताना'** एक लव ट्रायंगल में दो दोस्तों की कहानी थी, **सलीम जावेद** की **'दोस्ताना'** की शानदार स्क्रिप्ट में शानदार संगीत था, और जो एक बहुत बड़ी हिट थी और जो फिल्म **'मैं तुलसी तेरे आंगन की'** की इस मणि को कैसे भूल सकते है, जिसमें एक बहुत ही मजबूत विषय है, एक माँ अपने सौतेले बेटे के साथ अपने स्वर्गीय पति के सम्मान के लिए सम्मान के साथ पेश आती है। वह उसे समाज द्वारा एक नाजायज कमीने बेटे के रूप में उपहास करने से बचाती है। यह मुझे चकित करता है कि हमारे देश के सबसे प्रशंसनीय फिल्म निर्माताओं में राज खोसला को अधिक बार क्यों शामिल नहीं किया गया।

सिनेमा के बारे में अधिक जानने के इच्छुक किसी भी युवा फिल्म निर्माता के लिए, आपको इस बहुमुखी फिल्म निर्माता राज खोसला की फिल्मों से बेहतर पाठ्य पुस्तक नहीं मिल सकती, जिन्होंने विभिन्न शैलियों में ब्लॉकबस्टर फिल्में बनाई हैं।

अनु–छवि शर्मा

अटपटी चटपटी गप्पें

सूर्य से आँखे मिला रहें हैं 'फायर' रितिक रोशन

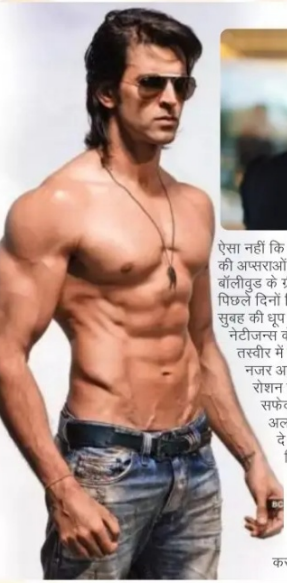

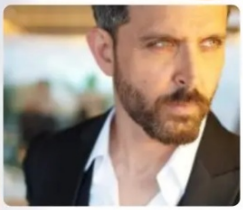

ऐसा नहीं कि सूरज की किरणें सिर्फ बॉलीवुड की अप्सराओं का ही मुख चूमती हैं, यह किरणें बॉलीवुड के ग्रीक गॉड्स पर भी मेहरबान हैं। पिछले दिनों **रितिक रोशन** के चेहरे पर खिली सुबह की धूप वाली क्लोजअप तस्वीर ने नेटीजन्स के बीच हल्ला मचा दिया। उस तस्वीर में रितिक सूरज से आंख मिलाते नजर आ रहे हैं और उनका हैंडसम चेहरा रोशन रोशन सा है। रितिक रोशन सफेद शर्ट और काले कोट में एक अलग से मूड में ध्यानमग्न से दिखाई दे रहे हैं और उस परफेक्ट क्षण को किसी ने परफेक्टली कैमरे में कैद कर लिया, हालांकि रितिक ने इस तस्वीर को कोई नाम नहीं दिया लेकिन उनके चाहने वाले और बॉलीवुड के कई दोस्तों ने खुद उस पोस्ट का नाम करार करते हुए लिखा 'फायर'।

'बब्बर शेर' कहा शाहिद ने अपने भाई ईशान का वीडियो देखकर

ईशान खट्टर के नए बीफ्ड–अप बॉडी वीडियो से लोग चकित है, कल का छोरा–छोरा सा लड़का आज एक परफेक्ट बॉडी–एब का मालिक कैसे बन गया? कमसिन लड़कियों ने अपने होंठों पर जुबान फेरी तो जवान होते लड़कों ने उन्हें घेर लिया कि बताओ यह जादू कैसे किया? और जवाब में ईशान ने एक वीडियो शेयर करते हुए स्टेप बाई स्टेप अपने वर्कआउट और डाइट का शेड्यूल बताया

जो वे पिछले 2 महीनों से फॉलो कर रहे थे। उस वीडियो में ईशान भारी वजन उठाते हुए और साफ–सुथरा डाइट लेते हुए दिख रहे हैं। वाइरल हो चुके इस वीडियो के बारे में खुद ईशान ने बताया,'मुझसे मेरी आनेवाली फिल्म के लिए एक सख्त लौंडा वाले लुक की फरमाइश की गई थी। जो उन्हें चाहिए, वो उन्हें चाहिए इच। (मराठी में इसका मतलब होता है चाहिए ही) लोगों को पता नहीं कि कैसे मैं यह लुक अख्तियार कर रहा हूं। इसलिए एक छोटा सा मोनताज बनाया है। सप्ताह के कुछ दिन ऐसे होते हैं कि वर्जिश का मोटिवेशन ही नहीं मिलता, बाकी दिनों में उन आलसी दिनों की कमी पूरी करनी पड़ती है। इस वीडियो को देख, बड़े भाई शाहिद ने कहा, बब्बर शेर।

मलाइका अरोड़ा बोली, 'प्यार की कोई बाउंड्री नहीं होती'

मलाइका अरोरा कोविड–19 पॉजिटिव होने के बाद सेल्फ आइसोलेशन में रहने का पूरा कोर्स करके अपने कमरे से जब बाहर निकली तो पूरे परिवार को बाहें फैलाये इंतजार करते हुए पाया। क्वॉरेंटाइन के 14 दिन पूरे होने के बाद अपने कमरे में लौटकर मलाइका ने बेडरूम से इंस्टाग्राम स्टोरी पोस्ट की और लिखा

'रीयूनाइटेड' यानी पुनर्मिलन। उस तस्वीर में मलाइका का पालतू डॉगी, अपनी मालकिन के पैरों के पास जैसे मुस्कुराता दिखाई दे रहा है। मलाइका रेस्टिंग मूड में, बालकनी से बाहर झूमते भीगे नजारे का लुत्फ लेती हुई कोई फिल्म भी देखती नजर आ रही है। जब वे कोरोना डिस्टेंसिंग में बन्द थी तो उस वक्त की तस्वीर को भी मलाइका ने शेयर की, जिसमें उनका बेटा अरहान और डॉगी कैस्पर दूसरी बालकनी से मलाइका को प्यार से देखते हुए दिख रहे हैं। मलाइका ने उन दिनों की बंदिशों के बारे में बताते हुए कहा, 'प्यार की कोई बाउंड्री नहीं है, सोशल डिस्टेंसिंग और कोरोना के बावजूद हम फिर भी एक दूसरे को देखने का कोई ना कोई रास्ता निकाल ही लेते हैं। लेकिन मेरा मन अपने इन दो बच्चों को बाहों में भरने के लिए मचल रहा था जो कुछ दिनों के लिए बंद करना पड़ा था। लेकिन उनका प्यारा चेहरा देखकर मुझे हिम्मत और ऊर्जा पैदा हो गयी।

करीना कपूर ने जब बेटे तैमूर से उँगली पकड़ने के लिए कहा तो

करीना कपूर खान अपनी मम्मी बबिता से जब भी मिलने जाती है तो तैमूर हर समय उनके साथ होता है। तैमूर का अपनी नानी–मां के लिए मचलना कोई आज की बात नहीं। शुरु से ही बबीता और तैमूर के बीच एक प्रगाढ़ बॉन्ड बना हुआ है। पिछले दिनों इस बॉन्ड का एक प्यारा नजारा पैपराजी को दिख गया जो हर वक्त तैमूर की हर क्यूट अदा को कैमरे में कैद करने के लिए उसके आगे पीछे घूमते रहते हैं। उन लोगों ने देखा कि जैसे ही करीना अपने बेटे को लेकर बबीता के घर पर आई, तैमूर ने बबीता को देखते ही पूरी मस्ती से डांस करना शुरू कर दिया। करीना काले ट्रैक सूट और फ्लोटर्स में थी। ज्यों ही करीना कार से बाहर निकली और उसने तैमूर से उनका हाथ और उंगली पकड़ने को कहा तो तैमूर खुशी और उत्साह के साथ नटखट अदाओं में लैस हो गया। करीना जब पैपराजी के सामने पलभर के लिए पोज देने के लिए रुकी तो तैमूर ने भी अपनी अनोखी स्टाइल से झूम कर शरारती अंदाज के साथ पोज दिए और फिर बबीता को देखते ही नाचने लगा।

कोई भी अनिल कपूर और जैकी श्रॉफ की राम लखन वाली जोड़ी को नजर ना लगाए

गहरी बॉन्ड कि जब बात हो रही है तो पूरी बॉलीवुड को पता है की 90 दशक से आज तक, **अनिल कपूर** और **जैकी श्रॉफ** की गहरी छनती रही है। लोग इनकी दोस्ती और भाईचारे की कसमें खाते हैं। पिछले दिनों जब बातों–बातों में जैकी ने अनिल के सदाबहार होने की तारीफ की थी और अनिल ने जवाब दिया था कि जल्दी ही साथ काम करने के लिए तैयार हो जाओ, तो उसके बाद की स्टोरी यह है की नेट की दुनिया से कुछ अफवाह फैलाने वालों ने कहना शुरू किया कि यह बात गलत है, जैकी श्रॉफ और अनिल कपूर के बीच आने वाले दिनों में कोई फिल्म है ही नहीं। यह सुनकर जैकी श्रॉफ को बहुत अजीब लगा, वे बोले, 'कमाल है, मेरी जिंदगी और करियर के बारे में बाहर वाले कोई कैसे डिसाइड कर सकता हैं? इस बात पर जैकी ने ट्वीट किया, 'क्या–कौन–कुछ भी बोलता है। लखन प्रोडक्शन एनी रोल, सर आंखों पर। और इसके साथ उन्होंने एक हगिंग इमोजी भी भेजी। बातें जब पुराने दौर की चलने लगी तो यादों को जैसे पंख लग गए। दोनों ने उस वक्त अपनी हिट जोड़ी के बारे में चर्चा की और फिर से एक साथ काम करने को लेकर भरोसा दिलाया। जैकी ने कहा कि वह अनिल के साथ हर वक्त और किसी भी वक्त काम करने को तैयार है। अनिल ने भी जवाब देते हुए दुनिया को आगाह किया कि कोई भी उन दोनों की जोड़ी को नजर ना लगाएं।

लिजा मलिक डिस्ट्रेस होने के लिए सीख रही है मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स, एक नए हॉबी के रूप में

लिजा मलिक ने स्पोर्ट्स के एक और रूप का रुख किया है। वह अब मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स सीख रही हैं। दरअसल लिजा एक अति उत्साही फिटनेस फ्रीक है और उसने फिटनेस के विभिन्न रूपों में काम लिया है, चाहे वह होम वर्कआउट हो, जुम्बा हो या डांस हो। वेअब मिश्रित मार्शल आर्ट्स को एक्सप्लोर करना चाहती है और इसे ऑनलाइन सीख रही है। ये लड़की तो बस रुकना ही नहीं चाहती।

हमने इस पर लिजा से बात की और इस बारे में उनका कहना है, 'डैड। ने हमें कुछ ऐसा दिखाया जिसमें मुझे हमेशा रुचि रही है। रूस ली की फिल्में देखना मेरी युवा यादें हैं और मैंने देखा उन्होंने डैड। को कैसे बनाया है। मैं इसे कब से सीखना चाहती थी और मुझे लगा यही सही समय है। इस समय को मैं पूरी तरह इस्तमाल कर लेना चाहती थी और मैंने ऐसा ही किया। अब मैं इसे पूरी तरह से प्यार करने लगी हूँ। यह आर्ट फॉर्म, शक्ति, सहनशक्ति, ध्यान और चपलता को एक साथ जोड़ती है। इसकी उच्च तीव्रता यानी इंटेंसिटी से मुझे प्यार है। मैं मायापुरी के सभी पाठकों से गुजारिश करती हूँ कि वे किसी न किसी स्पोर्ट्स से जुड़े रहे। लिजा की स्फूर्ति और जोश देख कर लग ही रहा है कि इस लड़की को आग लगी हुई है

'जॉन अब्राहम ,टी सीरीज और एम एंटरटेनमेंट ईद 2021 पर लेकर आ रहे है 'सत्यमेव जयते 2' लखनऊ मे होगी शूटिंग

सरकार द्वारा लॉकडाउन प्रतिबंधों में ढील दिए जाने के बाद कई फिल्मकारों और प्रोडक्शन हाउसों ने सुरक्षा मानदंडों को बनाए रखते हुए काम फिर से शुरू कर दिया है, **'सत्यमेव जयते 2'** के निर्देशक **मिलाप झवेरी** लॉकडाउन में अपनी पटकथा को और निखारने में जुट गए हैं, इसकी शूटिंग लखनऊ में होगी, टी–सीरीज और एम एंटरटेनमेंट द्वारा निर्मित यह फिल्म 12 मई 2021 के ईद पर रिलीज होने की उम्मीद है!

2018 में **'सत्यमेव जयते'** की कमर्शियल सक्सेस के बाद **जॉन, मिलाप** और प्रोड्यूसर्स ने इस बार जॉन के अपोजिट **दिव्या खोसला कुमार** के साथ फ्रैंचाइजी को आगे ले जाने का फैसला किया है। जहां पहली फिल्म भ्रष्टाचार से निपटती थी, वहीं यह फिल्म पुलिस से लेकर राजनेताओं, उद्योगपतियों और आम आदमी तक सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार से निपटती है ।

मुंबई से अपने शूट लोकेशन और कहानी को बदलकर हमारे देश का दिल–लखनऊ में शूट करने पर निर्देशक मिलाप कहते हैं, "रचनात्मक रूप से हमने स्क्रिप्ट को बदलकर लखनऊ कर दिया, क्योंकि इससे हमें इसे बड़े पैमाने पर बनाने का मौका मिले और कैनवास को भी बड़ा बनाया जा सके! देखने मे भी लखनऊ पैमाने और भव्यता को जोड़ता है। इस फिल्म का एक्शन दस गुना ज्यादा गतिशील, पावरफुल और दमदार होने वाला है। जॉन तोड़–फोड़, चीरकर भ्रष्टाचार सफाया करने के लिए जा रहा है, जैसे के उसने सिल्वर स्क्रीन पर पहले कभी नहीं किया है और दिव्या अपने पावरफुल दृश्यों, नाटकीय कौशल, अनुग्रह और सौंदर्य के साथ दर्शकों को चौंकाने वाली है। 'सत्यमेव जयते 2' एक आम जनता की फिल्म है और यह एक्शन, संगीत, संवादबाजी, देशभक्ति और वीरता का उत्सव भी है! 'ईद' एक पेरफेक्ट आदर्श अवसर है मनोरंजन करने के लिए, मैं **भूषण सर, मोनिशा आडवाणी, मधु भोजवानी** और **निखिल आडवाणी** के साथ एक बार फिर काम करते हुए, अगले साल 12 मई को वादा कर सकता हूं, कि हम सभी दर्शकों के लिए एक उत्सव बोनान्ज़ा देने की पूरी कोशिश करेंगे!

निर्माता **निखिल आडवाणी** कहते हैं, 'जैसा कि मिलाप ने इस विषय को विकसित किया है । उत्पादकों के रूप में, हम उनके अपने रचनात्मक विकल्पों का खुशी से समर्थन करते है । अब कहानी लखनऊ पर आधारित और वहीं शूट की जायेगी , जो की भारत में मेरे निजी पसंदीदा शहरों में से एक है! यह हमारे लिए बेहद खास फिल्म है। इस मताधिकार में पहली फिल्म के लिए प्रशंसकों द्वारा दिखाए गए प्यार ने हमें एक बड़ा, अधिक रोमांचक अनुभव बनाने के लिए प्रोत्साहित किया है। इस फिल्म में **जॉन अब्राहम** को ऐसे पेश किया है जैसे पहले कभी ना देखा गया हो। हमें उम्मीद है कि मौजूदा परिस्थितियों में सुधार होगा और हमारे लिए एक बार फिर सिनेमाघरों में अपने दर्शकों तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त होगा ।

'सत्यमेव जयते' बॉक्स ऑफिस कमर्शियल हिट के साथ दर्शकों ने भी एक्शन और ड्रामा को काफी पसंद किया, जॉन तब से हमारे देश के एक्शन हीरो बन गए हैं, निखिल और हमने फ्रैंचाइजी को आगे ले जाकर ,मिलाप और जॉन के साथ मनोरंजक कमर्शियल सिनेमा बनाते रहने का फैसला किया है । पहले भाग की सफलता को देख निश्चित रूप से इस बार हम पर एक बड़ी और बेहतर फिल्म बनाने की जिम्मेदारी है । मिलाप ने एक अच्छी स्क्रिप्ट लिखी है जिसमें माइंड

ब्लोइंग कहानी के साथ–साथ शानदार गाने होंगे जो हर एक दर्शकों से जुड़ेंगे! और जॉन का पहले कभी नहीं देखा लूक होगा, और हम अगले साल ईद पर सिनेमाघरों में आ रहे हैं जो इसे और भी त्योहारी बनाता है!

निर्माता भूषण कुमार कहते हैं। भूषण कुमार, कृष्ण कुमार (टी–सीरीज), मोनिशा आडवाणी, मधु भोजवानी, निखिल आडवाणी (एम एंटरटेनमेंट) द्वारा निर्मित **'सत्यमेव जयते 2'** 12 मई, 2021 को रिलीज होने वाली है!

विद्युत जामवाल फिटनेस के ऑनलाइन व्यूअर के लिए लेकर आए 'चक्र अभ्यास'

—ज्योति वेंकटेश

भारत में किसी अन्य फिटनेस आइकन ने अपने वर्कआउट रिजीम में उतनी विविधता नहीं दिखाई है, जितनी **विद्युत जामवाल** ने दुनिया के टॉप टेन मार्शल कलाकारों में से एक अब ऑनलाइन **व्यूअर चक्र** अभ्यास–साइकल ऑफ व्हील एक्सरसाइज लाये है।

अपने नवीनतम वीडियो में, एक्शन स्टार रीढ की हड्डी के लचीलेपन को सुनिश्चित करने के लिए टायर / एस का उपयोग करके फिटनेस के प्रति उत्साही अभ्यास करते है।

अपनी नवीनतम पेशकश के माध्यम से, विद्युत जामवाल ने हमें टायर अभ्यास के साथ रचनात्मक होने के लिए प्रेरित किया, **'खुदा हाफिज'** अभिनेता ने बताया कि इन अभ्यासों के लाभों में एक कोमल शरीर, लचीलापन और एक मजबूत रीढ़ की हड्डी शामिल है। ये अभ्यास उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण हैं जो अपने मूल, पीठ और कंधों के बल पर काम करना चाहते हैं।

विद्युत कहते हैं, "अच्छी तरह से और पूर्ण रूप से जीने के लिए आवश्यक सभी ज्ञान पहले से मौजूद हैं। हमें बस अपने दृष्टिकोण को अक्षुण रखने और मानव जाति के इतिहास से सीखने की आवश्यकता है। व्हील के आविष्कार ने गुणवत्ता के रहने के आगमन को चिह्नित किया। हम इसे अपने अभ्यास में फिर से शामिल कर सकते हैं, और स्वस्थ जीवन को पूर्ण दायरे में आने दे सकते हैं।"

विद्युत भारत की सबसे दुर्लभ कसरत दिनचर्या में से एक है, जिसने सबसे अधिक कसरत करने वाले दिनचर्या को प्रेरित किया है। काम के मोर्चे पर, अभिनेता को हाल ही में पैनोरमा स्टूडियो के 'खुदा हाफिज' अध्याय के भाग के रूप में घोषित किया गया था।

अनु–छवि शर्मा

फिल्म निर्माता-निर्देशकों, गीतकारों, कला निर्देशकों के साथ मुख्यमंत्री योगी अदित्यनाथ जी ने की बैठक

—मायापुरी प्रतिनिधि

लखनऊ, 22 सितंबरः मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने कहा है कि उत्तर प्रदेश में अपूर्णता का कोई स्थान नहीं। यहां अधूरा कुछ नहीं होता। यह राम की अयोध्या, कृष्ण की मथुरा, शिव की काशी के साथ ही बुद्ध, कबीर और महावीर की भी धरती है। गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है। यह सभी 'पूर्णता के प्रतीक' हैं। उत्तर प्रदेश अपनी इसी परंपरा को गति प्रदान करते हुए एक भव्य,आपकी जरूरतों को पूर्ण करने वाला दिव्य और सर्वसुविधायुक्त 'पूर्ण फिल्म सिटी' का विकास कर दुनिया को एक उपहार देगा। इसके विकास के लिए आप सभी के सुझावों का स्वागत है।

मुख्यमंत्री जी मंगलवार को सिनेमा जगत की बड़ी हस्तियों से मुखातिब थे। अनुपम खेर, परेश रावल, उदित नारायण, नितिन देसाई, कैलाश खेर, अनूप जलोटा, अशोक पंडित, सतीश कौशिक सहित जैसे अनेक दिग्गजों के साथ मुख्यमंत्री जी ने प्रस्तावित फिल्म सिटी के स्वरूप पर विस्तार से विमर्श किया। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश पर प्रकृति और परमात्मा की असीम कृपा है। फिल्मों ने हमारी भारतीय संस्कृति से विश्व जगत को परिचित कराया है। यह समाज का दर्पण हैं। ऐसे में फिल्म निर्माण को बढ़ावा देने और स्थानीय प्रतिभाओं को विशेष अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य में मॉडर्न फिल्म सिटी और इन्फोटेनमेन्ट जोन की स्थापना का निर्णय लिया है। इस दिशा में हमारे प्रयास अधिक उपयोगी, लाभदायक और व्यापक बन सकें, इसके लिए हम पूरे फिल्म जगत से सुझाव आमंत्रित कर रहे हैं। संवाद के माध्यम से एक–दूसरे की आवश्यकताओं को समझने और उनकी पूर्ति करने का अवसर प्राप्त होता है। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि फिल्म जगत के लोगों के सुझाव और अनुभवों का लाभ लेते हुए हम वैश्विक फिल्म जगत को एक नया विकल्प देने को तत्पर है।

विश्व के लिए उदाहरण बनेगी यूपी की फिल्म सिटीः मुख्यमंत्री जी ने कहा कि फिल्म सिटी में वर्ल्ड क्लास सिविल व पब्लिक एमेनिटीज की स्थापना प्रस्तावित है। हमारा प्रयास रहेगा कि इसे सर्वोत्कृष्ट डेडिकेटेड इंफोटेनमेंट जोन के रूप में विकसित किया जाए। आने वाला समय ओटीटी व मीडिया स्ट्रीमिंग का है। इसके लिए हाई कैपेसिटी, वर्ल्ड क्लास डाटा सेंटर की स्थापना भी इंफोटेनमेंट जोन में की जाएगी। उन्होंने कि हम कंटेंट डिस्ट्रीब्यूशन के लिए स्मूथ व फूलप्रूफ व्यवस्था के साथ–साथ टैक्स एक्जेम्शन की सुविधा पर भी विचार कर रहे हैं। सभी के सहयोग से यह फिल्मसिटी जल्द ही आकार लेगी।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश भारतीय संस्कृति, सभ्यता और समृद्ध परंपरा का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र है। यमुना एक्सप्रेस–वे क्षेत्र में जहां यह फिल्म सिटी विकसित करने का विचार है, वह भारत के ऐतिहासिक, पौराणिक इतिहास से सम्बद्ध है। यह हस्तिनापुर का क्षेत्र है। हमारे दिव्य–भव्य कुंभ से पूरी दुनिया आह्लादित है। फिल्म सिटी भी सभी की उम्मीदों को पूरा करने वाली होगी।

50 साल की जरूरतों को देखकर बन रहा डेडिकेटेड इंफोटेनमेंट (फिल्म सिटी) जोनः उत्तर प्रदेश में डेडिकेटेड इंफोटेनमेंट (फिल्म सिटी) जोन की स्थापना की कवायद शुरू हो गई है। मंगलवार की बैठक में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और अनेक सिने हस्तियों की मौजूदगी में यमुना एक्सप्रेस–वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण के सीईओ अरुणवीर जी ने प्रस्तावित फिल्म सिटी के संबंध में एक प्रस्तुतिकरण भी दिया। उन्होंने बताया कि यमुना एक्सप्रेस–वे सेक्टर–21 में लगभग 1,000 एकड़ भूमि पर इसका विकास होगा। इसमें 220 एकड़ कॉमर्शियल एक्टिविटी के लिए आरक्षित होगा। यह मथुरा–वृंदावन से 60 और आगरा से 100 किमी की दूरी पर है। हम यहां फिल्म सिटी के लिए जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ–साथ 35 एकड़ में फिल्म सिटी पार्क भी विकसित करेंगे। यह क्षेत्र रेल और सड़क परिवहन से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। एशिया का सबसे बड़ा जेवर इंटरनेशनल एयरपोर्ट समीप ही है। यह भी शीघ्र तैयार हो जायेगा। इसे मेट्रो, रैपिड रेल ट्रांसपोर्ट सिस्टम और हाई स्पीड ट्रेन से भी जोड़ने की योजना है। हम जो कुछ कर रहे हैं वर्ष 2060 की जरूरतों के मद्देनजर कर रहे हैं। इससे पहले अपर मुख्य सचिव सूचना श्री अवनीश अवस्थी जी ने पिछले साढ़े तीन वर्ष के भीतर उत्तर प्रदेश के औद्योगिक विकास की यात्रा से सभी को अवगत कराया।

फिल्म जगत की हस्तियों ने किया स्वागत, कहा योगी हैं तो यकीन है

अनुपम खेर,अभिनेताः आज का मौका उत्सव का है। योगी जी की क्षमता पर सभी को भरोसा है। यूपी की फिल्म सिटी यूपी में तो होगी लेकिन पूरी दुनिया इसे अपना मानेगी। यह ताजमहल की तरह ही दुनिया भर को आकर्षित करने वाली हो। इसकी स्थापना की पहली बैठक में आमंत्रित कर योगी जी ने हमें इतिहास में दर्ज कर दिया। योगी जी के इस सपने को साकार करने में अगर मैं भी भागीदार हो सका तो यह मेरा सौभाग्य होगा।

राजू श्रीवास्तव, अध्यक्ष उत्तर प्रदेश फिल्म बन्धुः मुझे हर्ष है कि योगी जी ने फिल्म जगत को नया विकल्प देने की दिशा में कोशिश की है। यह छोटे–छोटे शहरों की अद्भुत प्रतिभाओं के हौसलों, सपनों को पंख देने वाला होगा। मैं हर समय, पूरी क्षमता के साथ सेवा के लिए प्रस्तुत रहूंगा। योगी जी को आभार, अभिनन्दन।

कैलाश खेर, गायकः आज जब योगी स्वयं नेतृत्व कर रहे हैं, तो कोई भी कार्य असाध्य नहीं है। दुनिया में फिल्म सिटी के नाम पर लाखों किले खड़े हैं, लोगों ने 70 साल में क्या हाल कर दिया कि घिन आती है, शर्म आती है। उत्तर प्रदेश देवताओं की पुण्य भूमि है। दुनिया को राह दिखाने वाली है।योगी जी की यह दुनिया भारतीय संस्कृति को पोषित करने वाली हो। कला साधकों को सम्मान मिले। ऐसा जरूर होगा, यह मेरा विश्वास है। बाकी योगी जी आदेश करें, हम धावक हैं दौड़ पड़ेंगे।

परेश रावल, चेयरमैन नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामाः बहुत स्वागतयोग्य कदम है। योगी जी यह स्वप्न पूरा भी करेंगे, मुझे विश्वास है। फिल्म पटकथा लेखन को लेकर योगी जी कोई प्रयास करें तो बहुत सहायता मिलेगी। यह रीजनल सिनेमा को भी पुनर्जीवन देने वाला आयाम सिद्ध होगा।

अनूप जलोटा, गायकः बहुत अभिनन्दनीय प्रयास है। इसके लिए पूरी दुनिया के फिल्म सिटीज का अध्ययन किया जाना चाहिए। उनकी खूबियों, कमियों को समझना चाहिए। आवश्यकताओं के लिहाज से सुविधाएं दी जाएं। यह दुनिया के लिए महत्वपूर्ण प्रयास है। मेरी शुभकामनाएं।

मनोज जोशी, अभिनेताः अद्भुत और अनुपम प्रयास है। पंजाबी, बंगाली, हिंदी, सहित 12 भारतीय भाषाओं के फिल्मोद्योग का महाद्वार होगी यह फिल्म सिटी। इसे इको–फ्रेंडली बनाने की कोशिश हो। आज ओटीटी प्लेटफार्म पर हिंदी पट्टी की कहानियां छायी हुई हैं। आज 70 फीसदी टेक्नीशियन उत्तर प्रदेश के हैं। रंग कर्म में यूपी अत्यंत समृद्ध है। इन सभी को 'आत्मनिर्भर' बनाने में यह नवीन फिल्म सिटी अत्यंत उपयोगी हो सकती है। यह प्रदेश के औद्योगिक, पर्यटन विकास को नई दिशा प्रदान करने वाली होगी।

सतीश कौशिक, निर्माता निर्देशकः यूपी शूटिंग फ्रेंडली जगह रही है। मैंने बहुत काम किया है यहां। आज का दिन पूरी दुनिया के कला क्षेत्र के लिए ऐतिहासिक है। योगी जी फिल्म जगत को एक नवीन विकल्प दे रहे हैं। आज जो प्रेजेंटेशन दिखाया गया, वह हमें एक बेहतर भविष्य की छवि दिखा गया। आपने हम कलाकारों को एक नया आधार दिया है। यूपी की संस्कृति ने भारतीय फिल्मों को शुरू से ही प्रभावित किया है, अब यहां की फिल्म सिटी पूरी दुनिया को प्रभावित करेगी। मेरी बहुत शुभकामनाएं, योगी जी को बहुत धन्यवाद।

मनोज मुन्तशिर, गीतकारः योगी जी ने करोड़ों प्रतिभाओं को पंख दे दिए। 75 साल से हिंदी पट्टी इसका इंतजार कर रही थी। यूपी की भाषा तो दुनिया में फैल गई, लेकिन यूपी की कहानियां नहीं सुनाई गईं। योगी जी से अनुरोध है कि एक फिल्म इंस्टिट्यूट और म्यूजिक इंस्टिट्यूट की स्थापना की दिशा में भी विचार करें। आल्हा ऊदल, महामना मालवीय जैसे महामानवों से नई पीढ़ी को परिचित कराने की कोशिश हो।मुझे आज यूपी वाला होने पर बहुत गर्व है।

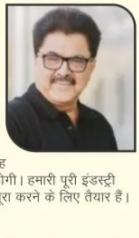

अशोक पंडित, अध्यक्ष फिल्म निर्देशक संघः फिल्म सिटी के निर्माण में फिल्म जगत के लोगों को शामिल करने की सोच योगी जी की सकारात्मकता का प्रतीक है। प्रोड्यूसर, टेक्नीशियन, एक्टर, हमारी इंडस्ट्री के इन्फ्रास्ट्रक्चर हैं। इनका इनवॉल्वमेन्ट होना, इस बड़े प्रोजेक्ट के सफल होने की गारंटी है। योगी जी के विजन शबियांड द ग्लोबश रहा है। निश्चित ही यह फिल्मसिटी भी इसी विचार का प्रतिबिंब होगी। हमारी पूरी इंडस्ट्री कंधे से कंधा मिलाकर आपके सपने को पूरा करने के लिए तैयार हैं।

उदित नारायण, पार्श्व गायकः योगी जी ने बहुत कम समय में बहुत खूबसूरत काम किया है। ऐसे में फिल्म सिटी की घोषणा से हम सभी का उत्साहित होना लाजिमी है। मैं 40 साल से फिल्म जगत का हिस्सा रहा हूँ। योगी जी के इस बड़े सपने को साकार करने में अगर मैं भी कुछ योगदान कर सका तो जीवन को धन्य समझूंगा।

सौंदर्या (तमिल सुपरस्टार रजनीकांत की बेटी, फिल्म निर्माताः) भारत में अब भी एनिमेशन इंडस्ट्री नहीं है। आज की फिल्मों में इसका बड़ा असर है। योगी जी अगर इस दिशा में कोशिश हो, तो बड़ी सुविधा होगी। फिल्म सिटी की स्थापना की घोषणा के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री जी को बहुत धन्यवाद।

विनोद बच्चन, फिल्म निर्माताः यूपी में फिल्मसिटी का सपना, दशकों से है। आज वो सपना योगी जी ने देखा है। अब पूरा होना तय है। इसके निर्माण में फिल्म जगत के विद्वान तकनीशियनों का जितना सहयोग लेंगे, उतना ही यह प्रोजेक्ट सफल होगा। मैंने अपनी फिल्मों में हमेशा से ही यूपी को रिप्रेजेंट किया है। बस इस सपने को यूपी बनाम महाराष्ट्र न बनने दिया जाए। हमसे जो बन सकेगा, हम करने के लिए पूरी क्षमता से तैयार है। अब यह और गति पकड़ेगा। एक महत्वपूर्ण बात, फिल्म स्क्रीन की कमी है, योगी जी छोटे–छोटे कस्बों तक पहुंचाने के लिए कुछ प्रयास करें तो बड़ी मदद मिलेगी। महत्वपूर्ण यह भी है कि अच्छे सिनेमा को ही प्रोत्साहित किया जाए।

शैलेन्द्र सिंह, निर्माता–निर्देशकः जेम्स कैमरन आज दुनिया की सबसे मंहगी फिल्म न्यूजीलैंड में बना रहे हैं। हमें समझना होगा कि फिल्म सिटी केवल बिल्डिंग या सेट्स की जगह प्रोवाइड करा देना भर नहीं होता। यह एक संस्कृति है। अगर हमने उन जैसे लोगों को बेहतर माहौल दिया, संस्कृति दी तो वह लोग भी यहां जरूर आएंगे। फिल्म सिटी केवल उत्तर प्रदेश बस लोकेशन बन कर न रह जाये, बल्कि एक संस्कृति के रूप में विकसित हो। यूपी सरकार की विल पॉवर देखकर ऐसा होने का विश्वास भी होता है।

नितिन देसाई, कला निर्देशकः योगी जी के विजन को सैल्यूट। फिल्म केवल नृत्य–संगीत ही नहीं है। लाखों को रोजगार, अरबों का व्यापार, हुनर और हौसलों को सलाम भी है। जो प्रस्ताव यूपी का है वह इंटरनेशनल फिल्म जगत को आकर्षित करने वाला है। देवताओं की जन्मस्थली है उत्तर प्रदेश। धर्म, संस्कृति, कला का अद्भुत संगम है यहां। यह फिल्म सिटी यूपी को और समृद्ध करेगी।हम सभी इस विजन को सफल करने में हम संभव मदद करने के लिए तैयार हैं।

ओम राउत, फिल्म निर्माताः बहुत शानदार विजन है। हम इस फिल्म सिटी में आर्टिस्ट, टेक्नीशियन आदि की ट्रेनिंग की व्यवस्था भी कर सकें, तो बेहतर होगा। यूपी में अब भी फिल्मों का प्रसार बहुत कम है। थियेटर कम हैं। यहां विकास की बहुत संभावना है। यूपी की यह फिल्म सिटी नई प्रतिभाओं को मंच देने वाली होगी। योगी जी को ह्रदय से धन्यवाद।

विवेक अग्निहोत्री, फिल्म निर्माताः योगी जी की अभिनव सोच और तत्परतापूर्ण क्रियान्वयन को प्रणाम। बहुत जरूरी और बहुप्रतीक्षित प्रयास है। हिंदी फिल्मोद्योग को एक नवीन आधार मिलेगा। ईश्वर आपके साथ हैं सर।

कॉसमॉस माया से एनिमेटेड सीरीज 'दबंग' के 104 एपिसोडस डिज़्नी हॉटस्टार वीआईपी पर लॉन्च किए जाएगें!

भारतीय एनीमेशन स्टूडियो, कॉसमॉस–माया और अरबाज खान प्रोडक्शंस एक साथ मिलकर ब्लॉकबस्टर फ्रैंचाइजी दबंग को एक एनिमेटेड सीरीज में ढालने के लिए साथ आए हैं। यह खबर फिल्म फ्रैंचाइजी की 10 वीं वर्षगांठ समारोह के अनुरूप है, जिसने 2010 में पहली बार चुलबुल 'रॉबिनहुड' पांडे के चरित्र को पेश किया था। रिलीज होने पर, कॉसमॉस–माया के साथ लगातार सहयोगी, डिज़्नी हॉटस्टार वीआईपी मंच पर शो के 104 एपिसोड स्ट्रीम करेंगे। इस शो में फ्रैंचाइजी के सभी पात्रों के एनिमेटेड अवतार होंगे। बच्चों और परिवार के दर्शकों पर लक्षित, सीजन–1 साल 2021 की गर्मियों में लॉन्च किया जाएगे।

अरबाज खान

अनीश मेहता

केतन मेहता

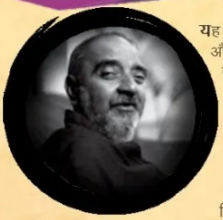

अली पीटर जॉन

यह कंगना को देखने और सुनने के लिए बहुत ही चिंताजनक कारक है, शब्दों को तोड़–फोड़ कर जाने की अनुमति दी जाती है, जो किसी व्यक्ति के साथ विनाश या विध्वंस करने की कोशिश कर रही है, यहां तक कि उन सभी में से सबसे बहादुर लोग भी उन्हें रोकने की कोशिश नहीं कर रहे है। मुझे पता है कि एक्स्प्रेशन की फ्रीडम सेक्रिड कान्स्टिट्यूशन द्वारा हम सभी के लिए एक सही गारंटी है, लेकिन जब कोई हर रोज सुबह उठता है, तो वह क्या करता है (इतना की नींद से उठने के बाद उन्हें फिर नींद कैसे आती है) कुछ नए लक्ष्य खोजने और उन्हें टारगेट करने के लिए चाहे यह किसी कारण के साथ हो या बिना कारण के।

वह एक बहुत बहादुर महिला होनी चाहिए (और 11 कमांडो हर समय उनकी रक्षा करते हैं, जो उन्हें मेंटर होम मिनीस्टर द्वारा दिया गया एक उपहार हैं, वह और अधिक साहसी हो गई है) एक युवा महिला के बारे में क्या कहते है जो केवल रो रही थी, और अपनी किस्मत को कोस रही थी, और अब वह फिल्म माफिया और ड्रग्स की दुनिया के खिलाफ कडवे शब्दों का ताना बाना बुन रही है, और सबसे शक्तिशाली नेताओं और यहां तक कि महाराष्ट्र के लिए राष्ट्रपति शासन की मांग करते हुए, उन्हें मुंबई की राजधानी जहां उन्होंने खुद को त्याग दिया और एक नाम, प्रसिद्धि और भाग्य पाया जिसने पाली हिल पर उन्हें अपने शानदार अपार्टमेंट के लिए पर्याप्त पैसा दिए जिसे कभी स्टार्स और सुपरस्टार का घर माना जाता था और एक ऑफिस जिसे गैरकानूनी माना जाता था और इसलिए इसे बीएमसी द्वारा कुछ ही घंटो में ध्वस्त कर दिया गया था जिसे उन्होंने 'मेरे सपने, मेरी महत्वाकांक्षा और मेहनत की कमाई का बलात्कार' बताया था। यहां तक कि वह दिग्गज अभिनेत्री **श्रीमति जया बच्चन** को भी बीच में ले आई, जिन्होंने इंडस्ट्री में कदम रखा और इसे 'गटर' कहा, जब उन्होंने राज्यसभा में इंडस्ट्री के बारे में बात की।

और जब उन्होंने पाया कि अब उनके पास कोई और टारगेट नहीं है, तो उसने अभिनेत्री **उर्मिला मातोंडकर** पर अपनी बंदूक का निशाना बनाया और उन्हें **'एक सॉफ्ट पोर्न एक्ट्रेस'** कहा, जो अभिनय नहीं जानती थी।

उर्मिला के साथ इंडस्ट्री का एक बड़ा वर्ग खड़ा है, जो उर्मिला को तबसे जानता है, जबसे वह एक छोटी सी लडकी थी, मुझे

किसने एक वुमन डेमलिशन स्क्वाड उर्मिला मातोंडकर को बताया की वह एक 'सॉफ्ट पोर्न एक्टर' थी?

जुगल हंसराज,शबाना आजमी, नसीरुद्दीन शाह,उर्मिला मातोंडकर और शेखर कपूर

जे.डी.चक्रवर्ती, उर्मिला मातोंडकर और राम गोपाल वर्मा

उर्मिला मातोंडकर और आमिर खान

श्रीदेवी, अनिल कपूर और उर्मिला मातोंडकर

लगता है कि यह तभी सही होगा जब मैं सच्चाई को बताऊं क्योंकि मैं उर्मिला के बारे में जानता हूं।

उर्मिला एक मध्यम वर्गीय महाराष्ट्रियन परिवार की लड़की थी, जिसके पिता प्रोफेसर थे, उन्होंने **शेखर कपूर** की **'मासूम'** में एक बाल कलाकार के रूप में अपनी शुरुआत की और **'कन्नन'** में एक लीडिंग लेडी के रूप में वापस आई। हंसराज जिन्होंने 'मासूम' में एक छोटे लड़के की भूमिका निभाई लेकिन बड़ी उर्मिला जब वह **रामगोपाल वर्मा** से मिलीं, तब उन्हें एक बहुत ही बहुमुखी अभिनेत्री के रूप में जाना गया जब वह सिर्फ एक नई अभिनेत्री थी, जिन्होंने अपनी फिल्म **'रंगीला'** के साथ एक रंगीन बैंड के साथ शुरुआत की, जिसमें **आमिर खान** ने उनके साथ काम किया था। उन्होंने **'सत्या'**, **'दाउद'**, **'रात'** और अन्य फिल्मों जैसे राम गोपाल वर्मा द्वारा निर्देशित फिल्मों का अनुसरण किया। और वह श्रीदेवी के साथ उनकी प्रतियोगी के रूप में **'जुदाई'** जैसी फिल्मों के नजर आई, और फिर **'पिंजर'** और **'तहजीब'** जिसमें उनके सह–कलाकार के रूप में **शबाना आजमी** और **दीया मिर्जा** थी। हालांकि उन्होंने अपनी पहली बड़ी गड़बड़ी तब की जब वह **'कर्ज'** में एक किलर की भूमिका निभाने के लिए तैयार हो गई, जो **सुभाष घई** की **'कर्ज'** की रीमेक थी, और उनके निर्णय से उनके करियर में दुर्घटना और संकट पैदा हो गए। **एमएफ हुसैन** उनसे इतने प्रभावित थे, कि वह उनके और **अमृता अरोड़ा** और **सुकन्या कुलकर्णी** के साथ फिल्म बनाना चाहते थे, लेकिन भारत भर में चल रही एक जंगली हवा ने हुसैन और उनके सपने को हवा दे दी।

उर्मिला ने एक और धमाका किया जब वह मुंबई पूर्व निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में संसद के लिए चुनाव लड़ी और भाजपा उम्मीदवार द्वारा उन्हें बहुत बुरी तरह से हराया गया।

इस आश्चर्यजनक हार ने उन्हें लगभग गुमनामी में धकेल दिया।

कुछ दिनों पहले तक एक महिला विध्वंस दस्ता ने उन्हें वापस सुर्खियों में ला दिया।

मुझे आशा है, कि कंगना किसी के खिलाफ प्राइवेट अगेंस्ट शुरू करने से पहले अपना होमवर्क करती। यह उनकी नई छवि के लिए बुरा हो सकता है, और अच्छा हो सकता है, यदि वह राजनीति में अपना करियर बनाने का फैसला करती है, जो मुझे यकीन है कि वह है।

और क्या अभिनेत्री कभी उस इंडस्ट्री में काम कर पाएगी जहाँ से उन्होंने सब कुछ पाया था, और अब इसे एक गटर कहा है। क्या एक विकृत दिमाग वाली खूबसूरत महिला अपने जीवन और करियर के बारे में एक त्वरित विचार करेगी, इससे पहले कि वह सत्ता के नशे की स्थिति में अपना अगला कदम उठाए, कि वह अब क्या है?

अनु–छवि शर्मा

फुल ऑन एंटरटैनमैंट

सुलेना मजुमदार अरोरा

न्यू नॉर्मल के नए जमाने और नए अंदाज में रणवीर सिंह

रणवीर सिंह का लॉकडाउन वेकेशन खत्म हो चुका है। रणवीर वो रेस्टलेस इंसान है, जो खाली बैठे नहीं रह सकते। बॉलीवुड का वर्किंग मोड शुरू होते ही वे पहले की तरह व्यस्त हो गए। काम की शुरुआत उन्होंने पहले एक ब्रांड शूट से किया। पिछले दिनों वे यशराज फिल्म्स में भी नजर आए। खबरों के अनुसार वे अपनी जबरदस्त और बहुचर्चित फिल्म **'जयेश भाई जोरदार'** की डबिंग के लिए पहुँचे थे। रणवीर ने शूटिंग शुरू करते हुए बिल्कुल नॉर्मल फील किया क्योंकि उनके अनुसार यह न्यू नॉर्मल का नया जमाना और नया अंदाज है। रणवीर के अनुसार इंडस्ट्री को फिर से बिजनेस रीस्टार्ट करना है और बतौर एक सुपरस्टार वे इस कोरोना महामारी में बुरी तरह प्रभावित फिल्म इंडस्ट्री को फिर से स्टार्ट करने में अपना पूरा योगदान देंगे। राइटर डायरेक्टर दिव्यांग की इस फिल्म की शूटिंग पहले ही पूरी हो चुकी थी। गुजरात में शूट किए गए इस फिल्म में दर्शकों के भरपूर मनोरंजन और कॉमेडी डोज का पूरा ख्याल रखा गया है। इस फिल्म में रणवीर एक पक्का गुजराती आदमी बना है। यह फिल्म थियेटर में रिलीज होगी जिसकी तैयारी में सब लग गए।

रिचा के नोट्स यह बता रहे हैं कि 'काम पर लगने से डरने की जरूरत नहीं'

आखिर रिचा चड्ढा ने भी अपने वेब सीरीज पर काम शुरू कर ही दिया, लेकिन आज के इस दुर्भाग्यपूर्ण कोरोना महामारी के बीच काम शुरू करने का फैसला कठिन ही नहीं खतरनाक भी है। इसलिए बुद्धिशाली रिचा चड्ढा ने अपने शूटिंग माहौल को जितना हो सके कोरोना मुक्त करने के कई–कई कदम उठा लिए। सबसे पहले उन्होंने अपने पर्सनल टीम को क्या–क्या करना है और क्या–क्या नहीं करना है इसका एक लंबा लिस्ट नोट तैयार किया, फिर पर्सनल हेयर ड्रेसर, मेकअप और स्टाइलिंग टीम को मानसिक और शारीरिक रूप से सारे नियमों के ख्याल रखने की हिदायत दी। रिचा के नोटस यह बता रहे हैं कि काम पर लगने से डरने की जरूरत नहीं। बस सारे नियमों का पालन करना है ताकि शूटिंग स्मूदली पूरी हो सके। रिचा का कहना है कि आज टीवी चैनल्स में जो नफरत फैलाने वाले प्रोग्राम्स चल रहे हैं उसके बावजूद लोग पहले से भी ज्यादा फिल्में और मनोरंजक कंटेंट्स देखना पसंद कर रहे हैं। इस तरह के डिमांड के बढ़ने के कारण रिचा ने काम पर लौटने की ओर कदम बढ़ाया। अपने मंगेतर अली फजल के साथ वे फुकरे रिटर्न्स के तीसरे भाग पर फिर से फुकरे टीम के साथ मिल बैठने को उत्साहित है।

कंगना रनौत इन दिनों 'सन किस्ड इन द माउंटेन' गर्ल है!

गूगल में कंगना इन दिनों सब से ज्यादा खंगाली जाने वाली एक्ट्रेस है, इसलिए उनके बारे में एक–एक खबर और तस्वीरें सर्च किए जाने की बातें उठ रही है। इन दिनों एक योद्धा की तरह कंगना जिन विवादों से पंगा लेने पर उतारू है, वो तनाव उनके युवा चेहरे की खूबसूरती और ताजगी को जरा भी कम नहीं कर पाई। उनकी हाल की एक तस्वीर उनके करोड़ों फैंस, चाहने वाले और मुट्ठी भर ना चाहने वाले लोग भी देख कर हैरान है। उस तस्वीर में कंगना बिना एक कतरा मेकअप के नजर आ रही है। उनकी बेदाग त्वचा धूप की सुनहरी किरणों के बीच चम चम चमक रही है, काले घुंघराले लहराते बाल खुले हुए हैं। ब्लू हुडी में वह सीधे कैमरे से नजरें मिलाती दिख रही है। यह तस्वीर उन्होंने अपने होम टाउन मनाली के पहाड़ों से घिरे पैलेस नुमा बंगले के पास खींची है जिसे नाम दिया कंगना ने, 'सनकिस्ड इन द माउंटेन' इसी तरह वे कई बार अपने मन की बात शेयर करती रहती है। जैसे पिछले दिनों उन्होंने कहा था, कुछ लोग समझते हैं कि मैं लड़ाकू हूं, जबकि यह बिल्कुल सही नहीं है। कंगना बॉलीवुड की वह शेरनी के रूप में उभर रही है जिनका कहना है कि वह गलत को सही और सही को गलत कभी भी नहीं कह सकती है। इसके लिए भले ही उसे कितना भी नुकसान उठाना पड़ रहा है पर जो सच है उसके लिए वह अंत तक लड़े लड़ेती रहगी।

माधुरी दीक्षित अपने परिवार के साथ-साथ जो बोते हैं उसे उगते भी साथ साथ ही देखतें हैं

माधुरी दीक्षित ज्यादातर पारिवारिक फिल्में करती रही। पर्सनल लाइफ में भी वे हमेशा अपने परिवार की लाडली रही। पहले मम्मी पापा भाई बहनों की लाडली थी और अब मायके वालों के साथ साथ अपने पति श्रीराम नेने और दोनों टीनएज बेटों की लाडली है। माधुरी के शौक और इंटरेस्ट का ख्याल उनका पूरा परिवार खूब रखता है। जब माधुरी का मन किया फिल्में की और जब मन किया अपनी सुमधुर स्वर में गाना रिकॉर्ड किया। पिछले दिनों माधुरी का मन किया कि वह अपने किचन गार्डन में अपने हाथों से बागवानी करके फल और सब्जियां उगाए तो वह लग गई बागवानी में और उनका हाथ बंटाने परिवार का एक नहीं बल्कि तीन सदस्य जुट गए। वैसे माधुरी को बागवानी का शौक हमेशा से ही रहा है लेकिन पहले इसके लिए वक्त नहीं मिलता था, अब जाकर माधुरी ने अपना शौक पूरा किया और उनके साथ, हाथ बंटाने पतिदेव डॉ श्रीराम नेने और दोनों युवा बेटे लग गए। माधुरी ने कहा, 'अपने परिवार के साथ किचन बागवानी को सेट कर रही हूं, हमें कभी भी अपने शौक और इंटरेस्ट को पूरा करने से खुद को रोकना नहीं चाहिए। माधुरी ने घर की रसोई में इस्तेमाल होने वाली सब्जी भाजी की अपनी सजी हुई बगिया का एक वीडियो भी शेयर किया और कहा, हर चीज के साथ एक नया अनुभव। हम साथ-साथ इन्हें बोते हैं और उगते देखते हैं। सिर्फ यही नहीं, माधुरी के दोनों बेटे भी माधुरी और डॉ नेने की तरह बेहद बुद्धिमान हैं, वे अपनी मम्मी के लिए सबसे बड़े क्रिटिक भी हैं और मॉम के पुरानी फिल्मों को कभी कभार जब देखतें हैं तो बताते हैं कि कहां क्या छूट गया था।

प्रियंका चोपड़ा इस वर्ष की ऑस्कर्स अवॉर्ड घर ले जाएगी?

प्रियंका चोपड़ा को इस वर्ष के ऑस्कर्स में बतौर बेस्ट सपोर्टिंग एक्ट्रेस कैटेगरी के लिए टॉप कंटेंस्टेंट लिस्ट में गिना गया है। हॉलीवुड में यह कयास चल रहा है कि **'बेवॉच'** की एक्ट्रेस प्रियंका, जो हमारी बॉलीवुड फिल्मों की देसी गर्ल सुपरस्टार है, वे इस वर्ष अपनी अपकमिंग ओटीटी फिल्म के लिए यह प्रेस्टीजियस एकेडमी अवॉर्ड घर लेकर जा सकती है। यह फिल्म, अरविंद अडिगा द्वारा लिखित, इसी नाम के उपन्यास पर आधारित है। इसे निर्देशित किया है रामिन बहरानी ने। इस फिल्म में प्रियंका ने जो चरित्र निभाया है वो उसके चाहने वालों ने अब तक कभी नहीं देखा और अभी से यह अटकलें लगाई जा रही है कि यह पूरे वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म तय है।

प्रियंका के साथ-साथ, मेरील स्ट्रीप (फिल्म 'द प्रोम' के लिए), हान येन री (फिल्म 'मिनारी' के लिए), क्रिस्टिन सकॉट थॉमस (फिल्म 'रेबेका' के लिए) और ओलिविया कोलमैन (फिल्म 'द फादर') का भी नाम लिस्टेड है।

अमेज़ॅन प्राइम वीडियो ने आर माधवन और अनुष्का शेट्टी की बहुप्रतीक्षित तेलुगु सस्पेंस थ्रिलर के ट्रेलर का अनावरण किया है!

तमिल और मलयालम में शीर्षक **"सायलेंस"** है, यह एक बहुभाषी थ्रिलर का मनोरंजक ट्रेलर है, क्योंकि यह दर्शकों की जिज्ञासा को बढाता है और किसी साजिश का संकेत देता है "निशब्दम" हेमंत मधुकर द्वारा निर्देशित तथा टीजी विश्व प्रसाद द्वारा निर्मित है और आर माधवन, अनुष्का शेट्टी और अंजलि मुख्य भूमिकाओं में हैं।

भारत में प्राइम वीडियो के प्रमुख सदस्य, और अन्य 200 देशों एवं क्षेत्रों में 2 अक्टूबर, 2020 से तेलुगु, तमिल और मलयालम में अमेज़ॅन प्राइम वीडियो पर विशेष रूप से "निशब्दम" को प्रसारित कर सकते हैं।

अमेज़ॅन प्राइम नवीनतम और एक्सक्लूसिव वीडियो कंटेंट की असीमित स्ट्रीमिंग, फ्री और फास्ट शिपिंग, एक्सक्लूसिव डील्स तक पहुंच, अमेज़ॅन म्यूजिक पर एड-फ्री म्यूजिक, प्राइम के माध्यम से अनलिमिटेड रीडिंग प्राइम गेमिंग के साथ पढ़ना और मोबाइल गेमिंग सामग्री के साथ अविश्वसनीय मूल्य प्रदान करता है और यह सब केवल 129 रुपये में उपलब्ध है!

फिल्म के मोशन पोस्टर के अनावरण से रोमांच पैदा करते हुए, अमेज़ॅन प्राइम वीडियो ने आज **अनुष्का शेट्टी और आर माधवन** की बहुप्रतीक्षित सस्पेंस थ्रिलर "निशब्दम" का ट्रेलर जारी किया। तमिल और मलयालम में साइलेंस शीर्षक वाली फिल्म माइकल मैडसेन की भारत की पहली फिल्म है और इसमें अंजलि, शालिनी पांडे, सुब्बाराजू और श्रीनिवास अवसारला भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। स्ट्रीमिंग सेवा ने फिल्म का एक नया पोस्टर भी जारी किया, जिसमें कलाकारों को अत्याधिक तीव्र रूप में अभिनय करते दिखाया गया है। भारत में प्रमुख सदस्य और 200 से अधिक देशों और क्षेत्रों में अमेज़ॅन प्राइम पर 2 अक्टूबर से शुरू होने वाली फिल्म को स्ट्रीम कर सकते हैं.

सारांश

साक्षी, एक प्रतिभाशाली कलाकार है, जो सुन व बोल नही सकती! वह एक आपराधिक जांच में उलझ जाती है जब वह अप्रत्याशित रूप से एक दुखद घटना का गवाह बनती है, जो की एक विला में घटित होती है। पुलिस जासूसों की एक टीम के साथ मामले की तह तक जाने के लिए एक सूची बनाती है जिसमें एक भूत से लेकर एक लापता जवान लड़की, संदिग्धों में शामिल की जाती है!

"निशब्दम" थ्रिलर होने का वादा करती है और दर्शको को अपने जगह से हिलने तक नही देगी और वो जो दर्शकों को अंत तक सोचने व अनुमान लगाने पर मजबूर कर देगी!

"निशब्दम" प्राइम वीडियो कैटलॉग में दुनिया भर के हजारों टीवी कार्यक्रमों और फिल्मों में शामिल होगी इनमें भारतीय फिल्में 'वी', गुलाबो सीताबो, शकुंतला देवी, पोनमंगल वंधल, एलएडब्ल्यू, सीयू सून, वी, फ्रेंचबिरियानी, सूफियुम सुजातायम और पेंगुइन के साथ-साथ भारतीय मूल की अमेज़ॅन मूल श्रृंखला जैसे बंदिश बैंडिट, 'ब्रीथ इन टू द शैडोस', पाताल लोक, फोर मोर शॉट्स प्लीज, द फैमिली मैन, इनसाइड एज, मेड इन हेवन के साथ-साथ विभिन्न पुरस्कार विजेता और समीक्षकों द्वारा प्रशंसित वैश्विक अमेज़ॅन ओरिजिनल श्रृंखला जैसे टॉम क्लैंसी की जैक रयान, द बॉयज, हंटर्स, फ्लाबैग और द मार्वलस मिसेस मैसेल शामिल हैं। यह सब अमेजन प्राइम मेंबर्स के लिए बिना किसी अतिरिक्त कीमत के उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त सेवा में हिंदी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, पंजाबी और बंगाली में शीर्षक शामिल हैं।

प्राइम मेंबर्स स्मार्ट टीवी, मोबाइल, फायर टीवी, फायर टीवी स्टिक, फायर टैबलेट, ऐप्पल टीवी आदि के लिए प्राइम वीडियो ऐप पर कहीं भी और कभी भी निशब्दम देख सकेंगे। प्राइम वीडियो ऐप में, प्राइम मेंबर्स एपिसोड डाउनलोड कर सकते हैं उनके मोबाइल उपकरण और टैबलेट और बिना किसी अतिरिक्त लागत के कहीं भी ऑफलाइन देख सकते है द्य

प्राइम वीडियो भारत में केवल सालाना Rs 999 या 129 मासिक शुल्क मे प्राइम मेंबर्स के लिए उपलब्ध है, अधिक जानकारी के लिए नए ग्राहक www-amazon-in/prime पर जाकर 30 दिन तक मुफ्त सदस्यता ले सकते हैं।

यह लेख दिनांक 6-11-1977 मायापुरी के पुराने अंक 164 से लिया गया है!

आसमां ही आसमां है, जिनके सामने.... देव आनंद

पन्नालाल व्यास

देव आनंद हीरो हैं, देव आनंद लेखक हैं, देव आनंद निर्देशक हैं, देव आनंद निर्माता हैं, वे पूर्णरूप से फिल्मों में हैं, फिल्मों में न होते तो संभवतः देव आनंद वे देव आनन्द न होते जो आज हैं, उनका कहना है कि "यदि वे किसी अन्य व्यवसाय में होते तो वह सब न होता जो आज है, क्योंकि फिल्म व्यवसाय ही एक ऐसा व्यवसाय है जहां कुछ करने का अवसर मिलता है, और फिर कुछ करने के लिए कोई सीमा नहीं है, बस, आसमा ही आसमां खुला है अपने सामने..."

पर हां, इस मुक्त आसमां पर देव आनंद ने जो उड़ान भरी है, उससे कई प्रश्न भी जुड़े हैं, फिल्म व्यवसाय में जहां हर बात की अनिश्चितता बनी रहती है, जहां परिस्थितियां, सफलताओं एवं असफलताओं के उतार-चढ़ाव के साथ नाम बनता-बिगड़ता रहता है, वहां देव साहब ने पिछले 31 सालों से कामयाबी का बसन्ती चोला धारण कर रखा है, कैसे? और यह कैसे संभव हुआ, कि सन् 1946 से लेकर 1977 तक 80 फिल्मों के वे हीरो बने रहे और अब **टीना** जैसी टीनेजर लड़की के साथ भी काम कर रहे हैं, आखिर उन्होंने किस धातु का कवच ओढ़ रखा है, कि उम्र के तीर भी उसे नहीं भेद पाये और इस बात का क्या रहस्य है, कि हकीकत में 54 से अधिक उम्र पार करने के बाद भी वे पहले की तरह ही रोमांटिक हीरो बने हुए हैं, यह भी क्या विचित्र बात नहीं है, कि समीक्षकों की दृष्टि में वे उच्चकोटि के आर्टिस्ट नहीं रहे पर दर्शकों की दृष्टि में वे हमेशा मन पसंद हीरो बने रहे, आज भी उनकी अधिकांश फिल्मों का प्रारम्भिक आकर्षण (इनीशियल-ड्रा) इतना रहता है, कि वितरकों को घाटा नहीं रहता उसकी वजह ? ऐसी बात भी नहीं है, कि उनकी सारी फिल्में हिट हुई हो, बल्कि कई बार ऐसा देखा गया है कि उनकी बड़ी से बड़ी महत्वाकांक्षी फिल्में भी फ्लाप हो गई, फिर भी निर्माता देव आनंद के चेहरे पर कभी उदासी की छाया तक नजर नहीं आई क्यों? पिछले दिनों उन्होंने हिमालय की 2000 फुट से भी अधिक ऊंचाई की बर्फीली चोटियों पर जहां 'लास्ट हॉराइजन' फिल्म की शूटिंग संभव नहीं हो सकी अपनी स्वप्नकांक्षी फिल्म **'इश्क इश्क इश्क'** की शूटिंग की और काफी खर्चा किया, दुर्भाग्य से फिल्म पिट गई, अन्य कोई निर्माता होता तो शायद अपना दिवाला निकाल कर सर पर हाथ रख कर प्रायश्चित करता पर देव साहब ने उस जबरदस्त हार को भी मुस्कराहट में बदल दिया तो क्या वे असामान्य दर्जे के आदमी नहीं ?

ये सब प्रश्न इस तरह जुड़े हैं, कि उनके जुड़े जवाबों में ही देव साहब का इमेज" उभर आता है. उन्होंने मुझे बताया "मैं बीते कल की ओर ध्यान नहीं देता, अब और इस वक्त, बस यही मेरे मंत्र हैं. मैं उदास नहीं होता यदि फिल्मों में रहते हुए मन भर जाए तो वह व्यक्ति खुद ही समाप्त हो जायेगा. और जब मन जिंदादिल है तो फिर शरीर भी हरा-भरा ही रहेगा न. मैं विश्वास करता हूं अपने में, अपने काम में और अपनी मेहनत में ! मैं दूसरों पर आश्रित नहीं रहता और जिंदगी के एक-एक पल को मीठे फल की तरह चखता हूं, हार होती है, तो भूल जाता हूं और उसी क्षण फिर सैनिक की तरह काम में जुट जाता हूं, हथियार कभी नहीं डालता न डालूंगा. आत्म समर्पण कभी नहीं करता,न करूंगा.!

और मैंने भी उन्हें कई बार शूटिंग करते देखा हैं, ठीक उसी तरह जैसा पिछले बीस सालों से देखता आया हूं, युवकों की तरह वैसी ही तेजी, चुस्ती और फुर्ती **'देस परदेश'** की शूटिंग के वक्त जूनियर आर्टिस्टों के बीच शोर-गुल करते हुए, नाचते हुए, फुदकते हुए और गर्दन मटका कर आंखों से शरारतें करते हुए उन्हें देखा तो लगा पिछले पन्द्रह सालों वाले देव आनंद आज भी वैसे ही कल वाले हैं. सच है देव आनंद ने आज और कल, कल और आज दोनों को मिला कर एक कर दिया है जिसका नाम है, देव आनंद!

इतना ही क्यों रोमांटिक हीरो के रूप में अनेक हीरोइनों के मन

को डगमगाने वाले देव साहब को जब लोगों ने सादगी के साथ उम्र को जीतने वाले कर्मठ कर्मयोगी के रूप में देखा तो आश्चर्य हुआ, वस्तुतः देव आनंद बहुत कम खाते हैं, जो थोड़ा बहुत लेते हैं, विटामिन से भरपूर, शराब भी थोड़ी जैसे डाक्टर की दवा, सिगरेट कभी–कभी, पार्टियों में मचलना बहुत कम, एकांत में योग साधना अध्ययन मनन, मन न लगे तो गुन गुनाना, कल्पनाओं को साकार करने के लिए दिन–रात दौड़–धूप चैन नहीं आराम नहीं, कितना अद्भुत व्यक्ति है यह!

फिल्मी हीरो, लेखक निर्माता–निर्देशक के रूप में भले ही देव आनंद "श्रेष्ठ! न रहे हों पर सबसे अलग–थलग जरूर रहे हैं, उनकी हर फिल्म की कहानी हीरो प्रधान रहती है, और कैमरा मुख्यत उन्हीं के इर्द–गिर्द घूमता है, इस बात की काफी आलोचना भी हुई है पर देव साहब ने इस प्रसंग में बताया "मैं वही कहानी चुनता हूं जो मुझे पसंद आती है, और जो कहानी मुझे पसंद आती है, वह कहानी मेरे चाहने वालों को भी पसंद आती है, जब तक दर्शकों के दिल में मेरे प्रति लगाव है, मैं हमेशा अपनी पसंद की फिल्में अपने दर्शकों की नज़र से बनाता रहूंगा, मैं जानता हूं और अच्छी तरह जानता हूं कि दर्शक मुझे देखने आते हैं!

लेखक–निर्माता–निर्देशक के रूप में भी देव आनंद ने आलोचकों की राय में 'क्लासिकल' फिल्में नहीं दी, यहां तक कि **'गाइड'** जैसी फिल्म में भी उलझ गई, उनकी फिल्मों में देव आनंद टच जरूर रहता है, पर कोई 'महानता' नहीं होती, जब मैंने यही बात उनके सामने रखी तो उन्होंने, अपने! एक टूटे दांत की मोहक–मुस्कराहट के साथ कहा–"मैंने हमेशा नए ढंग की फिल्में बनाई हैं और बड़ा रिस्क लिया है, मेरी फिल्मों में घिसे–पिटे फॉमूले नहीं होते और न मैं अपने दर्शकों की भावनाओं के प्रतिकूल फिल्में बनाता हूं, मैं हर फिल्म में कुछ न कुछ नयापन जरूर रखता हूं, हालांकि मैं जानता हूं, आलोचकों ने मेरी फिल्मों की निंदा की है, पर हां, जब तक दर्शक मेरे साथ हैं, मैं चिंता नहीं करता और न निंदा करने वालों के प्रति

बुरी भावना रखता हूं, यह तो अपना–अपना दृष्टिकोण है, **'माइड' 'प्रेम पुजारी'** सामान्य फिल्में नहीं थी, **'हरे राम हरे कृष्णा' 'जानेमन'** और **'इश्क इश्क इश्क'** भी सामान्य फिल्में नहीं थी, **'तेरे मेरे सपने'** भी आम फिल्म नहीं थी, सच तो यह है कि मेरी हर फिल्म के साथ नया ट्रेड रहा है पर हां, कभी–कभी कहीं न कहीं कुछ गलती रह ही जाती है, फिर भी जोश मेरा कभी ठंडा नहीं होता और न मैं इस बात पर सोचता हूं, कि अब क्या होगा. " जिस दिन मेरी कोई फिल्म फ्लाप होती है, उसी दिन मैं अपनी अगली फिल्म की शूटिंग में व्यस्त हो जाता हूं."

देव साहब की यह भी खूबी रही है, कि जिस हीरोइन ने उनके साथ काम किया उसी के साथ उनका लव अफेयर हो गया, **सुरैया, गीताबाली, कल्पना कार्तिक, नलिनी जयंत, मधु बाला, वहीदा रहमान, जाहिदा, मुमताज, जीनत, रेखा,** आदि सभी हीरोइनों के साथ उनके मधुर रोमांटिक संबंधों की खूब चर्चा रही है, इस पर उन्होंने! टिप्पणी करते हुए कहा–"यह तो पर्सनल एटेचमेंट की बात है, जो प्रोफेशनल एटैचमेंट का फल है–फिर भी इसमें बहुत कुछ सोचने और समझने की जरूरत है, प्राइवेट–एफैयर्स प्राईवेट ही रहें तो अच्छा है,

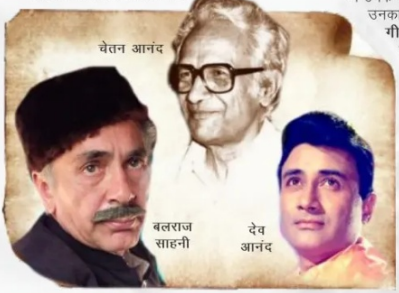

उनकी खुलमखुल्ला चर्चा करना–और उंगली उठाना–मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता, इस पर फिर कभी कुछ बाते करेंगे, "गहराई की बात देव साहब ने प्यार से टाल दी!

देव आनंद–अपने भाई **चेतन आनंद** की तरह रंगमंच से फिल्मों में आए हैं, बस वे पहले गायक बनना चाहते थे, गायक तो नहीं बने परंतु हॉपीपुल्स थियेटर में भूमिकाएं करने लगे, एक बार जुबेदा, नाटक खेला गया जिसके निर्देशक थे, **बलराज साहनी** उस नाटक में देव साहब भी थे, उनकी भूमिका देख कर बलराज साहनी ने कहा–"देव तुम अभिनेता नहीं बन सकते"–पर जब प्रभात फिल्म कंपनी की ओर से **'हम एक हैं'** के लिए हीरो के रूप में उनका चुनाव हुआ तो देव साहब के सभी साथियों की आश्चर्य हुआ, यहीं से, देव साहब को फिल्मी जिंदगी श्री गणेश हुआ, हीरो के रूप में उन्हें पहली बार ख्याति मिली 'जिद्दी' फिल्म से उसके बाद **'गीत' 'शायर', 'अफसर', 'नीली', 'बाजी', 'नादान', 'सनम', 'आँधियाँ', जाल, जलजला, हम सफर, पतिता, बादबान, टैक्सी ड्राइवर, फरार', 'हाउस नंबर 44', 'इन्सानियत', मिलाप', 'मुनीम जी', 'सी. आई.डी', 'फंटूश, पाकेट मार, बारिश, "नो दो ग्यारह, 'पेइंग गेस्ट, कालापानी, 'काला बाजार'**

फिल्म 'हम दोनों'

,"बात एक रात की, "किनारे किनारे', 'हम दोनो' तेरे घर के सामने','गाइड','जॉनी मेरा नाम', 'प्रेम पुजारी','तेरे मेरे सपने','हरे राम हरे कृष्णा' तीन देवियां ,'जानेमन' आदि से उन्हें प्रसिद्ध मिलती चली गई। उनके निर्देशन की पहली फिल्म थी "प्रेम पुजारी" पर चमके 'हरे राम हरे कृष्णा' से!

आज भी देव साहब तरोताजा हैं, वैसी ही थिरकन, वैसी ही बांकापन, वही महकी युवा दिल की ताजी मुस्कराहट, वैसी ही जिदादिली–और वही सब कुछ–जिसका नाम है, देव आनंद.

देव आनंद का कहना है " अभी तो आसमां ही आसमां है मेरे सामने, जो लोग मेरे उम्र की बात करते हैं, वे शायद जिंदगी का सही अर्थ नहीं जानते अभी तो पता नहीं, मेरी मंजिल कितनी दूर है. मैं तो रोज सपने संजोया करता हूं और हर रोज नयी सुबह की नयी किरण के बीच देखता हूं– **आसमां ही आसमां खुला है मेरे सामने..........!**

फिल्म 'बाजी'

फिल्म 'सी.आई.डी'

फिल्म 'फंटूश'

फिल्म 'हाउस नंबर 44'

फिल्म 'तीन देवियां'

फिल्म 'पाकेट मार'

फिल्म 'टैक्सी ड्राइवर'

फिल्म 'जॉनी मेरा नाम'

फिल्म 'तेरे मेरे सपने'

फिल्म 'हरे राम हरे कृष्णा'

Dev Anand Birthday 26th September 1923

Compilation By
Tirath Shah

September 2020

This Is A Medley
Of 9 Video Songs
Composed by
S.D.Burman
For
Dev Anand

S.D Burman Is The
Only Music Director
Who Has Taken
9 Different Singers For
A single Hero
Dev Anand

"Bahe Na Kabhi Nain Se Nir" Film Vidya (1948) Song-Dev Anand-Suraiya

Mukesh

Ye Raat Ye Chandni Phir Kahan Sunja Dil Ki Dastan Film Jaal(1952) Song-Dev Anand-Geeta Bali

Hemant Kumar

Jaayen Toh Jaayen Kahan Film Taxi Driver (1954) -Dev Anand

Talat Mahmood

Dekho Mane Nahi Ruthi Hasina, Film Taxi Driver (1954) -Dev Anand-Kalpana Kartik

Jagmohan Bakshi
Asha

Jeevan Ke Safar Me Raahi Film Munimji (1955) -Dev Anand-Nalini Jaywant

Kishore Kumar

Hum Dum Se Gaye Film Manzil (1960) Dev Anand-

Manna Dey

Dil Ka Bhanwar Film Tere Ghar Ke Samne (1963)
Dev Anand-Nutan

Mohammed Rafı

Wahan Kaun Hai Tera Musafır Jayega Kahan
Film Guide (1965)-Dev Anand

S.D Burman

Honton Mein Aisi Baat Film Jewel Thief (1967)
-Vyjayanthimala-Dev Anand

Bhupinder Singh
Lata Mangeshkar

सहनूर और असीम रियाज ने बहुप्रतीक्षित म्यूजिक वीडियो 'बदन पे सितारे' हुआ रिलीज

—मायापुरी प्रतिनिधि

बिग बॉस फेम असीम रियाज अच्छे लुक के लिए जाने जाते हैं और आकर्षण असीम अपने बहुप्रतीक्षित म्यूजिक वीडियो "बदन पे सितारे" लेकर बड़े पर्दे पर आने को तैयार है। जिसमे उनका साथ ब्यूटीफुल और चार्मिंग सहनूर देने वाली है जिन्हे जी म्यूजिक ने गर्लफ्रेंड सांग के माध्यम से लांच किया था। इस जोड़ी के म्यूजिक वीडियो की खबर के बाद से प्रशंसकों इस वीडियो का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे।

हालही में सॉंग का प्रोमो पस्टर सामने आया था जिसे देख कर फैंस का उत्साह और अधिक बढ़ गया था, इस पोस्टर को खुद सहनूर ने शेयर किया था। जिसके बाद 23 सितम्बर को 'बदन पे सितारे' का टीजर आउट हुआ था और यह रिलीज होते ही यूट्यूब पर ट्रेंड कर रहा है। वीडियो को शेयर करते हुए सहनूर ने कहा "Retro is calling! पेश है आपके लिए साल की सबसे बहुप्रतीक्षित घोषणा टीजर, 'बदन पे सितारे' फिर से दिलों को जीतने के लिए। इसके बाद 25 सितंबर को पूरा गीत रिलीज किया गया। जो लोगो द्वारा काफी पसंद किया गया हैं। अगर इस गीत के मूल ट्रैक की बात करें तो यह गीत फिल्म प्रिंस का था जिसमें शम्मी कपूर और वैजयंतीमाला ने अभिनय किया था। इसे मोहम्मद रफी ने गाया था।

सहनूर यह भी बताया है कि उनका यह गीत स्टेबिन बेन द्वारा गाया जाने वाला है, जिसमे उन्होंने खुद भी अपनी आवाज दी है। जिसको लेकर वह काफी उत्साहित थी। इसके अलावा यह सांग एक बड़े बैनर तले रिलीज किया गया। फैन्स लंबे समय से इसका इंतजार कर रहे थे। सहनूर भविष्य में कुछ और भी रोमांचक परियोजनाओं के साथ नजर आने वाली है।

हिमांश कोहली ने कोविड-19 की लड़ाई जीती, प्रशंसकों उनकी शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद

—ज्योति वेंकटेश

हिमांश कोहली ने कोविड–19 के लिए खुद को नेगेटिव पाया और अब उत्तराखंड के पहाड़ों के बीच थोड़ा ब्रेक पर चले गए हैं। अभिनेता इस महीने की शुरुआत में कोरोनोवायरस के लिए पॉजिटिव पाए गए थे और होम क्वारंटाइन थे। उन्होंने अपने दोस्तों और प्रशंसकों को उनकी शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद दिया। अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर उन्होंने लिखा, "असंख्य संदेशों, डीएम, स्टोरीज आदि के लिए आप सभी का धन्यवाद। जिससे मुझे बेहतर और जल्द स्वस्थ होने में मदद मिली। मैं इस समय अनुपलब्ध रहने के लिए माफी चाहता हूं लेकिन मैं शारीरिक और मानसिक रूप से ड्रेन्ड था। मैं अब बेहतर महसूस कर रहा हूं और कल किए गए कोविड–19 परीक्षण में नेगेटिव आया है।"

उन्होंने आगे कहा, "उन सभी के लिए जो अभी भी कोविड–19 के खिलाफ इस लड़ाई को लड़ रहे हैं, मैं आपकी अधिक शक्ति की कामना करता हूं। बस याद रखें कि एक खुश और स्थिर मन किसी भी चीज से लड़ सकता है। मैं मुक्तेश्वर में थोड़ी राहत की सांस ले रहा हूं और एक सप्ताह यहां रुकने की योजना बना रहा हूं। आशा है आप सभी महान होंगे।" काम के मोर्चे पर, हिमांश, जो 'यारियां', 'रांची डायरीज' जैसी फिल्मों का हिस्सा रहे हैं, अगली बार 'बूंदी रायता' में दिखाई देंगे।

अनु– छवि शर्मा

नटखट सर्फिंग

सुलेना मजुमदार अरोरा

'लन्दन कॉन्फिडेंशियल' की स्पाई बनी मौनी रॉय की सीखें

आखिर मौनी रॉय ने भी 'लंदन कॉन्फिडेंशियल' के साथ डिजिटल दुनिया में डेब्यू कर ही लिया। मौनी रॉय ने अब तक सिर्फ फिल्मों में काम किया था और टेलीविजन में भी चर्चित रही, परंतु अब डिजिटल की दुनिया में कदम रख कर उन्होंने अपने करियर को कुछ और बढ़ावा दिया। 'लंदन कॉन्फिडेंशियल' को लेकर मौनी इसीलिए भी गर्व महसूस कर रही है क्योंकि इस डिजिटल स्पाई थ्रिलर प्रोजेक्ट को आज की कठिन परिस्थिति में पूरा करना कोई हंसी खेल की बात नहीं थी। मौनी बोली, 'जूम' द्वारा बातचीत करना और लंदन में शूटिंग करना सब सही तरीके से पूरा किया गया। इस फिल्म को करते हुए मुझे एक खुशनुमा लिब्रेटिंग अनुभव मिला। ओटीटी के प्रोजेक्ट्स, हम कलाकारों को ज्यादा लेयर्ड चरित्र प्ले करने का मौका देती है, जो हमारे लिए बेहद अद्भुत है। इस थ्रिलर में मौनी एक स्पाई की भूमिका निभा रही है, जो कोरोनावायरस पृष्ठभूमि में बनी है। मौनी कहती है, 'शूटिंग शुरू करने से पहले पूरी यूनिट में एक डर का माहौल था, और प्रथम तीन चार दिन बहुत हतोत्साहित करने वाला लगा। लेकिन जिस तरह से चाक चौकस सेफ्टी मेजर्स लिए गए, वह देखकर सारा डर दूर हो गया। हम सारे टीम मेंबर्स को हर सप्ताह कोविड टेस्ट से भी गुजरना पड़ता था। इन मुश्किलों के दिनों में मौनी ने खुद प्राणायाम, अनुलोम विलोम करना शुरू किया और साथ ही अपने वीडियो द्वारा सबको सिखा भी रही है। बॉलीवुड में जल्द ही उनकी फिल्म 'ब्रह्मास्त्र' रिलीज होने वाली है।

यह खुशमिजाज सी लड़की अलाया एफ, मना रही है जश्न ऑफ फ्रीडम

युवा एक्ट्रेस अलाया एफ, फ्रीडम का जश्न मनाती हुई दिख रही है। नीले लहराते समुद्र तट के करीब, हवा में दोनों हाथों को उछाले हुए कटआउट मोनोकिनी सफेद पोशाक में अलाया कैमरे की तरफ नटखट अदा से मुस्कुराती दिखी। वह पोशाक उनके तराशे हुए बदन पर खूब फब रहा था। अलाया की पॉजिटिविटी इसी में नजर आ रही है कि वह अपने फॉलोअर्स को अच्छे–अच्छे हंसी खुशी से भरपूर फनी वीडियोज और चौंकाने वाली तस्वीरें शेयर करती रहती है। वो नब्बे दशक की मशहूर एक्ट्रेस पूजा बेदी की बेटी और विश्व प्रसिद्ध एक्टर कबीर बेदी की नातिन हैं। अलाया ने हाल ही में फिल्म **'जवानी जानेमन'** से अपना डेब्यू किया था। ये खुशमिजाज सी लड़की अपने को कंफर्ट जोन से बाहर निकालकर हमेशा अपने फैन्स और फॉलोअर्स को एंटरटेन करती रहती है।

सनी लियोन ले रही है बॉलीवुड दंगल 'हल्ला बोल' का मजा!

कोरोनावायरस के डर से सनी लियोन, पूरे परिवार को अपने पंखों तले लपेट, सात समुंदर पार उड़कर अपने एक सीक्रेट डेस्टिनेशन में जंगलों के बीच पहाड़ों की ओट में बने विशाल फार्म हाउस में छुप तो गई लेकिन अब भी बॉलीवुड से जुड़ी खबरों को देखना उनका सर्वप्रथम प्रायरिटी जैसा लग रहा है। वे हर दिन अपने प्राइवेट स्विमिंग पूल में किसी मत्स्य कन्या की तरह घंटों डुबकी लगाती है, खेलती कूदती है, फिर मल–मल कर नहाती है, उसके बाद खाना पीना खा–पीके, डकार मारकर बैठती है टीवी पर चल रहे बॉलीवुड न्यूज़ की हल्ला बोल देखने के लिए, जिसे वह वर्ल्ड ड्रामा का नाम देकर अपना मनोरंजन मान रही है। और वो मानें भी क्यों नहीं? बॉलीवुड की दुनिया में चल रहे बचाव पक्ष तथा विपक्ष के बीच जो तू–तू मैं–मैं की लड़ाई हो रही है उसमें किसी ने जब सनी का नाम घसीटा तो सनी फनफनाना वाजिब है, सनी ने इस बात पर तीखा तंज कसते हुए कहा 'लंच डेट के साथ दुनिया में चल रहे तमाशे का मजा लेना है। बाद में सनी ने यह भी कहा, कितनी अजीब और फनी बात है कि वो लोग जो किसी के बारे में कुछ नहीं जानते वही ज्यादा शोर मचा रहे हैं।

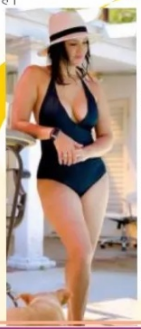

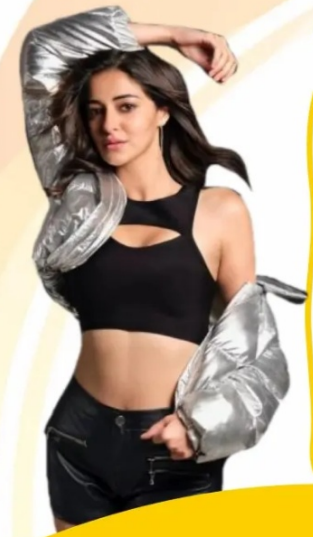

अनन्या पांडे कहती है कि अब सिर्फ आँखियों से गोली मारिंग वाली बात नहीं रह गई!

भारतीय पोशाक में भी, कोई कमसिन, भोली भाली दिखने वाली लड़की कितनी रहस्यमई और नटखट लग सकती है, ये आप अनन्या पांडे की हालिया शेयर की गई तस्वीर से पकड़ सकते हैं। अपनी नवीनतम फिल्म **'खाली पीली'** की एक तस्वीर में अनन्या गुलाबी टॉप पहने, एक आंख दबाएं और दूसरी आंख से हाथों में उठाए राइफल का निशाना लगाते दिख रही है।

उनके चेहरे पर एक व्यंगात्मक मुस्कान भी खेल रही है। एक अन्य तस्वीर में अनन्या राइफल से शूट करने के लिए संघर्ष करती नजर आ रही है और ईशान उनकी मदद करते हुए अनन्या की बाहों को पकड़कर सपोर्ट कर कर रहे हैं। इस मजेदार तस्वीर को उतना ही मजेदार नाम देते हुए अनन्या ने लिखा, 'अब सिर्फ अंखियों से गोली मारिंग वाली बात नहीं रही, शायद ऐसा मैं सोचती हूं, क्योंकि मेरे हाथों में खिलौने वाली बंदूक के बावजूद ईशान को मुझ पर भरोसा नहीं, यानी अनन्या का कहना है कि अब वह जमाना गया जब लड़कियां सिर्फ अंखियों से गोली मारा करती थी क्योंकि अब वे अबला नहीं सबला है। इस आने वाली फिल्म में पहली बार अनन्या एक्शन करती दिखाई दे रही है और वह भी धांसू एक्शन। यह फिल्म पिछले साल सितंबर में फ्लोर पर गई थी और इस वर्ष 12 जून को प्रदर्शित होना तय था लेकिन फिल्म थियेटर्स के बंद हो जाने से अब इसे ओटीटी प्लेटफॉर्म पर दिखाया जाना है।

इलियाना डिक्रूज दुनिया की आपाधापी से दूर, कहती है, 'जी ले अपनी जिंदगी'

जिंदगी को अपने तरीके से जीने के लिए **इलियाना डिक्रूज** किसी की मोहताज नहीं, वह बस जब भी दुनिया की आपाधापी से उकता जाती है तो खुद से कहती है, इलियाना, अब बहुत हुआ, तू जी ले अपनी जिंदगी। और फिर वे कहीं दूर जाकर नेचर की गोद में सब भूलकर खो जाती है। पिछले दिनों इलियाना ने एक बहुत ही आकर्षक और मन मोहने वाली वीडियो शेयर किया, जिसमें वो पानी के साथ जी भर कर खेलती हुई दिख रही है। जल विहार करते हुए उनकी पेडल्लिंग वाली वीडियो इलियाना के फैंस को जीवन की टेंशन और झंझटों से कुछ समय के लिए मुक्ति पाने का लेसन भी दे रही है।

इस प्रेरणादायक वीडियो को इलियाना ने नाम दिया, 'मैं दुनिया की भागदौड़ और जिम्मेदारियों से भाग रही हूं, बाय', पिछले दिनों उन्होंने अपनी कुछ क्यूट बचपन की तस्वीरें भी शेयर की थी। जल्द ही वे अजय देवगन की प्रोडक्शन फिल्म **'द बिग बुल'** में नजर आने वाली है। खबरें उड़ रही है कि यह फिल्म 1992 की सबसे बड़ी सिक्योरिटी स्कैम पर आधारित है।

यह लेख दिनांक 12–10–1995 मायापुरी के पुराने अंक 1100 से लिया गया है

उन्हें आज भी मेरी फिल्मों का इंतजार है... चंकी पांडे

—मायापुरी प्रतिनिधि

फिल्मीस्तान में लगे नरेश मल्होत्रा के सैट पर गोविन्दा, फरहा, राहुल राय, परेश रावल, सईद जाफरी और दिलीप ताहिल के साथ चंकी पांडे थे। लेकिन निर्माता विजय गलानी की अनाम फिल्म में चंकी पांडे काम नहीं कर रहे थे। वो सैट पर शायद गोविन्दा से मिलने आए थे। बढ़ी हुई दाढ़ी और टेंशन वाले मूड को देखकर मैंने ऐसा सोचा कि वो ही चंकी है। जिन्होंने कभी इतिहास बनाने के लिए इंडस्ट्री में कदम रखा था। लेकिन चंकी ने हमेशा अपने कैरियर से ज्यादा दूसरों की बुराई करने सें विश्वास रखा और बुराई से ज्यादा दूसरो का मजाक करने में विश्वास रखा। ठीक उसी तरह जिस तरह शत्रुघ्न सिन्हा करते आये हैं। कहते हैं इंडस्ट्री में बड़बोलो के लिए कोई जगह नहीं छोड़ता है। फिर चंकी ने अपने कैरियर के लिए कभी मेहनत नहीं की उनके सामने ही, आमिर खान, सैफ अली खान, शाहरुख खान आ गए, अक्षय कुमार और सुनील शेट्टी कहां से कहां पहुँच गए और चंकी पांडे को एक तरफ कर दिया गया।

मायापुरी के लिए जब मैंने चंकी पांडे का इंटरव्यू किया। तो चंकी में मैंने कोई बदलाव नहीं पाया। चंकी पांडे ने मुझसे कहा। पत्रकार मेरे बारे में कुछ भी लिखे और लोग मेरे बारे में कुछ भी कहे, लेकिन जहां तक दर्शकों का सवाल है, उन्हें आज भी चंकी पांडे की फिल्म का इंतजार है आज मैं इस मोड़ पर खड़ा हूँ जहाँ लोगों को मुझसे हद से ज्यादा उम्मीद है और ये सच है कि मेरे पास आज बहुत सारी अच्छी फिल्में हैं, इसमें से पहलाज निहलानी, विनय सिन्हा और एक सन्नी देओल के साथ है। मुझे यकीन है 1996 मेरे लिए बहुत अच्छा होगा। मुझे अच्छी फिल्म करनी है, मुझे औरों की तरह 30, 40 फिल्में नहीं करनी है। 10

Happy Birthday

तेजाब

आँखें

लव लेटर

मिट्टी और सोना

नसीब वाला

बुरी फिल्में करने से अच्छा है कि मैं एक शो कर लूं। वैसे भी मैं साल में 4 फिल्में ही करना चाहता हूँ। अच्छी फिल्में करने के चक्कर में मैं इतने दिन खामोश बैठा रहा और लोगों ने कहा कि मेरे पास काम नहीं है। लोग मेरे बारे में कुछ भी कहें, लेकिन ये सच है कि चंकी पांडे एक अच्छा एक्टर है।

☐ "क्या आप इस बात को साबित कर सकते है कि चंकी पांडे एक अच्छा एक्टर है?"

जी हां, बिल्कुल कर सकता हूँ, मैंने पहले 'तेजाब' और 'आँखें' जैसी फिल्म की है। "लेकिन 'तेजाब' और 'आँखें' में तो अनिल... कपूर और गोविन्दा को क्रेडिट जाता है।

यही तो बात है। चंकी पांडे दूसरे हीरो के लिए बहुत लक्की साबित हुआ है। लेकिन खुद के लिए कब लक्की साबित होऊंगा।

☐ लेकिन फिल्म "लव लेटर' में आपके साथ विवेक मुशरान था। आप उसके लिए लक्की साबित नहीं हुए?

"ये एक ऐसी फिल्म है, जिसे पहलाज निहलानी और चंकी पांडे भुला देना चाहते हैं। और अब मैं एक ऐसी फिल्म करना चाहता हूँ, जिसमें मैं अकेला हीरो हूँ। तो उससे पता चलेगा कि मैं कहां खड़ा हूँ।

☐ "असल में आप किस तरह की भूमिका करना चाहते हैं?"

विश्वात्मा

"मैं लाइट भूमिकाएं करना चाहता हूं, क्योंकि लोगों ने मुझे इन भूमिकाओं में पसंद किया है। यदि देखा जाए लो कॉमेडी करना आसान काम नहीं है, इसके लिए 'टाइम सैंस' का होना जरूरी है जो सिर्फ चंकी पांडे के पास है बेशक मैं "नेगेटिव" भूमिका भी करना चाहूँगा। लेकिन इसलिए नहीं कि शाहरुख खान ने नेगेटिव भूमिका की और कामयाब रहा। बल्कि इसलिए कि मैं अपनी इमेज बदलना चाहता हूँ।

☐ "क्या वजह रही कि आपको पहलाज निहलानी के अलावा किसी निर्माता ने रिपीट नहीं किया। राजीव राय ने

साहो

प्रस्थानम

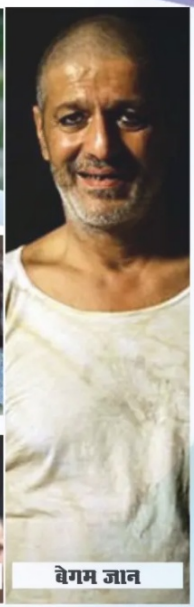
बेगम जान

जवानी जानेमन

हाऊसफुल 4

अभय

भी नहीं किया?"

"मैं ये सोचकर दुखी होना नहीं चाहता कि किसी निर्माता ने मुझे रिपीट क्यों नहीं किया, ये उनकी अपनी वजह रही होगी। जहां तक राजीव राय का सवाल है तो "विश्वात्मा" करते समय बहुत सारी "प्रॉब्लम" आयी जैसे कि मेरे हाथ में "फ्रेक्चर" हो गया । सन्नी को बैक पेन हुआ, किरण कुमार को "टाइफाइड" हो गया और मैं तीन बार सैट पर "लेट" आया । "लेट" आने की मेरी ठोस वजह थी जो मैंने राजीव को बताई थी, लेकिन मुझे राजीव पर पूरा यकीन है कि उसकी फिल्म में मेरे लायक जब भी कोई अच्छा रोल निकलेगा तो वो मुझे जरूर साइन करेगा। मैं औरों की बात नहीं जानता।

मुझे अपने चाहने वालों पर पूरा यकीन है, इतने दिन का जो अंतराल आया, उससे लोग मुझे भूले नहीं है। संजय दत्त साल भर से जेल में है, क्या लोग उसे भूल गए हैं। मुझे फैनमेल रोज आ रही है।"

☐ "बीच में आपकी शादी की खबर फैली थी, क्या ये सच है?"

"ये खबर सच नहीं है, लेकिन ये सच है कि मेरी प्रेमिका अनु मेरे साथ है मेरे साथ रह रही है, मेरे मां–बाप उसे अपनी बहू

चंकी पांडे और शरद पांडे

की तरह मानते है।"

☐ "आप इतने ज्यादा बड़बोले क्यों हैं? क्या आपको कभी इस बात का अहसास नहीं होता कि आपकी बातों से किसी के दिल को ठेस पहुंचती है?"

"चंकी पांडे हमेशा सच बोलता है और सच कड़वा होता है।"

☐ "पिछले दिनों खबर थी कि आपने अंग्रेजी फिल्म की?"

"मेरे दोस्त आर्ट फिल्म कर रहे है और मैं अंग्रेजी फिल्म कर रहा हूँ। मैं बहुत अच्छा एक्टर हूं जो भारत को "रिप्रेजेन्ट" कर रहा है।

शान्तिस्वरुप त्रिपाठी

दीपिका पादुकोण: ड्रग्स का सेवन करती थीं अथवा उनकी अपनी गलतियों के चलते उन्हें फंसाया जा रहा है?

सुशांत सिंह राजपूत की मौत का रहस्य उजागर करने में लगी सीबीआई, ईडी और नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो की जांच कई नाटकीय मोड़ लेती जा रही है। वास्तव में सीबीआई के अलावा 'ईडी' ने सुशांत सिंह राजपूत की मौत के मसले पर धन के लेन देन की जांच करते हुए पाया कि ड्रग्स का एंगल भी इसमें जुड़ा है. तब ''नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो''यानी कि एनसीबी भी मैदान में उतर पड़ा. एनसीबी ने ड्रग्स को लेकर जांच शुरू करते हुए सुशांत सिंह के घर के चारो नौकर, सिद्धार्थ पिठानी, रिया चक्रवर्ती,उनके भाई शौविक आदि से पूछताछ कर कुछ ड्रग्स पैडलरों की गिरफ्तारी भी की. अब तो रिया चक्रवर्ती और उनके भाई शौविक सहित दस लोग न्यायिक हिरासत में हैं।

सूत्रों के अनुसार रिया चक्रवर्ती से पूछताछ के दौरान 'नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो 'के सामने सारा अली खान, रकूल प्रीत सिंह, सिमोन खंबाटा सहित 25 फिल्मी हस्तियों के नाम सामने आए। सुशांत सिंह राजपूत की मैनेजर श्रुति मोदी से जब नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो ने पूछताछ की, तो 'क्वॉन' कंपनी से जुड़ी जया साहा का नाम सामने आया और जया साहा से नारकोटिक्स ब्यूरो ने इस तरह पूछताछ की, कि दीपिका पादुकोण व 'क्वान' की ही करिश्मा प्रकाश सहित कई बड़ी हस्तियों के नाम सामने आ गए। वास्तव में 'क्वान' से जुड़ी हुई करिश्मा प्रकाश, दीपिका पादुकोण की बिजनेस मैनेजर हैं। अब नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो इन सभी को पूछताछ के लिए सम्मन भेज रही है।

दीपिका पादुकोण को पहले 25 सितंबर को पूछताछ के लिए बुलाया गया था। इस पर दीपिका पादुकोण ने 'नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो' को उनके सम्मन का जवाब तो भेजा, इसी के साथ वह गुरूवार की रात गोवा में फिल्म की शूटिंग छोड़कर मुंबई पहुंच गयी। दीपिका को गोवा से लेने के लिए खुद उनके पति रणवीर सिंह गए थे और वह दीपिका के साथ ही लौटे। पर दीपिका पादुकोण की तरफ से मिले जवाब के बाद ''नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो''ने दीपिका पादुकोण को पूछताछ के लिए अब 26 सितंबर को बुलाया है। सूत्रों की माने तो इस तरह की पूछताछ के दौरान आरोपी के साथ उनसे जुड़ा या करीबी इंसान साथ में नहीं रह सकता। **इस सच को जानते हुए भी रणवीर सिंह ने 'नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो से निवेदन किया है कि उन्हे दीपिका के साथ 'एनसीबी' के दफ्तर तक आने दिया जाए। रणवीर ने कहा है कि वह कानून का पालन करने वाले नागरिक हैं और वह जानते हैं कि दीपिका से पूछताछ के समय वह उपस्थित नहीं रह सकते.फिर भी वह चाहते है कि उन्हे दीपिका के साथ 'एनसीबी' कार्यालय के अंदर जाने दिया जाए।हालांकि 'नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो 'ने इस पर कोई जवाब नहीं दिया है।**

दीपिका पादुकोण का नाम सामने आने के साथ ही अब पंजाब के एमएलए मनजिंदर सिंह सिरसा भी करण जोहर के घर पर हुई 2019 की पार्टी का वीडियो लेकर 'एनसीबी' के दफ्तर पहुंच कर जांच की मांग कर दी है।

देखिए, ड्रग्स का सेवन,बिक्री करना व खरीदना सबसे बड़ा जुर्म है।इसके खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। ड्रग्स माफिया का खात्मा होना चाहिए। ड्रग्स जैसे अपराध के लिए सभी को कड़ी सजा मिलनी चाहिए। इसकी जांच की मांग करना भी गलत नही है। पर जिस तरह की टीवी चैनलों पर बयानबाजी हो रही है, उसे भी पूर्णतः सही भी नही ठहराया जा सकता। इस वक्त हर किसी को चाहिए कि 'नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो' को इमानादरी से, बिना किसी भी प्रकार के दबाव में आए काम करने दिया जाना चाहिए। **यहां पर हमें भाजपा प्रवक्ता संबित पात्रा का एक टीवी चैनलों पर दिए गए बयान पर भी गौर करना चाहिए कि अभी जांच एजंसी ने किसी को भी अपराधी घोषित नहीं किया है। मगर जॉच एजेंसी के सामने जो भी व्हाट्सअप चैट सामने आए हैं, उनको लेकर वह पूछताछ कर रही है और हर कलाकार को स्वयं इस पर अपनी बात कहनी चाहिए।**

जी हां!अभी सारा अली खान, रकूल प्रीत सिंह या दीपिका पादुकोण को ''नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो' ने अपराधी नहीं बताया है। इन्हे 2017 व 2018 की व्हाट्सअप चैट के संदर्भ में महज पूछताछ के लिए बुलाया गया है। किसी को भी अपराधी नही ठहराया गया है। मगर कुछ लोग खुलेआम टीवी चैनलों पर आकर इन कलाकारों के साथ ही पूरे बॉलीवुड को अपराधी करार देने पर तुले हुए हैं। यह सभी दावा कर रहे हैं कि बॉलीवुड के नब्बे प्रतिशत लोग ड्रग्स से जुड़े हुए हैं। जब इन्हे यह बात पता थी,तो अब तक यह सभी चुप क्यों थे? वैसे इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि बॉलीवुड में हर खुशी के मौके पर जश्न की पार्टी में शराब जमकर परोसी जाती है। और यह आज से नही बल्कि कई दशकों से होता आया है। ऐसे में जांच एजंसी की तरफ से किसी निर्णय पर पहुंचने तक हर किसी को जांच एजेंसी के साथ सहयोग का रवैया अपनाना चाहिए।

जहां तक दीपिका पादुकोण का सवाल है,तो दीपिका पादुकोण ड्रग्स लेती हैं या लेती थीं, इस सच तो उनसे बेहतर कौन जान सकता है। इसलिए उन्हें 'नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरों के समक्ष सारा सच उजागर करना ही चाहिए।पर जिस तरह की खबरें मिल रही है,उसके अनुसार दीपिका पादुकोण का दावा है कि उन्हे उनकी मैनेजर करिश्मा प्रकाश, जया साहा व 'क्वॉन'कंपनी ने फंसाया है। अब यह सच तो यही लोग बता सकते हैं। यदि ऐसा है,तो भी इसमें दीपिका पादुकोण की ही गलती है।दीपिका पादुकोण की गलती यह है कि वह अपने बिजनेस मैनेजर व पी आर कंपनी पर आंख मूंदकर यकीन कर उनके इशारों पर नाचती क्यों रहीं। बतौर फिल्म पत्रकार हमने स्वयं देखा है कि प्रेस कॉंफ्रेंस ही नहीं बल्कि पत्रकार को इंटरव्यू देते समय भी यह कलाकार अपने मोबाइल फोन अपने 'पी आर' अथवा 'बिजनेस मैनेजर' को पकड़ा देते हैं। हमने तमाम कलाकारों को अपने पी आर और बिजनेस मैनेजर के सामने नतमस्तक होते हुए भी देखा है। कई बार कलाकार को पत्रकारों से दूरी बनाने के लिए भी अपने पीआर या बिजनेस मैनेजर के कंधे पर बंदूक रखकर चलाते देखा गया है। जबकि हर कलाकार चाहे तो हर पत्रकार के बारे में जानकारी रखते हुए उनके संपर्क में रहकर ज्यादा अच्छे ढंग से अपना प्रचार कर सकता है। पर यह ऐसा नही करते। जबकि बीस साल पहले ऐसा नही था। तब कलाकार के पास बिजनेस मैनेजर व पीआर की लंबी चौड़ी फौज नही हुआ करती थी।कई पत्रकार दोस्त बताते हैं कि उसने 'फला' कलाकार को एसएमएस या व्हाट्सअप संदेश भेजा था इंटरव्यू के लिए,तो उसने जवाब भेज दिया कि उनके पीआर से बात की जाए। आखिर एक कलाकार अपने पी आर या बिजनेस मैनेजर पर इतना निर्भर कैसे हो सकता है? उसका अपना विवेक कहां रहता है? बहरहाल,अब जो कुछ सामने आ रहा है,शायद उससे हर कलाकार कुछ सबक सीखेगा।

आज हमें यह सब लिखने की जरुरत इसलिए महसूस हुई, क्योंकि एक वेब पोर्टल को सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार दीपिका पादुकोण ड्रग्स कांड के लिए करिश्मा प्रकाश को दोषी ठहराने के साथ ही अब वह दावा कर रही हैं कि उन्हे 'क्वॉन' कंपनी के साथ काम करने का पछतावा है। दीपिका से जुड़े सूत्रों की माने तो अब दीपिका को अहसास हो रहा है कि करिश्मा प्रकाश के साथ उनके मोबाइल चैट जानबूझकर संग्रहित किए गए थे। बाद में करिश्मा ने अपनी सहकर्मी जया साहा के साथ यह चैट शेयर किए, जिनको लेकर 'नारकोटिक्स सेंट्रल ब्यूरो'जांच कर रहा है। उधर अभिनेत्री की कानूनी टीम का कहना है कि दीपिका को याद नहीं है कि उनके मोबाइल फोन से प्रतिबंधित पदार्थों के बारे में इस तरह की चर्चा हुई थी, क्योंकि वह कभी इस तरह की बातचीत का हिस्सा ही नही रही। अभिनेत्री ने यह भी दावा किया कि उन्हें पता नहीं है कि उनके मोबाइल स्क्रीनशॉट क्यों रखे गए थे।

सूत्रों की माने तो दीपिका ने अपने वकीलों के माध्यम से यह भी दावा किया है कि वह जया साहा को अच्छी तरह से नहीं जानती हैं और क्वॉन टैलेंट एजेंसी के साथ जुड़े रहना उनकी सबसे बड़ी गलती थी। अभिनेत्री ने आरोप लगाया है कि कंपनी के कर्मचारी सेलिब्रिटीज के निजी पलों का गलत इरादों के साथ उपयोग कर रहे हैं।

अब सच क्या है? इसका पता तो तब पता चलेगा जब ड्रग्स मामले की जांच कर रहा ''नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो'' अपने किसी अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचेगा। तब तक हमें इंतजार करना ही होगा।

वैसे मशहूर अंतरराष्ट्रीय स्तर के बैडमिंटन खिलाड़ी प्रकाश पादुकोण की बेटी दीपिका पादुकोण न सिर्फ उत्कृष्ट अदाकारा हैं, बल्कि एक बेहतरीन बैडमिंटन खिलाड़ी भी हैं। उन्होने 14 नवंबर 2018 को अभिनेता रणवीर सिंह के साथ विवाह रचाया था।

• • •

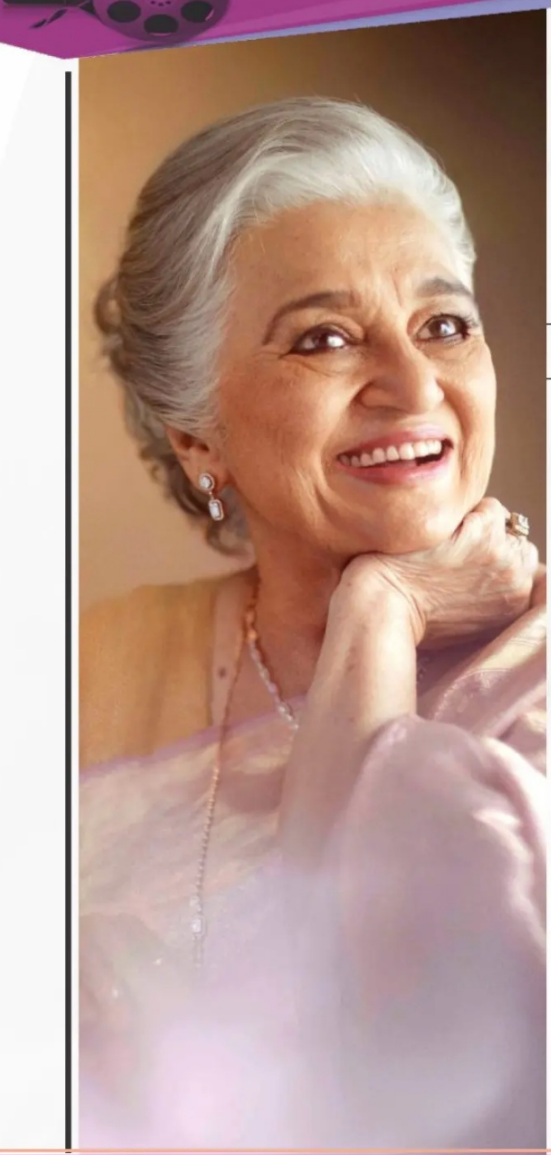

'एक नये रूप की प्रतिभा'

आशा पारेख

–अरूण कुमार शास्त्री

यह लेख दिनांक 8-1-1978 मायापुरी के पुराने अंक 173 से लिया गया है!

हर मनुष्य के हृदय में रोमांस के निर्मल स्त्रोत बहा करते हैं, और वह उसमें डूब कर अपने थके मन और तन की प्यास बुझाता है, जीवन शायद अधूरा होता अगर इसमें रोमांस का गहरा नशा नहीं होता, रोमांस की दुनिया हमारी दुनिया से ज्यादा मुलायम होती है, जहां आठों पहर आदमी एक नर्म जमीन पर सफर करता महसूस करता है, यों आज की फिल्मों में रोमांस के लिए कोई विशेष स्थान नहीं फिर भी यह कोई नहीं कह सकता कि रोमांस का अस्तित्व ही समाप्त हो गया, जिस वक्त फिल्मों से रोमांस की धारा का स्त्रोत सूख जायेगा उस दिन शायद फिल्में प्राणहीन हो जायेंगी और उनका अस्तित्व ही खत्म हो जायेगा, आज चाहे मारधाड़ की फिल्मों का प्रचलन कितना ही तेज हो गया हो,

लेकिन इन फिल्मों में भी **हेमा मालिनी**, **परवीन बॉबी** और **जीनत अमान** की इसीलिए जरूरत महसूस होती है, क्योंकि दर्शकों को सिर्फ एक्शन के दृश्यों से बांध कर नहीं रखा जा सकता, हालांकि फिल्म में रोमांटिक दृश्यों की योजना के बिना फिल्म अधूरी होती है!

60 से 70 तक हिंदी फिल्मों की दुनिया में रोमांस के जिस स्त्रोत का विकास हुआ था, उसके विकास में अभिनेत्री **आशा पारेख** की चर्चा जरूरी है, और आशा पारेख की चर्चा के बिना हिंदी की रोमांटिक फिल्मों का इतिहास ही अधूरा रह जायेगा,

सही तौर पर **"दिल देके देखो"** में शम्मी कपूर के साथ आशा पारेख की अभिनय–यात्रा शुरू होती है, इस फिल्म में एक मोहक नायिका के नशीले अंदाज से दर्शकों को परिचय मिलता है, बड़ी–बड़ी आंखें, मासूमियत में डूबा चेहरा, भोली आवाज और मदभरी चाल के साथ दर्शकों के दिलों में **आशा पारेख** को उतरते जरा भी देर नहीं लगी और यही कारण है, कि उनकी प्रायः हर फिल्म को भरपूर अधिक सफलता प्राप्त हुई. आशा पारेख की उल्लेखनीय फिल्मों में कुछ प्रमुख नाम हैं **'दिल देके देखो'**,**'घूंघट'**, **'छाया'**, **'जब प्यार किसी से होता है'**,**'फिर वही दिल लाया**

हूं', 'तीसरी मंजिल','दो बदन', मेरी सूरत तेरी आँखे, 'जिद्दी','लव इन टोक्यो' ,'नादान' ,'आन मिलो सजना','आया सावन झूमके' ,'महल','कटी पतंग','मेरा गांव मेरा देश', 'हीरा' और 'उधार का सिंदूर' आशा पारेख को बतौर अभिनेत्री नूतन और वहीदा रहमान की तरह संवेदनशील फिल्में नहीं मिली और उनको फिल्मों का कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़ा. लेकिन तात्कालिक तौर पर आशा पारिख ने अपनी फिल्मों के द्वारा अपनी रोमांटिक इमेज का जो सिक्का जमाया वह किसी भी दूसरी अभिनेत्री के लिए संभव नहीं हो सका यह आशा पारेख की बहुत बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है.

'घूंघट','छाया' तथा "जब प्यार किसी से होता है' जैसी ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों में आशा पारेख की शोख अदाएं खूब उभरी, आशा की इन फिल्मों के दीवाने दर्शकों का हाल ही कुछ अजीब होता था. वह अपनी हर फिल्म में नर्तकी के तौर पर भी सामने आई,

आशा के पांवों में घुंघरूओं को छमछमाहट का जादू आज भी बाकायदा कायम है, जब भी पर्दे पर आशा पारेख अपने नायक के साथ रोमांटिक दृश्यों में आई, उन्होंने गजब ढा दिया, उनकी हर अदा में मस्ती का नशा था, उनके हर झटके के साथ दर्शकों का दिल बैठता था,

उनकी हर मुस्कुराहट पर लोग आहें भरते और मासूमियत ऐसी कि आदमी कहीं का नहीं ही रह पाता. शायद ही

किसी अभिनेत्री ने अपने दर्शकों को अपने रोमांटिक अंदाज से इस हद तक मोहित किया हो, आशा पारेख इस रूप में अपवाद ही कही जा सकती हैं,

ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों के बाद जब रंगीन फिल्मों का दौर शुरू हुआ, तो इन रंगों में आशा पारेख का रूप कुछ निखर कर सामने आया **"यादों की बारात"** से पहले तक **आशा पारेख नासिर हुसैन** की हर फिल्म में नायिका रही हैं, और नासिर हुसैन की फिल्मों से अगर आशा पारेख को अलग कर दिया जाये तो शायद सभी फिल्में अधूरी ही रहेंगी, नासिर हुसैन ने अपनी फिल्मों में शुद्ध रूप में रोमांस की धारा बहाई है ,और रोमांस की उस धारा में डूबी आशा पारेख को दर्शकों ने अपने दिलों में बसाया, नासिर हुसैन की हर फिल्म हिट होती रही और हर फिल्म में आशा पारेख की मोहकता का नया रंग दिखाई पड़ता, आशा पारेख की समकालीन जितनी भी अभिनेत्रियां रही हैं उनकी फिल्मों को वह सफलता नहीं मिली जो आशा की फिल्मों को मिली, अगर गौर से देखा जाए तो उन फिल्मों की सफलता में उस फिल्म के गीत–संगीत की अहम् भूमिका मानी जायेगी, यह आशा पारेख के साथ अच्छा संयोग बैठा कि उनकी हर फिल्म का संगीत सुपर हिट हुआ और इसलिए आशा

पारेख का व्यक्तित्व भी गीत–संगीत के रूप में ही घुलकर उतरा, बल्कि कभी–कभी तो लगता है, कि अगर उन चित्रों में आशा पारेख की भगिमाओं का योग नहीं हो तो वे अपना संपूर्ण प्रभाव छोड़ने में पूरी तरह सफल नहीं हो पायेंगे!

आज एक रस्म चल पड़ी है, कि अमुक अभिनेत्री की फिल्म किसी अमुक हीरो के साथ ही चल सकती है, और इसीलिए निर्माता–निर्देशक एक बैतुके गठबंधन के चक्कर में पड़े हैं, लेकिन आशा पारेख ने अपनी फिल्मों में इन सीमाओं का हमेशा ही अतिक्रमण किया, **देव आनंद, सुनील दत्त, शम्मी कपूर, मनोज कुमार, राजेश खन्ना, जॉय मुखर्जी, धर्मेन्द्र, नवीन निश्चल और जितेन्द्र** जैसे प्रायः सभी नायकों के साथ आशा पारेख की फिल्मों ने सिल्वर जुबली मनायी है, आज नायिकाओं की अपनी पसंद होती है, और किसी भी नवोदित अभिनेता के साथ काम करने में उन्हें कठिनाई महसूस होती है, आशा पारेख अपने फिल्म करियर में हमेशा ही इन उलझनों से दूर रही और उन्होंने निष्पक्ष तरीके से सिर्फ अपने काम में ही दिलचस्पी ली. आशा पारेख से इसीलिए किसी निर्माता ने कोई शिकायत की हो यह सुनने में कभी नहीं आया, फिल्मी दुनिया का ग्लैमर किसी अभिनेता अथवा अभिनेत्री को अपने मायाजाल में इस तरह जकड़ लेता है, कि वह अपने नायित्व बोध को ही भूल जाता है, वह यह भूल जाता है कि जिस समाज में वह रहता है, उसके प्रति भी उसका कोई कर्तव्य है, लेकिन आशा पारेख इन मामलों में दूसरों से भिन्न व्यक्तित्व रखती हैं सामाजिक कार्यों में आशा पारेख की दिलचस्पी के बारे में सभी जानते हैं, सांताक्रुज (पश्चिम) में एक अस्पताल अपनी आर्थिक सहायता द्वारा उसे जो विकास दिया है, उसे भूल पाना इस उपनगर के निवासियों के लिए कभी संभव नहीं!

इसके साथ ही फिल्मों में ख्याति प्राप्त करने के बाद भी आशा पारेख का रंगमंच के साथ जो उत्साह है, उसका परिचय हमें अक्सर मिलता रहता है. **योगेन्द्र देसाई** के साथ उनका गीति–नाट्य **"अनारकली"** को न केवल मुंबई बल्कि विदेशों के रंगमंच पर भी अपूर्व ख्याति मिली है, इसीलिए यह दोहराने की जरुरत नहीं कि आशा पारेख एक कुशल नर्तकी भी हैं, और उन्होंने अपनी नृत्यकला का परिचय न सिर्फ फिल्मों में बल्कि रंगमंच पर भी अभूतपूर्व ढंग से दिया है, इस सामाजिक दायित्व के बोध को बहुत कम आभनेत्रियां महसूस करती हैं, लेकिन आशा पारेख इस मामले में दूसरों से अलग हैं!

आशा पारेख की फिल्मों में जहां हमें रोमांटिक अभिनय का चरम विकास मिलता है, वहां हम यह पाते हैं कि संवेदनशील फिल्मों से उनकी दूरी हमेशा कायम रही. यह बात नहीं कि उनमें **नूतन** और **वहीदा** जैसी संवेदनशील अभिनेत्री के बीज मौजूद नहीं थे, **'उपकार'**,**'दो बदन'** और **'कटी पतंग'** जैसी फिल्मों के द्वारा आशा पारेख ने गंभीर अभिनय की बानगी भी पेश की लेकिन निर्माताओं ने शायद फिल्मी बाग की मचलती तितली को इसके लिए अनुपयुक्त समझा,

किन्तु **राज खोसला** कृत **'मैं तुलसी तेरे आंगन की'** में आशा पारेख नए सिरे से अपने गंभीर अभिनय की यात्रा शुरु कर रही हैं, अब तक दर्शकों ने उन्हें ग्लैमर की तस्वीर के रूप में जाना–पहचाना है, लेकिन इस फिल्म के साथ ही आशा पारेख के भीतर छिपी एक नवोदित प्रतिभा का परिचय मिलेगा, आशा पारेख के नवोदित रूप को भी दर्शक पसंद करेंगे! **इसमें कोई शक नहीं**!

मेरा गाँव मेरा देश

तीसरी मंजिल

लव इन टोक्यो

मेरे सनम

मैं तुलसी तेरे आँगन की

महल

कालिया

घूंघट

उपकार

छाया

घराना

राखी और हथकड़ी

जख्मी

एकल अभियान, बनबंधु परिषद द्वारा संगीतमय संध्या 'सुनहरे स्वर' का आयोजन!

एकल अभियान, बनबंधु परिशद के अंर्तगत **'सुनहरे सुर' एक शाम ग्रामिण बच्चों के नाम**, संगितमय कार्यक्रम का आयोजन वनबंधु परिषद की वेबसाईट www.ftsindia.com/fts2020 पर live 19 सितम्बर 2020 को शाम 7 बजे से किया गया। इसमें ख्याति प्राप्त गायिका **सुश्री संजीवनी भिलान्दे** और उनके 3 सह गायकों **श्री संजय सावंत, सर्वेश मिश्रा, प्रशांत नसेरी** द्वारा हिन्दी सनेमा के सुन्हरे समय के गीतों की संगीतमय प्रस्तुति कि गई। वनबंधु परिषद की वेबसाइट पर हुए इस आनलाइन कॉन्सर्ट में संजीवनी जी के साथ 30 संगीतकारों के एक विशाल ऑर्किस्ट्रा ने भी परफॉर्म किया! यह लॉकडाउन के समय का सबसे बडा लाइव ऑर्किस्ट्रा प्रर्दशन था।

इस कार्यक्रम को भारत वर्ष में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी वनबंधु परिशद की वेबसईट और YouTube पर लोगों ने देखा और कार्यक्रम की सराहना की। वर्तमान परिस्थितियों में इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोगों को एकल अभियान के प्रति जागरूक करना तथा ग्रामिणों की सहायता करना था। इस कार्यक्रम को फिल्म अभिनेता श्री **विवेक ओबेरॉय** द्वारा प्रमोट किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य Sponsor Kotak Mahindra bank थे। इसके अलावे देश की अन्य जानी मानी संस्थाओं जैसे Century Ply (I) ltd., Amul Macho, Anmol Biscuits, Lux Cozi, Skipper Limitd, Prism Jewellery, Saraogi Udyog, Tania Industries, Sage University, R.R.Global, और Anand Rathi Group ने भी कार्यक्रम को Sponsor किया। इस कार्यक्रम के दौरान देश और विदेश से लोगों ने एकल विद्यालय के लिए online दान दिया। कुछ लोगों ने संस्था को आस्वासन भी दिया है कि भविष्य में वे इस राष्ट्र निमार्ण के कार्य में अपना सहयोग देगें।

वनबंधु परिशद देश की एक सबसे बडी सामाजिक संस्था है जो विगत 31 वर्षों से आदिवासी समाज के सर्वांगिर्ण विकास के लिए प्रतिबद्ध है। पुरे देश में संस्था के 34 चैप्टर है और एकल अभियान द्वारा वर्तमान में **एक लाख** से अधिक एकल विद्यालयों का संचालन पूरे भारत वर्ष में किया जा रहा है जिसमें करीब 28 लाख बच्चे प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

सलमान खान 3 अक्टूबर 2020 को बिग बॉस 14 में सुपर होस्ट के रूप में आएंगे नजर

—ज्योति वेंकटेश

यह सबसे चुनौतीपूर्ण वर्ष के रूप में बदल जाएगा जब चुनौती दी जाएगी। लॉकडाउन में फंसे, नीरस और ऊब की जंजीरों में जकड़ा हुआ, यह साल 2020, एक साल हो गया है जिसने हमारी सबसे अच्छी योजनाओं की पूरी तरह से बर्बाद कर दिया है! लेकिन अब सबसे शानदार तरीके से मनोरंजन और उत्सव का एक सुपरस्टॉर्म प्राप्त करने का समय है! अब पलटेगा सीन क्योंकि 2020 को मिलेगा जवाब बिग बॉस के साथ। देश के सबसे प्रिय सुपरस्टार सलमान खान आपकी टेलीविजन स्क्रीन पर वापसी करेंगे, वर्ष के सबसे प्रत्याशित शो की मेजबानी करेंगे और यह सुनिश्चित करेंगे कि दर्शकों को अब मनोरंजन के लिए भूखा नहीं रहना पड़ेगा! सामान्य जीवन जीना गृहिणियों का एक ऑल–सेलेब लाइन–अप होगा, जो अपनी दौड़ में भावनाओं और नाटक के दौर से गुजरेंगे। और ठीक है जब हर कोई पहले 14 दिनों में व्यवस्थित महसूस करेगा, तो एक ऐसा मोड़ आएगा जो पूरे खेल को बदल देगा। एंडेमोल शाइन इंडिया द्वारा निर्मित, इस शो का प्रीमियर 3 अक्टूबर को रात 9 बजे केवल कलर्स पर होगा और वूट सेलेक्ट पर स्ट्रीम किया जाएगा।

हिंदी मास एंटरटेनमेंट और किड्स टीवी नेटवर्क, वायाकॉम 18 की हेड नीना एलाविया जयपुरिया ने कहा, "कलर्स पर हमारा प्रयास हमेशा हमारे दर्शकों को निर्बाध मनोरंजन के साथ प्रदान करता रहा है– ताजा और रोमांचक कंटेंट और बिग बॉस साल दर साल इस उद्देश्य के लिए एक वसीयतनामा रहा है। पिछले 6 महीने अभूतपूर्व रहे हैं और यह अप्रत्याशित चुनौतियों और बदलावों के साथ आया है। 'अब पल्टेगा सीन, क्योंकि बिग बॉस देगा 2020 को जावब' के साथ इस सीजन के लिए थीम के रूप में, हमारा उद्देश्य उत्साह को बढ़ाने और दर्शकों को उनकी चिंताओं को भूलना और उनके सामान्य जीवन की याद दिलाना है। अनुभव में इजाफा करते हुए, बिग बॉस के प्रशंसकों को हमारी प्रीमियम वीडियो–ऑन–डिमांड सेवा वूट सिलेक्ट पर टेलीविजन से पहले एपिसोड देखने के साथ–साथ घर में 24 घंटे की एक्सक्लूसिव एक्सेस प्राप्त होगी।

तो, क्या वास्तव में इस साल 'अब पल्टेगा सीन'? अनिश्चितता और अस्पष्टता के साथ, 2020 एक आसान सवारी नहीं है, वर्ष जिसने हमारे जीवन का नेतृत्व करने के तरीके को बदल दिया। जबकि हम में से अधिकांश छह महीने से अधिक समय तक अपने घरों तक ही सीमित रहे हैं, खरीदारी, फिल्में और सैलून अब एक दूर के सपने की तरह लग रहे हैं। इसलिए, इस साल, बिग बॉस 14 में अलग–अलग क्षेत्रों की हस्तियों को एक छत के नीचे एक साथ आने और अपने 'एक जमाने में' सामान्य जीवन जीने का मौका मिलेगा। अपनी तरह के पहले जोड़ में, बिग बॉस 14 एक सैलून और स्पा, एक मूवी थियेटर, की विलासिता का परिचय देता है, और एक दूसरे के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करने के लिए कुछ रोमांचकारी और मस्ती भरे कार्यों के साथ प्रतियोगियों के लिए एक शॉपिंग मॉल भी हैं। लेकिन यह सब उनके लिए आसान नहीं होगा उन्हें इसे अर्जित करना होगा। रोमांच में इजाफा करते हुए, कुछ सबसे पसंदीदा पूर्व प्रतियोगी– सिद्धार्थ शुक्ला, गौहर खान और हिना खान भी इस सीजन को मनोरंजन का प्रतीक बनाने वाले प्रतियोगियों के लिए आश्चर्य की एक सीरीज लाएंगे। क्या वे घर में प्रवेश करेंगे? वे गृहणियों के जीवन को कैसे प्रभावित करेंगे? यह तो केवल टाइम ही बताएगा।

हिंदी मास एंटरटेनमेंट, वायाकॉम 18, की चीफ कंटेंट ऑफिसर मनीषा शर्मा ने कहा, "यह बिग बॉस का एक अनोखा सीजन है– महामारी ने हमारे

दैनिक जीवन को अस्त–व्यस्त कर दिया है और बिग बॉस के साथ हम अपने उपभोक्ताओं के जीवन में कुछ सामान्य होने की भावना को वापस लाने का प्रयास करते हैं, 'अब सीन पलटेगा' को सही मायने में पूरा करने के लिए। बिग बॉस के प्रत्येक सीजन के साथ, हमने अपने दर्शकों के लिए इसे और अधिक आकर्षक और मनोरंजक बनाने के लिए नए और नए तत्वों और विषयों को पेश किया है और इस वर्ष कोई अपवाद नहीं है। बिग बॉस का घर एक सामान्य परिदृश्य को फिर से परिभाषित करेगा जिसे हम सभी एक सैलून और स्पा, मूवी थियेटर और प्रतियोगियों के लिए शॉपिंग मॉल की सुविधाओं के समावेश के साथ मिस कर रहे हैं। हमने पिछले सीजन में सभी व्यूअरशिप रिकॉर्ड तोड़ दिए। इसलिए आगे देखने के लिए बहुत कुछ है। इस साल भी हम अपने दर्शकों को एक रोलर कोस्टर राइड पर ले जाने की योजना बना रहे हैं और शो में पहले 14 दिनों में एक बड़ा मोड़ आएगा और कुछ सुपर एक्साइटिंग होगा। रोमांच प्रतियोगियों की लाइनअप के रूप में कई गुना बढ़ जाएगा और विभिन्न विशेषताओं को वे अपने साथ लाते हैं, निश्चित रूप से एक ग्रेट फैमिली और फ्रेंड सर्किल कन्वर्सेशन बन जाएगा। सलमान खान, जो सबसे अधिक मेजबान रहे हैं, फिर से वापस आ गए हैं और हम उत्साह को कम करने का इंतजार नहीं कर सकते।

होस्ट सलमान खान ने कहा, "जैसा कि हमें जीवन के नए तरीके की आदत है, मुझे खुशी है कि बिग बॉस के साथ फिर से आप में से हर एक का मनोरंजन करेंगे। बिग बॉस जैसी बड़ी संपत्ति न केवल नॉन–स्टॉप मनोरंजन का वादा करती है, बल्कि सैकड़ों लोगों को नौकरी के अवसर भी प्रदान करती है– वर्तमान परिदृश्य में दोनों की बहुत आवश्यकता है। जबकि इस वर्ष हम अभूतपूर्व समय में एक साथ लड़ते हैं, हम एक तनावपूर्ण जीवन में कुछ उत्साह लाने की उम्मीद करते हैं। तो, बिग बॉस के साथ एक्शन और ड्रामा की धमाकेदार यात्रा पर जाने के लिए अपने घरों को न छोड़ें, वापस बैठें और कमर कसले।"

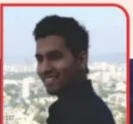

मोबाइल प्रीमियर लीग (एमपीएल) के सीनियर वीके प्रेसिडेंट, अमिषेक माधवन ने

कहा, "वर्षों से, बिग बॉस ने दर्शकों के साथ एक उत्कृष्ट संबंध स्थापित किया है और खुद को समर्पित प्रशंसकों का एक बड़ा आधार अर्जित किया है। संपत्ति के साथ हमारा जुड़ाव हमें उन दर्शकों तक पहुंचने और शो के माध्यम से उनके साथ जुड़ने का एक बड़ा अवसर देता है। बिग बॉस की तरह ही, हमारा ऐप भी एक विशाल दर्शक आधार को पूरा करता है जो इसे एक परफेक्ट फिट बनाता है।"

एंडेमोल शाइन इंडिया के सीईओ अमिषेक रेगे ने कहा, "एंडेमोल शाइन इंडिया ने वर्षों में बिग बॉस के साथ कई रिकॉर्ड तोड़े हैं! इस शो ने खुद को भारत के सबसे बड़े रियलिटी प्रोग्राम के रूप में स्थापित किया है, जिस पर हमें बेहद गर्व है। इस वर्ष हमने जिन चुनौतियों का सामना किया है, उन्हें देखते हुए, हमने कलाकारों और चालक दल के स्वास्थ्य, सुरक्षा, और स्वच्छता के लिए हर संभव सावधानी बरती है। इस सीजन के प्रतियोगियों को एक अवधि के लिए संगरोध में रहने की आवश्यकता होगी और घर के अंदर जाने से पहले इसका परीक्षण किया जाएगा। शो की विषयवस्तु घर के तत्वों में भी प्रदर्शित होगी जो प्रतियोगियों को सामान्य स्थिति का एहसास दिलाएगी। हम कलर्स के साथ अपनी लंबी साझेदारी को आगे बढ़ाने और अभी तक एक और रोमांचक नए सीजन के लिए तत्पर हैं।"

सीजन के अभियान पर ध्यान केंद्रित करते हुए– 'ब पलटेगा सीन, क्योंकि बिग बॉस देगा 2020 को जावब', चैनल की योजना डिजिटल फ्रंट पर भारी पड़ने की है। बिग बॉस के मेम्स की दीवार पर माइक्रोसाइट लगाने और यूजीसी के म्यूजिक वीडियो–आधारित होने से पहले कभी भी घर का खुलासा नहीं हुआ, यह बिग बॉस के प्रशंसकों के लिए एक सुखद अनुभव होने वाला है। कई फर्स्ट में जोड़ना फेसबुक शॉर्ट्स भी होगा, प्लेटफॉर्म द्वारा एक नई सुविधा, और बिग बॉस ऑडियो ट्वीट जिसमें प्रसिद्ध बिग बॉस संवाद शामिल होंगे। पिछले सीजन की यात्रा पर कब्जा करने और दर्शकों को स्मृति लेन पर ले जाने के लिए बिग बॉस वीडियो एल्बम भी लॉन्च किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, टचून–इन को चलाने के लिए वॉयस रिकॉग्निशन और प्रासंगिक विज्ञापन

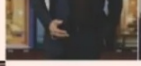

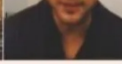

विभिन्न प्लेटफार्मों में उपयोग किए जाएंगे। मार्केटिंग के मोर्चे पर, न केवल नेटवर्क पर बल्कि अन्य चैनलों पर भी बिग बॉस के लिए हाई फ्रीक्वेंसी प्रोमो के भारी विस्फोट के साथ–साथ समाचार, संगीत और क्षेत्रीय चैनलों पर उच्च आवृत्ति का प्रचार भी किया जाएगा।

सरकार द्वारा जारी किए गए सभी सुरक्षा मानदंडों और दिशानिर्देशों का पालन करते हुए, चैनल और प्रोडक्शन हाउस एक स्वस्थ कार्य वातावरण को बढ़ावा देने के लिए प्रतियोगियों और चालक दल के सदस्यों के लिए अत्यधिक सावधानी और आवश्यक सावधानी बरत रहे हैं। प्रतियोगियों को 15–दिवसीय संगरोध से गुजरना होगा जिसके बाद घर में प्रवेश करने से पहले उनका परीक्षण किया जाएगा। सुरक्षा को बनाए रखने के लिए घर की सफाई और सैनिटाइज की जाएगी। इसमें चौबीसों घंटे चिकित्सा सहायता के अलावा प्रतियोगियों और चालक दल के सदस्यों के लिए नियमित तापमान की जाँच होगी। क्रू मेंबरों की समान संख्या को सीजन के लिए रखा जाएगा, लेकिन वे शिफ्टों में काम करेंगे, इसलिए सेट पर केवल कुछ लोगों ही होंगे। हर विभाग के लिए न्यूनतम से संपर्क रखने के लिए स्पेशल जोन बनाए गए हैं। आसान पहुंच के लिए अलग–अलग पॉइंट पर हैंड सैनिटाइजर लगाए जाएंगे। बिग बॉस के साथ मनोरंजन, उत्साह और ड्रामा को अनलॉक करें, यह 3 अक्टूबर 2020 से शुरू होगा और हर सोमवार से शुक्रवार रात 10:30 बजे और शनिवार–रविवार रात 9 बजे सिर्फ कलर्स और वूट सेलेक्ट पर प्रसारित होगा तो देखना बिलकुल न भूलें।

अनु– छवि शर्मा

शाह परिवार ने अनुपमाँ में 'शुभारंभ' का लोकार्पण किया

– ज्योति वेंकटेश

बहुत सारी अराजकता और नाटक के बाद, अनुपमा राहत की सांस ले सकती है क्योंकि उसकी सारी मेहनत और बलिदान आखिरकार भुगतान बंद हो गए। उनका बेटा परितोष अपनी महिला प्रेम किंजल के साथ एकजुट हो रहा है, और अनुपमा अधिक खुश नहीं हो सकती। और यह शाह परिवार में एक बड़े उत्सव का समय है। आगामी एपिसोड में, दर्शक किंजल और उसके परिवार का स्वागत करते हुए शाह को देखेंगे और वे "काई पो चे!" से लोकप्रिय ट्रैक "शुभारंभ" के लिए भी थिरकते दिखाई देंगे। वे परितोष और किंजल के गोधन का जश्न मना रहे हैं।

अपने जातीय रूप में सबसे अच्छा, यह राजन शाही की टीम "अनुपमा" को देखने के लिए एक खुशी है। यहां तक कि काव्या उत्सव का एक हिस्सा है और साड़ी में आश्चर्यजनक दिख रही है।

लेकिन पिछले कुछ एपिसोड और वनराज और काव्या से संबंधित चल रहे नाटक को देखकर दर्शकों को किंजल की माँ राखी द्वारा कुछ नाटक देखने को मिल सकते हैं, या हो सकता है कि अनिरुद्ध अंदर घुस आए, या हो सकता है कि हम अनुपमाँ को पूरे समय आनंद लेते और चेक समय देते हुए देखेंगे। यह जानने के लिए कि आपके पसंदीदा शो "अनुपमाँ" अपकमिंग एपिसोड को देखना न भूलें। राजन शाही और उनकी मां दीपा शाही द्वारा निर्मित उनके बैनर शाही प्रोडक्शंस प्राइवेट लिमिटेड के तहत, "अनुपमाँ" में रूपाली गांगुली, सुधांशु पांडे, मदलसा शर्मा, रुशद राणा, आशीष मेहरोत्रा, पारस कलनावत, निधि शाह, अल्पना बुच, तसिना शेख और अरविंद वैद्य शामिल हैं। यह शो स्टार प्लस पर रात 10 बजे प्रसारित होता है।

अन– छवि शर्मा

डिस्कवरी के शो 'इनटू द वाइल्ड विथ बीयर ग्रिल्स एंड अक्षय कुमार' ने इतिहास रचा हैं

—ज्योति वेंकटेश

डिस्कवरी इंडिया की ओरिजिनल आईपी 'इनटू द वाइल्ड विद बीयर ग्रिल्स एंड अक्षय कुमार' इंडिया के टीवी चार्ट पर इतिहास रच रहा है। इस यात्रा की शुरूआत 'मैन वर्सेज वाइल्ड' विद बियर ग्रिल्स और पीएम मोदी के एक स्पेशल एडिशन से हुई, जिसे साल के टीवी इवेंट के रूप में प्रस्तुत किया गया। 'इनटू द वाइल्ड विथ बीयर ग्रिल्स एंड सुपरस्टार रजनीकांत', इसके बाद और इस साल की शुरूआत में, प्रीमियर के समय ब्रांड नई फ्रैंचाइजी के लिए रिकॉर्ड टीवी रेटिंग और दर्शकों की संख्या पैदा करते हुए, भारत और अन्य बाजारों में अपार उत्साह पैदा कर रहा था। और अब, इनटू द वाइल्ड के नवीनतम एपिसोड में, अक्षय कुमार ने इस वर्ष की शैली में सबसे ज्यादा देखे जाने वाले शो के लिए एक नया रिकॉर्ड बनाया है और साथ ही साथ यह इन्फोटेनमेंट जॉनर के इतिहास में दूसरा सबसे ज्यादा देखा जाने वाला टीवी शो बन गया है।

12 डिस्कवरी नेटवर्क चैनलों पर 14 सितंबर को रात 8:00 बजे ओरिजिनल टेलीकास्ट के मुख्य आकर्षण रहें।

डिजिटल प्रीमियर

उत्साह डिस्कवरी प्लस ऐप के साथ–साथ 'इन द वाइल्ड विद बीयर ग्रिल्स और अक्षय कुमार' के साथ आज तक ऐप पर सबसे ज्यादा देखे जाने वाले शो के रूप में उभर रहा है। इस शो ने मंच पर अन्य शो की तुलना में प्रति दर्शक 1.7 गुना अधिक समय भी खर्च किया। लॉन्च सप्ताहांत में, डिस्कवरी प्लस इंडियन गूगल प्ले स्टोर पर रु1 ट्रेंडिंग ऐप और ऐप्पल ऐप स्टोर पर रु 2 एंटरटेनमेंट ऐप था। डिस्कवरी प्लस ने प्ले स्टोर पर 5मिलियन+ माइलस्टोन भी पार किया क्योंकि मार्च 2020 में लॉन्च होने के बाद से इसने अपनी मजबूत वृद्धि बनाए रखी।

सोशल बज

शो ने सोशल मीडिया पर "#KhiladiOnDiscovery" के साथ 1.31 बिलियन व्यक्तियों तक पहुँचने के लिए 2.9 बिलियन इंप्रेशन (सोसर्रू मेल्टवाटर प्राइवेट लिमिटेड से प्राप्त डेटा आधार अनुमान) के साथ बड़ी चर्चा की। 'इनटू द वाइल्ड विद बीयर ग्रिल्स और अक्षय कुमार' ने प्रीमियम विज्ञापनदाताओं को आकर्षित किया। शो को बायजू द्वारा प्रस्तुत किया गया, पॉलिसीबाजार.कॉम और फोन पे द्वारा सह–संचालित किया गया, एलआईसी, किआ मोटर्स और स्पॉटिफ ने भागीदारी की, जबकि शिखर, हार्पिक और किर्लोस्कर एसोसिएट स्पोंसोर्स थे।

'इनटू द वाइल्ड विथ बीयर ग्रिल्स' एक नया प्रारूप है जो 'मैन वर्सेज वाइल्ड' से प्रेरित है, जो दुनिया में सबसे ज्यादा देखे जाने वाले विल्डरनेस सर्वाइवल टेलीविजन सीरीज में से एक है। पिछले साल, 'मैन वर्सेज वाइल्ड विद बीयर ग्रिल्स एंड पीएम मोदी' एपिसोड ने भारतीय मीडिया परिदृश्य को बाधित कर दिया, जिसने खुद को साल के टीवी इवेंट के रूप में स्थापित किया। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी से परे, बीयर ग्रिल्स ने अतीत में प्रमुख हस्तियों की मेजबानी की है जैसे कि तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा, रजनीकांत, केट विंसलेट, रोजर फेडरर, जूलिया रॉबर्ट्स आदि।

अनु– छवि शर्मा

यह लेख दिनांक 6-2-1977 मायापुरी के पुराने अंक 125 यादों के दायरे से लिया गया है

लता मंगेशकर

—जैड़.ए.जौहर

आज कभी-कभार एक ही फिल्म में नायक रूप के गाने एक समय में आप तीन-चार आवाजों में सुनते हैं, यह सब इस लिए होता है, कि आज प्ले बेक सिस्टम प्रचलित है, अन्यथा एक जमाना था, कि हीरो और अन्य पात्र अपने गाने अपने आप ही गाते थे, उस समय यह नहीं देखा जाता था, कि गाने वाले की आवाज सुरीली है, या बेसुरी इसके कारण काफी परेशानी भी होती थी, किन्तु इसका समाधान 1935 में कोलकाता की न्यू थियेटर्स कम्पनी ने ढूंढ निकाला जिसका श्रेय रिकार्डिस्ट मुकुल बोस (जो निर्देशक नितिन बोस के भाई हैं, बी.आर. साउंड एण्ड म्यूजिक के इंचार्ज हैं) को जाता है!

उन दिनों जबकि प्ले बैक सिस्टम चालू नहीं था., कमरामैन को काम करने में काफी परेशानी होती थी, बार-बार डिस्टर्ब होता था, शूटिंग के समय कोई कलाकार पूरी लाइन नहीं गा पाता था, जिसके लिए गीत को टुकड़ों-टुकड़ों में फिल्म बन्द करके जोड़ना पड़ता था, किंतु मुकुल बोस ने पूरा गीत पहले रिकार्ड करके गाने वाले कलाकार को केवल होंठ हिलाने का अवसर दिया और इस प्रकार पूरा गीत फिल्म बन्द होने लगा और उनका यह प्रयोग सफल रहा, इस प्रकार न्यूथियेटर्स की फिल्म 'धूप छांव' जिसकी कहानी सुप्र सिद्ध कहानीकार स्व.पडित सुदर्शन ने लिखी थी. (जिनके सुपुत्र **पंडित गिरीश** आज भी फिल्मी लेखक के रूप में फिल्म लाइन में हैं) से हुआ. जिसमें हीरो **शायद सहगल** थे, जिनका गीत तेरी गठरी में लागा चोर, मुसाफिर जाग, बड़ा प्रसिद्ध हुआ था,

गाना पहले रिकार्ड करके पिक्चराइज करने से निर्देशकों को काफी सहायता मिलती है इसका एक किस्सा फिल्म **'अमर'** की शूटिंग के जमाना का है, स्व.महबूब खान अपनी फिल्म 'अमर' की शूटिंग कर रहे थे जिसमें **मधुबाला** पर वह एक गाना फिल्मा रहे थे, उसकी सिचुएशन कुछ इस तरह थी, कि **दिलीप कुमार, मधुबाला** के घर में रहने के लिए तैयार नहीं होता और वह उसे गुस्से में छोड़कर चला जाता है,

मधुबाला उसे जाता हुआ देखकर गाती है,

"जाने वाले से मुलाकात न होने पाई,
दिल की दिल में ही रही बात न होने पाई!

सब लोग यह देखकर कि गाना गाते-गाते मधुबाला बुरी तरह से रो रही है, आश्चर्य में पड़ गए. माहौल बड़ा गंभीर हो गया, मधुबाला को रोना तो था, किन्तु इसकी आशा न थी, कि वह गाने में डूब कर इस प्रकार रोयेगी की असलियत

महसूस होने लगेगी, महबूब ने यह देखा तो मन ही मन मुस्करा उठे. क्योंकि इससे उनका सीन बड़ा प्रभावशाली बन रहा था, किन्तु इसका गीत खत्म होने के बाद वह यह देखकर और भी हैरान रह गए कि मधुबाला का दर्द फैलकर

सेट पर मौजूद तमाम लोगों में बंट गया है, क्योंकि दिलीप कुमार जो कि संगीत का बड़ा शौकीन है, हाथ से ताल दे रहे थे, और उनका सहायक महरीश का मुंह **नौशाद** की प्रशंसा करते नहीं थक रहा था नौशाद ने कमाल कर दिया. "अंग्रेजी संवाद लेखक **जुल्फिकार वेलानी** कह रहा था—मैं बाजार में आने पर यह रिकार्ड जरूर खरीदूंगा, शकील बदायूंनी जिन्होंने यह गीत कुछ मिनटों में लिखा था और रिकार्ड होने के पश्चात सुन न सके थे. गीत सुनकर इस कदर आत्म विभोर हो गए कि उनकी आंखों में आंसू आ गए और सेट पर रुकने की बजाय वह सीधे घर चले गए!

यह तो याद होगा ही कि 'अमर' का यह अमर गीत **लता मंगेशकर** ने गाया था, और इसमें **दिलीप कुमार, मधुबाला** के अलावा **निम्मी** और **जयंत** ने भी लाजवाब अभिनय किया था. फिल्म बॉक्स आफिस पर सुपर हिट तो नहीं हुई थी, किन्तु वह एक शानदार फिल्म थी, हो सकता है हिट इस लिए न हुई हो कि पहले इसमें मीना कुमारी हीरोइन थी किन्तु कुछ गलत—फहमियों के कारण महबूब खान ने उसे फिल्म से अलग कर दिया था इस लिए शायद उसकी हाय लग गई थी.

आज **लता मंगेशकर** का नाम स्वर कोकिला के तौर पर विश्व—विख्यात है, किन्तु वह पहले गायिका नहीं बल्कि अभिनेत्री के रूप में आई थी, और **राज कपूर** को फिल्म **'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्'** में किसी जमाने में—वही हीरोइन का रोल करने वाली थी, क्योंकि कहते हैं कि उसकी कहानी लता के जीवन से मिलती—जुलती है (हालांकि राजकपूर ने इस बात का खन्डन किया है) बात चाहे जो हो किन्तु यह तो सिद्ध हुआ न

कि लता में नायिका बनने की क्षमता भी है. और वास्तव में उसने प्रभात फिल्म कम्पनी को हिन्दी और मराठी फिल्मों में बतौर अभिनेत्री हो अपना करियर शुरू किया था. किन्तु गाने का शौक उसे बचपन से था. इसलिए वह प्रायः सेट पर आते—जाते गीत गुन—गुनाया करती थी, एक दिन वहां **नौशाद** ने लता को गुन—गुनाते हुए सुन लिया, उसकी मधुर आवाज ने नौशाद को बड़ा प्रभावित किया. नौशाद ने तुरंत लता से कहा. तुम फिल्मों में गाना शुरू कर दो. तुम्हारा भविष्य उज्जवल है, और इस प्रकार लता को पार्श्व गायिका बनने की प्रेरणा मिली. अगर उस दिन नौशाद से लता को प्रेरणा न मिलती तो आज कोकिला कंठी लता शायद अभिनय ही कर रही होती!

लता मंगेशकर और आशा

लता मंगेशकर और दिलीप कुमार

मोहम्मद रफी और लता मंगेशकर

लता मंगेशकर और मदन मोहन

लता मंगेशकर, एस.डी.बर्मन आर.डी.बर्मन

लता मंगेशकर, बप्पी लहिड़ी और किशोर कुमार

लता जी को लेकर एक किस्सा बहुत ही मशहूर है, जिसे आप सब पाठक ज़रूर जानना चाहिए, जिसे जानकर आप खुद कहेंगे कि लता जी जैसी हस्ती दुनिया में विरले (सबसे अलग) ही होती हैं।

यूं तो लता जी को सुर सम्राज्ञगी कहा जाता है। लेकिन इसके पीछे भी एक कहानी है, तो हुआ यूं उन दिनों जब फिल्में बनना शुरू हो रही थी, और सिनेमा जगत बॉलीवुड की ओर अपनी गति तेज कर रहा था, तब एक नाम था **सेठ चन्दू लाल शाह** जोकि फिल्मी दुनिया के बहुत बड़े प्रोड्यूसर हुआ करते है। फिल्मों में उनका सिक्का चलता था।

खेम चंद प्रकाश जोकि उन दिनों के जाने माने म्यूजिक कंपोजर हुआ करते थे। वो सेठ चन्दू लाल शाह के पास एक लड़की की ऑडियो लेकर उनके पास आए और लड़की की आवाज उन्हें सुनाई। **शाह साहब** ने जब वो आवाज सुनी तो उन्हें वो आवाज कुछ रास नहीं आई और उन्होंने तुरंत बोल दिया 'ये आवाज तो बहुत पतली है, कौन सुनेगा इसे'। इस बात से खेम चन्द प्रकाश मायूस हो गए, लेकिन उन्हें इस बात का यकीन था, कि ये आवाज जब तक रेडियो रहेगा और ये फिल्मी दुनिया रहेगी ये आवाज हमेशा सुनी जायेगी। और वो निराश होकर वहां से लौट आये।

कुछ महीने बीते 1949 में फिल्म **'महल'** रिलीज हुई, जिसके म्यूजिक डायरेक्टर खुद खेम चन्द प्रकाश थे, और इस फिल्म के सभी गीत सुपरहिट हुए लेकिन उनमें सभी गीतों में एक गाना **'आयेगा...आयेगा आने वाला'** सबसे ज्यादा पसंद किया गया।

रेडियो में ये गीत तहलका मचाने लगा, रेडियो कंपनी के पास उस आवाज के लिए फोन आने लगे! ऐसे रेडियो कंपनी खुद परेशान हो गई कि आखिर किया क्या जाये, बाद में उन्होंने लोगो की रिक्वेट पर म्यूजिक रिकॉर्ड कंपनी से सिंगर का नाम पूछा, आप यकीन नहीं करेंगे वो नाम था **'लता मंगेशकर'** जी हां **लता मंगेशकर!**

वैसे इस दुनिया में कुछ भी हो सकता है। कोई डॉक्टर बनना चाहता है और बन जाता है इंजीनियर ऐसा ही कुछ **लता जी** और **दुनदुन** के साथ भी हुआ था। लता जी फिल्मों में एक्टिंग करना चाहती थी, और दुनदुन सिंगर, वक्त ने ऐसा पासा पलटा कि लता जी बन गई गायिका और दुनदुन बन गई अभिनेत्री।

'आयेगा...आयेगा आने वाला' फिल्म 'महल' (1949)
मधुबाला–अशोक कुमार

ऐसी अनेकों बातें हैं लता जी के बारे में बात करने के लिए उसके लिए पन्ने कम पड़ जायेंगे।

लता जी की जन्मदिन पर मायापुरी परिवार की ओर से आपको ढेरों बधाई।

ओ टीटी प्लेटफार्म ''जी प्लैक्स'' पर फिल्म ''खाली पीली'' देखने के लिए चुकाने पड़ेंगे 299 रूपए

शान्तिस्वरुप त्रिपाठी

सिनेमाघर बंद है,तो ओटीटी प्लेटफॉर्म की बल्ले बल्ले है.तो वहीं अब दर्शकों की सिनेमा देखने की भूख को भुनाने के लिए तरह–तरह की पैतरे बाजी भी शुरू कर दी गई है .''जी स्टूडियो'' का पहले से ही अपना ओटीटी प्लेटफॉर्म ''जी 5'' है, मगर अब ''जी स्टूडियो''ने एक नया ओटीटी प्लेटफॉर्म ''जी प्लैक्स'' शुरू किया है.जी हॉ!घर के अंदर सिनेमाघर के तहत 'जी स्टूडियो'की तरफ से पहली पहल है ''जी प्लैक्स''.जिस पर दर्शक प्रति फिल्म शुल्क चुका कर फिल्म देख सकेगा.इस नई पेशकश के साथ, उपभोक्ता अब अपनी पसंदीदा नई फिल्में अपने घरों में आराम से देख पाएंगे, साथ ही साथ उनका पूरा परिवार एक आकर्षक (प्रति फिल्म) मूल्य बिंदु पर होगा।दो अक्टूबर को ''जी प्लैक्स''पर आने वाली पहली मौलिक फिल्म ''खाली पीली'' देखने के लिए हर इंसान को 299 रूपए चुकाने होंगे. अली अब्बास जफर और 'जी स्टूडियो'द्वारा निर्मित तथा मकबूल खान निर्देशित इस मसाला फिल्म में ईशान खट्टर और अनन्या पांडे की जोड़ी है।

फिल्म''खाली पीली''की कहानी एक चोर,जो कि अब टैक्सी ड्राइवर बन चुका है और एक वेश्या के बीच की प्रेम कहानी है।

अपनी स्थापना के बाद से, उपभोक्ता हितों को अपने मूल में रखते हुए 'जी' (ZEE) ने लगातार उद्योग के लिए नए रुझानों का पालन किया है। उपभोक्ताओं के लिए सुविधा के साथ, यह नया फिल्म वितरण मॉडल फिल्म निर्माताओं के लिए समग्र वाणिज्यिक पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ाएगा, जो उन्हें अपने रचनात्मक कार्य को प्रस्तुत करने में सक्षम करेगा, स्थापित मनोरंजन प्लेटफार्मों पर दर्शकों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए।

इस नई पहल के संबंध में ''जी स्टूडियोज''के सीईओ शारिख पटेल कहते हैं–'हम इस नई पेशकश को पूरे भारत और दुनिया भर के सभी फिल्म प्रेमियों के लिए लाने के लिए बहुत उत्साहित हैं। जब हम सभी निकटतम सिनेमाघरों में नवीनतम फिल्मों को देखना

पसंद करते हैं, तो हमने 'जी प्लेक्स' (Zee Plex) जैसे समाधान की आवश्यकता महसूस की, जो उपभोक्ताओं को उनके घरों और दोस्तों के साथ–साथ उनके घरों में आराम से उनकी पसंदीदा फिल्मों को पकड़ने के लिए लचीलापन और सुविधा देता है।'

''जी''के मुख्य राजस्व अधिकारी अतुल दास ने कहा–'हम फिल्म प्रेमियों के लिए अपनी तरह की पहली सेवा ''जी प्लेक्स''(Zee Plex) के लॉन्च की घोषणा करते हुए रोमांचित हैं। यह भारत में प्रति फिल्म के शुल्क के साथ दो अक्टूबर से उपलब्ध होगा।इसे अग्रणी डिस्ट्रीब्यूशन प्लेयर्स (डिश टीवी,टाटा स्काई और एयरटेल डिजिटल टीवी) के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में प्रमुख वितरण प्लेटफॉर्म के साथ भागीदार बनाया गया है।हमें विश्वास है कि जी प्लेक्स हमारे भागीदारों को विभिन्न भाषाओं में अपने उपभोक्ताओं को एक अनूठी और अग्रणी सेवा प्रदान करने के लिए एक और अवसर प्रदान करेगा। हम आने वाले वर्षों में इस अवसर को विकसित करने के लिए बहुत उत्सुक हैं।'

खैर, जी प्लैक्स'पर ''खाली पीली''को 299 रूपए देकर कितने दर्शक देखते हैं,उसी पर इस तरह के ओटीटी प्लेटफार्म का भविष्य निर्भर करेगा.

अमेजॉन प्राई वीडियो 2020 तक जारी रहेगा अंतर्राष्ट्रीय एमी पुरस्कारों के साथ दो भारतीय नाम

अपनी सम्मोहक सामग्री के साथ एक वैश्विक मंच पर एक छाप बनाते हुए, अमेजॅन प्राइम वीडियो को आज प्रतिष्ठित 2020 इंटरनेशनल एमी अवार्ड्स में दो श्रेणियों में नामित किया गया था। हालांकि अमेजन ओरिजिनल सीरीज फोर मोर शॉट्स कृपया !, प्रीतीश नंदी कम्युनिकेशंस द्वारा निर्मित!, ने सर्वश्रेष्ठ कॉमेडी सीरीज श्रेणी में नामांकन प्राप्त किया है, अभिनेता अर्जुन माथुर को एक अभिनेता द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन की श्रेणी में अमेजन में करण के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पहचाना गया है। टाइगर बेबी और एक्सेल मीडिया एंड एंटरटेनमेंट द्वारा निर्मित ओरिजिनल सीरीज इन हेवन।

अपर्णा पुरोहित, भारत मूल के प्रमुख, अमेजॅन प्राइम वीडियो ने कहा, 'यह जानने के लिए बहुत गर्व और सम्मान का अवसर है कि हमारे भारतीय मूल के इन प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय एमी नामांकन के साथ मान्यता प्राप्त है। हम लगातार ऐसी कहानियाँ बनाने का प्रयास करते हैं जो तीव्रता से स्थानीय हों, लेकिन भूगोल, राष्ट्रीयता और जातीयता की सभी सीमाओं को पार कर सकती हैं, और ये नामांकन केवल इस बात की पुष्टि करते हैं कि हम सही रास्ते पर हैं। हम नामांकन से रोमांचित हैं और इस पल को प्रीतीश नंदी कम्युनिकेशंस, टाइगर बेबी और एक्सेल मीडिया और एंटरटेनमेंट के साथ साझा करते हुए खुशी महसूस कर रहे हैं। ''प्रितिश नंदी कम्युनिकेशंस, चार और शॉट्स प्लीज! सर्वश्रेष्ठ हास्य श्रृंखला श्रेणी में एकमात्र भारतीय खिताब है और अर्जुन माथुर एक अभिनेता द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन की श्रेणी में प्रतिस्पर्धा करने वाले एकमात्र भारतीय भी हैं।

अमेजॉन प्राइम वीडियो लगातार तीन वर्षों से अंतर्राष्ट्रीय एमी नामांकन का एक हिस्सा रहा है, जिसमें अमेजॉन ओरिजिनल सीरीज इनसाइड एज 2018 में सर्वश्रेष्ठ ड्रामा सीरीज के लिए नामांकित है और इसकी पहली असूचीबद्ध मूल श्रृंखला द रीमिक्स ने 2019 में सर्वश्रेष्ठ नॉन–स्क्रिप्टेड एंटरटेनमेंट अवार्ड के लिए नामांकित किया। अमेजॉन मूल श्रृंखला चार और शॉट्स कृपया! और अमेजन प्राइम वीडियो पर मेड इन हेवन।

मौनी रॉय

लिपिका वर्मा

मौनी रॉय जो अबुधाबी में एक फिल्म की शूटिंग कर रही है। ने हमसे अपनी हालिया रिलीज हुई वेब शो **'लंदन कॉन्फिडेंशियल'** की कहानी और पहली बार किरदार के बारे में बातचीत में अपनी आने वाली फिल्मों इत्यादि के बारे में बातचीत की ,

जी हाँ! मैं अबुधाबी में अपने अगले प्रोजेक्ट की शूटिंग में व्यस्त हूँ। किंतु यह प्रोजेक्ट ओ टी टी प्लेटफॉर्म के लिए है या फिर थिएटर रिलीज है मैं अनाऊंस होने के पहले कुछ भी नहीं बोल सकती हूँ, बेहतर होगा कि फिल्ममेकर्स इसके बारे में खुद ही अनाऊंस करे. ৳

❍ जी 5 ओरिजिनल फिल्म पर हाल ही मे,'लंदन कॉन्फिडेंशियल' में आप एक अलग किरदार में नजर आई क्या कहना है इस किरदार को जीवंत करने हेतु?

जी हाँ मुझे लॉकडाउन शुरू होते ही इस शो का ऑफर मिला था, यह किरदार मुझे अत्यंत चैलेंजिंग बारी में यह अलग किरदार निभाने वाली थी, तो तुरंत ही हामी भर दी। यह एक बहुत ही बेहतरीन कंटेंट को पेश करता हुआ वेब शो है। थ्रिलर सीरीज है, और खुशी है की यह शो लोगों को पसंद आ रहा है।

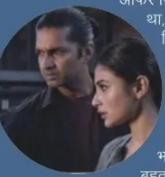

❍ क्या यह वेब शो कोविड–19 के दौरान ही लिखा गया था ?

जी नहीं ,किसी भी स्क्रिप्ट को पूर्ण करने हेतु 3–4 महीने तो लग ही जाते है, न सो जाहिर सी बात है यह शो कोविड–19 के पहले ही लिखा गया था। हाँ, यह जरूर है इस शो का बैक ड्राप कोई अन्य देश को लेकर लिखा था, लेकिन क्योंकि लॉकडाउन से थोड़ी छूट सबसे पहले लंदन ने दी अतः हम ने वहां जा कर शूट किया।

❍ अपने किरदार से बेहद खुश है, आप क्या कहना चाहेंगी?

बहुत ही अलग और बेहतरीन चैलेंजिंग किरदार है। मैंने एक रॉ ऑफिसर का किरदार निभाया है, और तो और इस में मेरी दो मुखी व्यक्तित्व को देख पाएंगे आप, किस तरह प्रेग्नेंट होने पर वह बेल्ली ख्पेट लगाया गया उसके कारण मेरे व्यक्तित्व में कितना बदलाव नजर आया और उसको लगाकर मेरी गति में भी फर्क महसूस हुआ। लेकिन मेरा उस समय वहां होना अनिवार्य था। उस वक्त जिधर देखो आपको कुछ होते हुए दिखाई देगा अतः वह सब करना भी मेरे लिए कुछ अलग था। मेरे पर्सनल और प्रोफेशनल जद्दो जेहद की भी कहानी पेश करता है यह वेब शो **'लंदन कॉन्फिडेंसिअल'**

❍ इस वेब शो में इतनी कोमल मासूम और सुंदर मोवनी ने पहली बार बन्दूक पकड़ी है क्या कहना चाहेंगी आप?

बस बन्दूक पकड़नी थी, स्क्रिप्ट मुताबिक यह समय कैसा समय है यह दर्शाया गया है। ऐसा करने में मुझे किसी तरह की हिचकिचाहट नहीं थी। समय का महत्व कितना अहम है यह भी सभी को समझना होगा ।

❍ आपकी आने वाली फिल्मों पर कुछ प्रकाश डाले ?

अभी अबुधाबी में एक प्रोजेक्ट की शूटिंग कम्पलीट होने को है। और दूसरा प्रोजेक्ट भी जल्द होने को है। किंतु बेहतर होगा की उन सभी प्रोजेक्ट्स के बारे मेकर्स ही संदेश दे तो बेहतर होगा। जी नहीं मैं यह भी नहीं बोल सकती हूँ कि जो प्रोजेक्ट्स मैं शूट करने जा रही हूँ या जो अभी खत्म की है, वह ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए है या फिल्म थिएटर के लिए है।

❍ ब्रह्मास्त्र कब रिलीज होगी?

उस में मेरा विलेन का किरदार है। हम सभी इस समय साथ है क्योंकि पान्डेमिक के कारण कुछ निश्चित नहीं है। वैसे फिल्म दिसंबर में रिलीज होने वाली थी। बस हम उम्मीद कर रहे है की सब कुछ अच्छा हो। मैं भी फिल्म ब्रह्मास्त्र की रिलीज का बेताबी से इंतजार कर रही हूँ।

❍ फिल्म 'ब्रह्मास्त्र' ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए है या फिल्म थिएटर में रिलीज होगी?

अब यह तो फिल्म मेकर ही निश्चित कर सकते है। मैं इस पर कोई टिप्पणी नहीं दे सकती हूँ।

❍ पान्डेमिक के चलते सबसे ज्यादा फिल्म से जुड़े लोग सफर कर रहे है क्योंकि थिएटर सबसे अंत में खुलेंगे इस पर क्या मत रहे है आपका?

बस यही कह सकती हूँ ऐसा समय हम पहली बार देख है, और रही थिएटर के खुलने का प्रश्न तो यह तबही खुलने चाहिए जब सब सेफ, सुरक्षित हो!

कुछ सोच कर पान्डेमिक पर बोली, देखिये मैं अत्यंत सकारात्मक व्यक्तित्व रखती हूँ और आशा करती हूँ सब कुछ जल्द सही हो जायेगा। हम सब इस समय से जल्द ही उबर पाएंगे, ऐसा समय भी आएगा की हम 2020 को भूल जायेंगे और इस समय को कभी याद भी नहीं करेंगे। बस जल्द ही वैक्सीन का आविष्कार हो जाना चाहिए!

गोल्ड

रोमियो अकबर वाल्टर

मेड इन चाइना

के.जी.एफ

नागिन

तुम बिन 2

ज्योति के जलवे

ज्योति वेंकटेश

अमेज़ॅन ग्राहकों को सभी जिओपोस्टपेड प्लस प्लान के साथ 1 साल की प्राइम मेंबरशिप के लिए अधिक सुलभ बनाता है, बिना किसी अतिरिक्त लागत के

एक अनोखी खरीदारी और मनोरंजन अनुभव के लिए ग्राहक की आवश्यकता को समझते हुए, अमेजन और जिओ ने आज अपने साथ की घोषणा की जो बिना किसी अतिरिक्त लागत के योग्य जिओपोस्टपेड प्लस उपयोगकर्ताओं के लिए अमेज़ॅन प्राइम लाभ लाएगा। जो ग्राहक हाल ही में लॉन्च किए गए जिओपोस्टपेड प्लस में मेम्बरशिप लेते हैं, उन्हें बिना किसी अतिरिक्त कीमत के अमेजन प्राइम मेंबरशिप (वर्थ आईएनआर 999) का एक साल मिलेगा। जिओपोस्टपेड प्लस प्लान आईएनआर 399 से शुरू हो रहा है और कई लाभ प्रदान करता है।

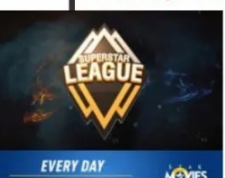

यह खेल का मौसम है! इसलिए अपने गेम फेस पर रहे और सुपरस्टार लीग का अनुभव करने के लिए तैयार हो जाए

स्टार मूवीज अपने दर्शकों को ब्लॉकबस्टर हॉलीवुड हिट के साथ मनोरंजन करने के लिए पूरी तरह से तैयार है और अनुमान लगाती है कि, आपको हॉलीवुड स्टाइल में कुछ प्रभावशाली मूव्स सीखने का मौका मिलेगा। स्टार मूवीज पर सुपरस्टार लीग के साथ खेल का जश्न मनाने के लिए तैयार हो जाइए, जो 19 सितंबर 2020 से शुरू होकर हर रोज दोपहर 1 बजे और रात 11 बजे तक चलेगा। दो स्लॉट–दोपहर 1 बजे और रात 11 बजे– सुपर हिट फिल्में प्रसारित होंगी। चैनल आपके मजेदार भागफल को बदल देगा क्योंकि वे ब्रेक के दौरान खेल क्रियाओं पर कुछ रोमांचक प्रोमो दिखाएंगा।

अजय सिंह चौधरी ने अपने डिजिटल डेब्यू के बारे में बात की!

टीवी शो तेनाली रामा में नजर आने वाले अजय सिंह चौधरी जल्द ही निर्देशक अपूर्व लाखिया की सीरीज क्रैकडाउन के साथ अपना डिजिटल डेब्यू करेंगे! सीरीज में एक आतंकवादी का किरदार निभाने वाले अभिनेता का कहना है कि अच्छे काम के लिए उनकी तलाश कभी बंद नहीं होगी। उन्होंने कहा "मैं बड़े काम की तलाश में हूं। अच्छे किरदार निभाने के लिए। अब तक मेरा करियर संतोषजनक रहा है। मैंने अच्छे निर्देशकों के साथ काम किया है। कभी–कभी लोगों ने मेरे किरदारों को पसंद किया है और कभी–कभी नहीं। लेकिन यह मेरा काम है।"

येशा रूघानी ने कहा, करीना कपूर खान के अलावा, हमारे ब्रांड ने भी अपना जन्मदिन मनाया!

अभिनेत्री येशा रूघानी और उनकी बहन हिनाल दत्तानी एक नए व्यवसाय उद्यम में बदल गई। येशा ने कहा "गुब्बारे एक ऐसी चीज है जो बचपन से ही मेरे चेहरे पर मुस्कान ले आता है। मैं एक एक्ट्रेस हूं और मेरी बहन एक मेकअप आर्टिस्ट है। इस प्रकार हम ग्रूम ग्रूम बैलून नामक कंपनी के साथ आए–हम लक्जरी गुब्बारों में डील करते हैं और जन्मदिन से लेकर स्नातक पार्टियों तक किसी भी तरह के उत्सव को पूरा करने के लिए हैं। दिलचस्प बात यह है कि 'ग्रूम ग्रूम बैलून' बॉलीवुड दिवा करीना कपूर खान के जन्मदिन के दिन लॉन्च किया गया था, और हमारी पहली बैलून डिलीवरी करीना कपूर खान के लिए हुई थी।

नमिश तनेजा घर पर आइसलेट होने के बाद श्ऐ मेरे हमसफरश् के सेट पर वापस आए!

नमिश तनेजा ने हाल ही में इंस्टाग्राम पर घोषणा की कि उनके परिवार को दुर्भाग्यवश हो गया था। जब उन्होंने खुद नेगेटिव पाया, तब भी उन्होंने बेहद सावधानी बरती और खुद को दूसरे फ्लैट में आइसलेट कर लिया। वह कहते है, "यह बहुत तनावपूर्ण समय था क्योंकि मेरा परिवार कोविड–19 के लिए पॉजिटिव था। हमने तत्काल सावधानी बरती और सभी सही प्रक्रियाओं का पालन किया। मैं मेरे द्वारा खड़े होने के लिए अपने सभी प्रशंसकों का दिल से शुक्रिया कहता हूं। और अब मैं अपने काम पर वापस आगया हूँ"

अनुषा मिश्रा और हर्षद अरोड़ा ने पत्रकारों के प्रयासों की सराहना की!

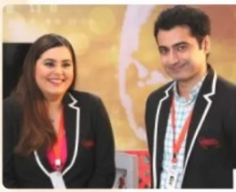

सोनी सब के लाइट–हार्टिड कॉमेडी शो **"कैरी ऑन आलिया"**, में हाल ही में आलिया के रूप में एक रोमांचक नई कहानी पेश की, साथ ही अन्य शिक्षकों ने टेलीविजन समाचार संवाददाताओं के रूप में एक नई यात्रा शुरू की। चुलबुली आलिया ने हाल ही में एक नया मेकओवर देखा, जहां वह क्लासरूम से न्यूजरूम तक की अपनी यात्रा जारी रखती है। अपनी यात्रा की प्रगति के रूप में, आलिया और आलोक वास्तविक रूप से दैनिक रूप से किए गए प्रयासों की सराहना करते हैं। विटनेस अनुषा मिश्रा और हर्षद अरोड़ा सोनी सब पर हर सोमवार से शुक्रवार शाम 7:30 बजे "कैरी ऑन आलिया" में पत्रकारों से रूबरू होते हैं।

अलाइव इंडिया और नदसन अपने विशेष अवसरों के लिए प्रशंसकों के लिए व्यक्तिगत संगीत बनाने के लिए एकजुट हुए!

अलाइव इंडिया, भारत के प्रमुख संगीत उत्पादन घरों में से एक, नदसन के साथ हाथ मिलाया है, जो एक ऐप–आधारित सेलिब्रिटी–टू–फैन कनेक्ट प्लेटफॉर्म है, जो सभी अवसरों के लिए एक व्यक्तिगत संगीत रचना बनाकर, प्रशंसक सगाई के नए प्रारूप का निर्माण करता है। इस अनुभव का नाम है–गिफ्ट ए म्यूजिक, पूरे भारत में संगीत प्रेमियों के लिए एक उत्कृष्ट उपचार है, जो किसी को व्यक्तिगत स्पर्श के साथ अपनी भावना व्यक्त करने का एक तरीका है। इसके अलावा, इस संगीत की रचना या प्रदर्शन युवा प्रतिभाओं और शारीरिक रूप से चैल्लेंजिंग आर्टिस्ट द्वारा किया जाएगा।

अमोल पाराशर का 'डोली किट्टी और वो चमकाते सितारे' और ट्रिपलिंग 2 के लिए संतुलित ओवरलैपिंग शेड्यूल!

अभिनेता अक्सर परियोजनाओं के लिए शूटिंग शेड्यूल को एक साथ जोड़ते हैं। लेकिन संतुलन बनाना मुश्किल हो जाता है अगर दो परियोजनाओं के लिए आपको विविध व्यक्तित्व वाले पात्रों को चित्रित करना पड़ता है। अभिनेता अमोल पाराशर, जो "डॉली किट्टी और वो चमके सितारे" में उनके प्रदर्शन के लिए सराहना की जा रही है, ने सोशल मीडिया पर अपने प्रशंसकों के साथ मजेदार ट्रिविया साझा करने के लिए ले जाए गए। उन्होंने कहा कि उन्होंने फिल्म और ट्रिपलिंग 2 के लिए एक साथ शूटिंग की और यह चुनौतीपूर्ण था, फिर भी अपने अलग–अलग विपरीत पात्रों उस्मान और चितवन के किरदार में कदम रखा।

तारक मेहता का उल्टा चश्मा में चंपकलाल ने की रसोई में एंट्री!

नीला फिल्म प्रोडक्शंस प्राइवेट लिमिटेड की आगामी कड़ी तारक मेहता का उल्टा चश्मा (टीएमकेओसी) में जेठालाल को लो स्पिरिट में देखा जाएगा। अब महीनों से, गाडा इलेक्ट्रॉनिक्स ने किसी ग्राहक का चेहरा नहीं देखा है और ज्यादा कुछ करने को नहीं है। लगता है समय रुक गया है और जेठालाल का मनोबल वास्तव में कम है। चंपकलाल अपने बेटे में बेचैनी महसूस करता है और इसके बारे में कुछ करने का फैसला करता है। और अच्छी तरह से, हम सभी जानते हैं कि जेठालाल को खुश करने वाली एक चीज है वो है फफडा! तो, चंपकलाल ने जेठिया के लिए ताजा फाफड़ा बनाने के लिए रसोई में कदम रखा है।

रसिका दुगल ने सांकेतिक भाषा के साथ अपने अभिनय की याद ताजा की!

अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं के संकेत दिवस के अवसर पर, अभिनेता रसिका दुगल ने रविवार को 'तू है मेरा' के लिए सांकेतिक भाषा सीखने के समय को याद किया। बहुमुखी अभिनेता, जो अपने चरित्र में उतरने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ते, मिलिंद धमाडे के निर्देशन के लिए एक अपवाद नहीं थे। फील–गुड ड्रामेडी में, दुगल ने दो श्रवण बाधित बच्चों की माँ तरुनीम की भूमिका निभाई। अभिनेता ने इस भूमिका के लिए सांकेतिक भाषा सीखी और इसके लिए सराहना प्राप्त की। रसिका मीरा नायर के ए सूटेबल बॉय, मिर्जापुर सीजन 2, दिल्ली क्राइम सीजन 2 और आउट ऑफ लव सीजन 2 की स्ट्रीमिंग की प्रतीक्षा कर रही है।

आंचल भारद्वाज ने दंगल की 'ऐ मेरे हमसफर' में अपनी भूमिका के लिए 30 दिनों में 10 किलोग्राम वजन कम करने की चुनौती ली!

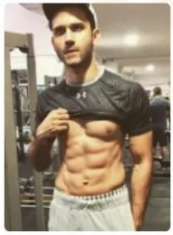

यह मार्च में था कि अचरर भारद्वाज ने अपने गृहनगर चंडीगढ़ का दौरा करने का फैसला किया। इसके बाद जो हुआ, वह था लॉकडाउन। मुंबई में अपने नियमित जीवन से ब्रेक लेते हुए, उन्होंने अपने रूटीन को धीमा करने का फैसला किया जिससे उनका वजन बढ़ने लगा। उन्हें जल्द ही दंगल के हाल ही में शुरू हुए धारावाहिक **'ऐ मेरे हमसफर'** में लखन कोठारी की भूमिका की पेशकश की गई थी। भूमिका के लिए उन्हें फिट दिखने की आवश्यकता थी। इस लॉकडाउन के दौरान और मुंबई लौटने से पहले उन्होंने 10 किलोग्राम वजन कम करने की चुनौती ली। और उन्होंने इसे कर भी दिखाया।

अमेज़ॉन की ओरिजिनल सीरीज यूटोपिया में जॉन क्यूसैक का डिजिटल डेब्यू!

इस हफ्ते, अमेज़ॉन प्राइम वीडियो अपने दर्शकों को रोमांचक शीर्षकों के साथ बहुप्रतीक्षित आठ–एपिसोड की साजिश थ्रिलर सीरीज यूटोपिया, और तमिल सिटकॉम टाइम एना बॉस के साथ आनंदित करता है। 25 सितंबर से शुरू, प्राइम मेम्बर यूटोपिया को, सबसे ज्यादा बिकने वाले लेखक और पुरस्कार विजेता पटकथा लेखक, गिलियन फ्लिन से साजिश रच सकते हैं। महत्वाकांक्षी परियोजना के सम्मान के वर्षों के बाद, फ्लिन एक कलात्मक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है। यूटोपिया, जॉन क्यूसैक के डिजिटल डेब्यू को उसी नाम की ब्रिटिश श्रृंखला से प्रेरित करता है, नई अमेजन ओरिजिनल सीरीज गिलियन फ्लिन द्वारा लिखी गई है, जो शो–रनर और कार्यकारी निर्माता भी है।

भीष्म पितामह यानि मुकेश खन्ना ने दूरदर्शन के रेट्रो चैनल से अपने लोकप्रिय धारावाहिक शक्तिमान को हर दिन शाम 4 बजे प्रसारित करने से रोकने को कहा!

मुकेश खन्ना द्वारा निर्मित लोकप्रिय धारावाहिक शक्तिमान अप्रैल में दूरदर्शन पर कारोना वायरस में लॉकडाउन शुरू होने के समय से दर्शकों वापस प्रसारित होके लोगो का मनोरंजन कर रहा है। और शो की लोकप्रियता के आधार पर, दूरदर्शन के अधिकारियों ने पिछले महीने के लिए अपने डीडी रेट्रो चैनल में शो की रीलीटकास्टिंग शुरू कर दी थी। लेकिन मैं उस समय हैरान रह गया जब पिछले सोमवार से दूरदर्शन रेट्रो ने अचानक शो का प्रसारण रोक दिया। जब मैंने उनसे पूछा कि समस्या क्या है, तो मुकेश ने मुझे बताया कि उन्होंने दूरदर्शन रेट्रो को टेलीकास्ट बंद करने के लिए कहा था, क्योंकि वे इस अतिरिक्त टेलीकास्ट के लिए उन्हें कुछ भी भुगतान नहीं कर रहे थे।

क्या विद्या की शादी मानव के साथ 'ऐ मेरे हमसफर' में होगी?

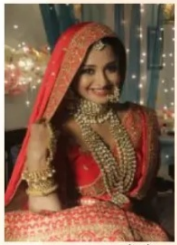

सूरजमुखी ने अपनी छोटी बेटी पायल से पहले अपनी बड़ी बेटी विधी की शादी करने का दृढ़ निश्चय और दृढ़ निश्चय के साथ आखिरकार मानव ने एक योग्य वर ढूंढ लिया। मानव एक साधारण लड़का लगता है और संभवतः विधी के लिए सही विकल्प है। लेकिन विधी अभी भी अपनी मां के इस फैसले से बहुत खुश नहीं है कि वह उसे शादी करने के लिए मजबूर करे। हालांकि वह अपनी मां को खुश रखने के लिए मानव के साथ अपनी शादी को पंजीकृत करने के लिए सहमत है। सोमवार से शुक्रवार शाम 7:00 बजे और रात 10:30 बजे 'ऐ मेरे हमसफर' को विशेष रूप से देखें।

27 सितंबर 2010 को 'होटल मुंबई' के जी सिनेमा प्रीमियर में प्रसिद्ध ताज होटल में आतंकवादी हमले फिर से देखे!

26 नवंबर 2008 को भारत के दिल को दहलाने वाला आतंक, चाहे वह ताज होटल में हुआ धमाका हो, गोलियों की आवाज हो या फिर सीएसटी पर कसाब की एक छवि, उस दिन का हर पल पूरे देश के जेहन में गूंजा हुआ है। जबकि ताज होटल के जलने के दृश्य अभी भी गोजबंप देते हैं, कल्पना कीजिए कि उस समय होटल के अंदर क्या स्थिति रही होगी। 27 सितंबर को दोपहर 3 बजे, जी सिनेमा के रूप में इस बदलते जीवन के अनुभव का अनुभव करें, जो ताजमहल होटल के अंदर होता है और जो होटल मुंबई के लोगों ने एक साथ मिलकर गोलीबारी को कैसे अंजाम दिया, इसकी अनकही कहानी सामने लाता हैं।

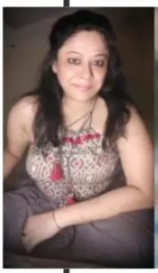

वृद्धि पायल घोष–अनुराग कश्यप यौन शोषण पर बोलती है!

फिल्म इंडस्ट्री और फिल्म के निर्माता कई लोग अनुराग कश्यप के खिलाफ स्टार पायल घोष के यौन शोषण के आरोप से सहमत है, छह साल पहले हुआ था जब **'ब्लैक वेलवेट'** बनाई जा रही थी। इस पर वृद्धि शर्मा कहती हैं, मैं वास्तव में सोच रही हूं कि फिल्म इंडस्ट्री किस समय में चल रही है। यह युग रहा है जब से हम अच्छी खबर सुनने में सक्षम हैं, लेकिन बार–बार हम केवल कुछ बुरा सुन रहे हैं। ईमानदारी से किसी पर इस तरह के आरोप लगाना दुविधा और भ्रम पैदा करता है और किसी भी सबूत के बिना किसी प्रसिद्ध निर्देशक को दोष देना सीधे–सीधे पचा पाना मुश्किल होता है, वह भी इतने सालों के गैप के बाद, मुझे सच में समझ नहीं आता कि भ्रष्टाचार हर जगह क्यों है।"

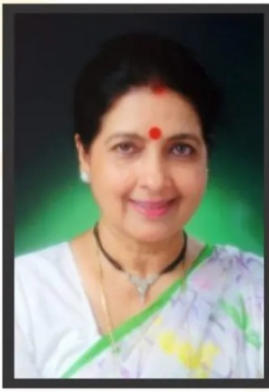

कलुबाई की शूटिंग के दौरान दम तोड़ दिया!

अनुभवी अभिनेत्री आशालता वाबकर, जिन्होंने मराठी, हिंदी फिल्मों और स्टेज में काम किया था, कोविड–19 के कारण निजी अस्पताल में चार दिन की लड़ाई लड़ते हुए उनका निधन हो गया। वह 79 साल की थीं। पिछले सप्ताह एक निजी अस्पताल में भर्ती होने के दौरान वह गंभीर हालत में थीं। अंत में मंगलवार की सुबह 4 बजकर 45 मिनट पर अस्पताल में उन्होंने आखरी सास ली। आशालता के नाम से मशहूर गोवा में जन्मी अभिनेत्री ने कथित तौर पर ऐ कलुबाई नामक एक टेलीसिरियल की शूटिंग के दौरान कोरोना से संक्रमण हो गयी थी।

अनु–छवि शर्मा

एशिया की सबसे बड़ी झुग्गी के रूप में, और दुनिया में सबसे अधिक स्तरित मानव बस्तियाँ धारावी कुंभारवाड़ा में कुंभार 'कुम्हार' भी ज्यादातर गुजराती है!

छायाकार–राकेश लोंढे

मेरा नाम **मीना रवजी चौहान** है मैं आज से 25 साल से गरबा बनाती हुँ, 6 महिने पहले से हम लोग गरबा बनाना चालू करते है, तब जाके नवरात्रि तक पूरा होता है और हमारे घर मे छोटे बडे सब गरबा करते है, हम 6 महिने मेहनत करते है, तब जाके नवरात्रि में कुछ पैसे कमाते है, और हमारा घर भी इससे ही चलता है, दिन रात हम लोग गरबा बनाते है, गरबा लाओ गरबे कलर लगाओ फिर उसके मेटल लगाओ ये और, ये सब कुछ करने के बाद दो पैसे कमाते है, गरबा का काम लॉकडाउन की वजह से बंद है, हम बहुत तकलीफ में है, बस गरबा के डिजाईन के लिए सब मेहनत करते है, काजल, तेजल, रिठा, और पतिक, दिया, मोमी और छोटे बच्चे सब गरबा बनाते हैं!

माना दुख सताता है, पर यही तो सुख का महत्व बताता है..

सलमान खान ने कहा कि मैं अपनी सैलरी कटवाकर खुश हूं ताकि सभी को पैसे मिलें. सभी को इस समय रोजगार मिलना बहुत जरूरी

–लिपिका वर्मा

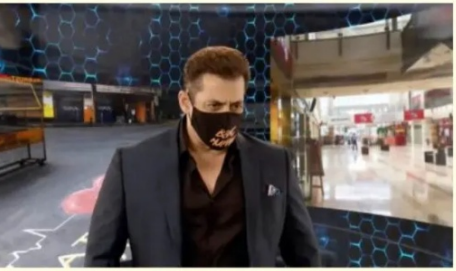

सलमान खान ने खुलासा किया कि वह कम सैलरी ले रहे हैं। उन्होंने ऐसा फैसला इसलिए किया कि ताकि शो के पूरी यूनिट को उनका पूरा पैसा मिल सकें। सलमान ने कहा कि मैं अपनी सैलरी कटवाकर खुश हूं ताकि सभी को पैसे मिलें। सभी को इस समय रोजगार मिलना बहुत जरूरी है।

सलमान खान ने कहा कि शूटिंग सेट पर आकर डर लग रहा है। कोई भी खांसी या छींक मारता है तो भी मैं घबरा जाता हूँ। यह समय ही ऐसा है.अपने लिए नहीं अपनों के लिए कोरोना से डर लगता है। कहीं हमारी वजह से प्रभावित ना हो जाये। रोजगार के साथ जवाब दे सकते हैं। जितने कम दुश्मन होंगे आप उतने खुश रहेंगे। 30 साल में मैंने कभी इतनी छुट्टी नहीं ली जितनी इन 8 महीनों में ले ली

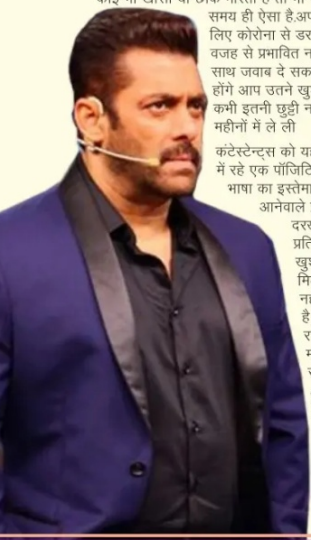

कंटेस्टेन्ट्स को यही कहूंगा कि एक लेवल में रहे एक पॉजिटिविटी के साथ रहे।सही भाषा का इस्तेमाल करें यही सभी आनेवाले प्रतियोयोगियों से दरख्वास्त है। 15 – 16 जो प्रतियोयोगी जा रहे हैं।वो खुश होंगे कि उन्हें काम मिल रहा है।काम कहीं शुरू नहीं हो रहा है।जो हुआ भी है वो कोविड के शिकार हो रहे हैं। आप तीन से चार महीने सुरक्षित माहौल में रहते हुए काम करेंगे।

बिग बॉस का जो प्रोमो शूट हुआ था वो मैंने अपने फार्म हाउस से ही किया था। पहली बार इस प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए बाहर निकला हूं थोड़ा डरा हुआ था क्योंकि घर में छोटी बच्ची है।मेरी बहन अर्पिता की बेटी आयत। इसके साथ ही मेरे माता पिता और हेलन ऑन्टी सीनियर सिटीजन हैं। उनको मेरी वजह से ना हो जाए। ये डर रहता है। वो कोविड से शायद लड़ भी लें लेकिन जो 15 दिन का प्रोसेस होता है। जिससे मरीज गुजरता है।वो सुनकर ही मुझे डर लगता है। उससे पंगा लो जो दिखता है। जो दिखता ही नहीं। उससे क्या पंगा लेना तो कोरोना से दूर रहने में ही समझदारी है। मुझे तो छींक, खांसी से लेकर किस तक से अभी डर लगने लगा है।

अच्छी बात है कि दूसरे रियलिटी शोज भी अलग अलग चैनल पर आ रहे हैं। काम आ रहा है मतलब काम मिलेगा। एक रोजगार दूसरे रोजगार को बढ़ावा देगा।सबकी उन्नति होगी। जीडीपी बढ़ेगी।

दुनिया को बड़े से बड़ा राइटर इस रियलिटी को स्क्रिप्ट नहीं कर सकते हैं क्योंकि हर सेकंड में लॉयलिटी बदल जाती है मूड से लेकर।

सलमान खान ने कहा कि, बिग बॉस 13 बहुत बड़ा हिट था, लेकिन मैं इसका क्रेडिट प्रतियोगियों को दूंगा। मैं क्रेडिट नहीं लूंगा। बिग बॉस के एपिसोड कलर्स चैनल पर आप देख पायेंगे। जो इस शो को लेकर नेगेटिव बोलते हैं उनको भी थैंक यू। जो तारीफ भी करते हैं। उनको भी थैंक्यू।

सच है, हम दुनिया में फिल्मों की संख्या बढ़ा रहे हैं, लेकिन इनमें से कितनी फिल्मों पर हम वास्तव में गर्व कर सकते हैं? हम कितनी फिल्में बनाते हैं जो समय की कसौटी पर खरी उतर सके? कितने निर्देशक और अभिनेता एक ऐसा नाम बनाने में सक्षम हुए हैं, जो सभी समय के लिए याद किया जाएगे? हम कितनी फिल्मों को सर्वश्रेष्ठ फिल्मों के रूप में रैंक कर सकते हैं? शायद ही कोई मुट्ठी भर फिल्म और अगर आप मुझसे पूछें, तो मुझे लगता है कि 55 साल से अधिक पहले भारत में बनी "वक्त" जैसी फिल्म निश्चित रूप से उनमें से एक है। यश चोपड़ा, जो एक आईसीएस अधिकारी होने वाले थे, ने फिल्म में अपना पेशा पाया और खुद के साथ संघर्ष के बाद, उन्होंने अपने बड़े भाई डॉ बी.आर. चोपड़ा जो एक सहायक निर्देशक के रूप में (जो भारत में फिल्म निर्माता के बीच अग्रणी थे,) जुड़ गए। उन्हें सीखने की जल्दी थी और उनके भाई ने एक निर्देशक के रूप में दो ब्रेक दिए और उन्होंने "धर्मपुत्र" और "धूल का फूल" जैसी फिल्मों का निर्देशन किया और बेहतर निर्देशकों में से एक के रूप में नाम कमाया।

यश अब निर्देशन के लिए एक बड़ी फिल्म की तलाश में थे और यह उस समय के दौरान था कि उनके भाई ने उन्हें एक विषय दिया था जो कि लॉस्ट एंड फाउंड कांसेप्ट पर आधारित था। पटकथा ने

'हर वक़्त याद रखने के लिए बनाई गई एक ऐतिहासिक फिल्म की एक अकेली गवाह'

शर्मिला टैगोर

– अली पीटर जॉन

एक अच्छी स्टारकास्ट की मांग की और डॉ.चोपड़ा ने पृथ्वी राज कपूर और उनके तीन बेटों राज कपूर शम्मी कपूर और शशि कपूर के साथ एक कास्टिंग तख्तापलट करनी चाही लेकिन काम नहीं किया और बस बलराज साहनी, राज कुमार, सुनील दत्त और उनके दोस्त शशि कपूर के लिए समझौता करना पड़ा। जिस फिल्म का नाम वक्त था, उसमें बलराज साहनी थे। एक अमीर पिता की भूमिका में, जो भूकंप के बाद अपने तीन बेटों को खो देता है और कैसे समय बदलता है, जहां परिवार की पूरी किस्मत बदल जाती है।

एक बार यश के मुख्य कलाकार होने के बाद, उन्हें उस समय की दो लोकप्रिय अभिनेत्रियों साधना और शर्मिला टैगोर पर सवार होना पड़ा। राजकुमार के विपरीत कोई अभिनेत्री नहीं होनी थी लेकिन जल्द ही यश के पास पहले चरित्र अभिनेता जैसे रहमान अचला सचदेव, मनमोहन कृष्णा, मदन पुरी, शशिकला, दिग्गज अभिनेता और गायक सुरेंद्रनाथ और सभी मोतीलाल और जो अभी भी भारतीय सिनेमा के पहले प्राकृतिक अभिनेता के रूप में जाने जाते हैं।

इसके गीत यश चोपड़ा के पसंदीदा कवि साहिर लुधियानवी द्वारा लिखे गए थे, जो रवि द्वारा फिल्मों और संगीत में करियर बनाने के लिए यश के लिए एक प्रमुख कारण थे। जाने–माने उर्दू लेखक अख्तरुल ईमान ने संवाद लिखे और क़ायदी छायाकार थे। 'वक्त' कई फिल्मों में से पहली थी जो लॉस्ट एंड फाउंड थीम पर बनी थी और जो की पहली वास्तविक मल्टी स्टारर और एक बड़ी हिट भी थी। मैं 1965 में एक स्कूली छात्र था, जब फिल्म रिलीज़ हुई और दो बार देखी थी, जब मेरे पास अपना भोजन खरीदने के भी पैसे नहीं थे। और मुझे अभी भी जुहू में सन एन सैंड होटल में दिन रात की लंबी पार्टी याद है जहां यश चोपड़ा ने 'वक्त' की सफलता का जश्न मनाया था जहां उनके सभी मुख्य सितारे नशे में थे और सुबह जल्दी चले गए थे और केवल एक व्यक्ति जो नशे में नहीं था वह यश चोपड़ा थे जिसे अपनी जीत का जश्न मनाने का पूरा अधिकार था, लेकिन उन्होंने अपने पिता से किए गए वादे की वजह से ड्रिंक नहीं ली थी।

जैसा कि मैंने देखा है कि साहिर लुधियानवी वक्त के दौरान और यश चोपड़ा के बंगले से बहुत दूर नहीं रहते थे, मैं उन सभी को याद करता हूँ जिन्होंने 'वक्त' को एक बेहतरीन फिल्म बनाई थी। मैं फिल्म से जुड़े सभी नामों के बारे में सोचता हूं और पाता हूं कि कैसे समय ने उन सभी महान लोगों को दूर कर दिया और महसूस किया कि एकमात्र ऐसा समय है जो शर्मिला टैगोर का है जो टीम में सबसे कम उम्र की महिला थी और आज वह 80 के करीब हैं और दादी भी बन चुकी है।

डॉ.बीआर चोपड़ा जिन्होंने यश को वक्त बनाने की आजादी दी क्योंकि वह सबसे महत्वपूर्ण बैनरों की स्थापना करना चाहते थे बीआर फिल्मों ने उनका सबसे बड़ा सपना पूरा किया, और "बागबान" बनाई और उन्होंने एक लंबा और फलदायी जीवन जीया और बुढ़ापे में मृत्यु हो गई थी।

यश चोपड़ा जो सबसे सफल फिल्म निर्माता बनने के लिए एक क्यूब डायरेक्टर कैंट की तरह थे और उनका अपना बैनर था, यश राज फिल्म्स जिसमें

उन्हें डेंगू के मच्छर ने उन्हें डंक मार दिया था और वह डेंगू से मर गए उन सभी को पीछे छोड़ कर जो उन्हें और उनके काम को देखकर स्तब्ध थे।

राज कुमार जो अपना जीवन अपनी शर्तों के अनुसार जीते थे वह गले के कैंसर से मर गए थे।

सुनील दत्त एक मसीहा, राजनीतिज्ञ और एक महान इंसान और एक अग्रणी फिल्म निर्माता बने और 2005 में उनकी नींद में ही मृत्यु हो गई थी।

शशि कपूर का रंग–बिरंगा, विवादास्पद और उतार–चढ़ाव से भरा जीवन था और कई स्वास्थ्य समस्याओ से उनकी मृत्यु हुई, लेकिन पदम भूषण और दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित होने के बाद।

साधना ने परेशान जीवन जिया था जबकि वह तीन साल पहले मर गई थी।

बलराज साहनी, अचला सचदेव, रहमान, मनमोहन कृष्णन, मदन पुरी और कैलाशनाथ जैसे अन्य सभी प्रमुख कलाकार इतिहास का हिस्सा बन गए हैं।

साहिर, रवि और अख्तर उल इमाम तीनों सबसे रचनात्मक लोगों ने अपने काम को पीछे छोड़ दिया है, जो हर समय जीवित रहेगा

केवल हाल ही में, श्रीमती रेणु चोपड़ा (बीआर चोपड़ा की बेटी) द्वारा "वक्त" का रीमेक बनाने का प्रयास किया जा रहा है। उसने मुझे यह जानने के लिए अपने कार्यालय में बुलाया था कि क्या 'वक्त' फिर से बना सकते हैं और मैंने उनसे कहा है कि

वक्त जैसी और भी कई फिल्में बन सकती हैं, लेकिन 55 साल पहले यश चोपड़ा द्वारा बनी "वक्त" जैसी कोई और वक्त नहीं बन सकती। कभी–कभी फिल्म में भी एक मिशन होता है और 'वक्त' निश्चित रूप से उनमें से एक थी। यह एक संदेश भेजने का सबसे शक्तिशाली तरीका था कि कैसे समय इतिहास, सभ्यता और यहां तक कि देशों को बना और तोड़ सकता है और वह आदमी हर समय समय का सम्मान करके खुद पर एक एहसान करता है।

"आदमी को चाहिए वक्त से दर के रहे, न जाने वक्त का कब बिगड़े मिजाज़"

अनु– छवि शर्मा

सानंद वर्मा कहते हैं, 'यह समय है कि रिया को अकेले छोड़ दें'

—ज्योति वेंकटेश

तीन महीने से अधिक समय हो गया है, जब सुशांत सिंह राजपूत ने हमें छोड़ दिया। जबकि उनके मामले की अभी भी सीबीआई द्वारा जांच की जा रही है, एनसीबी ने अपने मामले के मुख्य आरोपी रिया चक्रवर्ती को ड्रग पेडलिंग के लिए गिरफ्तार किया। सुशांत के निधन के बाद से, 'जलेबी' अभिनेत्री के बारे में बहुत कुछ कहा गया था, जिसमें मनी लॉन्ड्रिंग से लेकर आत्महत्या तक, उन पर बहुत सी बातों का आरोप लगाया गया था। उन्होंने हाल ही में मीडिया ट्रायल के खिलाफ बोलने वाली विभिन्न बॉलीवुड हस्तियों का भरपूर समर्थन प्राप्त किया। और सानंद वर्मा, जो पहले दिन से "#JusticeForSSR" के समर्थन में हैं, उन्हें लगता है कि मीडिया और प्रशंसकों को उन्हें अकेला छोड़ देना चाहिए क्योंकि उन्हें अभी तक दोषी नहीं ठहराया गया है।

एसएसआर के 'छिछोरे' का हिस्सा रहे अभिनेता को लगता है कि चूंकि मामला अभी भी जांच के दायरे में है, इसलिए लोगों को रिया के बारे में एक राय नहीं रखनी चाहिए। वह कहते है, "हम एक दोषी पर तब तक विचार नहीं कर सकते जब तक कि हम सिद्ध नहीं हो जाते या हम उसके या उसके बारे में कुछ बुरा नहीं कह सकते। जो कुछ भी हुआ उसके बावजूद, मुझे लगता है कि रिया के बारे में कुछ भी बुरा कहना या उसका अपमान करना, बिल्कुल भी अच्छा नहीं है। मामले की अभी भी जांच चल रही है, और अगर वह दोषी साबित होती है, तो कोई उसकी आलोचना कर सकता है, लेकिन उससे पहले नहीं। कृपया उनके बारे में एक राय न रखें या उनके बारे में कुछ भी अटकलें न लगाएं या उसका दुरुपयोग न करें, क्योंकि मामला अभी भी जांच के दायरे में है और वह अभी तक दोषी नहीं पाई गई है। तो कृपया उन्हें अकेला छोड़ दें,"

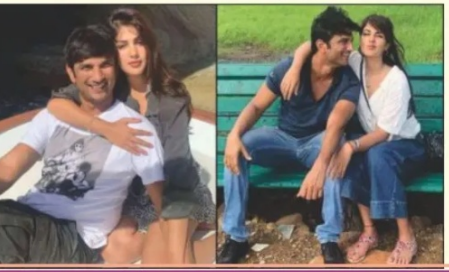

यह पूछे जाने पर कि उन्हें ऐसा क्यों लगता है कि सुशांत के मामले को जनता का इतना मजबूत समर्थन मिला, सानंद ने साझा किया कि यह इसलिए है क्योंकि लोग ऐसी विचित्र परिस्थितियों के बारे में सुनकर थक गए थे जिसमें अन्य अभिनेताओं की मृत्यु हो गई थी। वह कहते है, "चाहे वह जिया खान, दिव्या भारती या श्रीदेवी की मौत हो, ये सभी घटनाएं बहुत दुखद रही हैं और वे सभी संदिग्ध थे। उस समय एक ईमानदार जांच की जानी चाहिए थी। मुझे लगता है कि सुशांत के निधन के बाद लोग इन रहस्यमय मौतों से थक गए थे। उनके मामले को दर्शकों द्वारा इतना मजबूत समर्थन मिला। क्योंकि यहां तक कि लोग यह जानना चाहते थे कि उद्योग में ऐसी क्या बुराई है कि सुशांत जैसे व्यक्ति की भी रहस्यमय मौत हो गई। जब ऐसी चीजें बहुत बार होने लगती हैं, तो जाहिर तौर पर इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है, इसीलिए लोगों ने इसे इतनी गंभीरता से लिया है, और हम चाहते हैं कि यह एक विस्तृत जांच और सच्चाई हो। मुझे लगता है कि यह समय है कि उद्योग को एक सफाई मिली है,"

यह बताते हुए कि वह खुद एक सुशांत के प्रशंसक हैं, अभिनेता ने

दृढ़ता से कहा कि प्रशंसक होने के नाते किसी को भी आरोप लगाने या दुर्व्यवहार करने का अधिकार नहीं है। वह कहते है, "मैं हमेशा से सुशांत का प्रशंसक रहा हूं, और वह मेरी प्रेरणा थे। लेकिन उनका फैन होना मुझे किसी और के लिए परेशानी खड़ी करने का अधिकार नहीं देता। यह गलत होगा। किसी को मानसिक रूप से ट्रोल करना, धमकाना या प्रताड़ित करना शर्मनाक है। यहां तक कि मैं एक सुशांत का प्रशंसक हूं, और दूसरों से आग्रह करूंगा कि कृपया किसी को परेशान न करें। मामले की अभी भी जांच चल रही है, और हम बहुत जल्द सच्चाई जान जाएंगे। जिन लोगों ने यह पाप किया है, वे निश्चित रूप से सलाखों के पीछे होंगे।" उन्होंने अधिक से अधिक लोगों से "#JusticeForSSR" के लिए खड़े होने का आग्रह किया और कहा कि उन्हें सच बोलने से डरना नहीं चाहिए।

वह आगे कहते है, "मैं पहले दिन से "#JusticeForSSR" अभियान के पक्ष में हूं। मैं इसके बारे में मुखर रहा हूं और यहां तक कहा कि उद्योग में अपराध का स्तर बढ़ रहा है और बिना किसी झिझक के जो सही है उसका समर्थन करना हमारा कर्तव्य है। देर से कभी बेहतर, इसलिए मुझे खुशी है कि ऐसे अभिनेता हैं जो इस अभियान का समर्थन कर रहे हैं। और दूसरों को मैं बस इतना कहना चाहता हूं कि उन्हें किसी से डरना नहीं चाहिए क्योंकि यह हमारा उद्योग है और हमें यहां से वास्तविक जीवन के खलनायक को हटाने की जरूरत है। हमें और अच्छे लोगों की जरूरत है और हमें और प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने की जरूरत है। सुशांत को न्याय दिलाना हमारा अधिकार है और इसे पाने के लिए जो भी करना होगा हम करेंगे।"

ड्रग पेडलिंग मामले में रिया की गिरफ्तारी के तुरंत बाद, कंगना रनौत ने कहा कि बॉलीवुड के 99 प्रतिशत लोग ड्रग्स का सेवन करते हैं और यहां तक कि कुछ हस्तियों को अपनी बेगुनाही साबित करने के लिए एक परीक्षा लेने के लिए कहा। इस बारे में बोलते हुए, 'भाबीजी घर पर हैं!' के अभिनेता ने कहा, "मुझे सामान्यीकरण पसंद नहीं है। वहाँ कुछ हो सकता है लेकिन आप सभी को दोष नहीं दे सकते। इस तरह के बयान हमारे उद्योग की छवि को खराब करने के लिए किए गए हैं और मैं उनके समर्थन में नहीं हूं। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि हमारा उद्योग दवा मुक्त है, ऐसे लोग हैं जो ड्रग्स का उपयोग कर रहे हैं। मुझे लगता है कि एनसीबी पहले से ही इस पर है और हमारे इंडस्ट्री से इसे खत्म करने के लिए काम कर रहा है। यह समय है कि उद्योग इन सभी चीजों से मुक्त है और हम अच्छे इरादों और सच्चे जुनून के साथ काम करते हैं।"

लेकिन शुरुआत में एसएसआर की मृत्यु के बारे में 'रानी' अभिनेत्री के बारे में क्या कहना और फिर अन्य मुद्दों पर विचार करना? सानंद वर्मा ने कहा, "कंगना ने जो कुछ भी कहा वह उनकी निजी राय है। और मैं सिर्फ इतना कहना चाहूंगा कि उसने जो कहा, उस पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय हमें सुशांत और उनके मामले पर ध्यान देना चाहिए। यह कंगना के बारे में नहीं है, हम उनके लिए नहीं लड़ रहे हैं, हम सुशांत के लिए एकजुट हुए हैं। वह सब जो उन्होंने कहा है और उसने जो विभिन्न मुद्दे उठाए हैं, हमें केवल सुशांत के साथ हुई बातों पर ध्यान देना चाहिए, और हमें जांच एजेंसियों को मामले की तह तक जाने देना चाहिए और सच्चाई का पता लगाना चाहिए।"

अनु– छवि शर्मा

हमें महिलाओं की रिस्पेक्ट करनी चाहिए वो हम नहीं कर पा रहे हैं।

साकिब सलीम

—लिपिका वर्मा

हाल ही में साकिब सलीम की वेब सीरिज, 'क्रैकडाउन' वूट पलटफोर्म पर रिलीज हुई है, जो सभी को बेहद पसंद आ रही है। साकिब इस समय अपने दूसरे वेब शो का भी इंतजार कर रहे है जिसका टाइटल, 'कॉमेडी कपल' है। यह शो साकिब के दिल के बेहद करीब है और वो इस वेब सीरीज के रिलीज का इंतजार कर रहे है। और इसके अलावा उनकी फिल्म, '83' है। इस फिल्म का सभी को बेताबी से इंतजार है। फिल्म '83' रणवीर सिंह स्टारर फिल्म–निर्देशक कबीर खान है। क्रिकेट पर आधारित भारतीय क्रिकेटर की वर्ल्ड कप जीतने की कहानी है। '83' बन कर कम्पलीट पड़ी हुई है। साकिब को इस फिल्म के रिलीज का इंतजार है, जी हाँ मैंने फिल्म की डबिंग करते हुये थोड़ी सी फिल्म देखी है। इसमें मैंने मोहिंदर अमरनाथ का किरदार निभाया है। बस इंतजार है अब सभी के साथ यह फिल्म देखना शायद अब यह फिल्म दिसंबर तक रिलीज हो।'

साकिब सलीम ने रिया चक्रवर्ती के साथ, 'मेरे डैड की मारुति' में भी काम किया था, सो उन्होंने खुल कर यह कहा है, रिया मेरी दोस्त है और मैं उन्हें सपोर्ट करता हूँ।

आपको बतला दें रिया चक्रवर्ती दिवंगत एक्टर सुशांत सिंह राजपूत के सुसाइड/मर्डर/ड्रग्स केस में कथित तौर से आरोपी है, अतः लगभग 14 दिवस की जेल कस्टडी में रह कर हाल ही में उनके वकील सतीश मानशिंदे ने बेल एप्लीकेशन कोर्ट में दायर की है जिसकी सुनवाई होनी बाकि है।

साकिब सलीम ने जो कुछ फिलहाल चल रहा है उसपर टिप्पणी खुल कर की है–

☐ आजकल बॉलीवुड में जो कुछ चल रहा है ,खासकर आपकी को आर्टिस्ट रिया चक्रवर्ती के बारे में क्या कहना चाहते है आप?

इस बारे बोलूं मैं? मुझे यही कहना है बस, कि मुझे जुडिशरी पर पूर्ण विश्वास है। जो भी निर्णय–एन सी बी, इ डी ,सी बी आई और आदरनिये कोर्ट द्वारा लिया जायेगा वह सही होगा।

कुछ सोच कर आगे बोले, आज जो कुछ उनका परिवार झेल रहा है इस बारे में सोचिये। रिया मेरी दोस्त है और मैं जब कभी भी हो उन्हें हमेशा ही सपोर्ट करूँगा।

☐ इस पूरे माहौल पर आपको क्या कहना है?

बस यही कहना है ,मुझे यह सब ऐसा लग रहा है, जैसे किसी

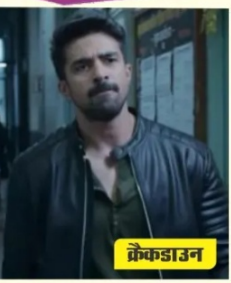

जुड़ैल का शिकार witch & hunt, मीडिया द्वारा किया जा रहा है,यह बिल्कुल भी सही नहीं है। मुझे ऐसा लगने लगा है जिस देश में हम रह रहे है –यहाँ पर स्त्री का आदर नहीं हो रहा है। शायद जिस तरह से हमें महिला की रिस्पेक्ट करनी चाहिए वो हम नहीं कर पा रहे है।

साकिब यही नहीं रुके आगे बोले, जब मैं एक छोटा बच्चा था तब से मुझे यही बताया गया, कोई भी इनोसेंट है जब तक वह गिलटी साबित न हो। दोष साबित होने तक वो मासूम है, किंतु मीडिया ने तो जैसे रिया को टेररिस्ट बना दिया है। यह सब देख कर मेरा दिल दुखी होता है। बस यही कह सकता हूँ बड़े बड़े जानकार लोग इस केस की तहकीकात कर रहे है।और उनका जो भी निर्णय होगा वही सही माना जायेगा। बस हमें इसका इंतजार करना चाहिए।

❑ इसके अलावा और क्या कहना चाहेंगे अपनी दोस्त रिया पर?

बतौर दोस्त चाहूँगा यदि वर्डिक्ट रिया के फेवर में आया तो मीडिया ट्रायल जो चल रहा है, वो गलत , क्या वो सभी माफी माँगेगे? यही फिलहाल। बस यही चाहूँगा सभी को जस्टिस मिले। सुशांत को जस्टिस मिले ।

❑ बॉलीवुड के लोग सॉफ्ट टारगेट है ऐसा आप मानते है?

बिल्कुल मैं इस बात से पूर्णतः सहमत हूँ। जब हम बोलते नहीं है तो बोला जाता इनके पास रीढ़ की हड्डी नहीं है और जब हम बोलते है तो हमें गालियां दी जाती है। हमे सोशल मीडिया पर ट्रोल किया जाता है। हम अभिनेता है आप हमारे काम की सराहना कीजिये या उसकी आलोचना कीजिये यह हमें मंजूर होगा। हमें दुनिया का बुद्धिमान व्यक्ति नहीं बनना है। हमे हमारे से पहचान मिले यही चाहिए। साइबर बुलईंग बंद करनी चाहिए। हमे इस पर कुछ करना चाहिए।

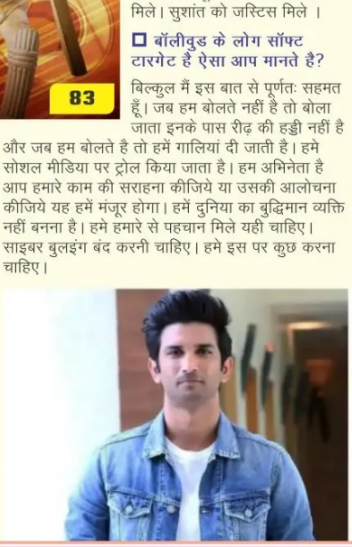

सिनेमा घर से पहले टीवी पर आएगी ''फुटफेयरी''

—शान्तिस्वरुप त्रिपाठी

''जी'' समूह का लोकप्रिय मनोरंजन प्रधान चैनल ''एंड टीवी'' पहली बार एक मौलिक मनोवैज्ञानिक व रोमांचक फिल्म 'फुटफेयरी' लेकर आ रहा है, जो कि दर्शकों की रीढ़ को ठंडा करने यानी कि रोमांचित करेगा। यह रहस्य प्रधान हत्याओं से युक्त कहानी उस अंधेरे पक्ष की पड़ताल करती है, जो इंसान का जुनून उसे किस हद तक जाने पर मजबूर कर सकता है। मुंबई की पृष्ठभूमि में गढ़ी गयी यह मनोवैज्ञानिक अपराध रोमांचक कहानी एक सीबीआई अधिकारी और एक रहस्यमय सीरियल हत्यारें के बीच एक चूहे बिल्ली के खेल की तरह है।

कनिष्क वर्मा लिखित और निर्देशित इस रोमांचक व मनोरंजक फिल्म में बहुमुखी प्रतिभा के धनी और 'कमांडो 3', 'मर्द को दर्द नहीं होता' तथा "शैतान" जैसी फिल्मों के चर्चित अभिनेता गुलशन देवैया और "चक दे इंडिया" फेम सागरिका घाटगे की जोड़ी है।

हर इंसान अपने सपने परियों की कहानी सुनना पसंद करता है, मगर जब यही परियों की कहानी सबसे बुरे सपने में बदल जाती हैं, तो क्या होता है, इसका अहसास अक्टूबर माह से 'एंड टीवी' पर प्रसारित होने वाली मनोवैज्ञानिक फिल्म "फुटफेयरी" में किया जा सकेगा।

इस फिल्म की चर्चा करते हुए 'जी हिंदी समूह' की बिजनेस हेड रुचिर तिवारी कहते हैं–"एक ब्रांड के रूप में हमने दर्शकों के लिए अधिकतम फिल्म देखने के अनुभव को सुनिश्चित करने के लिए हमेशा सबसे आगे रखा है। 1993 में 'जी टीवी' निर्मित फिल्म' फिर तेरी कहानी याद आयी'के 27 वर्षों बाद अब पहली टीवी पहल के तहत मौलिक फिल्म 'फुटफेयरी' को 'एंड टीवी' पर लॉच करना उसी दिशा में हमारा एक बड़ा कदम है। इस साल नई फिल्में सिनेमाघरों में नही आ पा रही हैं। बल्कि 'ओटीटी' प्लेटफार्म पर धमाका कर रही हैं। ऐसे ही दौर में 'एंड टीवी' भी एक नया कदम उठाने जा रहा है। एक बार में दर्शकों के विशाल आधार तक पहुंचने के लिए टेलीविजन एक सशक्त माध्यम है। यह भारत भर में 835 मिलियन दर्शकों तक पहुँचता है, जो किसी अन्य माध्यम की तुलना में बेजोड़ है।दूसरी बात मौजूदा ग्राहक इसे अपने टीवी पर बिना किसी अतिरिक्त लागत के पहले रिलीज में देख पाएंगे। ऑड बॉल मोशन पिक्चर्स के सहयोग से निर्मित, फुटफेयरी युवा और बेचैन शहरी भारत के ब्रह्मांड में एक अंधेरे, मुड़ कहानी है जो दर्शकों को बांधे रखेगी।"

अभिनेता गुलशन देवैया ने कहा– "फिल्म 'फुटफेयरी' की पटकथा ने इसे करने के लिए मुझे आकर्षित किया। इस मनोवैज्ञानिक अपराध को रोमांचक बनाने के लिए बहुत सारी तैयारी की गई। हमने लगभग 2 माह का शोध कर अपने किरदार की तैयारी की, ताकि हम यह सुनिश्चित कर सकें कि हमें बारीकियाँ सही मिलें।मेरे पास कनिष्क वर्मा और उनकी टीम जैसे सावधानीपूर्वक और अच्छी तरह से तैयार निर्देशक के साथ काम करने का एक संपूर्ण रोलरकोस्टर था। फिल्म में मैंने एक सीबीआई अधिकारी की भूमिका निभायी है।वर्तमान परिदृश्य में हमारी इस फिल्म को पहले टीवी पर रिलीज के माध्यम से व्यापक दर्शकों तक ले जाना बहुत अच्छा होगा।यह देखने के लिए इंतजार नहीं कर सकता कि दर्शक इस पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं।"

जबकि सागरिका घाटगे कहती हैं– "मनोवैज्ञानिक थ्रिलर्स ने मुझे हमेशा अपने डूबे हुए अनुभव के कारण मोहित किया है, जो आपको झुकाए रखता है और साथ ही साथ आपको अधिक चाहता है। आप गुप्त रूप से अपने सिर के रहस्य को सुलझाने की कोशिश करते रहते हैं, जो आपको प्रक्रिया का एक हिस्सा जैसा महसूस कराता है। एक मनोरंजक कथा के साथ रोमांच,रहस्य और साजिश का सही मात्रा में मिश्रण, निश्चित रूप से आपको आपकी सीटों के किनारे पर रखेगा।"

वहीं 'रिस्क','लाहौर', 'लव ब्रेक अप जिंदगी', 'रश' सहित कई फिल्मों में बतौर सहायक निर्देशक काम करने के बाद 'फुटफेयरी' से स्वतंत्र निर्देशन के क्षेत्र में पदार्पण कर रहे लेखक और निर्देशक कनिष्क वर्मा ने कहा–"क्राइम थ्रिलर्स ने हमेशा मुझे बहुत परेशान किया है, पूरे रहस्य, रहस्य और पीछा में शामिल मेरे दिमाग को उड़ा देता है। मैं बुक माइंड हंटर का बहुत बड़ा प्रशंसक रहा हूं,और यह कुछ ऐसा है जिसने मुझे 'फुटफेयरी' बनाने के लिए प्रेरित किया।अपने बोल्ड और सभी नए परिप्रेक्ष्य के साथ 'फुटफेयरी' उन लोगों के लिए एक आदर्श फिल्म है,जो खोज और प्रयोग करना पसंद करते हैं। फिल्म उन विषयों पर छूती है जो मौजूद हैं,लेकिन बुत या जुनून की तरह खुलकर बात नहीं की जाती है। मुझे एक बहुत ही प्रतिबद्ध टीम के साथ काम करने में मजा आया और साथ में आपकी सीट साहसिकता के एक किनारे का निर्माण किया है जिसका आप आनंद लेना सुनिश्चित करते हैं।"

इस कोरोना काल में राजीव वी भल्ला और बेनी दयाल ने सॉन्ग ऑफ होप 'जी ले' लॉन्च किया!

★सुलेना मजुमदार अरोरा★

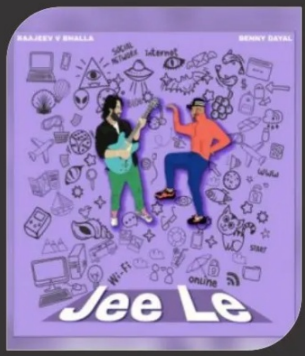

जीवन में सकारात्मकता का संदेश फैलाने के लिए **राजीव भल्ला** और **बेनी दयाल**, दोनों के साथ जुड़े **विशाल ददलानी, सलीम मर्चेंट, अरमान मलिक** व अन्य प्रमुख संगीतकार। कोरोना के इस महामारी में सद्भावना व सकारात्मकता फैलाने के संदेश के रूप में, दोनो सिंगर्स के साथ मजबूती से खड़े हुए इंडस्ट्री के शीर्ष संगीतकार। यह बुरे काल का दौर भले ही हंसने–हँसाने का विषय न हो,

लेकिन संगीतकार **राजीव वी भल्ला** और गायक **बेनी दयाल**, मुस्कुराहट और पॉजिटिविटी बिखेरने के इसी माध्यम से दुनिया के लोगों के बीच प्यार और खुशियाँ बढ़ाने के मिशन पर हैं। इसीलिए दोनों ने अपने संगीतकार दोस्तों को 'जी ले' के साथ जिंदगी का जश्न मनाने के लिए आमंत्रित किया। संगीतकारों का यह खुशनुमा जुड़ाव, उम्मीदों से भरा एक गीत (सॉन्ग ऑफ होप) है, क्योंकि यह दुनिया को मुश्किलों के बारे में ज्यादा न सोचने और सिर्फ आज में जीने के लिए प्रोत्साहित करता है।

संगीतकार, गीतकार व गायक राजीव वी भल्ला कहते हैं, कि उन्होंने यह गाना उन लोगों को खुश करने के लिए लिखा है जो कोविड–19 के बाद की दुनिया में रोजमर्रा की जिंदगी को लेकर परेशान हैं, निराश हैं, वे कहते हैं, बेनी और मैंने इस नए संदेश के बारे में सोचा कि आज में जियो, मेरे दोस्त, हमारे पास जो है बस यही है.. जिन्दगी का तू रॉकस्टार, जो आज के वक्त की अहम जरूरत है। फिलहाल हमारे पास जो है उसकी भी खुशी और आनंद गँवाते हुए हम हर वक्त चिंता करते हुए नहीं रह सकते। हालात चाहे जैसे हों हमें बड़प्पन, खुशी और उम्मीदों के साथ जिंदगी जीना चाहिए।

अतिथि संगीतकारों ने कहा कि, 'ये सॉन्ग हमें एक साथ आकर खड़े होने, एक–दूसरे को प्रोत्साहित करने और सकारात्मकता व आशावाद फैलाने के लिए एक अच्छा अवसर था।

'**बैंग बैंग**', और '**दारू देसी**' जैसे हिट गानों को आवाज देने वाले **बेनी दयाल** कहते हैं, 'इस गाने के लिए राजीव ने जब मुझसे संपर्क किया तो उनके साथ काम करने के लिए मैं तुरंत तैयार हो गया, क्योंकि व्यक्तिगत तौर पर मैं उनके संगीत का प्रशंसक रहा हूं। इसके अलावा, दुनिया को सकारात्मकता और उम्मीद के एक डोज की जरूरत है। हो सकता है हमारे पास अभी सब कुछ न हो, लेकिन हमारे पास जो कुछ भी है उसके लिए हमें आभारी होना चाहिए। यह सॉन्ग आपको इसी बात पर ध्यान केंद्रित करने की याद दिलाता है और यह भी कि हम सब अपने जीवन के रॉकस्टार हैं।

राजीव और बेनी दोनों उन सभी संगीतकारों के आभारी हैं जिन्होंने वीडियो में स्पेशल अपीयरेंस दी है। **विशाल ददलानी** हों, **सलीम** हों या **अरमान**, '**जी ले**' मूवमेंट के लिए अपना समय और उपस्थिति देने के लिए सभी दिल से तैयार थे। यहां तक कि उन्होंने इस गाने के संदेश को शेयर करने के लिए सुरक्षा के मद्देनजर अपने घरों से ही शूट किया।

सलीम मर्चेंट और विशाल ददलानी के अलावा, दोनों को शाल्मली खोलगड़े, अरमान मलिक, आदित्य नारायण, जोनिता गांधी, शिल्पा राव, अदिति सिंह शर्मा, दिव्या कुमार, श्रुति पाठक, सिद्धार्थ महादेवन, मिहिर जोशी, अरुनाजा, कामाक्षी खन्ना, लीजा मिश्रा, निकिता गांधी, संगीतकार अनुषा, शाश्वत सिंह, सप्तक चटर्जी और शेफाली अल्वारेज का भी सपोर्ट मिला।

आखिर में वे कहते हैं, 'हर किसी के लिए हमारा यही संदेश है, 'अपनी जिंदगी से प्यार कीजिए, हालात जो भी हों'।

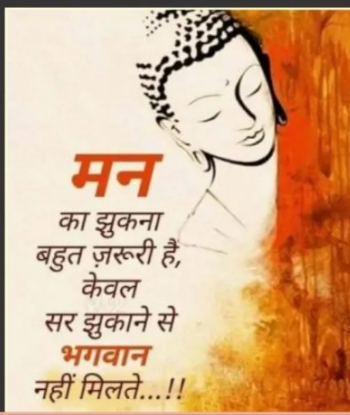

'सारेगामापा लिटिल चैंप्स' में खोले रणधीर कपूर ने अपने दिल के राज

जी टीवी का पॉपुलर सिंगिंग रियलिटी शो 'सारेगामापा लिटिल चैंप्स' अपने शानदार कंटेस्टेंट्स की एक से बढ़कर एक परफॉर्मेंस के साथ सभी का दिल जीत रहा है। इस पॉपुलर रियलिटी शो में अमोल पालेकर और अन्नू कपूर जैसे बॉलीवुड सितारों के साथ 80 का दशक सेलिब्रेट करने के बाद अब हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के एक और मशहूर एक्टर रणधीर कपूर के साथ वही क्लासिक दौर जारी रहेगा।

शूटिंग के दौरान यंग लिटिल चैम्प आर्यनंदा बाबू को 'राम तेरी गंगा मैली' का गाना 'इक राधा, इक मीरा' गाते हुए सुनकर रणधीर कपूर उस वक्त में लौट गए जब इस फिल्म से उन्होंने एक प्रोड्यूसर के रूप में डेब्यू किया था। अपने उस सफर को याद करते हुए रणधीर कपूर ने कहा, "मैं और मेरे दोनों भाई, राज कपूर के साथ एक शादी में दिल्ली गए थे। उसी शादी में रविंद्र जैन एक ऑर्केस्ट्रा में परफॉर्म कर रहे थे। उन्होंने 'इक राधा इक मीरा' गाया था, जो पापा को बहुत अच्छा लगा। अगले दिन एक दूसरे फंक्शन में हमने रविंद्र जैन को वहां भी परफॉर्म करते हुए देखा। तब राज कपूर ने उनसे वही गाना दोबारा सुनाने की गुजारिश की। रविंद्र ने यह गाना सुनाने के बाद बताया कि यह उनकी अपनी कंपोजीशन है और यह गाना किसी फिल्म से जुड़ा नहीं है। तब मेरे पिता ने मुझसे 25,000 रुपए का चेक साइन करके उन्हें देने को कहा, क्योंकि वो इस गाने पर आधारित एक फिल्म बनाना चाहते थे। इस वजह से मैं उस पिक्चर (राम तेरी गंगा मैली) का प्रोड्यूसर बना, क्योंकि वो चेक मैंने दिया था।"

इसी दौरान एक अन्य कंटेस्टेंट गुरकीरत सिंह की परफॉर्मेंस के बाद रणधीर कपूर ने जजों और ज्यूरी सदस्यों को एक और दिलचस्प किस्सा सुनाते हुए बताया कि उनके दादाजी पृथ्वीराज कपूर ने मशहूर फिल्म 'आवारा' में राज कपूर के पिता का रोल करने से मना कर दिया था। रणधीर कपूर ने बताया, "उस समय जिन लोगों ने मेरे पिता के साथ काम किया था, मैंने उनसे सुना है कि दादाजी पृथ्वीराज कपूर ने फिल्म 'आवारा' में काम करने से मना कर दिया था। वो उस समय भी एक स्टार थे और फिल्मों में हीरो के रोल निभा रहे थे, इसलिए वो एक बाप का रोल नहीं निभाना चाहते थे। राज कपूर जी थोड़े डरे हुए थे कि वो कैसे उनसे संपर्क करें। फिर उन्होंने इस फिल्म के लेखक ख्वाजा अहमद अब्बास को उन्हें राजी करने के लिए भेजा। उन्होंने पृथ्वीराज जी को यह कहकर मना लिया कि वे ही फिल्म के असली हीरो हैं और राज कपूर तो सेकंड लीड निभा रहे हैं। इस तरह उन्होंने मेरे दादाजी को मना लिया।"

एपिसोड के दौरान ऋषि कपूर को समर्पित जजों और कंटेस्टेंट्स के स्पेशल ट्रिब्यूट से रणधीर कपूर काफी भावुक हो गए।

BOX OFFICE

फिल्म समीक्षा: ''हलाहल: शिक्षा तंत्र घोटालों पर चोट करती रहस्य प्रधान फिल्म'' ★★★★

—मायापुरी प्रतिनिधि

निर्माता: जीशान कादरी

निर्देशक: रणदीप झा

कलाकार: सचिन खेडेकर, वरुण सोबती, मनु ऋषि चड्ढा, जयदीप अहलावत, अर्चना शर्मा, सानिया बंसल, द्विवेदु भट्टाचार्य व अन्य

अवधि: एक घंटा 36 मिनट

ओटीटी प्लेटफॉर्म : इरोज नाउ

किसी भी देश या समाज का विकास व उन्नति तभी संभव है, जब उस देश या समाज में रहने वाले हर इंसान का विकास और प्रगति हो। हर इंसान के विकास और प्रगति के लिए शिक्षा अत्यावश्यक है। मगर जब देश का पूरा शिक्षा तंत्र ही भ्रष्ट हो, जिस पर पूरी तरह से भ्रष्ट नेताओं और धंधेबाजों का कब्जा हो, ऐसे में किसी प्रतिभावान बच्चे से उसका शिक्षा पाने का मौलिक हक खींच लेना आसान हो जाता है। यह हकीकत है। हमारे सामने मध्य प्रदेश के व्यापम घोटाले सहित शिक्षा जगत से जुड़े कई घोटाले उदाहरण के तौर पर मौजूद है। ऐसे ही शिक्षण संस्थाओं और शिक्षा तंत्र पर कुठाराघात करने वाली फिल्म ''हलाहल'' लेकर आए हैं लेखक जीशान कादरी और निर्देशक रणदीप झा, जो कि 21सितंबर से ''इरोज नाउ'' पर देखी जा सकती है।

''हलाहल' यानी की जहर शिक्षण संस्थाओं की लंबी चौड़ी फीस ना दे पाने वाले हर गरीब व प्रतिभावान लड़के और लड़की के साथ साथ उनके माता–पिता को भी पीना पड़ रहा है। यही कड़वा सच फिल्म ''हलाहल'' का मुख्य हिस्सा है। जिसे मर्डर मिस्ट्री के साथ पेश किया गया है। इस कहानी में ऐसे मोड़ है कि लोग सोचने पर विवश हो जाएंगे।

कहानी:

फिल्म की कहानी गाजियाबाद के हाईये से शुरू होती है,जहां एक लड़की अर्चना एक लड़के अशीश से रुकने के लिए कह रही है।अर्चना कहती है कि 'अशीश रुक जाओ, सब ठीक हो जाएगा।' पर अचानक एक ट्रक अर्चना को रौंद देता है। अशीश भाग खड़ा होता है। उस ट्रक में सवार तीन लोग उतरते हैं, और अर्चना शर्मा को मृत देखकर उस पर पेट्रोल छिड़ककर आग लगा देते हैं। पता चलता है कि अर्चना शर्मा 'गाजियाबाद मेट्रो मेडिकल कॉलेज' की छात्रा होने के साथ ' ए सी ई कोचिंग अकादमी' में पढ़ाती भी थी। अर्चना शर्मा के पिता डॉक्टर शिव शर्मा (सचिन खेडेकर) रोहतक में रहते हैं और उन्हें अपनी बेटी की मौत की खबर से सदमा लगता है। वह तुरंत पुलिस स्टेशन पहुंचते हैं, जहां उन्हें बताया जाता है कि उनकी बेटी अर्चना ने आत्महत्या कर ली। डॉक्टर शिव को इस बात पर यकीन नहीं होता। डॉक्टर शिव के अनुसार उनकी बेटी अर्चना आत्महत्या नहीं कर सकती। मगर 'गाजियाबाद मेट्रो मेडिकल कॉलेज' के डीन डॉ आचार्य द्वारा तैयार की गई पोस्टमार्टम रिपोर्ट भी यही कहती है कि अर्चना ने आत्महत्या की है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट देखकर डॉक्टर शिव शर्मा को एहसास हो जाता है कि यह आत्महत्या नहीं है, क्योंकि पोस्टमार्टम रिपोर्ट में अर्चना का ब्लड ग्रुप गलत लिखा होता है। शिव शर्मा प्रतिज्ञा करते हैं कि वह अर्चना की मौत की सच्चाई सबके सामने लाकर रहेंगे। डॉक्टर शिव शर्मा अपनी तरफ से जांच शुरू करते हैं। अर्चना शर्मा के बैंक खाते में 12 लाख से अधिक रकम देखकर भी डॉक्टर शिव शर्मा चौकते हैं। उधर उसी पुलिस स्टेशन में एक भ्रष्ट पुलिस इंस्पेक्टर युसूफ अंसारी (वरुण सोबती) भी है, का जो कि महज पैसे लेकर सारे काम करता है। पुलिस इंस्पेक्टर युसूफ हर किसी से पैसे लेते हुए नजर आता है। शिव शर्मा सबसे पहले तो डॉक्टर आचार्य से मिलकर सच जानने की कोशिश करते हैं और उन्हें धमकाते हैं कि उन्होंने सच नहीं बताया,तो वह इस मुद्दे को मेडिकल काउंसिल में उठाएंगे। उसके बाद डॉक्टर आचार्य के इशारे पर पर कुछ गुंडे शिव शर्मा पर हमला कर देते हैं। इस बीच डॉक्टर शिव शर्मा एक हवलदार के कहने पुलिस इंस्पेक्टर युसूफ अंसारी से उनके घर पर मिलते हैं और कहते हैं कि वह आशीश को तलाश कर लें आए, इसके लिए एडवांस में युसुफ को दो लाख रुपए देते हैं। इसके बाद शिव शर्मा व युसुफ जांच शुरू करते हैं, जांच के दौरान शक के घेरे में कई लोग आते हैं।कुछ छात्राओं की भी मौत होती है, कई लोगों की भी हत्याएं हो जाती हैं, जिन पर शक है। तमाम घटनाक्रम तेजी से बदलते हैं।फिर जो सच सामने आता है,वह बहुत भयानक होता है। उसके बाद इस मसले से जुड़े हर इंसान की जिंदगी बदल जाती है।

लेखन व निर्देशन:

इस मकसदपूर्ण मनोरंजक फिल्म की कसी हुई पटकथा में रहस्य रोमांच के जो मोड़ हैं,वह दर्शकों को बांध कर रखते हैं। इतना ही नहीं फिल्म का क्लाइमेक्स, रहस्य और जो अंत है, उसकी कल्पना तो दर्शक कर ही नहीं पाता। जबकि फिल्म का क्लाइमैक्स हमारे भारतीय समाज का ऐसा बड़ा कड़वा सच है, कि दर्शक को अपने अंदर झाँक कर देखने पर मजबूर होना पड़ता हैं।

शिक्षा व्यवस्था पर करारा चोट करती यह फिल्म इस बात पर रोशनी डालती है कि बच्चे को शिक्षा दिलाना हर इंसान के लिए हलाहल जहर पीने जैसा है। 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' से चर्चा में आए लेखक, अभिनेता, निर्देशक, निर्माता जीशान कादरी ने कुछ कमियों के बावजूद बतौर निर्माता व लेखक अपनी नई फिल्म 'हलाहल' में गाजियाबाद को परदे पर चमका दिया है। निर्देशक रणदीप झा का निर्देशन सराहनीय है।

अभिनय:

डॉक्टर शिव शर्मा के किरदार में अभिनेता सचिन खेडेकर ने कमाल का अभिनय किया है. एक पिता का दर्द, भूमाफिया से भिड़ने का जज्बा, अपने ही व्यवसाय से जुड़े लोगों पर सवालिया निशान लगाता डॉक्टर शिव और फिर बेटी अर्चना की असलियत सामने आने पर घुटनों के बल आ गया इंसान,इन सारे पड़ाव को सचिन खेडेकर ने अपने शानदार अभिनय से जिस तरह से साकार किया है कि पर्दे पर उन्हें देखते हुए लोग भूल जाएंगे कि वह सचिन खेडेकर को देख रहे हैं, बल्कि उन्हें तो हर जगह डॉ शिव शर्मा ही नजर आएंगे। वह एक उम्दा कलाकार हैं, इस बात को उन्होंने इस फिल्म में भी साबित करके दिखाया है। भ्रष्ट पुलिस इंस्पेक्टर रूआबदार मूंछें, चेहरे से झलकता कमीनापन,हर काम में सिर्फ पैसे का लालच और अपने वरिष्ठ से भिड़ जाने के रोमांच को वरुण सोबती ने बेहतरीन तरीके से अपने अभिनय से परदे पर उकेरा है। राज्य के उपमुख्यमंत्री विजेंद्र सिंह फोटो उर्फ भाई साहब के छोटे किरदार में मनुश्री चड्ढा एक बार फिर दर्शकों का दिल जीत लेते हैं। इसके अलावा अन्य कलाकार भी अपनी अपनी जगह सही है।

BOX OFFICE

फिल्म समीक्षाः ''परिवारः संपत्ति को लेकर परिवार के बीच के युद्ध पर अति साधारण वेब सीरीज''

★★★

–मायापुरी प्रतिनिधि

निर्माता: अर्रे स्टूडियो

निर्देशक: सागर बल्लारी

कलाकार: गजराज राव, यशपाल शर्मा,रणवीर शोरी, निधि सिंह,विजय राज, अभिषेक बनर्जी, अनुरीता झा,सादिया सिदिक्की , कुमार अरूण, पियूष कुमार व अन्य..

अवधिः छह एपीसोड– 21 से 25 मिनट के छह एपीसोड

ओटीटी प्लेटफार्मः हॉटस्टार डिजनी

हर परिवार में संपत्ति का ही झगड़ा सर्वोपरी होता है। परिवार में भाई–बहन के बीच धन व संपत्ति के सामने कोई रिश्ता मायने नहीं रखता। अपने हिस्से की एक एक पाई व जमीन के टुकड़े की मांग को लेकर जो झगड़े होते हैं, वह आम बात है। इसी विषय को केंद्र में रखकर निर्देशक सागर बल्लारी परिवार में एकता की बात करने वाली हास्यप्रद वेब सीरीज ''परिवार'' लेकर आए हैं। इसमें परिवार का हर सदस्य संपत्ति पर अपने पंजे को मजबूत करने की साजिश में लिप्त है,पर एक दिन ऐसा कुछ होता है कि उन्हे रिश्ते की अहमियत समझ में आ ही जाती है। वेब सीरीज ''परिवार'' को 23 सितंबर से 'हॉटस्टार डिजनी' पर देखा जा सकता है।

कहानी:

यह कहानी है उत्तर प्रदेश के प्रयागराज (इलाहाबाद) में रहने वाले कांशीराम नारायण (गजराज राव) के परिवार की। कांशीराम की बेटी मंदाकिनी(निधि सिंह)अमेरिका में रहती है। बड़े बेटे महिपाल (यशपाल शर्मा) बनारस में और छोटे बेटे शीशुपाल (रणवीर शोरी) मुंबई में रहते हैं। महिपाल की पत्नी मंजू (अनुरीता झा)के अलावा दो बच्चे हैं, जबकि शीशुपाल के पत्नी अंजू (सादिया सिद्दीकी) और दो बेटे हैं। कांशीराम चाहते हैं कि उनके बेटे और उनकी बेटी उनके साथ रह कर उनकी सेवा करें। इसलिए वह बार–बार अस्पताल में पहुंचकर बीमार होने का बहाना कर अपने बेटे और बेटी को बुलाते रहते हैं। उनका नौकर बबलू इस बात से परेशान भी रहता है। एक दिन फिर कांशीराम अस्पताल में पहुंचकर बबलू(कुमार अरुण) के माध्यम से अपने दोनों बेटों और बेटी मंदाकिनी को संदेश भेजते हैं कि वह मरने वाले हैं।दोनों बेटे व बेटी अपने परिवार के साथ प्रयागराज पहुंच जाते हैं। तब उन्हें पता चलता है कि कांशीराम अब ठीक है। इतना ही नहीं महिपाल,शिशुपाल और मंदाकिनी को पता चलता है कि उनके पिता के पास करीबन 40 एकड़ जमीन है। जिसमें से उन्होंने जमीन को दोनों बेटे और एक बेटी के नाम कर दिया है. पर उन्होंने 30 एकड़ जमीन गंगाराम (विजय राज) को दी है,जो इस जमीन पर एशिया का सबसे बड़ा 'विदुर आश्रम' बनाने वाला है। हकीकत में गंगाराम उस जमीन पर एक फैक्ट्री खड़ा करना चाहता है। गंगाराम का बेटा मुन्ना (अभिषेक बनर्जी) कुछ कर नहीं पाया और अब 5 साल से एक अस्पताल में नर्स के रूप में काम कर रहा है। पर मंदाकिनी आज भी मुन्ना से प्यार करती है। गंगाराम अपने बेटे मुन्ना से कहता है कि वह प्यार के बहाने मंदाकिनी से जमीन के एनओसी वाले कागज पर हस्ताक्षर करवा ले। मगर इस बीच पटवारी के साथ महिपाल, शिशुपाल व मंदाकिनी जमीन देखने पहुंच जाते हैं। पटवारी उन्हें बता देता है कि एनओसी वाले कागज पर साइन ना करें। कांशीराम के लिए अस्पताल का डेढ़ लाख रुपए का बिल जमा करने के बाद गंगाराम, कांशीराम के घर पहुंचता है। वह महिपाल और शिशुपाल से कहता है कि वे एनओसी पर हस्ताक्षर कर दें, जिससे 'विदुर आश्रम' का निर्माण शुरू हो जाए। शिशुपाल एनओसी का पेपर पढ़ता है, जिसमें लिखा है कि फैक्ट्री बनाना है। इससे दोनों गंगाराम की पिटाई कर देते हैं। यह बात कांशीराम को पसंद नहीं आती। उधर पिता को मरने से बचाने के लिए मंदाकिनी एक बहुरूपिया पंडित चित्रकूट(पियुष कुमार) को लेकर आती है, जिसे एक दिन दोनों भाई भगा देते हैं। कहानी आगे बढ़ती है। मंजू, महिपाल से इलाहाबाद में ही होमस्टे शुरू करने की सलाह देती है। उधर बनारस में महिपाल के खिलाफ एक बिल्डर पड़ा हुआ है। तो वही शिशुपाल की नौकरी चली गई है और अंजू की सलाह पर शिशुपाल वकील दिलीप से मिलकर अपने पिता की जमीन गंगाराम के पास ना जाने पाए, इसके लिए सलाह लेता है। कई घटनाक्रम तेजी से बदलते हैं एक वक्त वह आता है, जब महिपाल अपने छोटे भाई शिशुपाल और बहन मंदाकिनी द्वारा दिए गए पावर अटार्नी को गंगाराम के नाम कर देता है। इससे बवाल होता है। मंदाकिनी अमेरिका वापस जाने का निर्णय लेती है। उसके बाद मुन्ना,गंगाराम, मंदाकिनी और कांशीराम मिलकर एक नाटक रचते हैं। उसके बाद सभी को समझ में आता है कि जमीन जायदाद से भी बढ़कर पारिवारिक सदस्यों के बीच आपसी प्यार है।

लेखन व निर्देशनः

संपत्ति को लेकर युद्ध को गढ़ा तो गया है, और प्रतिभाशाली कलाकार भी मौजूद हैं,मगर लेखन की कमजोरी के चलते बात बनी नही। संपत्ति को लेकर असंतुष्ट परिवार को एकजुट करने का विषय बहुत पुराना है। इस पर कई फिल्में व वेब सरीज बन चुकी हैं। इस तरह के विषय के लिए होशियार व प्रतिभावान लेखक की जरुरत थी, इस पर लेखक गगनजीत सिंह और शांतनु अमान खरे नहीं उतरे।

निर्देशक ने प्रयागराज यानी कि इलाहाबाद का आभास देने के लिए दही–जलेबियों,चाय और संगम का उल्लेख कर अपनी इतिश्री समझ ली है।महिपाल वाराणसी में रहता है, इसलिए बनारसी लहेजे के कुछ सवाद भी हैं। शिशुपाल मुंबई मे रहता है, इसलिए 'तपोरी' की बोली रखकर शायद लेखकों ने सोचा होगा कि यह मजेदार होगा,पर ऐसा नही होता। परिवार के बीच कुछ हल्के फुल्के दृश्य जरुर आकर्षित करते है। लोगों को हॅसाने के लिए मुन्ना को नर्स बना दिया गया है,पर हॅसी नही आती। पर निर्देशक की खूबी के चलते कहानी एपीसोड दर एपीसोड सहजता से आगे बढ़ती रहती है।

अभिनयः

''बधाई हो'' फेम अभिनेता गजराज राव के हिस्से करने को कुछ आया ही नही। उनका लुक भी बहुत अजीबोगरीब रखा गया है। यशपाल शर्मा और रणवीर शौरी ऐसे अनुभवी कलाकार हैं, जो शुष्क दृश्यों को भी जीवंत कर सकते हैं। पर लेखकीय कमजोरी के चलते दोनों की प्रतिभा उभर नहीं पाती। शिशुपाल की पत्नी अंजू की भूमिका निभाने वाली अभिनेत्री सादिया सिद्दीकी को समान अवसर नहीं दिया गया। कांशीराम के घरेलू नौकर बबलू के किरदार में कुमार वरुण के पास करने को काफी कुछ था, पर वह ओवर एक्टिंग ही करते नजर आए। पूरी वेब सीरीज को गंगाराम का किरदार निभाने वाले अभिनेता विजय राज ही अपने कंधे पर ले जाते हैं। विजय राज के अभिनय की तारीफ करनी ही पड़ेगी।

मैं एक वरिष्ठ नागरिक आपको "सोनू सूदजी" को सलाम करता हूं

अली पीटर जॉन

"मेरे प्यारे सोनू सूदजी"

मुझे आपसे मिलने या आपको जानने का सम्मान कभी नहीं मिला, जबकि मुझे पता था, कि आप यारी रोड पर आराम नगर में मेरे पड़ोसी थे, लेकिन मुझे हमेशा इस बात की जानकारी थी, कि आप एक अभिनेता के रूप में लगातार काम करते आ रहे हैं।

बल्कि, मैं उन लाखों भारतीयों में से एक था, जिन्हें असली **सोनू सूद** का पता चला था, जिनके पास ग्लैमर, ग्लिट्ज और ग्रिट था जब आप एक बड़े दिल के साथ खड़े हो गए, जो **दिवंगत मदर टेरेसा** के चाहने वाले लोगों को देने के लिए तब तक देने की अनूठी क्षमता के साथ धन्य है, जो लोग चाहते थे।

उस आत्मा को कौन भूल सकता है– जिन्होंने बिहार, यूपी और अन्य राज्यों जैसे दूर–दराज के गाँवों में प्रवासी मजदूरों को उनके घरों भेजने के लिए दिन–रात किस तरह से काम किया है ?

आपके उस सीन को कौन भूल सकता है–जब आप यह सुनिश्चित करने के लिए कि रेलवे प्लेटफार्म पर गए कि प्रवासी मजदूरों को सही ट्रेनों में बिठाया जा रहा था, और उनकी बुनियादी जरूरतों, विशेष रूप से अच्छा और पौष्टिक भोजन, साफ पानी और यहां तक कि दवा सभी चीजे प्रदान कि गई थी?

कौन भूल सकता है, कि कैसे आप और आपकी टीम स्वर्ग और पृथ्वी को किस तरह खिसकाकर खंभे से पोस्ट तक ले गए, यह सुनिश्चित करने के लिए कि आपकी सभी आवश्यकताओं को गरीबों और दलितों, भूखे और निराश लोगों की सेवा के लिए बनाया गया था?

कौन भूल सकता है, कि आपने गर्भवती महिलाओं और बूढ़े और अपंग और निराश लोगों की देखभाल के लिए कैसे एक विशेष व्यवस्था की थी?

कौन भूल सकता है कि आप सेंटर और राज्यों की सरकार के मुकाबले क्या कर सकते हैं और देश के मजदूरों की सेवा करना किसकी जिम्मेदारी है पर निरर्थक बहस करने के बजाए अधिक खर्च कर सकते हैं?

कौन भूल सकता है कि आपने यह कैसे देखा कि मजदूर न केवल आराम से शहर छोड़ गए बल्कि सुरक्षित रूप से अपने घरों तक भी पहुंच गए?

आपके ऊपर बरसाए गए मजदूरों के कृतज्ञता भरे शब्दों और भावनाओं को कौन भूल सकता है?

कौन भूल सकता है कि माता–पिता ने अपने नवजात बेटे का नाम आपके नाम पर कैसे रखा?

और एक बार प्रवासी मजदूरों के बड़े संकट को कम करने के बाद, आप गरीबों और उन लोगों की मदद करने के अन्य तरीकों की तलाश करते हैं जो प्रकृति और भ्रष्ट राजनेताओं की दया पर छोड़ देते हैं?

और अब आप आंध्र प्रदेश के लोगों और गांवों को जोड़ने वाले एक रास्ते का निर्माण करने के लिए अपने रास्ते से हट गए हैं, जिस जगह के लोगों ने आप के लिए अनंत कृतज्ञता की शपथ ली है, और केवल हाल ही में, आपने एक और व्यक्ति द्वारा एक बड़े पैमाने पर शिक्षा अभियान शुरू करके चमत्कार किया है जिसमें आपने विभिन्न संकायों में मुफ्त शिक्षा का वादा किया है

और जब मैं आपके हुरियारिनों और मानवतावादी प्रयासों के लिए इसकी प्रशंसा कर रहा हूं, तो मैं फिल्म इंडस्ट्री को बर्बाद करने वाली गंदी बहसों में आपके बारे में होने की बात भी सुन रहा हूं, मुझे आशा है कि आप इन गंदे झगड़ों का आसानी से शिकार नहीं होंगे क्योंकि आप अब इन सभी छोटे मामलों के लिए बहुत बड़े हो गए हैं।

और जैसा कि आप जानते हैं, बिहार में चुनाव हाथ में हैं, और आप पर कुछ चालाक राजनेताओं के साथ दबाव डाला जाएगा, जो आपकी भलाई का उपयोग करने के लिए अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं, क्या आप उन्हें ऐसा करने की अनुमति देंगे, भगवान के भेजे अच्छे आदमी **'सोनू सूद'**।

अनु–छवि शर्मा

सवाल है, कि क्या दोषी को सजा होगी, या फिल्मों की कहानियों की तरह ही इल्जाम इनके मैनेजर ड्राइवर पर ही आ जाएंगे?

–निहारिका जैन

नजर डाल लेते हैं कुछ हाइलाइट्स पर–

सुशांत सिंह राजपूत की रहस्यमयी मौत!
रिया चक्रवर्ती पर सुशांत की मौत से जुड़े होने का शक!
कुछ बड़े सितारों और फिल्म मेकर्स का नाम शामिल!
ड्रग एंगल का सामने आना!
रिया चक्रवर्ती की गिरफ्तारी!
बड़े–बड़े सितारों का ड्रग्स कनेक्शन सामने आना!
एनसीबी का सितारों को सम्मन देना!

सुशांत सिंह राजपूत की दुःखद मौत ने सभी को चकित कर दिया था! मामला अभी तक नही सुलझ पा रहा है। हालांकि अब खबर मिली है, कि ये स्पष्ट हो गया है, कि सुशांत ने आत्महत्या ही की थी, रिपोर्ट में उनके दोनों हाथों से खुद को फांसी लगाने की बात सामने आई है। सुशांत की मौत ने बॉलीवुड इंडस्ट्री के कई **काले नकाब** उतार फेंके हैं। अब देखना ये है, कि क्या ये लोग कानून से बच पाएंगे या जैसा कि फिल्मों में होता है, कुछ छोटे लोगों को फंसाकर यह केस भी बंद हो जाएगा।इतने बड़े बड़े बॉलीवुड सितारों के नाम इस केस में आये हैं।

क्या हर कोई ही निर्दोष होगा?

क्या यह सारे नाम सिर्फ एक मन गढ़त कहानी है?
सुशांत की मौत होती है, उनकी गर्लफ्रैंड रिया चक्रवर्ती पर शक की निगाहें घूमती हैं। रिया की छानबीन के बाद मामला कुछ और ही दिशा में घूम जाता है।अब सिर्फ ड्रग्स को लेकर बातें चल रही हैं।बड़े बड़े नाम ड्रग लिस्ट में आये हैं। लोग #Bollywooddruggies का जोरदार विरोध कर रहे हैं।इतने बड़े बड़े एक्टर्स, एक्ट्रेसेस, और फिल्म मेकर्स के नाम सामने आए हैं।

सभी के नाम तो गलत नही हो सकते

इस बात को एक फिल्म की कहानी की तरह देखते हैं,कुछ बहुत बड़े–बड़े लोगों के नाम एक केस से जुड़ते जा रहे हैं। बड़े–बड़े लोगों के कनेक्शन माफिया से भी हो सकते हैं, और काफी ऊपर तक भी पहुंच हो सकती है। सभी बड़े लोग बैठकर मीटिंग करते हैं, और सभी एक दूसरे का बचाव करना शुरू कर देते हैं। पैसे और ताकत के बल पर इन बड़े लोगों के मैनेजर, ड्राइवर वगैरह को दोषी मान लिया जाता है, और केस को बंद कर दिया जाता है। खैर काफी फिल्मों में तो ऐसा ही होता है।

अब देखना ये है कि असल जिंदगी में भी ऐसा ही होता है या असल जिंदगी में इंसाफ का तराजू बड़ा छोटा नही देखता और इस बार दोषी वही होगा जो दोषी होगा,कोई बड़े छोटे का भेदभाव नही।

'हमारी फिल्म ''नॉक नॉक नॉक'' वास्तव में बुलिंग/मजाक उड़ाने के ऊपर है।'

सुधांशु सरिया

—शान्तिस्वरूप त्रिपाठी

अपनी पहली ही फिल्म ''लव'' (LOEV) से पूरे विश्व में तहलका मचा देने वाले फिल्मकार सुधांशु सरिया इन दिनों अपनी दूसरी फिल्म ''नॉक नॉक नॉक'' को लेकर चर्चा में हैं, तो दूसरी तरफ उनकी एक पटकथा पर फिल्म बनाने का निर्णय ''टोरंटो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल''ने लिया है।

प्रस्तुत है उनसे हुई एक्सक्लूसिव बातचीत के अंश...

❑ क्या आपकी परवरिश कला या सिनेमा के माहौल में हुई है?

मेरा जन्म व परवरिश दार्जिलिंग में हुआ है। मेरे परिवार वाले चाय बागान में काम करते हैं। 13 साल की उम्र में मुझे देहरादून के बोर्डिंग स्कूल में पढ़ने के लिए भेज दिया गया था। वहां से निकल कर हम अमरीका में 13 साल रहे। वहीं फिल्म इंडस्ट्री में काम किया। वहीं पर बीएफए (बैचलर ऑफ फाइनेंस) की डिग्री हासिल की। फिर फिल्म के प्रोडक्शन का काफी काम किया। उसके बाद अपनी कहानियों पर कई लघु फिल्में बनायी। अंततः एक दिन अमरीका को बाय बाय करके बॉलीवुड में कुछ बेहतर काम करने की मंशा के साथ मुंबई पहुँच गया। हमने सबसे पहले एलजीबीटी कम्यूनिटी पर फिल्म ''लव''(LOEV) बनायी। उन दिनों इस समुदाय के लोगो को अपराधी माना जाता था। जो कि

पिछले साढ़े तीन वर्ष से नेटफिलक्स पर है। उसके बाद हमने पिछले वर्ष चालिस मिनट की अवधि वाली लघु फिल्म "नॉक नॉक नॉक" बनायी, जो कि 16 सितंबर से ओटीटी प्लेटफार्म "मूवी" पर आ गई है।

मैंने अपनी दूसरी फिल्म "नॉक नॉक नॉक" लिखते समय इसे दार्जिलिंग में ही फिल्माने की सोच ली थी। दार्जिलिंग हमारे देश का ऐसा हिस्सा है, जहां पर सिनेमा ज्यादा कुछ इंटरेक्ट नहीं करता। कुछ फिल्मकार वहां पर अपनी फिल्में फिल्माने जाते हैं, तो सिर्फ पृष्ठभूमि में दार्जलिंग को रखकर कंचनजंगा के कुछ दृश्य फिल्माकर वापस आ जाते हैं। पर दार्जिलिंग में रहना, उसको समझना,उसकी सच्चाई को कंटेंट के रूप में दिखाने में मेरी बड़ी रुचि थी। तो एक एजेंडे के साथ मैंने इस फिल्म को लिखा। दरअसल मुझे उम्मीद भी नहीं थी कि 40 मिनट की फिल्म को कोई बनाने में रुचि लेगा। मगर मुझे उत्तर पूर्वी भारत का ही प्रोटोगॉनिस्ट चाहिए था। मैं अपनी इस फिल्म में नायक के तौर पर एक बंगाली अभिनेता ही चाहिए था।

❑ आपने लॉस एंजिल्स में फिल्म प्रोडक्शन व डिस्ट्रीब्यूशन के बारे में सीखा। वहां फिल्म डिस्ट्रीब्यूशन की जो स्थितियां हैं, उससे भारत की स्थितियां कितना भिन्न है?

दोनों ही जगह बाजार काफी मिलते–जुलते हैं। देखिए, सिनेमा यानी कि हम कला बना रहे हैं, मगर यह सारा मामला पैसों/धन का है। पर लॉस एंजिल्स मे इस बात को समझा जाता है और सारा काम कंपनियां या स्टूडियो करते हैं। कंपनियों का मकसद सही गलत का निर्णय करने की बजाय सिर्फ अपना मुनाफा कमाना है। वह अगर मुनाफा कमाना चाहते हैं, तो यह गलत भी नहीं है। इसके लिए हम उनको जज या खारिज नहीं कर सकते हैं। मुझे यह बात वहां पर प्रोडक्शन व डिस्ट्रीब्यूशन में काम करने के बाद ही सीखने को मिला। मैंने सीखा कि यदि मैंने फिल्म बनायी है, तो बाजार उसे पसंद करे, उसे सिनेमाघर में रिलीज करे, यह जरुरी नही है। यदि वह नही करता, तो वह गलत नही हो गए। इसके यह मायने नही है कि वह कला को नही समझते। मगर वहां पर इंडस्ट्री के बर्ताव में लाभ कमाना है। यदि आप सामने वाले को अपने विचारों को मुनाफे की भाषा में समझा नहीं सकते, तो यहां आपकी गलती है। मुझे यह सच वहां काम करके सीखने को मिला।

मैंने सीखा कि हर कंपनी की सबसे पहली प्राथमिकता मुनाफा कमाने की ही है। अगर आपको अपने किसी विचार को फिल्म के तौर पर बनाना है, तो जरूर बनाइए, पर बजट को समझिए कि कौन से बजट की फिल्म आपके मुनाफे का सौदा होगी? आपके डिस्ट्रीब्यूटर के लिए मुनाफा कमाएगी? कहने का अर्थ यह कि मुझे कुछ कलात्मक फिल्म बनानी है, तो मुझे उसका बजट भी उसी हिसाब से रखना पड़ेगा। मुझे कम बजट में काम करना पड़ेगा। अगर मैं कहता हूं कि मैं 'नॉक नॉक नॉक' जैसी फिल्म बनाऊंगा और मेरी यह फिल्म चार हजार स्क्रीन पर रिलीज चाहिए,तो यह मेरी मूर्खता होगी। इसके विपरीत रोहित शेट्टी को मालूम है कि अगर वह सौ डेढ़ सौ करोड़ लगाकर फिल्म बनाएगा, तो उसकी फिल्म बड़े परदे तक पहुँचेगी। उसकी फिल्म का सफल होना आवश्यक हैं। अन्यथा कईयो की नौकरी चली जाएगी। तो उन पर दबाव अलग तरह का होता है। मुझे लगता है कि हर फिल्मकार को यह सारी चीजें समझ लेनी चाहिए और गुस्सा करने में समय कम बर्बाद किया जाना चाहिए। अपनी सही पोजीशन, सही स्ट्रेटजी को अपनाने में ज्यादा समय लगाया जाए।

❑ पहली फिल्म के तौर पर एलजीबीटी कम्यूनिटी पर आधारित फिल्म "लव" (LOEV)ही क्यों चुना था?

मेरे हिसाब से मैं खुद एक हार्टब्रेक से गुजर रहा था। कम से कम मुझे तो यही समझ में आया है कि जब हम दर्द से गुजर रहे होते हैं, और उसके बारे में जब हम लिखते हैं, तो कहीं ना कहीं उसे झेलने की शक्ति हमारे अंदर आ जाती है। जब मैं इसे लिखने बैठा, तब मुझे उम्मीद नहीं थी कि कोई इसे फिल्म के तौर पर बना देगा। मैं खुद भी कोई बहुत बड़ा निर्देशक नहीं था। आजकल कलाकार भी नए निर्देशक के साथ काम करने से डरते है। कलाकार को भी इस तरह के विषय वाली फिल्म में अभिनय कर टाइप कास्ट होने का डर सताता है। उन्हे लगता है कि मैं इस ब्रैकेट में चला जाऊंगा, यह कमर्शियल फिल्म नहीं है। इसका कंटेंट भी बड़ा रिस्की है। मैं भी किसी कलाकार को फंसाना नही चाहता था। जो कलाकार कहता कि उसे डर लग रहा है, तो मैं उससे कह देता कि आप न करें। मैं हर चीज को व्यावहारिक नजरिए से देख रहा था। मगर मैं इस विषय को लेकर कभी पीछे नहीं हटा। हालांकि मेरे कई फिल्मों से जुड़े दोस्त, जिनकी मैं बहुत इज्जत भी करता हूं, ने विषय को

सुनकर सलाह दी थी कि मैं इस पर फिल्म न बनाऊं। सभी की सलाह थी कि यह मेरे कैरियर का सवाल है। मैं उनकी बात से पूरी तरह से सहमत था, लेकिन फिर भी खुद को रोक नहीं पाया।

❑ फिल्म "नॉक नॉक नॉक" को लेकर क्या कहना चाहेंगे?

हमारी फिल्म "नॉक नॉक नॉक" वास्तव में बुलिंग / मजाक उड़ाने के ऊपर है। जो लोग कुछ अलग करना चाहते हैं, जो दुनिया के रिदम में फिट नही बैठते, तो किस तरह उनका तिरस्कार किया जाता है। मजाक उड़ाया जाता है। यह कहानी है एक टैलू कलाकार केता (फुदेन शेरपा) और बुजुर्ग व्यक्ति दादा (शांतिलाल मुखर्जी) की, जो हर साल कोलकाता से दार्जिलिंग के लिए उड़ान भरने के लिए ग्राइंड से बचता है और हिल स्टेशन के एक विचित्र छोटे कैफे में बैठकर क्रासवर्ड हल करते रहते हैं। केता इन बुजुर्ग इंसान को दादा कहना पसंद करता है। एक दिन केता अचानक दादा के सामने एक अजनबी के रूप में प्रकट होता है और दादा के जुनून को सीखने में रुचि दिखाता है। दादा काफी उपेक्षित रहे हैं, इसलिए अब उन्हे इस तरह के घुसपैठिये से चिढ़ है और वह केता का बिल्कुल भी स्वागत नहीं करते हैं। दूसरी ओर केता समझता है कि उसने आखिरकार उस व्यक्ति को पाया है, जिसके समान हित हैं और इसलिए उनके साथ दोस्ती करने के लिए बेताब है।

कहानी धीरे–धीरे यह बताती है कि यह दोनों किरदार अकेले हैं और अपने स्वयं के मिथकों का निर्माण करके अपने लिए सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। जैसे–जैसे फिल्म आगे बढ़ती है, केता, दादा की अनिच्छा के बावजूद अपना रास्ता खोज लेता है। बीच में दादा के बुरे सपने भी हैं। पर कहानी अप्रत्याशित क्षणों के साथ खत्म होती है।

❑ इस फिल्म को दार्जिलिंग में ही फिल्माने की कोई खास वजह?

मैं खुद दार्जिलिंग से हूँ, इसलिए। दूसरी बात मुझे दूसरे फिल्मकारों से शिकायत भी है कि हमारा देश बड़ा है। हमारे देश में कई समुदाय हैं, मगर हर बार हमारी फिल्में तीन चार समुदायों पर ही बनती हैं। दार्जिलिंग जाना कठिन है। वहां पर फिल्म बनाएंगे, तो महंगा पडेगा,लागत बढ़ जाती है। दार्जिलिंग में लोग फिल्म की शूटिंग नही करते,इसलिए वहां इफ्रास्ट्क्चर विकसित नही हो रहा है और आप अपनी फिल्म में वहां की कहानियों को भी स्थान नहीं देते। इसीलिए वहां पर नई प्रतिभाएं उभर नही पा रही हैं। तो मैंने निर्णय लिया कि ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी,पैसा ज्यादा खर्च होगा, पर मैं वहीं पर अपनी फिल्म को फिल्माऊंगा। मेरे अंदर जुनून था कि मुझे दार्जिलिंग में ही फिल्म बनानी है, तो मैंने बनायी।

❑ फिल्म "नॉक नॉक नॉक" के लिए बुजुर्ग किरदार में बंगाली अभिनेता और युवा किरदार मे नेपाली मूल के कलाकार का चयन किस तरह किया?

पहले तो मुंबई में कुछ कॉस्टिंग डायरेक्टर से बात की, उन्होंने जो नाम सुझाए, वह मुझे जमे नही। उसके बाद मैं कोलकाता पहुँचा। वहाँ मैं इस उम्र के सभी कलाकारों से मिला। पर जब मैं शांतिलाल मुखर्जी से मिला। तो उन्हे देखते ही मैं समझ गया कि यही दादा बन सकते हैं। पर सवाल था कि वह मेरे साथ काम करेंगे या नही। क्योंकि कोलकाता के वह महान कलाकार हैं। उनका अपना थिएटर ग्रुप भी है। उन्होने 'कहानी 'और 'इंडियाज मोस्ट वांटेड'जैसी फिल्में की हैं। मैं चाहता था कि उन्हे फिल्म का लीड किरदार देकर उनके साथ काम करुं। खैर, हमारे बीच बातचीत हुई और वह तैयार हो गए। नेपाली युवक की तलाश के लिए पूरे एक माह तक मैं दार्जिलिंग में रहा। चलते फिरते कई लड़कों से मिलता रहा। कई बातों पर गौर करता रहा। फिर एक दिन मेरी मुलाकात फुदेन से हुई। उन्होने कभी अभिनय किया ही नही था। उनके साथ वर्कशॉप करके मैंने उसे तैयार किया। मेरे लिए यह सबसे बड़ी चुनौती थी। एक तरफ मंझे हुए कलाकार शांतिलाल मुखर्जी और दूसरी तरफ एकदम नया कलाकार, जिसे क्राफ्ट की समझ नही, वह तो अपने इंस्टींट से काम करता है। पर मेरी फिल्म के किरदार के लिए दोनो फिट थे। इसलिए काम बन गया।

❑ सोशल मीडिया से सिनेमा को फायदा होता है या नुकसान?

इसका जवाब दे पाना मेरे लिए मुश्किल है। इसका फायदा है या सिर्फ शोरशराबा हो रहा है। मुझे लगता है कि इंडीपेंडेंट फिल्मकार के तौर पर हमें हर मीडियम पर अपनी फिल्म के प्रचार के लिए मेहनत करनी ही पड़ेगी। डेविड लिंच भी सोशल मीडिया पर हैं।

'ब्रह्मराक्षस 2' की शूटिंग के अलावा अपना ग्रेजुएशन पूरा करना चाहती हैं

निक्की शर्मा

—ज्योति वेंकटेश

जहां इस समय कोविड–19 महामारी के चलते हमारे चारों तरफ अनिश्चितता और निराशा का माहौल है, वहीं जी टीवी ने वक्त की नजाकत को समझा और अब अपने बेहद सफल और रोमांचक शो 'ब्रह्मराक्षस' के दूसरे सीजन के साथ अपने दर्शकों को एक काल्पनिक दुनिया में ले जाने को तैयार है। बालाजी टेलीफिल्म्स के निर्माण में बना यह शो, ब्रह्मराक्षस से जुड़ी लोककथाओं से प्रेरित एक अनोखी और दिलचस्प कहानी है।

सोनगढ़ की पृष्ठभूमि पर आधारित इस शो में कालिंदी नाम की एक साधारण लड़की का सफर दिखाया गया है, जिसकी किस्मत शैतानी ताकतों में उलझ जाती है और फिर उसकी तकदीर में एक ऐसा मोड़ आता है, जहां वो शैतान ब्रह्मराक्षस का मुकाबला करने के लिए अपने अंदर की ताकत जुटाती है। जहां नवविवाहिताओं की शादी वाले दिन उनका अपहरण करके ब्रह्मराक्षस को ताकत मिलती है, जिससे वो पूरे शहर पर कहर बरपाता है, वहीं कालिंदी की एकमात्र ताकत है अपने जीवनसाथी अंगद (पर्ल वी पुरी) के प्रति उसका प्यार! वैसे तो कालिंदी शैतानी दुनिया का सामना करते हुए अपनी सीधी–सादी जिंदगी के रास्ते पर चल रही है, लेकिन अब उसे उन लोगों की रक्षा करने के लिए एक मुश्किल लड़ाई लड़नी होगी, जिनकी वो परवाह करती है!

जहां टेलीविजन एक्ट्रेस निक्की शर्मा अपने पहले सुपरनेचुरल शो में पहली बार लीड रोल कर रही हैं, वहीं इस एक्ट्रेस ने अपना प्लान भी तैयार कर लिया है। इस रोल के लिए चुने जाने से पहले निक्की का साइकोलॉजी में डिग्री लेने का प्लान था, जब उन्होंने 18 साल की उम्र में कॉलेज से ड्रॉप लिया था। हालांकि इसी दौरान उन्हें मेकर्स का कॉल आया और उन्हें अपना प्लान बदलना पड़ा। निक्की बताती हैं, 'सच कहूं तो जब मैंने ब्रह्मराक्षस के लिए बालाजी टेलीफिल्म्स को अपना ऑडिशन भेजा था, तो मुझे उनकी तरफ से कॉल बैक की उम्मीद नहीं थी।

यह एक्ट्रेस आगे बताती हैं, 'यह एक सुखद आश्चर्य था और मैं अब भी यकीन नहीं कर पा रही हूं कि मेरा यह रोल मेरी जिंदगी का नया रास्ता तय कर रहा है। मेरा पहले साइकोलॉजी में ग्रेजुएशन पूरा करने का प्लान था लेकिन अब इस रोल के लिए कॉल मिलने के बाद मुझे इस पर दोबारा विचार करना होगा। हालांकि मैं शिक्षा के महत्व को भी समझती हूं इसलिए अब मैं इस शो की शूटिंग करते हुए, साथ में बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन का पार्ट टाइम कोर्स भी करना चाहती है। आज से कुछ साल बाद मैं अपना खुद का बिजनेस चलाना चाहती हूं और इसलिए मैंने यह फैसला किया है। 2020 मेरे लिए एक महत्वपूर्ण साल रहा है। उम्मीद करती हूं कि साल का अंत भी सुखद रहेगा।'

अपने नए सफर को लेकर उत्साहित निक्की ने कहा, 'एक व्यक्ति के तौर पर मैं कालिंदी से जुड़ती हूं। मैं हमेशा से सुपरनैचुरल फिक्शन शो में काम करना चाहती थी, जो इस समय ट्रेंड कर रहा है। मुझे पर्ल के साथ काम करने का इंतजार है और मुझे उम्मीद है कि दर्शक मुझे उनके अपोजिट पसंद करेंगे। ये बालाजी के साथ मेरा पहला शो है और मैं इस अवसर को लेकर बेहद उत्साहित हूं। बालाजी के साथ मेरा अनुभव शानदार रहा है, जहां सभी का व्यवहार बहुत अच्छा है।'

जब एक आम औरत सबसे ताकतवर शैतान के खिलाफ खड़ी होगी, तो अब आपको भी ये जानने की उत्सुकता होगी कि वो राक्षस अब कहां है? वो कैसा दिखता है? इस बार उसके इरादे क्य हैं? क्या कालिंदी अपने आसपास की शैतानी शक्तियों को मिटाने में सफल होगी? फिलहाल तो यह कोई भी नहीं जानता!

ज्यादा जानने के लिए देखिए 'ब्रह्मराक्षस 2', जल्द आ रहा है जी टीवी पर।

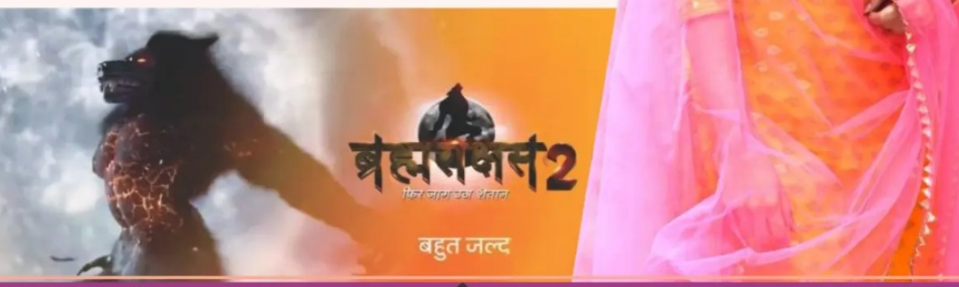

मंदिरा एंटरटेनमेंट और ओबेरॉय मेगा एंटरटेनमेंट की 'रोजी' से पलक तिवारी और विवेक आनंद ओबेरॉय का फर्स्ट लुक आया सामने

—ज्योति वेंकटेश

'रोजी– द सैफरन चैप्टर' सच्ची घटनाओं पर आधारित है। 2003 में हुई घटनाएँ जिसका अर्थ है कि हम पहले से ही डिजिटल ऐज में थे। भारत में गुड़गांव पहले से ही कुछ सबसे बड़े कॉल सेंटरों का घर था। और यह कहानी सैफरन नामक एक ऐसे कॉल सेंटर में हुई। रोजी सैफरन के कर्मचारियों में से एक है। जब वह अचानक एक दिन अप्रत्याशित रूप से कार्यालय आना बंद कर देती है, तो एक जांच की जाती है। इस जांच का चौंकाने वाला परिणाम यह था कि रोजी की 8 साल पहले मौत हो गई थी! कहानी ने स्पष्ट रूप से कवरेज के साथ–साथ मीडिया और जनता का ध्यान दोनों को आकर्षित किया। हालांकि, कोई भी वास्तव में यह पता नहीं लगा सकता था कि किसने यह किया था।

आखिरकार, यह हर दिन नहीं है जब आप एक नियमित कार्यालय में काम करने वाले भूत के बारे में सुनते हैं, जो वहां काम करने वाले हर हजार अजीब लोगों को दिखाई देता है, और एक अन्यथा सामान्य जीवन जी रहे हैं। उसके पास क्या अधूरा कारोबार था? क्या वह कुछ बदला लेना चाहती थी? या कुछ हल करना चाहती थी? हमारी फिल्म इन सवालों का जवाब देना चाहती है।

रोजी एक विशिष्ट भारतीय हॉरर फिल्म नहीं है जिसमें आत्माएं दिखाई देती हैं और गायब हो जाती हैं या अनावश्यक और रहस्यमय उपस्थिति या गायब हो जाती हैं।

फर्स्ट लुक के बारे में बात करते हुए निर्देशक विशाल रंजन मिश्रा ने कहा, "रोजी रहस्य और हॉरर का एक आदर्श संयोजन है। एक शैली के रूप में डरावनी भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में खोजबीन की जा रही है और इसके टाइटल पर, रोजी एक सच्ची कहानी है जो इसे और भी दिलचस्प बनाती है। हम सभी दर्शकों के लिए एक स्पाइन चिलिंग स्टोरी लाने के लिए तैयार हैं, जहां संगीत से लेकर बैकग्राउंड स्कोर और एडिटिंग, हर छोटा तत्व फिल्म में नए आयाम जोड़ेगा।"

फिल्म के बारे में बोलते हुए, निर्माता कुसुम अरोरा कहती हैं, "यह एक यथार्थवादी हॉरर थ्रिलर है, एक शैली है जिसे हम बनाने की कोशिश कर रहे हैं। सता संगीत के साथ सशस्त्र, रोजी आपको वास्तव में जांचने पर मजबूर करेगी कि क्या आपके बगल में खड़ा व्यक्ति वास्तव में एक मानव है या आत्मा।

पलक तिवारी कहती हैं, "रोजी अपरिवर्तनीय रूप से आपकी औसत हॉरर फिल्म नहीं है, यह रोमांस का एक समामेलन है, स्पाइन चिलिंग थ्रिल, जो एक पेचीदा परिप्रेक्ष्य के साथ है। जो चीज़ इसे और बेहतर बनाती है, वह है इसके पीछे लोगों की टीम है। मैं वास्तव में इस उत्पादन और इस परिवार का एक हिस्सा होने के लिए सम्मानित हूं, ऐसे लोगों की एक टीम के साथ जो वास्तव में अपने संबंधित क्षेत्रों जैसे कि प्रेरणा मैम, विवेक सर और हमारे अद्भुत लेखक और निर्देशक विशाल सर के साथ हैं।

प्रोड्यूसर, गिरीश जौहर, उत्साह के साथ कहते हैं, "डरावनी शैली ग्रह पर सबसे सफल शैलियों में से एक है और उच्चतम आरओआई (निवेश पर वापसी) में से एक भी है। फिल्म दर्शकों को विश्व स्तर पर इन मस्तिष्क, भयानक और जटिल फिल्मों से प्यार है। रोजी में सुंदरता यह है कि यह सच्ची घटनाओं पर आधारित है, जो भारत में फर्स्ट है। मुझे पूरा विश्वास है कि हम, फिर भी हमारे हाथों में एक विजेता है।"

संध्या रामचंद्रन, एसोसिएट निर्माता कहते हैं, "'रोजी' के साथ, हमारा प्रयास ठोस उत्पादन मूल्यों के साथ एक मजबूत सामग्री संचालित फिल्म बनाना है। इस बात को सुनिश्चित करने के लिए फिल्म के रचनात्मक पहलुओं पर पूरी टीम मेहनत कर रही है!"

निर्माता, रिषभ डी सराफ कहते हैं, "रोजी– द सैफरन चैप्टर' सिर्फ सिनेमा का उत्तम उत्पादन नहीं है, यह एक फ्रेंचाइजी की शुरूआत है जो मंदिरा एंटरटेनमेंट और ओबेरॉय मेगा बैनर के तहत लॉन्च की जा रही है। यह दूरदर्शी वी अरोड़ा की रचना है। प्रेरणा एक असाधारण व्यक्ति हैं। वह मजबूत, विपुल और दूरदर्शी है। उसके साथ रोजी पर काम करना एक अविश्वसनीय शिक्षा और एक अद्भुत अनुभव है। सच्ची घटनाओं के आधार पर, यह भारतीय फिल्म उद्योग की डरावनी शैली में एक बेंच मार्क बनाने के लिए सेट है।"

फिल्म मंदिरा एंटरटेनमेंट और ओबेरॉय मेगा एंटरटेनमेंट द्वारा प्रस्तुत की गई है और विवेक आनंद ओबेरॉय, कुसुम अरोरा, रिषभ डी सराफ, गिरीश जौहर, कैयूर पांड्या और संजीत एस यरमल और संध्या रामचंद्रन द्वारा निर्मित है।

अनु– छवि शर्मा

प्रेम चोपड़ा

कई जन्मों के साथ मेरे दोस्त (उनके 84 वें जन्मदिन पर)

– अली पीटर जॉन

वह एक असन्तुष्ट अभिनेता थे और 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' के साथ एक जूनियर विज्ञापन प्रबंधक के रूप में अपनी नौकरी करने में अधिक रुचि रखते थे, यह उनके बॉस श्री जे.सी.जैन थे जिन्होंने न केवल उन्हें प्रोत्साहित किया, बल्कि उन्हें ऑफिस बंद करने और फिल्मों में अपनी किस्मत आजमाने की भी अनुमति दी। उन्हें एक हीरो के रूप में पंजाबी फिल्म में पहला ब्रेक मिला, लेकिन मनोज कुमार की फिल्म 'शहीद' में एक छोटी भूमिका निभाने से संतुष्ट होना पड़ा, जो मनोज के साथ उनके लंबे जुड़ाव को दर्शाता है। उनके करियर को एक बड़ा बढ़ावा मिला जब राजेश खन्ना जो कि 'उपकार' में मनोज के छोटे बिगड़ैल भाई का किरदार निभाने वाले थे, उन्हें अंतिम समय में वापस कर दिया गया और प्रेम चोपड़ा को वह भूमिका निभाने के लिए चुना गया जिसने उन्हें रातोंरात खलनायक बना दिया। उन्होंने उस समय तक अनगिनत फिल्मों में बुरे आदमी का किरदार निभाया जब उनके पास बहुत कम फिल्में थीं। राज कपूर बॉबी बना रहे थे और उन्होंने प्रेम को एक दो मिनट की भूमिका में अपने जीजा और एक लाइन के डायलाग, 'प्रेम नाम है मेरा', के बारे में पूछे जाने के बारे में सोचा। प्रेम चोपड़ा ने उन्हें एक कल्ट फिगर बना दिया। उन्होंने अपने करियर में एक लंबा और सफल दौर शुरू किया, जब उन्होंने दक्षिण में बनी हिंदी फिल्मों में सबसे बेवकूफ, अर्थहीन और अयोग्य किरदार निभाना शुरू किया, जिसमें उन्हें लाखों रुपये कमाए लेकिन एक अभिनेता के रूप में उनकी जो भी प्रतिष्ठा थी, उसे भी खो दिया। मैं प्रेम को 40 से अधिक वर्षों से जानता हूं और मैं उन्हें सबसे प्यारे और यहां तक कि निर्दोष इंसान के रूप में जानता हूं, जो एक बहुत ही संतोषी आदमी है, जिसने अपनी दोनों बेटियों की शादी कर दी है और अब अपनी पत्नी, उमा, जो कृष्ण राज कपूर और प्रेमनाथ की बहन हैं के साथ 'निभाना' की 14 वीं मंजिल पर रहते हैं, वह एक मात्र ऐसे स्टार है जो पाली हिल पर स्पैंगल्ड अपार्टमेंट, जिसे भारत का बेवर्ली हिल्स भी कहा जाता है में रहते हैं। प्रेम अब 84 साल के हो गये हैं और मुझे यकीन है कि उनके पास अभी भी एक बच्चे का दिल और दुनिया के एक महान व्यक्ति का दिमाग है।

अनु– छवि शर्मा

अक्सर जिंदगी के रिश्ते इसलिए सुलझ नहीं पाते हैं, क्योंकि लोग गैरो की बातों में आकर अपनो से उलझ जाते हैं।

वक्त बदलते देर नहीं लगती इसलिए कभी हद से ज्यादा फूलो मत और अपनों को कभी भूलो मत

जिंदगी ऐसी पाठशाला है जहां क्लास बदलती रहती है, परंतु विषयनहीं बदलते

सिर्फ जहर ही मौत नहीं देता कुछ लोगों की बातें भी काफी होती हैं।

जिसकी जैसी नीयत वो वैसी कहानी रखता है, कोई परिंदों के लिए बंदूक तो कोई परिंदों के लिए पानी रखता है

परिस्थिति बदलना जब मुमकिन ना हो तो मन की स्थिति बदल लीजिए सब कुछ अपने आप ही बदल जाएगा

प्रार्थना और विश्वास दोनों अदृश्य हैं परंतु दोनों में इतनी ताकत है कि नामुमकिन को मुमकिन बना देता है।

बहुत गजब का नजारा है इस अजीब सी दुनिया का, लोग बहुत कुछ बटोरने में लगे है खाली हाथ जाने के लिए

जहां आप कुछ नहीं कर सकते वहां भी एक चीज जरूर कीजिए, 'कोशिश'

सच्चा रिश्ता एक अच्छी पुस्तक जैसा होता है कितनी भी पुरानी हो जाए फिर भी शब्द नहीं बदलते

विचार और व्यवहार हमारे बगीचे के वो फूल हैं, जो हमारे पूरे व्यक्तित्व को महका देते हैं।

कुछ उलझनों के हल, वक्त पे छोड़ देने चाहिए... बेशक जवाब देर में मिलेंगें, लेकिन बेहतरीन होंगें।

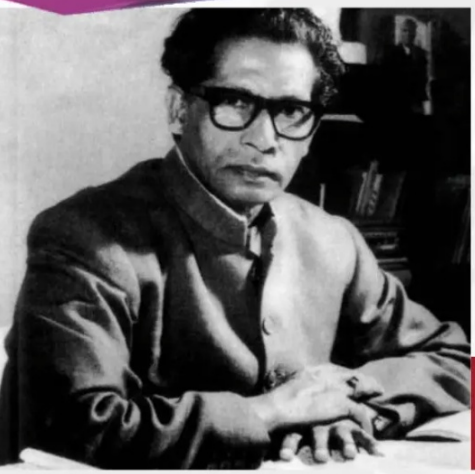

हरिवंश राय बच्चन

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर!

वह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अँधेरा,
धूलि धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा,

रात-सा दिन हो गया, फिर
रात आई और काली,
लग रहा था अब न होगा
इस निशा का फिर सवेरा,

रात के उत्पात-भय से
भीत जन-जन, भीत कण-कण
किंतु प्राची से उषा की
मोहिनी मुस्कान फिर-फिर!

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर!

वह चले झोंके कि काँपे
भीम कायावान भूधर,
जड़ समेत उखड़-पुखड़कर
गिर पड़े, टूटे विटप वर,

हाय, तिनकों से विनिर्मित
घोंसलो पर क्या न बीती,
डगमगाए जबकि कंकड़,
ईंट, पत्थर के महल-घरय

बोल आशा के विहंगम,
किस जगह पर तू छिपा था,

जो गगन पर चढ़ उठाता
गर्व से निज तान फिर-फिर!

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर!

क्रुद्ध नभ के वज्र दंतों
में उषा है मुसकराती,
घोर गर्जनमय गगन के
कंठ में खग पाँति गाती

एक चिड़िया चोंच में तिनका
लिए जो जा रही है,
वह सहज में ही पवन
उंचास को नीचा दिखाती!

नाश के दुख से कभी
दबता नहीं निर्माण का सुख
प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नव गान फिर-फिर!

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर!

देव आनंद के जीवन की पहली महिला

– अली पीटर जॉन

यह वह दिन था जब दुनिया को दो बड़े झटके लगे थे। क्योंकि राजकुमारी डायना की लंदन में एक भयानक कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी और कोलकाता में मदर टेरेसा की मृत्यु हो गई थी। टेलीविजन दोनों की अंतिम यात्रा को दिखा रहा था, लंदन में राजकुमारी डायना और मदर टेरेसा का दिल कोलकाता की सड़कों से गुजरा एक ऐसा शहर है, जहा उन्होंने गरीबों, बीमारों को पचास साल से अधिक समय तक अपने समर्पण और सेवा से खुशी के शहर में बदल दिया था। देव आनंद जो मूल रूप से एक बहुत ही शर्मीले और संवेदनशील व्यक्ति थे, एक शोकग्रस्त मूड में थे, हालाँकि उनकी भी प्रतिबद्धता थी, उन्हें एक शक्तिशाली राजनेता सुरेश कलमाड़ी के निमंत्रण पर पूना जाना था, जो उनके द्वारा आयोजित एक समारोह में देव साहब को मुख्य अतिथि बनाना चाहते थे। उन दिनों हमेशा की तरह, देव साहब ने मुझे फोन किया और मुझसे पूना की अपनी यात्रा में शामिल होने का अनुरोध किया। हमने उनकी फिएट कार में अपने कई सालों के ड्राइवर के साथ ही काम किया, प्रेम जो गाड़ी चला रहे थे। जब तक हम शहर से बाहर निकले, देव साहब तब तक एक उदास मूड में थे और जब उन्होंने प्रेम को बैठने के

लिए कहा तो उन्होंने मुझे चौंका दिया और उन्होंने गाड़ी चलाना जारी रखा (वह उस समय अस्सी वर्ष के थे) और वह गाड़ी चलाते रहे और कहा, "ये सड़कें सालों से मेरी दोस्त हैं और हम एक–दूसरे को बहुत अच्छे से जानते हैं।" हम धीरे–धीरे अपने आप में आ रहे थे और फिर से देव आनंद थे। लेकिन जब हम पूना की ओर जाने वाले मार्ग के पास पहुँचे, तो उन्होंने पूना आने के बारे में अचानक विचार किया। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या राजकुमारी डायना और मदर टेरेसा की मृत्यु के बावजूद भी कलमाडी का कार्य चल रहा होगा। मैंने कहा कि अगर उनके पास कोई समझदारी या विवेक है तो उन्हें समारोह नहीं करना चाहिए। देव साहब ने मुझसे पूछा, "अली, आपको नहीं लगता कि इस दुखद दिन में किसी समारोह में जाना मेरे लिए गलत होगा?" हम पुणे पहुंचे और पता चला कि कलमाड़ी का कार्य रद्द कर दिया गया है। लेकिन कलमाड़ी कार्यक्रम स्थल पर बहुत मौजूद थे और देव साहब को अपने साथ उनके घर जाने को कहा। देव साहब अनिच्छा से सहमत हो गए और जब हम कलमाड़ी के महल के घर में पहुँचे, तो हमने सैकड़ों लोगों को देव साहब का इंतज़ार करते पाया। देव साहब और मेरी सेवा करने की प्रतीक्षा में पुरुषों के साथ सबसे स्वादिष्ट स्नैक्स के साथ टेबल सजाई गई थी। कलमाड़ी ने देव साहब को बताया कि प्लेटें और सभी क्रॉकरी और कांटे और चम्मच सभी शुद्ध सोने से बने थे। मैं देव साहब को अपनी कुर्सी पर विस्मित होते देख सकता था और जो बहुत बेचैन थे। कलमाड़ी ने देव साहब से रात भर रुकने का अनुरोध किया क्योंकि उनका कार्य अगले दिन के लिए शिफ्ट कर दिया गया था। देव साहब अपनी कुर्सी से उठे, एक सैंडविच का एक टुकड़ा लिया और कलमाड़ी को बताया कि वह दस मिनट भी इंतजार नहीं करेंगे और अपनी कार में चले गये, मुझे अंदर बैठने के लिए कहा और हम जल्द ही बॉम्बे के लिए निकल गए थे।

रात के नौ बज रहे थे जब हम मुंबई पहुँचे और देव साहब ने मुझे उनके साथ अपने पेंट हाउस चलने को कहा।

वह आम तौर पर पूरे दिन खाने के लिए भारी चीज नहीं खाते थे और जब उन्हें भूख लगती थी तो सूखा चना (चने) खाते थे, जब उसे भूख लगी, तो कैंडीज नामक स्थान से कुछ सैंडविच के लिए ऑर्डर किया जो उसकी पसंदीदा जगह थी और मेरे लिए चाय आर्डर की थी।

हम एक गीत के बारे में बात कर रहे थे जिसे वह अगले दिन राजेश रोशन के साथ रिकॉर्ड करना था जब मैंने उनकी आँखों में आँसू बहते देखे। उन्होंने उन्हें पोछने छिपाने की कोशिश की, लेकिन आँसू उनके गालों पर बहते रहे। मैंने उन्हें पहले कभी इस तरह नहीं देखा था। मैंने उनसे पूछा कि मामला क्या है और उन्होंने कहा, "मदर टेरेसा और उनकी मौत ने मुझे मेरी माँ की याद दिला दी, जिन्हें मैं साठ साल पहले खो चुका हूँ"।

मैंने उनसे उनकी माँ के बारे में और अधिक पूछने की कोशिश की और वे शब्द सिर्फ एक कृतज्ञ बेटे से

बहकर आए, जो यह भूल गए थे कि वे देव आनंद हैं, जो लिविंग लीजेंड थे।

उन्होंने मुझे बताया कि उनकी मां का चेहरा एक महिला का पहला चेहरा था जिसे उन्होंने देखा था और उनके करीब पहुंच गए थे और भावना आपसी थी। वह अपनी मां के पसंदीदा बेटे के रूप में बड़े हुए। उन्होंने महसूस किया कि जब वह लगभग पंद्रह साल के थे, तब उनकी माँ बहुत बीमार थीं और जब तक वह घर पर थीं, उन्होंने उनका साथ नहीं छोड़ा। उन्होंने मुझे बताया कि कैसे वह बकरी का दूध खरीदने के लिए दूर–दूर के स्थानों पर जाते थे जो उनकी माँ के इलाज के लिए बहुत आवश्यक था और यहाँ तक कि वे उनके लिए दवाएँ खरीदने के लिए उनके जन्म स्थान गुरुदासपुर से अमृतसर तक गए। वह अपनी माँ के साथ बैठकर कई शामें बिताते थे और उनसे यह पूछने की कोशिश करते थे कि अगर वह मर गए तो उनका क्या होगा और यह एक ऐसी शाम के दौरान किया गया है कि उनकी माँ ने उन्हें बहुत करीब रखा और उनका माथा चूमा और उन्हें बताया कि वह एक दिन बहुत बड़े और प्रसिद्ध आदमी होंगे और वह उनकी सफलता को देखने के लिए वहां नहीं होंगीं। कुछ दिनों बाद उनकी माँ की मृत्यु हो गई और देव ने अपनी माँ को खोने का गम्भीरता और दर्द महसूस किया, जब एक पड़ोसी दरवाजे पर आया और बहुत कठोर आवाज़ में कहा, "तुम्हारी माँ मर गई" देव के उस कठोर वाक्य को सुनने के बाद ही वह रोने लगे और अगले कुछ दिनों तक रोना बंद नहीं किया। उन्होंने गुरुदासपुर में अपने घर में वापस रहने में सभी रुचि खो दी थी और सपनों के शहर बॉम्बे में भागने का सपना देखने लगे थे।

उन्होंने कभी नहीं जाना था कि एक अभिनेता के रूप में क्या होना चाहिए। मीलो आसपास कोई थिएटर नहीं था और एकमात्र अभिनेता जिनके नाम उन्होंने सुने थे और अशोक कुमार, मोतीलाल और पृथ्वीराज कपूर के चित्र देखे थे और उन्होंने युवा देव आनंद पर गहरा प्रभाव छोड़ा था। उन्होंने तय किया कि वह भी एक दिन अभिनेता बनेंगे और कुछ वर्षों के भीतर, उन्होंने अपनी मां की भविष्यवाणी को पूरा किया। वह स्टार, निर्माता और अपने बैनर, नवकेतन के पीछे का नाम बन गए थे।

उस रात, देव साहब ने मुझे दो अन्य अवसरों के बारे में बताया जब वह रोए थे। पहला जब कुछ

अच्छी फिल्मों की प्रमुख महिला सुरैया के साथ उनका अफेयर एक अप्रिय टिप्पणी पर समाप्त हुआ था जब रिंग सुरैया को उन्हें उनके प्यार के प्रतीक के रूप में उपहार में दिया था, तो सुरैया की दादी को उनके अफेयर की आपत्ति के कारण समुद्र में फेंक दिया गया था, उनकी मुख्य आपत्ति थी कि सुरैय्या एक मुस्लिम थीं और देव एक हिंदू थे। देव ने कहा (और यहां तक कि अपनी डायरी में लिखा था जिसे उन्होंने नियमित रूप से रखा) कि उन्होंने कुछ मिनटों के लिए अपने दिल को सुनने की कोशिश की और फिर यह सब भूल गए और अपने काम में खो गए।

तीसरी बार देव साहब रोए थे क्योंकि जो उनकी बेटी देविना के साथ जो हुआ था। वह एंबेसडर होटल के मालिक के बेटे संजय नारंग के साथ प्यार में थी। देव साहब ने केवल देविना से पूछा था कि क्या वह संजय के साथ प्यार में थी और वह उनकी शादी भव्य तरीके से करने के लिए तैयार हो गए

(फेसबुक पर देव साहब को अपने हाथों से पकड़े हुए मेरे हाथ में जो तस्वीर आप देख रहे हैं, वह फोटो देविना की शादी के रिसेप्शन के दौरान ली गई थी) देविना की शादी दो साल के भीतर तलाक के रूप में समाप्त हो गई और जब देव साहब ने तलाक के बारे में सुना, तो उन्होंने कहा कि वह एक पिता की तरह रोए, जिसने अपनी इकलौती बेटी के साथ हुई तकलीफ को महसूस किया।

जब विजय आनंद (गोल्डी), जो देव साहब के पसंदीदा छोटे भाई थे, की अचानक दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई, देव साहब ने कहा कि वह रोएंगे

नहीं। लेकिन गोल्डी के लिए चौथे पर, देव साहब जो आम तौर पर अंतिम संस्कार में शामिल होने से बचते थे और चौथे पर रोने लगे जब पंडितों ने गोल्डी की आत्मा के लिए भजन और प्रार्थना का जाप शुरू किया, देव साहब रोने लगे और अगले दो दिनों तक रोते रहे।

देव साहब ने अपने पेंट हाउस में उन्हें मिलने से कहीं भी किसी भी प्रशंसक या अजनबी को नहीं रोका। उन्होंने अपने सुरक्षा गार्डों को निर्देश जारी किया था कि वे किसी को भी न रोकें। एक दोपहर तीन आदमी एक महिला को ले कर आए उन्होंने कहा कि वह कुछ अजीब बीमारी से मर रही थी जिसके बारे में उन्होंने कहा था कि उनका वजन पांच सौ पाउंड था और वह खड़ी भी नहीं हो सकती थी और डॉक्टरों ने उनके लिए उम्मीद छोड़ दी थी, और उनकी आखिरी इच्छा देव साहब को देखना था। उन्होंने यह भी माना कि अगर देव साहब ने उन्हें छुआ तो वह ठीक हो जाएगी। देव साहब, जिसने इस तरह के दृश्य की उम्मीद नहीं की थी, उस महिला का एक नज़र में चुपचाप सहलाना शुरू कर दिया। जब उस आदमी ने देव साहब को अपने बारे में बताया कि उन्हें विश्वास है कि वह उन्हें ठीक कर सकते है, देव साहब ने कहा, "नहीं नहीं मैं, मैं कोई देव नहीं हूँ, मैं आप लोगो के जैसे एक इंसान हूँ, ये ठीक हो जाएगी, इनका ठीक से इलाज कराओ, मैं भी इनके लिए दुआ करुगा" 5 वें दिन, दो आदमी वापस आए और देव साहब को बताया कि डॉक्टरों ने उन्हें ठीक करने का कोई तरीका ढूंढ लिया है और वह एक महीने में ठीक हो जाएगी। वे मानते थे कि देव साहब ने चमत्कार किया है और वे उन्हें बताते रहे कि वे एक सामान्य देव हैं और ऊपर वाले सर्व–शक्तिशाली देव नहीं हैं।

देव साहब को तब तक होटल और रेस्तरां में जाना पसंद नहीं था जब तक कि उनकी खुद की पार्टी या उनके द्वारा बुलाए गए प्रेस कांफ्रेंस नहीं थे। एक शाम, उन्होंने कहा कि उन्होंने मुझे सी रॉक होटल में नए घूमने वाले रेस्तरां में जाने के लिए कहा। हम उनकी अगली फिल्म "प्यार का तारा" के बारे में बात कर रहे थे, जब एक नौजवान हमारी टेबल पर आए और देव साहब से कहा कि एक बूढ़ी औरत थी जो उनसे मिलना चाहती थी। देव साहब किसी के लिए मायने नहीं रख सकते थे और वह

उस मेज तक चले गए जहाँ "बूढ़ी औरत" बैठी थी और उन्हें जाने बिना ही गले लगा लिया था कि वह कौन है। जब उन्होंने कहा कि उनका नाम शीला रमानी है, जो उनकी एक फिल्म में उनकी नायिका थीं, तो उन्होंने उन्हें सदमे में ले लिया। देव साहब इसे नहीं ले सके और उन्होंने उन्हें फिर से गले लगा

लिया और कहा, "शीला, तुमने अपने आप के साथ क्या किया है?" और उनकी आंखों में आंसू थे। उन्होंने चाय के बिना रेस्तरां छोड़ने का फैसला किया, जो वह बहुत चाहते थे जो बहुत दुर्लभ था और हम अपने पेंट हाउस में वापस चले गए और वह शीला रमानी और अन्य सितारों के बारे में बात करते रहे, जो खुद की देखभाल नहीं करते थे।

कई बार ऐसा भी हुआ जब मैंने देव साहब को अपनी माँ के बारे में बात करते हुए देखा और उनके गले लगाने की कोशिश की। उनकी मां के साथ उनका संबंध बहुत अंत तक बहुत मजबूत रहा।

उन्होंने सन एन सैंड होटल में अपनी जन्मदिन की पार्टी की मेजबानी की थी, जहां वे एक सुइट (339) में बीस साल तक रहे थे। पहले दिन के दौरान आयोजित पार्टी केवल प्रेस के लिए थी। उन्होंने एक ही सुइट (339) लिया था और अकेले बैठे थे। उन्होंने मेरे लिए मैसेज भेजा और मैं हैरान रह गया। उन्होंने कहा कि वह अकेले मेरे साथ कुछ समय बिताना चाहते थे। वह मुझे पकड़ कर कहते रहे कि वह मुझसे प्यार करते है और मुझे कई बार "मेरा बेटा" भी कहते है। और जब उन्होंने मुझे गले लगाया, तो मैं उनके शरीर की हर हड्डी को महसूस कर सकता था, वह बहुत कमजोर हो गई थी और मैंने उनके आँसू अपने कंधों पर पड़ते हुए महसूस कर सकता था। जब वह प्रेस से मिलने के लिए नीचे गए तो वहां देव आनंद थे। कई लोगों ने महसूस किया कि वे देव आनंद के जीवन से भरे हुए नहीं थे।

उन्होंने अपने बेटे सुनील के साथ लंदन के लिए उड़ान भरी। उन्होंने अपने पसंदीदा होटल में जाँच कराई। एक रात, उन्होंने सुनील से एक गिलास पानी माँगा और इससे पहले कि सुनील उसे पानी का गिलास ला सके, लीजेंड और एवरग्रीन और वह व्यक्ति जो जीवन के लिए सबसे अच्छी श्रद्धांजलि थे, वह जीवन से दूर चले गए थे। जिस आदमी को बहुतों का विश्वास हो गया था वह शाश्वत थे और वह अनंत काल में गुजर गए।

उस रात जब मुझे खबर मिली, मैंने अपने कमरे में सब कुछ छोड़ दिया और मैं पूरे दिन रोया और मैं अभी भी रोता हूं जब भी मैं गौरवशाली क्षणों के बारे में सोचता हूं तो मेरे पास उनके साथ बिताने का सौभाग्य और विशेषाधिकार था।

एक रात जब देव साहब ने पहली बार अपनी माँ के बारे में मुझसे बात की, तो वह आधी रात थी और फिर मुझे खुद गाड़ी निकाल कर और मुझे घर छोड़ दिया। और रास्ते में, मुझे नहीं पता कि उन्होंने मुझसे मेरी माँ के बारे में क्यों पूछा और जब मैंने उन्हें अपनी माँ के बारे में बताया, तो उन्होंने मुझे कस कर पकड़ लिया और कहा, "जब तक हमारे साथ हमारी माताएँ हैं, कोई भी हमें किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुँचा सकता है" अब वह एक लंबा समय है जब वह चले गए है (वास्तव में?) लेकिन उन्होंने अपनी मां के बारे में कैसे बात की "मेरे जीवन की पहली महिला" के रूप में मेरे लिए एक हिस्सा होगा जब तक कि मुझे उनसे मिलने का सौभाग्य फिर से नहीं मिला और उस आनन्द का हिस्सा बनो जो वह थे।

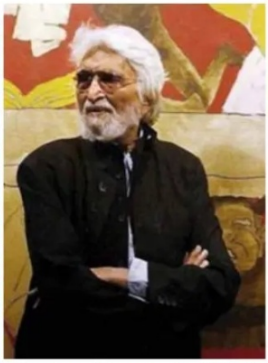

कुछ अन्य प्रसिद्ध पुरुष है जो अपनी माताओं को कभी नहीं भूल सकते हैं

अगर कोई ऐसा व्यक्ति है जो अपनी माँ के बारे में बात करते रहे, जिसे उन्होंने अपने जीवन के अंत तक "अम्मी" कहा, यह एम.एफ.हुसैन थे, जो मानते थे कि एक बेटा जो अपनी माँ को खो देता है जब वह बहुत छोटा होता है, वह हमेशा कुंवारा रहता है, एक ऐसा व्यक्ति जो अपनी माँ की तलाश में रहता है और उसे अलग–अलग समय में अलग–अलग महिलाओं में देखता है। उनका यह भी मानना था कि "एक माँ का बेटा एक निर्दयी नाव की तरह है" और अपने घरों को बदलता रहता है क्योंकि वह कहीं भी सहज महसूस नहीं करते है, क्योंकि वह उस माँ की तलाश में रहते है जिसे वह जानते है कि वह फिर से नहीं मिल सकते है। शायद यह विश्वास है कि हुसैन ने अलग–अलग जगहों पर रहते हुए अलग–अलग शहरों में हवाई टिकट बनाए और पता नहीं कब और कहां जाना था। उन्होंने एक बार मुझे भारत के विभिन्न शहरों के लिए छह हवाई टिकट दिखाए और मुझसे पूछा कि उन्हें किस शाम को यात्रा करनी चाहिए और आखिरकार किसी भी योजना या किसी सामान के साथ दिल्ली के लिए रवाना हो गए। वह अपनी माँ को "मेरे पूरे जीवन में सबसे सुंदर महिला" कहते रहे।

अगर कोई दूसरा शख्स है, जिसे अपनी मां की मजबूत यादें याद हैं, जिसका मानना था कि उन्होंने अपने प्रारंभिक जीवन को आकार दिया, तो यह मोहम्मद यूसुफ खान थे, जिसे दिलीप कुमार के नाम से जाना जाता है।

अगर हर उपलब्धि के बाद अपनी माँ को याद करने वाला कोई एक शख्स था, तो वह सुनील दत्त थे, जो देव साहब को भी पसंद करते थे, जब वह अपनी "सरल लेकिन शक्तिशाली माँ" के बारे में बात करते थे।

अगर कोई ऐसा शख्स है जिसकी माँ के लिए सबसे ज्यादा प्रशंसा है, तो वह अमिताभ बच्चन हैं जो इस बारे में बात करते हैं कि उनकी माँ, तेजी बच्चन, जो एक कुलीन परिवार से हैं, ने अपने कवि–पति हरिवंशराय बच्चन के लाइफस्टाइल के अनुरूप

लाइफस्टाइल को अपनाया। और अपने पिता के विश्वास को ध्यान में रखते हुए, अभिषेक बच्चन अपनी माँ, जया बच्चन को बहुत सम्मान और प्यार से देखते हैं।

अगर एक बेटा है जो अपनी माँ को हर समय याद करता है तो वह संजय दत्त है जो अपने पिता की तुलना में अपनी माँ के ज्यादा करीब थे। उसकी माँ उस तरह की माँ थी जिसने उसे तब तक लाड़ लड़ाया जब तक कि वह बिगड़ नहीं गए और उन्हें अपने पिता द्वारा सही रास्ते पर वापस लाना पड़ा।

अगर कोई एक बेटा है जो अपनी माँ को खोने का भयानक नुकसान महसूस करता है, जब वह बहुत छोटा था, तो यह शाहरुख खान है, जो अपनी माँ (और अपने पिता) की याद को भी रखते है, जो कि आज भी जाने जाते है।

और अगर कोई एक बेटा है जो मानता है कि वह जो कुछ भी है वह सब कर रहा है और वह संकट में लोगों की मदद करने के लिए कर रहे है, यह मॉडर्न डे के मसीहा सोनू सूद है।

और जैसा कि मेरे पाठकों को पता होगा या जानना चाहिए, उनकी माँ से बड़ी कोई महिला नहीं है, जिन्होंने उन्हें पंद्रह वर्ष की उम्र से पहले जीवन का सारा पाठ पढ़ाया था और वह किसी और दुनिया में जाने की जल्दी में थीं, यह बेटा अभी भी यह पता लगाने की कोशिश कर रहा है कि वह दुनिया कहां खत्म हुई, जहां उसकी मां है। क्या मैं आपको बताऊं कि वह अभागा आदमी कौन है? वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसके कई नाम हैं, लेकिन अली पीटर जॉन के नाम से जाना जाता है।

और जैसा कि मैंने इस टुकड़े को लिखना समाप्त किया है, फिल्म इंडस्ट्री जो सुशांत सिंह राजपूत के बारे में कहानियों के साथ उलझी हुई है और उनके बारे में एक चौंकाने वाली बात जो भावनात्मक लहर पैदा कर रही है, यह उनकी मां के लिए उनका प्यार है जो अठारह साल की होने पर मर गईं और जिन्हें

वह कभी नहीं भूल पाए थे और फिल्मों में अपने कुछ दृश्यों में उन्हें जीवित भी रखा था। और वह सचमुच एक रियलिटी शो के दौरान मंच पर रोया जिसमें उन्होंने एक माँ और उनके बेटे के प्यार को दर्शाते हुए एक अभिनय किया, एक ऐसा दृश्य जिसने माधुरी दीक्षित की आंखों में आंसू ला दिए जो शो के

एक जज थी और पूरे दर्शकों ने जो उन्हें जीवन के प्रदर्शन के लिए इतने सच्चे होने के लिए एक स्टैंडिंग ओवेशन दिया था।

भगवान के अस्तित्व पर सवाल उठाया जा सकता है, लेकिन एक माँ के प्यार, देखभाल और समझ के अलावा उनके सभी शक्तिशाली अस्तित्व पर कभी भी सवाल नहीं उठाया जा सकता है।

अनु– छवि शर्मा

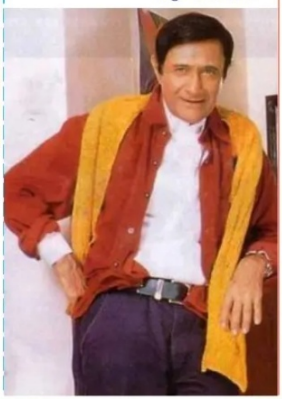

राजेश कुमार कहते हैं, एक आदमी की तरह दिखने के लिए, अधिक वजन वाले कारक ने काम किया।

ज्योति वेंकटेश

मजाकिया आदमी राजेश कुमार संजय और बिनैफेर कोहली के सीरियल 'एक्सक्यूज मी मैडम' में सनम हरजाई के रूप में है वापस आए।

अभिनेता ने कोविड की लड़ाई को बहादुरी से जीत लिया है,और वह अब सेट पर वापस आ गए है। वह अपनी भूमिका के बारे में बोलते है, "मैं सनम हरजाई नाम का एक किरदार निभा रहा हूं, जो कि एक सामान्य जोरू का गुलाम टाइप का पति नहीं है, लेकिन उसकी पत्नी पजेसिव है और जिससे वह थोड़ा परेशान है। उसी समय उसे अपने ऑफिस के बॉस से प्यार हो जाएगा। सनम एक बहुत ही प्यारा चरित्र है और एक विशिष्ट चालीस प्लस आदमी है जब कमर का आकार और उम्र समान हो जाती है। मेरे चरित्र के साथ मेरी कोई समानता नहीं है। और यही चुनौती है। इस बार बिना उठे मैं कैमरे पर एक अलग तरह का किरदार निभा रहा हूं। हम अपने आस–पास ऐसे कई पुरुषों को देखते हैं जो अपनी शादी के 10–15 साल बाद उबाऊ महसूस करते हैं। मुझे लगता है कि न केवल पुरुष, जो 40 के बाद अन्य महिलाओं की ओर आकर्षित होते हैं, महिलाएं भी अन्य पुरुषों की ओर आकर्षित होती हैं।"

वह आगे कहते हैं, सनम की विशिष्टता चरित्र चित्रण है। यह रेखांकित हास्य के साथ सुंदर लेखन है। यह दिन–प्रतिदिन की बातचीत के साथ बहुत वास्तवि क है। मुझे लगता है कि आज के टेलीविजन परिदृश्य में बहुत सारे सरल शो नहीं किए जा रहे हैं जैसे 'एक्सक्यूज मी मैडम'। स्थिति बहुत मजेदार है और वह एक दलित व्यक्ति भी है। यहां तक कि अन्य किरदार भी भरोसेमंद हैं और दर्शक इसे पसंद करेंगे।" शो के विशेष आकर्षण के बारे में बोलते हुए–राजेश को लगता है कि कुत्ते में एक और विशेष बात है। "हमने कुत्तों को मानवकृत किया है और उनकी अपनी बातचीत है। मैं अपने इस प्यारे दोस्तों के साथ सेट पर बहुत अच्छा समय बिता रहा हूं। उनके साथ, सेट वाइब्स बहुत अच्छे हैं।"

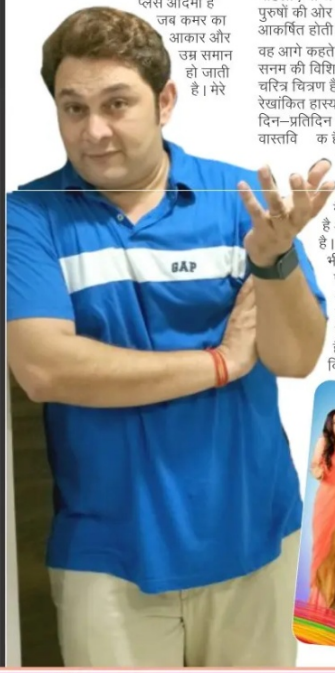

राजेश ने कुछ अन्य शो के लिए भी वजन बढ़ाया है और यह सनम के चित्रण के लिए काम कर रहा है और उपयोगी है। वो समझाते है, "हॉ वेट फैक्टर करैक्टर में जुड़ रहा है। अगर आप इसे देखें, भारत में, 40 के बाद वे अपने जीवन को सेमी–रिटायरमेंट की तरह मानते हैं। वे अपनी फिटनेस पर अधिक ध्यान नहीं देते हैं। वजन के साथ, चेहरा और प्रतिक्रियाएं बहुत प्यारे हो जाते हैं और कॉमेडी में, आप वह जोखिम उठा सकते हैं क्योंकि आप वीरतापूर्ण सामान नहीं कर रहे हैं। मुझे इस पर कोई आशंका नहीं है क्योंकि नेक्स्ट दूर की तरह दिखने वाला एक व्यक्ति अधिक वजन वाला कारक काम करता है। जब तक यह चरित्र को सही ठहरा रहा है तब तक सब कुछ ठीक है।" आप निर्माता जोड़ी संजय और बिनैफर कोहली को कैसे परिभाषित करेंगे?

"मेरे लिए यह एक घर वापसी है, मैंने उनके साथ 2009 में भूतवाला नामक शो में काम किया है। हम इन सभी वर्षों से संपर्क में थे और जब मुझे यह प्रस्ताव मिला तो मैं इसमें कूद पड़ा। हम मजे करने के इरादे से सेट पर जाते हैं और अच्छा काम अपने आप होता है और इस प्रोडक्शन हाउस की एक बड़ी गुणवत्ता है।"

अनु–छवि शर्मा

तेरी तस्वीर तो सिर्फ खुदा बना सकता था ओर बनाई

अर्चना मिश्रा

–अली पीटर जॉन

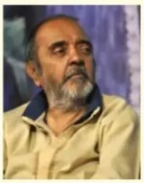

स्वर्ग में रविवार की शाम थी। भगवान ने सप्ताह के लिए अपने सभी काम खत्म कर दिए थे। उन्होंने अपने सभी संतों को पृथ्वी पर शांति मार्च पर भेजा था, विशेष रूप से भारत में जहां उन्होंने महसूस किया कि उनके नाम पर बहुत अराजकता और उथल–पुथल मची हुई थी और भगवान ने अपने सभी स्वर्गदूतों को एक अच्छी तरह से पिकनिक मनाने के लिए भेजा था। वह बिल्कुल अकेले थे और अपने पसंदीदा बगीचे में बैठे हुए अमृत पी रहे थे, जिसे खुद तैयार किया था, जिसे स्वर्ग में पाए गए सभी गुलाबों की फूल की पंखुड़ियों से तैयार किया था। वह खुद में पूरी तरह से शांति में लग रहे थे और अचानक से पेंट करने के मूड में आ गये थे। भगवान ने स्वर्ग में पाए गए सभी पेंट मांगे और संतुष्ट नहीं हुए और अपने हाथों से ही कुछ नए रंग बनाए जो पहले कभी नहीं देखे गए थे। उन्होंने अपने ईश्वर की आंखों के सामने अपने कैनवास को रखा और इसे पहला स्ट्रोक दिया और फिर अपने ब्रश को हर रंग में डुबो दिया और अभी भी निराश थे।

उन्होंने अपने हाथों से उनके पीछे बात की और अपने पैन्टर्स की सीट पर वापस आ गए और सबसे अच्छी मुस्कान थी जो उन्होंने पहले कभी नहीं मुस्कुराई थी। और फिर अपनी आँखें बंद कर ली और उस तरह के पागलपन से पेंटिंग करना शुरू कर दिया जिसे केवल दिव्य पागलपन कहा जा सकता है। उन्होंने अनंत काल के बाद अपनी आँखें खोलीं और जो कुछ उन्होंने देखा वह उनकी दिव्य आँखों को चकाचौंध कर गया। यह एक लड़की की पेंटिंग थी जिसे उन्होंने कभी नहीं बनाया था क्योंकि उन्होंने अपनी रचना का काम शुरू किया था। वह अब ठीक थे और उन्होंने सोचा कि क्या उन्हें स्वार्थी होना चाहिए और उन्हें अपने सबसे पसंदीदा स्वर्गदूतों में से एक के रूप में रखना चाहिए लेकिन अपने विचारों को देने के बाद और आधी रात से पहले, उन्होंने अपनी पेंटिंग को एक सुंदर लड़की में बदलने का फैसला किया और उन्हें अपने राजदूत के रूप में पृथ्वी पर भेजने का फैसला किया और श्रीमान और श्रीमती मिश्रा के जीवन में जल्दबाजी में पोस्ट भेजा, श्रीमान और श्रीमती मिश्रा मूल रूप से भारत के उत्तर प्रदेश से थे और जो अपनी कर्मभूमि, मुंबई में बस गए थे। मिश्राओं ने उन्हें नाम दिया, अर्चना और वह फूल की तरह खिलती और फली फूली, जो शायद ही कभी देखी या देखी नहीं गई और जिसने अपनी खुशबू को आगे बढ़ाया, जहां भी वह गई और लोगों को उस तरह का अनुभव दिया, जैसा पहले कभी अनुभव नहीं किया था। इन मासूमों लोगों को बहुत कम ही पता था कि पृथ्वी पर गॉड की एंजेल थी जो वहा प्रकाश फैलाने के लिए आई थी, जहां अंधेरा था, वहा प्यार फैलाने के लिए आई और जहां नफरत थी वहां शांति फैलाने आई थी जहा लड़ाई थी। मुझे लगता है कि मैं उसी भगवान से धन्य था, जिसने अर्चना को पेंट किया था, जो उनकी बहुत करीबी झलक थी और इसके बाद नियमित रूप से आनन्द सामना करना पड़ता है।

मैंने मुंबई में 'चायोस' नामक एक चाय केंद्र में प्रवेश किया और मुझे एक आवाज सुनाई दी, 'चायोस में आपका स्वागत है' और मैं अपनी आँखों को एक नई चमक के साथ देख सकता था और मैं अपने कानों में बजते हजारों छोटे मंदिरों की घंटी सुन सकता था। उन्होंने एक स्वर्ग में मेरा स्वागत किया था जो उन्होंने अपनी उपस्थिति से बनाया था। यह मेरे लिए चाय की दुकान की ओर आकर्षित होने की शुरुआत थी जो मेरे और अर्चना के लिए प्रार्थना की एक जगह बन गई और वह मेरी देवी बन गई। मैं चाय पीने गया था, लेकिन अद्भुत पानी पीने के लिए रुके, जिसने मुझे इस तरह का नशा दिया कि दुनिया के सभी नशे भी मुझे यह नशा नहीं दे सकते थे। जब मुझे आश्चर्य हुआ और मुझे इस बात की भी चिंता थी कि क्या वह अपने भक्त को जानती है कि वह किस तरह से इस धरती के माध्यम से अपने जीवन में कभी नहीं मिलेगा, लेकिन वह जानती थी या नहीं, मैं उनसे प्रार्थना करता रहा और उनकी एक नजर मेरे लिए सबसे सुंदर प्रार्थना थी जो मुझे यहां एक नया जीवन दे सकती है और यहाँ तक कि मुझे स्वर्ग का एक टुकड़ा भी दे सकती है। मुझे स्वर्ग नामक जगह पर कभी विश्वास नहीं हुआ था, लेकिन अब मुझे पता चला कि हमारे यहाँ स्वर्ग है और यह यहाँ है, यही अर्चना के चेहरे पर हैं।

मुझे अपने देवी के बारे में जो बात सबसे अच्छी लगती है, वह यह है कि वह मेरे जैसे साधारण नश्वर के जीवन का स्वर्गीय हिस्सा है।

मैं उनसे बात करने के अवसरों से दूर हो गया हूं और मुझे यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि वह दुनिया की वास्तविकताओं से अवगत है, जिसमें वह रह रही है। उनके अपने सपने, महत्वाकांक्षाएं हैं और हमेशा उन्हें पूरा करने के तरीके की तलाश है और मैंने सोचा है कि जिस भगवान ने उन्हें पेंट किया है वह अभी तक अपने जीवन को बेहतर तरीके से बदलने के लिए तैयार नहीं है, जबकि वह दुनिया में अपने एम्बेसडर बनने के लिए इतनी मेहनत कर रही है, जो भगवान से दूर भागने में व्यस्त है और यहां तक कि राजनीतिक और अन्य उल्टे उद्देश्यों के लिए उनका उपयोग कर रही है।

मैंने एक बार उनसे पूछा कि क्या वह इस बात से परिचित है कि वह कितनी सुंदर थी और जिस तरह से वह शरमा गई, मैं उनके चेहरे पर भगवान की कृपा देख सकता था। मैंने उनकी उम्र की किसी अन्य लड़की के साथ ऐसा नहीं देखा है और मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि मुझे अनगिनत लड़कियों और महिलाओं को देखने और उन्हें निहारने का सौभाग्य मिला है। मैंने एक बार अर्चना से पूछा था कि क्या वह एक मॉडल या एक अभिनेत्री बनना चाहेगी और उन्होंने कहा, मर्जी हो तो कुछ भी कर लूगी उसके लिए, मैंने एक शाम उन्हें टिया सेंटर से बाहर निकलते हुए देखा और मैं देख सकता था जैसे वह दुनिया को चुनौती देने और उसे जीतने के लिए जा रही थी। आप क्या कर रहे हैं, प्यारे देवता जिन्होंने अर्चना को चित्रित किया है, क्यों न आप उन्हें फिर से रंगने के लिए जीवन के रंगों का उपयोग करें और उन्हें एक सुंदर महिला बनाएं जो आपके नाम का सम्मान करेगी और दुनिया के लिए अद्भुत काम करेगी।

अनु– छवि शर्मा

इंडियाज बेस्ट डांसर में नजर आयेंगे शक्ति कपूर और चंकी पांडे

ज्योति वेंकटेश

सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन का इंडियाज बेस्ट डांसर इस समय छोटे पर्दे के लोकप्रिय शो में से एक है। इस सप्ताह इंडियाज बेस्ट डांसर के शो में 'कॉमेडी स्पेशल' मनाया गया। जिसमें बॉलीवुड की जानी मानी हस्तियां शक्ति कपूर और चंकी पांडे ने गर्मजोशी से शिरकत की। दो अभिनेताओं, जिन्होंने अपनी फिल्मों के माध्यम से कई हास्य पात्रों को लोकप्रिय बनाया है, उन्होंने प्रतियोगियों द्वारा सभी प्रदर्शनों को देखने का आनंद लिया। प्रतियोगियों ने इस सप्ताहांत के कॉमेडी स्पेशल थीम को ध्यान में रखते हुए अपने प्रदर्शन के माध्यम से अपने मजाकिया पक्ष का प्रदर्शन किया।

'प्रभास और मेरे बीच बेहतरीन सौहार्द रहा फिल्म की शूटिंग द्वारा' सचिन खेडेकर

– लिपिका वर्मा

सचिन खेडेकर हिंदी फिल्मों एवं रीजनल फिल्मों की एक बेहद ही जानी मानी हस्ती है। उन्होंने हिंदी, मराठी, तेलुगू, तमिल, गुजराती फिल्मों में ढेरों किरदार निभाए है। अब इरोज पर उनकी फिल्म 'हलाहल' ने दर्शकों के मन में कोतुहल ही नहीं अपितु चाह भी दिख रही है। सचिन की एक बहुत बड़ी फिल्म "राधे श्याम" प्रभास स्टारर फिल्म है, जिसकी 60% शूटिंग खत्म हो चुकी है। अब जो कुछ बची शूटिंग है वह भी बहुत जल्द उसकी शूटिंग शुरू होने को है।

■ 'हलाहल' के बारे में कुछ बतायें?

– यह फिल्म हलाहल पिछले साल लिखी और शूट भी की गयी है। यह फिल्म कोविड 19 के चलते रिलीज़ नहीं हो पायी। मैं लीड रोल में बाप का किरदार और डॉक्टर का किरदार निभा रहा हूँ। मैं इस फिल्म में आयु में, सबसे बड़ा हूँ। पर जितने भी, इस पीढ़ी के नए कलाकार है उनके साथ काम करके बहुत अच्छा लगा।

आगे के बारे में सचिन खेडेकर बोले, "मेरे किरदार का नाम शिव है और डॉक्टर भी। मेरी दो बेटियां है जिनमें से एक बेटी को पढ़ाई के लिए दूसरे शहर भेज दिया गया है। और वहां उसकी मृत्यु हो जाती है। उसकी मृत्यु सुसाइड है अथवा उसका मर्डर हुआ है, यह जानने के लिए आपको फिल्म देखनी होगी।

■ आप ओ टी टी प्लेटफॉर्म इरोज से डेब्यू कर रहे हैं क्या कहना चाहेंगे इस प्लेटफॉर्म के बारे में?

– जी हाँ, इंडस्ट्री में काम करते हुए एक इमेज में बंध जाते हैं। और कमर्शियल फिल्मों में स्टार वेल्यू होना भी जरूरी है क्योंकि लोग पैसे खर्च करके टिकट लेकर अपने पसंदीदा स्टार्स देखना भी पसंद करते हैं। फिल्मों में जब स्क्रिप्ट लिखी जाती है तो यह सारी बातें ध्यान में रख कर के ही फिल्में बनती है। प्लेटफॉर्म एक वरदान की तरह है सभी टेक्निशंस के लिए, सभी को काम मिल रहा है। खास कर ऐसे समय में। लोगों को अच्छे और बेहतरीन कहानियाँ देखनी पसंद है। फिर चाहे कोई नया एक्टर या थोड़ा जाना –माना एक्टर ही क्यूँ नहीं हो उस कहानी में कास्ट किया गया हो। और यह प्लेटफॉर्म पूरी दुनिया के लोगो देख पाते हैं यह हमारे लिए ओ टी टी एक बेहतरीन प्लेटफॉर्म है। इंडिया में सभी को समझ है और अच्छी पेशकश (क्रिएटिव) दे रहे हैं वेब सीरिज़ में।

■ अपनी फिल्म "राधे श्याम" के बारे में कुछ बतायें ?

– यह बहुत ही बड़ी हिंदी एवं तेलुगू में बन रही फिल्म है। इस फिल्म में भी मेरा एक डॉक्टर का किरदार ही है। अधिकतर शूटिंग मार्च माह में, यूरोप में ही की गयी है। लगभग 60 प्रतिशत शूटिंग हो चुकी है। पान्डेमिक के चलते कुछ शूटिंग बाकी है। यह शूटिंग शायद जल्द ही शुरू होने जा रहा है। हाँ शायद शूटिंग के लिए अब यूरोप न जाना पड़े। जैसा की मालूम हुआ है शायद हैदराबाद में इस फिल्म की शूटिंग जल्द की जाएगी।

आगे फिल्म की कहानी के बारे में सचिन बोले, "इस फिल्म में प्रभास मेन लीड में है। यह एक लव स्टोरी है। इस फिल्म के निर्देशक राधा कृष्णा कुँवर है बहुत ही सुलझे हुए निर्देशक है।

■ प्रभास एक बहुत बड़े टॉलीवूड एवं बॉलीवुड के स्टार है उनके साथ काम करने का अनुभव कैसे रहा?

– सेट पर प्रभास के साथ दोस्ती बन गयी थी वह एक बहुत ही बेहतरीन कलाकार तो है ही किंतु साथ ही एक बेहतरीन हुमून बीइंग(इंसान) भी है। सभी जानते हैं दक्षिण इंडस्ट्री के हीरो बहुत ही सहेज होते है। सभी जानते हैं प्रभास न केवल टॉलीवुड में अपितु बॉलीवुड में भी एक नाम कमा चुके हैं और शोहरत भी मिली है उनको। सफल अभिनेता है किंतु बहुत सरल सीधे स्वभाव के धनी है। उनके साथ एक अच्छा रिपोर्ट बन गया था। जितनी भी उनकी तारीफ करूँ बहुत कम होगी।

यह कहना ज्यादा नहीं होगा उनका नाम भी कमल हासन और रजनीकांत की तुलना में फिट बैठता है। सफलता पाने के बावजूद वो किसी भी तरह का अहम नहीं पालते हैं।

Narendra Modi @narendramodi · 36m

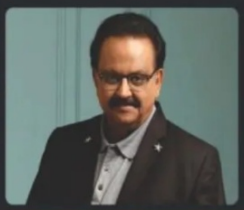

With the unfortunate demise of Shri SP Balasubrahmanyam, our cultural world is a lot poorer. A household name across India, his melodious voice and music enthralled audiences for decades. In this hour of grief, my thoughts are with his family and admirers. Om Shanti.

Akshay Kumar @akshaykumar · 28m

Deeply saddened to hear about the demise of Balasubrahmanyam ji.Just a few months back I'd interacted with him during a virtual concert in this lockdown..he seemed hale,hearty & his usual legendary self....life is truly unpredictable. My thoughts & prayers with his family 🙏 #RIPSPB

AMRITA RAO liked

Lata Mangeshkar @mangesh... · 33m

Pratibhashaali gayak,madhurbhashi ,bahut nek insan SP Balasubrahmanyam ji ke swargwas ki khabar sunke main bahut vyathit hun.Humne kai gaane saath gaaye,kai shows kiye.Sab baatein yaad aarahi hain.Ishwar unki aatma ko shanti de.Meri samvedanaayein unke pariwar ke saath hain.

Lata Mangeshkar @mangeshkarlata

Namaskar. Swar Ganga, Bharat Ratna M. S. Subbulakshmi ji ki aaj jayanti hain. Main unko aur unke suron ko koti koti pranam karti hun.

Translate Tweet

Salman Khan @BeingSalmanKhan

Heartbroken to hear about #SPBalasubrahmanyam sir... you wil forever live on in your undisputed legacy of music! condolence to the family #RIP

#SPBalasubrahmanyam passes away at 74. Our condolences go out to his family and close friends.

SP Balasubramaniam sang 41230 songs in his lifetime. If you are to listen to his songs one song a day you need to live 113 years and start listening to him the moment you are born. A legend not just for the sheer volume but the emotion that resonated from his voice. #RIPSPB

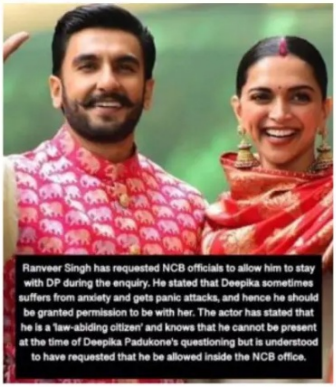

Actress Deepika Padukone And Ranveer Singh Spotted At Mumbai Airport on

Actress Rakul Preet Singh Spotted At NCB Office Today In Mumbai

Actress Sara Ali Khan Reaches Mumbai Airport Ahead Of NCB's Probe On

स्क्रीन राइटर्स असोशिएशन द्वारा SWA अवॉर्ड्स 2020 के टीवी शो कैटगरी के लिए नामांकन की घोषणा

– ज्योति वेंकटेश

स्क्रीन राइटर्स एसोशिएशन (SWA) जो कि पटकथा लेखकों और गीतकारों का भारतीय गिल्ड है, ने टीवी शो SWA अवॉर्ड्स 2020 के वर्ग के लिए नामांकितों की घोषणा की। प्रख्यात पटकथा लेखकों की एक जूरी ने कहानी, पटकथा और संवाद के लिए अलग–अलग नामांकित व्यक्तियों को दो उप–श्रेणियों के तहत चुना: टीवी कॉमेडी और टीवी नाटक। ये नॉमिनेशन, एक साथ 2019 के 13 हिंदी टीवी शोज़ विभाजित किया गया है।

टीवी कॉमेडी के लिए नामांकित सर्वश्रेष्ठ कहानी के लिए :

1. अलादीन नाम तो सुना होगा के लिए लक्ष्मी जयकुमार और शक्ति सागर चोपड़ा
2. भाबीजी घर पर हैं के लिए संजय कोहली, शशांक बाली और मनोज संतोषी!
3. जीजाजी छत पर हैं के लिए रघुवीर शेखावत
4. तारक मेहता का उल्टा चश्मा के लिए नितिन केसवानी

टीवी कॉमेडी के लिए नामांकित सर्वश्रेष्ठ पटकथा के लिए :

1. अलादीन नाम तो सुना होगा के लिए आँचल अग्रवाल
2. बावले उतावले के लिए भावना व्यास
3. भाबीजी घर पर हैं के लिए संजय कोहली, शशांक बाली और मनोज संतोषी!
4. भाखरवाड़ी के लिए आतिश कपाड़िया
5. रघुवीरशेखावत, शशांक बाली और संजय कोहली जीजाजी छत पर है के लिए

टीवी कॉमेडी के लिए नामांकित सर्वश्रेष्ठ संवाद हैं के लिए

1. बावल उतावले के लिए भावना व्यास
2. भाबीजी घर पर हैं के लिए मनोज संतोषी!
3. भाखरवाड़ी के लिए आतिश कपाड़िया
4. जीजाजी छत पर के लिए रघुवीर शेखावत

टीवी नाटको के लिए नामांकित – सर्वश्रेष्ठ पटकथा के लिए :

1.छोटी सरदारनी के लिए विशाल वटवानी और रेणु वटवानी
2. एक महानायक के लिए कुमार प्रभात – डॉ. बी आर अम्बेडकर
3.इशारों इशारों मे, के लिए ज़मा हबीब
4.फैज़ल अख्तर और पंकज उनियाल झाँसी की रानी के लिए
5. मेरे डैड की दुल्हन के लिए कार्तिकसीतारमन

टीवी नाटक के लिए नामांकित – सर्वश्रेष्ठ संवाद हैं:

1. एक महानायक के लिए योगेश विक्रांत – डॉ. बी आर अम्बेडकर
2. जमा हबीब इशारों इशारों में, के लिए
3. कुल्फी कुमार बाजेवाला के लिए अपराजिता शर्मा और दिव्य निधि शर्मा
4. मेरे डैड की दुल्हन के लिए प्रीति ममगईं
5. राम सियाके लव कुश के लिए विनोद शर्मा

एसडब्ल्यूए के महासचिव सुनील सलिगया ने कहा, "टीवी विशुद्ध रूप से एक लेखक का माध्यम है। दैनिक आधार पर 30–60 मिनट की पटकथा लिखना आसान नहीं है। जब आप तथाकथित एपिसोड फीडबैक 'के अनुसार टीआरपी, प्रतिद्वंद्वी चैनल की स्टोरी ट्रैक, एक चरित्र की लोकप्रियता, आगामी त्योहार, कलाकारों या स्थान की उपलब्धता, मौसम और सभी तरह या इससे आगे के आधार पर लिख रहे हों तो यह और भी मुश्किल है क्रिएटिव हेड के मूड अनुसार। इन चेक पॉइंट्स को पार करते हुए, यदि आप उल्लेखनीय कुछ लिखने में सक्षम हैं, तो आप पुरस्कार के योग्य हैं। SWA पुरस्कार समिति को 2019 में सामान्य मनोरंजन चैनलों में हिंदी भाषा के टीवी शो के लेखकों में से 146 प्रविष्टियाँ मिलीं। अजय सिन्हा, आनन्द महेन्द्रू, कमलेश पांडे, लिलिपुटफारुक्वी, मंजुल सिन्हा, पूर्णेंदुशेखर और संजय उपाध्याय जैसे पटकथा लेखकों से युक्त एक

जूरी ने एक प्री–जूरी द्वारा शॉर्टलिस्ट की गई प्रविष्टियों के दो कंसिक्युटिव एपिसोड देखे और प्रत्येक उप–श्रेणी के अंतर्गत नॉमिनी का चयन किया। 27 सितंबर, 2020 को एक ऑनलाइन पुरस्कार समारोह में अंतिम विजेताओं की घोषणा की जाएगी।

सत्यम त्रिपाठी, स्क्रीनराइटर और टेलीविजन श्रेणी के प्रवक्ता, एसडब्ल्यूए अवार्ड्स ने कहा, "एक भारतीय टेलीविजन लेखक रातोंरात न केवल कहानी का ताना–बाना बुनता है, बल्कि अचानक आंसू बहाने का प्रबंधन भी करता है और यदि कहानी का कोई धागा ढीला पड़ता है तो सिर्फ उसे चुनता ही नहीं बल्कि अपने दर्शकों को निराश किए बिना एक और कड़ी का जादू बुनता है। अगर यह आसान लगता है, तो बस एक धारावाहिक के 100 एपिसोड लिखने की कोशिश करें और आपकी सभी धारणाएं और गलतफहमियां खिड़की से बाहर उड़ जाएंगी। "SWA 2020 में अपने डायमंड जुबली वर्ष के अवसर पर पहली बार SWA अवार्ड्स का आयोजन कर रही है, चूँकि ये बेहद प्रबुद्ध पटकथा लेखकों और गीतकारों द्वारा आंका जाता है अतः ये पुरस्कार भारत के लेखकों के लिए सबसे प्रतिष्ठित सत्यापन बनने का वादा करता है। अन्य प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के साहित्यकारों और साहित्यिक संगठनों के पुरस्कारों की तरह।

नामांकित व्यक्तियों ने घोषणा पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए SWA से कहा :–

लक्ष्मी जयकुमार – एसडब्ल्यूए पुरस्कार के लिए नामांकन, मेरे लिए एक जबरदस्त सम्मान है क्योंकि अपने समकालीनों, सहयोगियों और वरिष्ठों द्वारा पहचाना जाना बहुत अच्छा लगता है। एक लेखक का परम गौरव प्रशंसा है और यह मेरा पहला पुरस्कार नामांकन है, मुझे बहुत सम्मानित महसूस हो रहा है कि यह स्वयं SWA से आया है। यह वास्तव में प्रेरक है। मुझे काउंटडाउन का इंतजार है हालांकि मुझे लगता है कि मैंने नामांकित होकर जीत हासिल कर ली है।

शक्ति सागर चोपड़ा – किसी के काम के लिए पहचाना जाना हमेशा सराहा जाता है, लेकिन इससे भी अधिक सम्मान होता है जब यह आपकी अपनी बिरादरी से आता है। मैं इन पुरस्कारों की स्थापना के लिए एसडब्ल्यूए की बहुत सराहना करता हूं जहां लेखकों को उनके साथियों द्वारा पहचाना जाएगा। मैं उन्हें टीवी कॉमेडी – बेस्ट स्टोरी श्रेणी में अलादीन नाम तो सुना होगा को नामांकित करने के लिए भी धन्यवाद देता हूं।

शशांक बाली –कभी भी लेखक के महत्व को कम मत समझो।

मनोज संतोषी –मैं बहुत खुश हूं कि मुझे SWA अवॉर्ड्स में नामांकन मिला और मैं इसके लिए पूरी SWA को इसके लिए धन्यवाद देना चाहता हूं और उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

रघुवीर शेखावत – मैं SWA द्वारा शुरू किए गए प्रथम SWA अवॉर्ड्स टीवी कॉमेडी की तीनों श्रेणियों में अपने नामांकन के लिए बेहद रोमांचित हूं। मैं लंबे समय से SWA से जुड़ा रहा हूं तथा प्रख्यात लेखकों की जूरी द्वारा किये गए ये नामांकन इसे और भी खास बनाता हैं। मैं लेखकों को सम्मानित करने के इस अद्भुत कदम के लिए एसडब्ल्यूए को बधाई देता हूं और मुझे उम्मीद है कि ये पुरस्कार हमारे देश में लेखन के लिए सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार बन जाएंगे।

नितिन केसवानी –एसडब्ल्यूए अवार्ड ज्यादातर लेखकों के लिए बहुत खास होते हैं क्योंकि यह लेखन बिरादरी से प्राप्त होता है। इसलिए मेरे लिए इस मंच पर नामांकित होना एक बड़ी उपलब्धि है। मुझे लगता है कि मैं सही दिशा में काम कर रहा हूं।

भावना व्यास – मुझे बहुत खुशी हुई कि मुझे SWA द्वारा अपने पहले कॉमेडी टीवी शो के लिए नामांकित किया गया। अपने वरिष्ठ लेखकों और उद्योग के सदस्यों द्वारा सराहा जाना किसी भी लेखक के लिए सम्मान की बात है। मैं वास्तव में आभारी हूं। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि एसडब्ल्यूए द्वारा लेखकों को प्रेरित करने के लिए यह एक अद्भुत पहल है।

आतिश कपाड़िया –लेखकों द्वारा, लेखकों के लिए और लेखकों से इन पुरस्कारों को स्थापित करने के लिए एसडब्ल्यूए को बधाई।

आंचल अग्रवाल – एक लेखक को अक्सर TRP द्वारा शो गार्नर के रूप में देखा जाता है। लेकिन जब अपने स्वयं के क्षेत्र से एक प्रख्यात जूरी आपको नामांकन के योग्य देखती है, तो वही दिन होता है जब उस लेखक को उसकी उपलब्धि मिल जाती है। यह वास्तव में मेरे लिए एक महान प्रेरक क्षण है भले ही जीत हासिल हो या नहीं। मैं इस सम्मान के लिए एसडब्ल्यूए का आभारी हूं। मेरे जैसे हर लेखक को आगे बढ़ाने, पीठ पर शाबाशी देने हमारे लिफाफे को पुश देने तथा हमें और बेहतर कंटेंट्स बनाते रहने की प्रेरणा देने के लिए शुक्रिया।

योगेश विक्रांत – SWA अवॉर्ड्स की संस्था एक बेहतरीन कदम है। एक लेखक हर स्क्रीन स्टोरी की रीढ़ होती है। इसीलिए, एक लेखक संघ द्वारा परिकल्पित एक पुरस्कार कार्यक्रम, जो लेखको के योगदान को अपने केंद्र में रखता है, यह स्क्रीन की कहानी कहने की दुनिया में एक स्वागत योग्य पहल है। SWA अवॉर्ड्स 2020 के लिए सर्वश्रेष्ठ संवाद के लिए नामित होने पर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

अपराजिता शर्मा : कोई भी काम बहुत छोटा नहीं है, यह सच है। मुझे चाहे जो कहो, लेकिन मेरे लिए, हमारे पास सबसे अच्छा काम है। लेखन शुद्ध आनंद है और हम भाग्यशाली हैं कि हम हर दिन जिस चीज से प्यार करते हैं, उसे करने में सक्षम हैं। हमने लेखन के लिए अपना जीवन समर्पित किया है, और एसडब्ल्यूए ने खुद को लेखकों के लिए समर्पित किया है। यह सही साझेदारी है। और, इस वर्ष, इन पुरस्कारों के साथ, हम इस साझेदारी का जश्न मनाते हैं। दिव्य और मैं सम्मानित महसूस करतें हैं कि हमारी बिरादरी, हमारे लोगों ने हमारे काम को उल्लेखनीय माना है और हमें कुल्की कुमार बाजे वाला के लिए नॉमिनेट किया है।

दिव्य निधि शर्मा – एसडब्ल्यूए अवॉर्ड मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये हमारे अपने अवॉर्ड हैं। मुझे इस पुरस्कार के लिए नामांकित होने पर गर्व है और मैं अन्य सभी उम्मीदवारों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

प्रीति ममगईं – शब्द मेरे जुनून हैं, और शब्द मेरा व्यवसाय हैं, लेकिन इस समय मैं अवाक महसूस करती हूं। मैं इस नामांकन के लिए SWA की बहुत आभारी हूं। यह वास्तव में विशेष है कि भारत में पहली बार हमारे पास खास रूप से पटकथा लेखकों के लिए एक पुरस्कार समारोह बना है। सम्मानित और प्रख्यात पटकथा लेखकों द्वारा, मेरे अपने साथियों की जूरी द्वारा न्याय किया जाना, मुझे एक ही समय में उत्तेजित और विनम्र महसूस कराता है। बेंजामिन डिसरायली को उद्धृत करते हुए मैं कहूंगी "मुझे बहुत ही असामान्य लग रहा है, अगर यह अपच नहीं है, तो यह आभार होना चाहिए।"

विनोद शर्मा –पटकथा लेखकों को खुश करने का यह एक उत्कृष्ट प्रयास है क्योंकि केवल एक लेखक दूसरे लेखक की प्रतिभा और कार्य का मूल्यांकन कर सकता है। मुझे खुशी है कि एसडब्ल्यूए ने इस प्रोत्साहन की शुरुआत की। मैं रोमांचित महसूस करता हूं कि जूरी ने मुझे अपने पुरस्कारों के प्रथम संस्करण के लिए नामांकित किया। धन्यवाद, SWA टीम, स्वास्तिक और सिद्धार्थ कुमार तिवारी जिन्होंने हमेशा मुझे प्रोत्साहित किया और मुझे कुछ लिखने के लिए प्रेरित किया, जिसकी सराहना की जाती है।

विशाल वत्वानी और रेणु वत्वानी – हमें खुशी है कि छोटी सरदारनी के लिए हमें सर्वश्रेष्ठ पटकथा के लिए नामांकित किया गया। अपने साथियों से यह मान्यता अब तक का सबसे संतुष्टिदायक एहसास है। इसलिए हिंदी टेलीविजन / ओटीटी / फिल्म्स के सभी शब्दकारों को यह अवसर देने के लिए SWA को धन्यवाद। ये पुरस्कार उन लेखकों के करियर में एक विश्वसनीय मील का पत्थर साबित होंगे जो नामांकित और विजेता हैं।

कुमार प्रभात – लेखक किसी भी फिल्म, टीवी शो या वेब श्रृंखला की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभातें है। लेकिन जब प्रशंसा की बात आती है, तो सभी तालियां और प्रशंसा दूसरें किरदार बटोर लें जातें हैं, जबकि लेखक लिखना जारी रखते हैं। लेकिन मुझे खुशी है कि लेखकों के अधिकारों की रक्षा करने के अलावा, SWA ने उन्हें पुरस्कारों से सम्मानित करने की जिम्मेदारी भी ली है। ये पुरस्कार किसी भी लेखक के लिए गर्व की बात है। मुझे सर्वश्रेष्ठ पटकथा के लिए नामांकित किया गया है जिसके लिए मैं गौरवान्वित महसूस करता हूँ।

ज़मा हबीब – मैं यह जानकर सम्मानित और उत्साहित हूं कि SWA अवॉर्ड्स द्वारा सर्वश्रेष्ठ गीत श्रेणी के तहत नामांकित होने के बाद, अब मुझे सर्वश्रेष्ठ पटकथा और सर्वश्रेष्ठ डायलॉग्स के लिए (इशारों इशारों में,) नॉमिनेट किया गया है जिसके लिए SWA को धन्यवाद। देखा जाय तो जीत या हार मायने नहीं रखता है। मुझे खुशी है कि हमारे लेखकों की बिरादरी ने इस नई यात्रा की शुरुआत की है। हमारे अपने पुरस्कार। प्रत्येक लेखक और गीतकार को बधाई। एसडब्ल्यूए अवार्ड्स टीम को बधाई।

फैजल अख्तर – कोई भी एसोसिएशन अपने सहयोगी के लिए हमेशा एक माँ की तरह होती है। और SWA से आने वाला हर पुरस्कार इतना वास्तविक होता है। मैं कई पुरस्कार समारोहों में गया हूं और कई पुरस्कार जीते हैं, लेकिन मैंने देखा है कि पुरस्कार देते समय लेखकों को हमेशा जल्दी—जल्दी अवार्ड देकर काम निपटाने जैसा व्यवहार किया जाता है और इन अवार्ड उत्सवों में हमेशा अभिनेताओं को महत्व दिया जाता है। जबकि ये माध्यम एक 'लेखक का माध्यम' है। कम से कम अब लेखकों को अपनी माँ की बाहों में आवश्यक महत्व मिलेगा। झाँसी की रानी के लिए मुझे नामांकित करने के लिए बहुत—बहुत धन्यवाद, ये शो मेरे अनुसंधान की मेहनत और इसके तहत की गई क्राफ्टिंग के लिए मेरे दिल के बहुत करीब है।

पंकज उनियाल :मैं वास्तव में स्क्रीन लेखकों को पहचान देने, प्रोत्साहित करने और बढ़ावा देने के लिए एसडब्ल्यूए द्वारा की गई इस महान पहल से अभिभूत हूं। मुझे झांसी की रानी के लिए नॉमिनेटेड उम्मीदवारों में से एक के रूप में शॉर्टलिस्ट किए जाने के लिए जो सम्मान मिला है, उसके लिए मैं कृतज्ञ हूं। मैं अपने प्रयासों की इस मान्यता के लिए, विशेषाधिकार प्राप्त और सम्मानित महसूस करता हूं। ये पुरस्कार निश्चित रूप से संपूर्ण पटकथा लेखन बिरादरी के भविष्य को ढालने और आकार देने में एक मील का पत्थर साबित होंगे।

कार्तिक सीतारमन –अपने ही बिरादरी के साथियों द्वारा पहचाना जाना सबसे बड़ी उपलब्धि है। इस सम्मान ने मुझे पल भर के लिए ठहरकर सोचने का मौका दिया है और उस एक क्षण में, मैंने एक बार फिर से खोज की, कि अस्वीकृती और निराशा के बीच, इस जॉब में एकमात्र यही एक योग्य और सच्ची बात है कि यह तुरंत प्रशंसा या सफलता नहीं ला सकता है, लेकिन यह, किसी व्यक्ति को दूसरे दिन फिर से कोशिश करने के लिए जीवित रख सकता है। इसके लिएSWA को मेरा बहुत आभार, इस उम्मीद के साथ कि यह इस देश में हर जगह लेखकों के लिए एक विशाल छलांग होगा।

अनुवाद : सुलेना मजुमदार अरोरा

Kareena Kapoor Cuts A Wonder Woman-Themed Cake As Birthday Celebrations Continue

Actress Kareena Kapoor Khan With Taimur Spotted At Bandra In Mumbai

Actor Sonu Sood Spotted At Bandra In Mumbai

Actor Emraan Hashmi Spotted At Juhu In Mumbai

Actress Kareena Kapoor Khan Spotted At Bandra In Mumbai

Actor Ayush Sharma Spotted At Bandra In Mumbai

Actress Nora Fatehi Spotted At Bandra In Mumbai

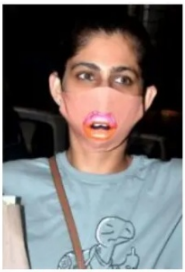

Actress Kubra Sait Spotted At Bandra In Mumbai

Actress Nimrat Kaur Spotted At Bandra In Mumbai

Actress Urvashi Rautela Spotted Juhu In Mumbai

Actress Ridhima Pandit Spotted At Bandra In Mumbai

Punit Malhotra On Shooting Tiger Shroff Song "Unbelievable" Amidst Restrictions

Madhur Bhandarkar Met UP Chief Minister Shri Yogi Adityanath Today In Lucknow. They Spoke About Cinema And Discussed Various Aspects Of Cinema Including The Proposed Upcoming film city in Noida

Actress Urvashi Rautela Snapped At Juhu In Mumbai

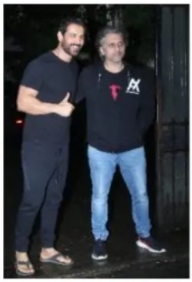

Actor John Abraham With Director Mohit Spotted At Bandra In Mumbai

Actor Aditya Roy Kapoor Spotted At Bandra In Mumbai

Actress Bhumi Pednekar Snapped At Dharma Office At Andheri In Mumbai

Sunny Kaushal Is All Set To Feature In A Music Video #TaaronKeShehar With Neha Kakkar.

Anahad Foundation In Association With Believe Entertainment Brings Your Favourite Artists With 'Together, Louder, Stronger

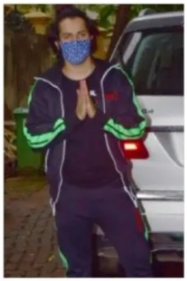

Actor Varun Dhawan
Snapped At Juhu
in Mumbai

Actor Tiger Shroff
spotted at Juhu
in Mumbai

Actor Saif Ali Khan, Taimur Ali Khan,
Kareena Kapoor Khan
Spotted At Bandra In Mumbai

तारक मेहता का उल्टा चश्मा के 3000
एपिसोड पूरे करने वाले आदरणीय आसित भाई मोदी
और उनकी पूरी टीम को हार्दिक बधाइयाँ, हार्दिक हुडयाँ

Eight Year Old Mumbai Girl, An Ardent Fan
Of Varun Dhawan And Shraddha Kapoor Break
Her Piggy Bag To Make A Hindi Movie

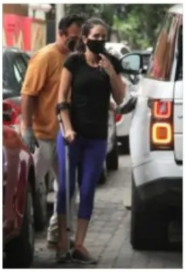

Actress Isabelle Kaif
Snapped At Bandra
In Mumbai

Sidharth Shukla Now
Has His Very
Own Instagram Filter!

Actress Giorgia Andriani
Spotted Outside Salon
In bandra

Actress Kiara Advani
Spotted At Old Dharam
Office In Mumba

INDIAN FILM AND TV PRODUCERS COUNCIL (IFTPC) HONOURS ASIT KUMARR MODI FOR COMPLETING 3000 EPISODES OF TAARAK MEHTA KA OOLTAH CHASHMAH

Dangal TV To Air Iconic Love Saga Kitani Mohabbat Hai Season 2

लाल किला पर आयोजित होने वाली विश्व की सबसे बड़ी लव कुश रामलीला की रिहर्सल शुरू रिहर्सल में सोशल डिस्टैंसिंग का पूरा ख्याल रखा जा रहा है

मेडिटेशन गुरु नवनिधि के वाधवा का कहना है कि अपनी जिंदगी में खुशी और स्वास्थ्य का दरवाजा खोलिए

– सुलेना मजुमदार अरोरा

पीएम नरेंद्र मोदी 17 सितंबर को सत्तर साल के हो गए। इस महत्वपूर्ण अवसर को चिह्नित करने के लिए, मेडिटेशन विशेषज्ञ प्रशिक्षक डॉ नवनिधि के वाधवा एक अनूठी पहल शुरू कर रही हैं जो फ्री में है।

नवनिधि के वाधवा एक प्रसिद्ध एनएलपी प्रमाणित माइंड परफॉर्मेंस एंड ट्रांसफॉर्मेल कोच, सेलिब्रिटी न्यूमेरोलॉजिस्ट और ग्राफोलॉजिस्ट, वास्तु सलाहकार तथा एनर्जी हीलर हैं।

उनके अनुसार, ध्यान का अभ्यास विकसित करना और उसे बनाए रखना आपको आपकी वास्तविक क्षमता तक पहुँचने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। 1 अक्टूबर से 7 अक्टूबर तक ध्यान मैराथन होने वाला है। सात दिनों के पाठ्यक्रम में विभिन्न थीम आधारित ध्यान सत्रों के माध्यम से मार्गदर्शन किया जाएगा।

डॉ नवनिधि का जीवन धैर्य और साहस की कहानी है। बचपन में उनके चेहरे और शरीर की बनावट को लेकर बहुत हँसी मजाक उड़ाया जाता था। उनकी भाषा ज्ञान पर भी फब्तियां कसी जाती थी। जिसके कारण वे मन ही मन डूबती जा रही थी और फिर वे क्लीनिकल डिप्रेशन में चली गई। बाद के जीवन में उन्हें गर्भावस्था के दौरान कई स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ा, जिससे उनका वजन बहुत बढ़ गया और मांसपेशियां बिगड़ गईं। डॉक्टरों ने घोषित किया था कि उनकी स्थिति अपरिवर्तनीय थी। लेकिन उन्होंने सभी को गलत साबित कर दिया और विविध आध्यात्मिक और उपचार संबंधी तौर–तरीकों को अपनाकर अपने जीवन में एक आमूल परिवर्तन किया। उन्होंने एनएलपी, ध्यान और अभिव्यक्ति तकनीक, अंकशास्त्र, ग्राफोलॉजी, वास्तु, टैरो रीडिंग और एनर्जी हीलिंग में विशेषज्ञता हासिल की। न केवल उन्होंने अपने स्वास्थ्य, शक्ति और कल्याण को पुनर्जीवित किया, बल्कि एक प्रसिद्ध मेडिटेशन और परिवर्तन कोच भी बन गईं, जिसने अपने जीवन की यात्रा के माध्यम से दुनिया भर में कई लोगों का मार्गदर्शन किया।

2019 में, उन्हें मिसेस यूनिवर्स एशिया क्वीन 2019 का ताज पहनाया गया, उन्हें टाइम्स पावर वुमन अवार्ड मिला और आज वे चालीस सबसे प्रभावशाली महिलाओं में से एक हैं। इस वर्ष की शुरुआत में, उन्हें

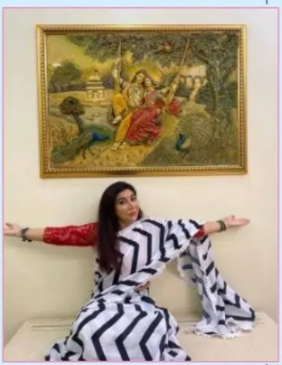

फोर्ब्स के एक लेख में फीचर किया गया। रेडियो सिटी 91.1 एफएम ने उन्हें मुंबई सिटी आईकन पुरस्कार से सम्मानित किया। इसके अलावा, वे अपनी बेहतरीन कामों के लिए हेल्थकेयर अवार्ड, इंडिया टुडे एक्सीलेंस की प्राप्तकर्ता हैं। उन्हें उम्मीद है कि इस मुहिम में ज्यादा से ज्यादा लोग जुड़कर, मेडिटेशन मैराथन पहल के साथ स्वास्थ्य लाभ पाएंगे। यह सभी के लिए मुफ्त में खुला है। आप इंस्टाग्राम, फेसबुक और ट्विटर पर उनके सोशल मीडिया हैंडल के माध्यम से अपने मेडिटेशन सत्र के लिए पंजीकरण कर सकते हैं।

पंजीकरण के लिए मेल करें:

Naavnedhioffical@gm

9050562666

एंटर्र10 टेलीविजन अपने दूसरे भोजपुरी चैनल के साथ एंटर्र10 रंगीला के साथ आता है

– ज्योति वेंकटेश

पूरे भारत में अपनी उपस्थिति बढ़ाने और मौजूदा बाजारों में अपनी पैर जमाने के लिए, लीडिंग ब्रॉडकास्ट एंटरर 10 टेलीविज़न ने लॉन्च एंटरर 10 रंगीला की घोषणा की, जो भोजपुरी क्षेत्र में दूसरी पेशकश है। एंटरर 10 रंगीला एक भोजपुरी भाषा का जनरल एंटरटेनमेंट चैनल है। चैनल का जीवंत रंग इस बात की एक सच्ची अभिव्यक्ति है कि चैनल अपनी टैगलाइन "भोजपुरी माटी के रंग" का सही अर्थ रखने के लिए क्या कहता है, इसका मतलब है कि भोजपुरी भूमि के असली रंग। एंटरर 10 रंगीला एक फ्री टू एयर चैनल है और यह 22 सितंबर, 2020 को लाइव हुआ। रामायण (भोजपुरी) चैनल का लॉन्च पैड सीरियल होगा।

एंटरटेनर चैनलों पर बढ़ते पोर्टफोलियो में एंटरटेनर टीवी के लिए एक नया चैनल जोड़ने पर बोलते हुए, एंटरर 10 टीवी के प्रबंध निदेशक, मनीष सिंघल ने कहा, "पिछले 5 वर्षों में, क्षेत्रीय टेलीविजन एक वास्तविक गेम–चेंजर रहा है। उनके आराम की भाषा में और दर्शकों की एक नई सेट तक पहुंचने के लिए अप्रयुक्त क्षमता और अवसर है। एंटर 10 में, हमारा इन बाजारों में अपनी उपस्थिति बढ़ाने पर जोर है। भोजपुरी क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें पर्याप्त गुंजाइश और क्षमता है। जबकि भोजपुरी सिनेमा के साथ इस क्षेत्र में हमारी पहले से ही एक मजबूत स्थिति है जो पहले से ही बाजार में नंबर 1 चैनल है, स्थापना के बाद से, इस जीईसी का शुभारंभ नेटवर्क की उपस्थिति को मजबूत करने और दर्शकों से जुड़ने की दिशा में एक कदम है।" चैनल ने पहले ही यूट्यूब पर 4.8 मिलियन सब्सक्राइबर से अधिक के डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सांतगांठ शुरू कर दी है। चैनल प्रमुख केबल टीवी और डीटीएच प्लेटफार्मों पर उपलब्ध होगा।

अनु– छवि शर्मा

सोनी सब के शो 'तेरा यार हूं मैं' में एक नये किरदार की एंट्री से ऋषभ की ज़िंदगी में मच जायेगी उथल-पुथल

एक अनूठे कांसेप्ट और दिल को छू लेने वाली मजेदार कहानी के साथ, सोनी सब के शो 'तेरा यार हूं मैं' को दर्शक काफी पसंद कर रहे हैं। राजीव (सुदीप साहिर) अपने बेटे ऋषभ (अंश सिन्हा) का दोस्त बनना चाहते हैं, लेकिन उनके लिये यह उतना भी आसान नहीं है जितना उन्होंने सोचा था। ऋषभ का दोस्त बनने के लिए सोशल मीडिया पर फ़र्ज़ी आईडी बनाने के बाद राजीव को आखिरकार ऐसा लगा कि वह अपने बेटे के करीब आ रहे हैं। लेकिन राजीव की सच्चाई ऋषभ के दोस्तों के सामने आ जाती है।

राजीव की हरकतों को लेकर स्कूल में ऋषभ के दोस्त उसे छेड़ना शुरू कर देते हैं। हालांकि, शुरूआत में वह अपने स्कूल के साथियों के साथ किसी भी तरह की लड़ाई करने से बचता है। लेकिन एक नया लड़का शुभम (राघव धीर) ऋषभ को सभी दोस्तों को जवाब देने के लिए उकसाने लगता है। शुभम उसे गलत कामों में शामिल होने के लिए भी प्रोत्साहित करने लगता है जिसका ऋषभ पर बुरा प्रभाव पड़ता है। यहां तक कि शुभम उसे अपने पिता के लिए कुछ कड़े नियम बनाने को भी कहता है। ऋषभ का दोस्त बनने के लिए उसके पिता को इन नियमों का पालन करना होगा। उसके पिता उसका दोस्त बनने का विचार छोड़ कर अपने कदम पीछे ले लें, इसके लिए ऋषभ, राजीव को 'ब्रो कोड' के बारे में बताता है। इससे राजीव को कुछ ऐसे करने के लिये मजबूर होना पड़ता है, जो उसे ऋषभ के साथ दोस्त बनने के लिए करनी होंगी, जैसे कि देर रात चुपके से उसके साथ दोस्त की तरह आउटिंग करना।

एक तरफ ऋषभ अपने पिता को अपना दोस्त बनने से रोकने के लिए कोशिश कर रहा है, तो वहीं उसकी बहन त्रिशला (निहारिका रॉय) शादी के एक प्रस्ताव से चौंक जाती है। उसके लिए यह प्रस्ताव उसके दादाजी (राजेंद्र चावला) लेकर आते हैं। हालांकि जान्हवी (श्वेता गुलाटी) अपनी बेटी की जल्दी शादी के खिलाफ है। लेकिन रूढ़िवादी मानसिकता वाले दादाजी को लगता है कि त्रिशला की शादी करने की यह बिल्कुल सही उम्र है?

■ क्या जान्हवी अपनी बेटी की जल्दी शादी को रोक पाएगी? क्या ऋषभ का दोस्त बनने के लिए राजीव अपनी हद से आगे जा पाएगा?

– ऋषभ की भूमिका निभाने वाले अंश सिन्हा ने कहा, "ऋषभ को जब पता चलता है कि उसका दोस्त बनने के लिये उसके पिता ने सोशल नेटवर्क पर खुद को लड़की बताया था, तो वह बहुत ज़्यादा शर्मिंदा होता है। ऋषभ की दोस्ती इस बीच शुभम नाम के एक नये लड़के से होती है, जो उस पर बुरा प्रभाव डालता है। दर्शकों के लिए भी यह देखना वाकई दिलचस्प होगा कि राजीव 'ब्रो–कोड्स' का हिस्सा बनकर क्या करता है और क्या वह ऋषभ का दोस्त बनने में सफल हो पाता है। आगामी एपिसोड्स ऋषभ और राजीव के बीच में कुछ हंसी और कुछ बहुत ही प्यारे पल लेकर आएगा, जिसका दर्शक निश्चित रूप से आनंद लेंगे।"

त्रिशला की भूमिका निभा रही निहारिका रॉय ने कहा, "त्रिशला हैरान है क्योंकि उसके दादा जी शादी के लिए एक प्रस्ताव लाये हैं। हालांकि दादा जी दिल से उसका भला ही चाहते हैं, लेकिन त्रिशला बहुत ज़्यादा डरी हुई है और वह इतनी कम उम्र में शादी नहीं करना चाहती है। उसके माता–पिता उसके साथ खड़े हैं, और दादाजी को शादी के खिलाफ समझाने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि दादा जी की सोच रूढ़िवादी है जिसकी वजह से उन्हें समझाना आसान नहीं होगा।"

बॉलीवुड फिल्में यह सुनिश्चित करती हैं, कि हम अपनी थिएटर सीटों पर बैठ के दुनिया भर की यात्रा करें

ज्योति वेंकटेश

हर फिल्म में कई तत्व होते हैं, जो इसे सफल बनाते हैं। हां, यह अभिनेता हैं, या हम कहेंगे कि, चरित्र वही हैं जो प्रमुख रूप से दर्शकों से जुड़ते हैं। लेकिन, जिन चेहरों को हम बड़े पर्दे पर देखते हैं, उनके साथ कहानी का एक दूसरा पहलू भी है, जो हमें स्क्रीन पर दिखाई देने वाली कहानी पर विश्वास करने में प्रमुख भूमिका निभाता है, और यह सेटिंग के अलावा और कोई नहीं है, वह स्थान जिसमें इसे सेट किया गया है। फिल्म निर्माता फिल्म के लिए एकदम सही जगह खोजने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं, यहां तक कि कभी–कभी एक दृश्य भी, और इससे हमें ऐसा लगता है कि हम उन जगहों पर मौजूद हैं, भले ही वे भारतीय सीमाओं से परे हों।

यश राज फिल्म्स, धर्मा प्रोडक्शंस और कई अन्य जैसे प्रोडक्शन हाउस ने हमें बहुत सारे भव्य स्थानों का एक टुकड़ा दिया है। कोई भी **वाईआरएफ** की फिल्म से बेहतर स्विटजरलैंड की भव्यता को नहीं दिखाता है। सिलसिला से लेकर **'दिलवाले दुल्हनिया ले जायेंगे'** से **'बचना ऐ हसीनों'** तक, हमने फूलों की बहार और बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ देखी हैं जो हमारे दिल को वार्म करती हैं। और जब हम एक जीवंत शहर की हलचल के बारे में बात करते हैं, हमारे पास **करण जौहर** का धर्मा प्रोडक्शन है जो हमें **'कभी खुशी कभी गम'** और **'ऐ दिल है मुश्किल'** में लंदन का आकर्षण दिखता है। इसी के साथ–साथ **'कल हो ना हो'** और **'कभी अलविदा ना कहना'** न्यूयॉर्क में सेट की गई थी और **"दोस्ताना"** मियामी में सेट की गई हैं।

इन फिल्मों, इन निर्माताओं और काफी कुछ लोगों ने यह सुनिश्चित किया है कि वे जिस शहर में अपनी फिल्मों का निर्माण करते हैं, वह खुद एक चरित्र बन जाता है, अपने इतिहास और कहानी को महज अपनी उपस्थिति से महत्व देता है। उनकी बहुत सी फिल्में भारतीय दर्शकों के साथ हमारे देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी जुड़ रही हैं, उन्होंने वर्षों से बॉलीवुड को ग्लोबल माप को खूबसूरती से दिखाया है और हर फिल्म के साथ ऐसा करना जारी रखा है।

और यह सिर्फ विदेशी लोकेशन नहीं है कि वे एक आकर्षक सिनेमाई लेंस के साथ चित्रित करते हैं, बल्कि भारत में भी कई जगह हैं। जिस तरह से वे छोटे शहरों के साथ–साथ मुंबई और दिल्ली जैसे शहरों में दिखते हैं, वह **'कपूर एंड संस'**, मनाली और उदयपुर में **'ये जवानी है दीवानी'**, जयपुर में **'शुद्ध देसी रोमांस'** या हरिद्वार में **'दम लगा के हईशा'** के रूप में दिखाई देता हैं। वे लोकल के सार को इतनी अच्छी तरह से पकड़ते हैं, कि यह भारत में पर्यटन को एक बड़ा बढ़ावा देते है। हमें इन निर्माताओं की सराहना करनी चाहिए जो हमेशा यह सुनिश्चित करते हैं कि वे उस स्थान के लोकाचारों को इस तरह से मिश्रण करते हैं कि वे कहानी के साथ एक फिल्म की शूटिंग करते हैं, हम अक्सर आत्मा में स्वयं यात्रा करते हैं।

अनु–छवि शर्मा

'हमारी क्लाइंट ऋचा चड्ढा इस बात की निंदा करती है कि..

–सुलेना मजुमदार अरोरा

Adv- सवीना बेदी सचार (Lawhive) ये प्रेस विज्ञप्ति दे रही है कि, हमारी क्लाइंट ऋचा चड्ढा इस बात की निंदा करती है, कि उनका नाम अनावश्यक और गलत रूप से विवादों और आरोपों में, तीसरे पक्ष द्वारा, हाल ही में उठाए गए झूठे तरीके से गलत घसीटा गया है।

हालांकि हमारे क्लाइंट का मानना है, कि वास्तव में महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों को हर कीमत पर न्याय मिलना चाहिए, लेकिन ऐसे विधान मौजूद हैं जिनका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि महिलाएँ को अपने कार्यस्थल में इक्वेल स्टैंडिंग मिले और यह वे ये भी सुनिश्चित करते हैं कि उनके पास एक सौहार्दपूर्ण कार्यस्थल हो जिससे उनकी गरिमा और स्वाभिमान की रक्षा होती है। किसी भी महिला को, अन्य स्त्रियों को निराधार या गैर–मौजूद, झूठे और बेबुनियाद आरोपों के साथ परेशान करने के लिए अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है।

हमारे मुवक्किल ने उचित कानूनी कार्रवाई शुरू की है और कानून से अपने कानूनी अधिकारों और उपायों को आगे बढ़ाएंगी जो कि उसके सर्वोत्तम हित में सलाह दी जा सकती है।

दक्षिण अफ्रीका के खेल वैज्ञानिक श्यामल वल्लभजी प्रीति जिंटा के बारे में ऐसा कहतें हैं!

★सुलेना मजुमदार अरोरा★

श्यामल वल्लभजी सेलिब्रिटी कोच हैं और 'ब्रीथ बिलीव बैलेंस' पुस्तक के लेखक भी हैं। वे मानते है कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए जीवन की एक तय योजना है, श्यामल का कहना है कि उनका सर्वश्रेष्ठ आना अभी बाकी है।

दक्षिण अफ्रीका के खेल वैज्ञानिक वल्लभजी ने कहा, 'आई एंजॉयड प्रीति जिंटा हैंड्स ऑन वर्किंग स्टाइल' यानी प्रीति जिंटा की काम करने का तरीका बहुत अच्छा है। मैंने उनकी टीम और उनकी ताकत जानने में उनके शोध की गहराई की प्रशंसा की है।

आगे वे कहते हैं, 'किंग्स इलेवन के साथ काम करना एक शानदार अनुभव था। **सहवाग, हॉज, गेल, अश्विन, वेंकटेश प्रसाद** और अन्य से सीखना अविश्वसनीय था। उन्होंने मुझे खेल मनोविज्ञान में नए विचारों और दृष्टिकोण का परीक्षण करने का अवसर दिया। मुझे लगता है कि एक मंच के रूप में आईपीएल में प्रदर्शन के मामले में वृद्धि की उल्लेखनीय क्षमता है क्योंकि हमने अभी तक कुछ विज्ञानों की सतह को खरोंचने की शुरुआत नहीं की है जो शिखर प्रदर्शन की ओर ले जाती हैं जैसे नींद को लेकर विश्लेषण, द्रव निगरानी, बायोमैकेनिक्स, उपकरण संशोधन, मनोविज्ञान जैसे विज्ञान, मांसपेशी शरीर क्रिया विज्ञान और भी बहुत कुछ।

वर्क फ्रंट की बात करें तो, श्यामल वल्लभजी **'ब्रीथ बिलीव बैलेंस'** पुस्तक के लेखक हैं। इन कठिन समयों में मानसिक स्वास्थ्य से जूझ रहे लोगों के लिए यह एक परम आवश्यकता है। वे अभिभूत हैं कि उनकी पुस्तक सभी पाठकों और समीक्षकों से इस तरह की सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है।

पल म्यूजिक शहर में सबसे नया रोमांटिक गीत 'तू है तो' को प्रस्तुत करता है

– ज्योति वेंकटेश

पलक मुच्छल द्वारा प्रस्तुत पल म्यूजिक का नवीनतम गीत "तू है तो" ऐश किंग और पलक मुच्छल की जादुई आवाज आपको रोमांस की खुशबू से भर देता है। इस खूबसूरत गीत के साथ एक समान रूप से सुंदर संगीत वीडियो है जिसमें नृत्य कोरियोग्राफर टेरेंस लुईस एक संगीत शिक्षक और

अभिनेत्री दिगांगना सूर्यवंशी के रूप में उनकी प्रेम रुचि है। सौरभ प्रजापति द्वारा निर्देशित, 16 सितंबर को रिलीज़ हुए इस म्यूजिक वीडियो को पहले ही दर्शकों से बड़े पैमाने पर प्यार और समर्थन मिला है। यह एक आधुनिक दिन का प्रेम गीत है जिसमें पैरी जी द्वारा गाए गए कुछ लुभावने रैप के साथ एक मधुर संगीत है।

पलक मुच्छल, जिन्होंने इस गीत के लिए न केवल अपनी मधुर आवाज दी है, बल्कि दिल लुभाने वाले गीत भी लिखे हैं और कहती है, "संगीत कला है और कला हमेशा आपकी भावनाओं, आपके जुनून को दर्शाती है। हम सभी ने इस गाने पर बहुत जोश से काम किया है और मुझे लगता है कि यह दिखता है। मैं इस बात से बहुत खुश हूं कि यह कैसे निकला।"

आशुतोष गांगुली को लोकप्रिय रूप से ऐश किंग के रूप में जाना जाता है और वह कहते है, "जब गीत को इतनी खूबसूरती से लिखा जाता है, तो एक अलग ही खुशी होती है कि एक गायक इसे जब गाता है। मुझे हर गाने में बहुत मजा आया और मुझे अच्छा लगा और मुझे उम्मीद है कि दर्शक भी इसे उतना ही पसंद करेंगे।"

एक संगीत वीडियो में मुख्य अभिनेता के रूप में काम करने के उनके अनुभव के बारे में पूछे जाने पर टेरेंस लुईस ने कहा, "यह एक अद्भुत अनुभव था, कैमरे के सामने होना। गीत इतना करामाती है, वास्तव में इसे सुनकर कोई भी खो सकता है। मुझे वास्तव में इस का एक हिस्सा होने के नाते एक खुशी थी।"

दिगांगना सूर्यवंशी, जो पहले भारतीय टेलीविज़न शो और बिग बॉस में नजर आ चुकी है ने कहा, "गीत अद्भुत है और संगीत वीडियो के पीछे की अवधारणा भी वास्तव में मधुर थी। मुझे इतनी प्यारी और प्रतिभाशाली टीम के साथ काम करके बहुत अच्छा लगा।"

पलक मुच्छल, जो संगीत के पीछे के आदमी है ने कहा, "हमारे पास "तू है तो" के लिए कुछ बेहतरीन लोग हैं। हम में से बहुत से लोग अपने आराम क्षेत्र से आगे निकल गए हैं और अपनी सीमाओं को आगे बढ़ाने की कोशिश की है। टीम और खुद, हम प्यार के लिए बेहद आभारी हैं और हमारे गीत को समर्थन पहले ही मिल चुका है और आशा है कि यह आगे चलकर कई और दिलों को छू जाएगा।"

अनु– छवि शर्मा

सुप्रसिद्ध व दबंग पत्रकार श्री के.एम. श्रीवास्तव का निधन रात (21 सितंबर 2020) को निधन वसई अस्पताल (मुम्बई) में हो गया। कुछ दिन पहले उनका कोरोना टेस्ट हुआ था, जो कि निगेटिव आया था। उन्हें सांस लेने में तकलीफ़ होने के कारण हॉस्पिटल में भर्ती किया गया, जहाँ पर उन्होंने अंतिम सांस ली। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवार को इस दुख की घड़ी में शक्ति दे।

मशहूर गायक माधव महाजन भूमध्य सागरीय आहार का करते हैं सेवन

मशहूर गायक माधव महाजन ने कोरोना महामारी और लॉक डाउन के दौरान पूर्णरूपेण स्वस्थ रहने के लिए भूमध्यसागरीय आहार को प्राथमिकता दी। भूमध्यसागरीय आहार में मैक्रोज और माइक्रोस की सही मात्रा होती है और इसने वास्तव में ऊर्जा को बढ़ावा दिया है और माधव को एक भिन्नता मिली है।

हमने इस संबंध में जब माधव महाजन से बात की, तो उन्होने कहा है–"मैंने इस आहार को ले रहा हूँ, और मेरे शरीर को इसका आदी होने में समय लग रहा है। मैं अधिक चुस्त और ऊर्जावान महसूस करता हूं। शरीर अब अलग महसूस करता है। मैं ध्यान केंद्रित कर सकता हूं। अब बेहतर महसूस करता हूँ। मेरे लिए यह लॉकडाउन कुछ नया करने और पुनः स्थापित करने का एक शानदार समय था। मैंने इस समय का सदुपयोग संगीत और रिश्तों या आहार के साथ करने की कोशिश की। मैं परिणामों से प्यार कर रहा हूं। सभी को एक बार कोशिश करनी चाहिए।"

माधव महाजन परिचय के मोहताज नहीं है। माधव महाजन ने पंजाबी उद्योग में "मन बावरिया" और "छन वी गवाह" जैसे गीतों को अपनी आवाज देकर संगीत व मनोरंजन जगत में एक नई लहर पैदा की। युवा प्रतिभाशाली गायक ने माधव महाजन की सबसे बड़ी खासियत यह है कि उन्होने संगीत की किसी प्रकार की ट्रेनिंग नही ली है। उन्होंने खुद गिटार व हारमोनियम और अन्य वाद्य यंत्र बजाना सिखा हैं।अपना तीसरा गीत 'मन बावरिया' बनाते समय उन्होंने खुद अपने लिए संगीत बनाया। इस पर वह कहते हैं–"मैं अपने

जीवन में घटित प्रसंगों पर गीत बनाता हूं। इसी तरह मेरा संगीत तैयार होता है।"

मुख्य धारा से अलग रचना शैली को महसूस कर माधव ने खुद का संगीत मधुर और मनभावन बनाने के इरादे से संगीत के क्षेत्र में प्रवेश किया। वह कहते हैं–"मेरे गाने पारंपरिक और शहरी संगीत का मिश्रण हैं और दर्शकों के साथ सीधे संवाद कर सकते हैं। मुझे अपने आप से सवाल था कि ऐसे गाने दर्शकों को पसंद आएंगे या नहीं पर छन्न वी गवाह' को मिली शानदार सफलता ने सारे सवालों के जवाब दे दिए।"

माधव महाजन खुद को निरंतर खोजते रहने के लिए कुछ न कुछ करते रहते हैं। बीच में एक साल तक उन्होंने 'मौन व्रत' धारण कर रखा था। वह कहते हैं–"मैं एक 'मौन व्रत' पर था और एक साल तक ध्यान लगाया मेडिटेशन किया, जिसके बाद चीजें बेहतर होने लगीं।"

इसमें कोई शक नहीं कि माधव महाजन एक युवा सनसनी हैं, जो पंजाबी संगीत उद्योग पर शासन करते हैं और बॉलीवुड उद्योग में पैर जमाने के लिए तैयार हैं। इसीलिए इन दिनों वह मुंबई में संघर्ष कर रहे हैं।

– शान्तिस्वरुप त्रिपाठी

"Inhone lockdown me to bas Anushka ki gendon ki practice ki hai," said Sunil Gavaskar.

Virat Kohli with Anushka Sharma (Credits – Twitter)

शेमारूमी बॉक्स ऑफिस घर पर एक प्रामाणिक सिनेमा देखने का अनुभव बनाने के लिए कॉफी कल्चर के साथ एक कॉम्बो बनाने के लिए तैयार है

—ज्योति वेंकटेश

शेमारूमी, भारत के पसंदीदा ओटीटी प्लेटफॉर्म ने हाल ही में शेमारूमी बॉक्स ऑफिस के बैनर तले एक अनूठे भुगतान की पेशकश की है। यह अनोखा फिल्म देखने का अनुभव दर्शकों की ओटीटी यात्रा में एक स्वादिष्ट मोड़ जोड़ रहा है। मंच ने हाल ही में कॉफी कल्चर के साथ देश भर में 21 से अधिक आउटलेट्स के साथ सफलता के साथ संपन्न रेस्टोरेंट लाउंज के साथ करार किया, उनके आधिकारिक कैफे पार्टनर के रूप में सिनेमा दर्शकों को उनके दर्शकों के लिए आवश्यक भोजन से जुड़े नाटकीय अनुभव को वापस लेने के लिए। इस फूड पार्टनरशिप का उद्देश्य दर्शकों को उनकी नियमित थिएटर यात्राओं को प्रोत्साहित करने और अच्छे भोजन के साथ युग्मित फिल्में देखने के आनंद का अनुभव करने के लिए वास्तविक रंगमंच का मजा घर में देना है।

अभूतपूर्व महामारी के साथ दर्शकों के थिएटर अनुभव के लिए एक ठहराव, शेमारूमी बॉक्स ऑफिस ने सिनेमाघरों और दर्शकों के बीच सिनेमाई अंतर को बाटने के लिए और अपने सिनेमा देखने के संकट को कॉफी कल्चर के साथ समाप्त करने के लिए, शेमारूमी बॉक्स ऑफिस दर्शकों के लिए एक विशेष मेनू को क्यूरेट करने के लिए निर्धारित किया है। पूरे अनुभव को विशेष रूप से दर्शकों के लिए क्यूरेट किया जाता है जो सिनेमाघरों में जाने और अपनी पसंदीदा फिल्मों के साथ शानदार भोजन का आनंद लेने से चूक जाते हैं। शेमारूमी बॉक्स ऑफिस की प्रमुख पेशकश पूरे सिनेमा के लिए एक वैकल्पिक अनुभव है। मंच न केवल दर्शकों के लिए एक सुरक्षित विकल्प प्रदान करता है, बल्कि अपने घरों के आराम में एक अच्छी फिल्म का आनंद दे रहा है।

एसोसिएशन के इस पहले चरण में कॉफी संस्कृति ऐप पर उपलब्ध शेमारू बॉक्स ऑफिस डीईवाई भोजन किट और जोमैटो जैसे प्रमुख खाद्य ऑर्डरिंग ऐप दिखाई देंगे।

मूवी शौकीन और दर्शक यहाँ से या कॉफी कल्चर ऐप से जोमैटो पर अनन्य शेमारू बॉक्स ऑफिस और कॉफी कल्चर कॉम्बो ऑर्डर कर सकते हैं

अनु— छवि शर्मा

''नेटफिलक्स'' ने जारी किया फिल्म ''गिन्नी वेड्स सन्नी'' का ट्रेलर फिल्म आएगी 9 अक्टूबर को ''नेटफिलक्स'' पर

—शान्तिस्वरूप त्रिपाठी

विक्रांत मैसी और यामी गौतम के अभिनय से सजी और पुनीत खन्ना निर्देशित फिल्म ''गिन्नी वेड्स सन्नी'' का ट्रेलर ''नेटफिलक्स'' द्वारा बाजार में लाया जा चुका है।इस फिल्म को नवजोत गुलाटी और सुमित अरोड़ा ने मिलकर लिखा है।

ट्रेलर में गिन्नी (गौतम) और सनी (मैसी) के जीवन की झलक मिलती है। इस ट्रेलर में विक्रांत मैसै,यामी गौतम को इस विचित्र रोमांस–कॉम में लुभाने की कोशिश करते नजर आते हैं। गिन्नी की मां अपनी बेटी के लिए एक उपयुक्त वर की तलाश कर रही है,जो शादी की परंपरागत व्यवस्था के तहत विवाह करने की बजाय प्रेम विवाह करना चाहती है। जबकि गिन्नी की मां ने उसके लिए सनी को पसंद कर लिया है।

ट्रेलर में सनी को गिन्नी को प्रभावित करने के लिए सबसे अच्छे संवाद मिले हैं। जहां सनी गिन्नी को अपनी पत्नी बनाने की कसम खाते हैं, वहीं गिन्नी असमंजस में है कि उसे अपने कई बॉयफ्रेंड में से किसे चुनना है। आखिरकार, इस रोमांटिक–कॉमेडी में स्थिति अराजक हो जाती है।

लेखकों ने फिल्म के दोनो मुख्य पात्रों को अलग व्यक्तित्व दिया है। गिन्नी के किरदार में यामी गौतम ने एक सशक्त लड़की के

रूप में नजर आती हैं,जिस पर अपनी पसंद के लड़के से शादी करने की धुन सवार है।तो वहीं विक्रांत मैसे,दिल्ली के एक साधारण पंजाबी लड़के सनी के किरदार में हैं,जिसे खाना बनाना बहुत पसंद है।

फिल्म का आधिकारिक वर्णन के अनुसार कहता है– "थोड़ा सा नाटक, थोड़ा सा रोमांस और एक बहुत कुछ साल के सिरदर्द में आपका स्वागत है! ''

अपने किरदार के बारे में बताते हुए विक्रांत मैसे ने एक बयान में कहा है, "जब वह रसोई में शानदार व्यंजन बनाती हैं, तो सनी के लिए जीवन में सही नुस्खा नहीं होता है। वह शादी करना चाहता है,लेकिन गिन्नी पर जीत की चुनौती उसके लिए साइन अप करने से अधिक दुर्जेय है। मैं फिल्म में दिल्ली के एक विलक्षण पंजाबी लड़के का किरदार निभा रहा हूं,इस तरह का किरदार मैने पहली बार निभाया है।"

इसी के साथ फिल्म का एक गाना ''लोल''(LOL) जी रिलीज हो चुका है।इस गाने में पंजाबी धुनों पर यामी और विक्रांत ठुमके लगाते हुए नजर आ रहे हैं। गीतकार कुणाल वर्मा के इस गीत को संगीत से संवारा है पायल देव ने।जबकि इस गीत को पायल देव ने स्वयं देव नेगी के साथ स्वर बध्द किया है।

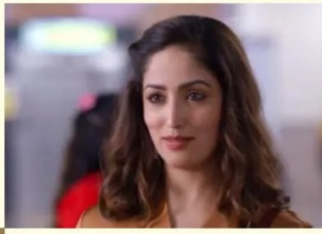

वही गाने के रिलीज से उत्साहित पायल देव ने कहा– "मुझे 'लोल' गाने की धुन बनाने में बहुत मजा आया। कुणाल ने इसे बहुत ही बेहतरीन तरीके से लिखा है। युवा पीढ़ी इस गाने से जरूर रिलेट कर पाएंगे। इस तरह की क्रिएटिव कंपोजिशन पर नियंत्रण रखने की सबसे खास बात यह है कि आपको रोकने टोकने वाला कोई नहीं। मुझे इस गाने को बनाने के लिए पूरी छूट दी गई थी। ताकि मैं एक अच्छा और मजेदार गाना बना सकूं। मुझे लोगों की प्रतिक्रिया का बेसब्री से इंतजार है।"

दिल्ली–एनसीआर और हिमाचल प्रदेश में फिल्मायी गयी फिल्म ''गिन्नी वेड्स सन्नी'' 9 अक्टूबर को नेटफिलक्स पर रिलीज होने वाली है। जिसका निर्माण सौंदर्य प्रोडक्शन के तहत विनोद बच्चन ने किया है, जो कि अतीत में के साउंडरी प्रोडक्शन द्वारा निर्मित है, जिसमें तनु वेड्स मनु (2011), जिला गाजियाबाद (2013) और 2017 की रोमांटिक फिल्म ''शादी में जरूर आना'' जैसी फिल्मों के निर्माण से जुड़े रहे है।

नेटफिलक्स दुनिया की अग्रणी स्ट्रीमिंग मनोरंजन सेवा है, जिसमें 190 से अधिक देशों में टीवी श्रृंखला, वृत्तचित्रों और फीचर फिल्मों के साथ कई शैलियों और भाषाओं के साथ 193 मिलियन सशुल्क सदस्यता प्राप्त की गई है। सदस्य किसी भी इंटरनेट से जुड़े स्क्रीन पर, जितना चाहे, कभी भी, कहीं भी देख सकते हैं। सदस्य विज्ञापन देख सकते हैं, रोक सकते हैं और देख सकते हैं, बिना विज्ञापनों या प्रतिबद्धताओं के।

'ओशो' गजब का 'ज्ञान' दे गये, 'कोरोना' जैसी 'जगत बिमारी' के लिए

'70' के 'दशक' में 'हैजा' भी 'महामारी' के रूप में पूरे 'विश्व' में फैला था, तब 'अमेरिका' में किसी ने 'ओशो रजनीश जी' से प्रश्न किया

–'इस 'महामारी' से कैसे बचे ?'

'ओशो' ने विस्तार से जो समझाया वो आज 'कोरोना' के सम्बंध में भी बिल्कुल 'प्रासंगिक' है।

'ओशो'

यह 'प्रश्न' ही आप 'गलत' पूछ रहे हैं,

'प्रश्न' ऐसा होना चाहिए था, कि 'महामारी' के कारण मेरे मन में 'मरने का जो डर बैठ गया है' उसके सम्बन्ध में कुछ कहिए!

इस 'डर' से कैसे बचा जाए...?

क्योंकि 'वायरस' से 'बचना' तो बहुत ही 'आसान' है,

लेकिन जो 'डर' आपके और 'दुनिया' के 'अधिकतर लोगों' के 'भीतर' बैठ गया है, उससे 'बचना' बहुत ही 'मुश्किल' है।

अब इस 'महामारी' से कम लोग, इसके 'डर' के कारण लोग ज्यादा 'मरेंगे'.....।

''डर'' से ज्यादा खतरनाक इस 'दुनिया' में कोई भी 'वायरस' नहीं है।

इस 'डर' को समझिये,

अन्यथा 'मौत' से पहले ही आप एक 'जिंदा' लाश बन जाएँगे।

यह जो 'भयावह माहौल' आप अभी देख रहे हैं, इसका 'वायरस' आदि से कोई 'लेना' 'देना' नहीं है।

यह एक 'सामूहिक पागलपन' है, जो एक 'अंतराल' के बाद हमेशा घटता रहता है, कारण 'बदलते' रहते हैं, कभी 'सरकारों की प्रतिस्पर्धा', कभी 'कच्चे तेल की कीमतें', कभी 'दो देशों की लड़ाई', तो कभी 'जैविक हथियारों की टेस्टिंग'!!

इस तरह का 'सामूहिक' 'पागलपन' समय–समय पर 'प्रगट' होता रहता है।

'व्यक्तिगत पागलपन' की तरह 'कौमगत', 'राज्यगत', 'देशगत' और 'वैश्विक 'पागलपन' भी होता है।

इस में 'बहुत' से लोग या तो हमेशा के लिए 'विक्षिप्त' हो जाते हैं या फिर 'मर' जाते हैं ।

ऐसा पहले भी 'हजारों' बार हुआ है, और आगे भी होता रहेगा और आप देखेंगे कि आने वाले बरसों में युद्ध 'तोपों' से नहीं बल्कि 'जैविक हथियारों' से लड़ें जाएंगे।

मैं फिर कहता हूं हर समस्या 'मूर्ख' के लिए 'डर' होती है, जबकि 'ज्ञानी' के लिए 'अवसर'!!

इस 'महामारी' में आप 'घर' बैठिए, 'पुस्तकें पढ़िए', शरीर को कष्ट दीजिए और 'व्यायाम' कीजिये, 'फिल्में' देखिये, 'योग' कीजिये और एक माह में '15' किलो वजन घटाइए, चेहरे पर बच्चों जैसी ताजगी लाइये

अपने 'शौक' पूरे कीजिए।

मुझे अगर '15' दिन घर बैठने को कहा जाए तो मैं इन '15' दिनों में '30' पुस्तकें पढ़ूंगा और नहीं तो एक 'बुक' लिख डालिये, इस 'महामन्दी' में पैसा 'इन्वेस्ट' कीजिये, ये अवसर है जो 'बीस तीस' साल में एक बार आता है 'पैसा' बनाने की सोचिए....क्यों बीमारी की बात करके वक्त बर्बाद करते हैं...

ये 'भय और भीड़' का मनोविज्ञान सब के समझ नहीं आता है।

'डर' में रस लेना बंद कीजिए...

आमतौर पर हर आदमी 'डर' में थोड़ा बहुत रस लेता है, अगर 'डरने' में मजा नहीं आता तो लोग 'मूतहा' फिल्म देखने क्यों जाते?

यह सिर्फ एक 'सामूहिक पागलपन' है जो 'अखबारों' और 'टीवी' के माध्यम से 'भीड़' को बेचा जा रहा है...

लेकिन 'सामूहिक पागलपन' के 'क्षण' में आपकी 'मालकियत छिन' सकती है...आप 'महामारी' से 'डरते' हैं तो आप भी 'भीड़' का ही हिस्सा है

'ओशो' कहते है...टीवी पर खबरे सुनना या 'अखबार' पढ़ना बंद करें

ऐसा कोई भी 'वीडियो' या 'न्यूज' मत देखिये जिससे आपके भीतर 'डर' पैदा हो...

'महामारी' के बारे में बात करना 'बंद' कर दीजिए,

'डर' भी एक तरह का 'आत्म–सम्मोहन' ही है।

एक ही तरह के 'विचार' को बार–बार 'घोकने' से 'शरीर' के भीतर 'रासायनिक' बदलाव होने लगता है और यह 'रासायनिक' बदलाव कभी कभी इतना 'जहरीला' हो सकता है कि आपकी 'जान' भी ले ले!

'महामारी' के अलावा भी बहुत कुछ 'दुनिया' में हो रहा है, उन पर 'ध्यान' दीजिये

'ध्यान–साधना' से 'साधक' के चारों तरफ एक 'प्रोटेक्टिव Aura बन जाता है, जो 'बाहर' की 'नकारात्मक उर्जा' को उसके भीतर 'प्रवेश' नहीं करने देता है,

अभी पूरी 'दुनिया की उर्जा' 'नाकारात्मक' हो चुकी है.....

ऐसे में आप कभी भी इस 'ब्लैक–होल' में गिर सकते हैं...ध्यान की 'नाव' में बैठ कर हीं आप इस 'झंझावात' से बच सकते हैं।

'शास्त्रों' का 'अध्ययन' कीजिए,

'साधू–संगत' कीजिए, और 'साधना' कीजिए,

'विद्वानों' से सीखें

'आहार' का भी 'विशेष' ध्यान रखिए, 'स्वच्छ' 'जल' पीये,

'अंतिम बात'

'धीरज' रखिए... 'जल्द' ही सब कुछ 'बदल' जाएगा.....

जब तक 'मौत' आ ही न जाए, तब तक उससे 'डरने' की कोई जरूरत नहीं है और जो 'अपरिहार्य' है उससे 'डरने' का कोई 'अर्थ' भी नहीं है,

'डर' एक प्रकार की 'मूढ़ता' है, अगर किसी 'महामारी' से अभी नहीं भी मरे तो भी एक न एक दिन मरना ही होगा, और वो एक दिन कोई भी दिन हो सकता है, इसलिए 'विद्वानों' की तरह 'जीयें', 'भीड़' की तरह नहीं!!

'ओशो'

अभिनेता नील भट्ट ने अपने आगामी शो को 'गुम है किसी के प्यार में' अपने किरदार से जुड़ी तैयारियों को लेकर बताई कुछ खास बातें

—मायापुरी प्रतिनिधि

भारत के प्रमुख हिंदी जीईसी, स्टार प्लस अपने नए फिक्शन शो 'गुम है किसी के प्यार में' की पेशकश के साथ दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। नील भट्ट (विराट चव्हाण), ऐश्वर्या शर्मा (पत्रलेखा), और आयशा सिंह (सई) मुख्य भूमिकाओं में नजर आएँगे।

यह शो एक आईपीएस अधिकारी के जीवन पर आधारित एक मनोरंजक त्रिकोणीय प्रेम कहानी है जो कर्तव्य और प्यार के बीच जुंझ रहा है।

इससे पहले भी नील भट्ट को स्टार प्लस के लोकप्रिय शो 'दीया और बाती हम' और एक अन्य शो में एक आईपीएस अधिकारी की भूमिका निभाते हुए देखा गया था। नील भट्ट एक बार फिर तीसरी बार अपने आगामी शो में आईपीएस

अधिकारी की भूमिका निभाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

उन्होंने आईपीएस अधिकारी के किरदार को अबतक इतने अच्छे से निभाया है कि शहर में अब यह चर्चा का विषय बना हुआ है साथ ही पिछले हफ्ते शो का प्रोमो लॉन्च होने के बाद से ही निर्माताओं को एक शानदार प्रतिक्रिया मिल रही है।

अपने किरदार के बारे में बताते हुए नील ने बताया कि किस प्रकार उन्होंने आईपीएस अधिकारी की भूमिका के लिए अपनी तैयारियाँ की। उन्होंने कहा, 'मैं स्क्रीन पर तीसरी बार एक अधिकारी की भूमिका निभा रहा हूं, लेकिन वह तीनों किरदार बहुत अलग थे और भूमिका भी अलग थी।

इस शो के लिए मुझे विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करना पड़ा, विराट चौहान के इस विशेष किरदार के लिए एक संतुलन आवश्यक है और इसके लिए पूरी तरह से एक अलग तैयारी की है।उसे अभी तक मजबूत होना है, एक पतली रेखा है, जिसे मुझे बनाकर चलना है।

मैं हर सीन के बाद एक नए विराट की खोज कर रहा हूँ। वह वास्तव में एक बहुआयामी किरदार है। पूर्व और वर्तमान रियल लाइफ आईपीएस अधिकारी मुझे आज भी प्रेरित करते हैं जब मैं इस शो के लिए तैयारी करता हूँ।

मुझे आशा है कि मैं एक बार फिर अपनी इस नई जर्नी में दर्शकों के दिलों को जीतने में कामयाब होऊंगा।

कॉकरो और शाइका एंटरटेनमेंट द्वारा निर्मित, इस शो का प्रीमियर सोमवार, 5 अक्टूबर को रात 8 बजे होगा। शो में किशोरीशहाणे, संजय नार्वेकर, मिलिंद पाठक, और शैलेश दातार जैसे प्रतिभाशाली कलाकारों की एक लोकप्रिय विस्तारित स्टार कास्ट को निर्णायक भूमिकाएं निभाते हुए देखा जाएगा।

देखिए इस 5 अक्टूबर, सोमवार से शुरू होने वाले 'गुम है किसी के प्यार में' शो को रात 8 बजे सिर्फ स्टार प्लस पर

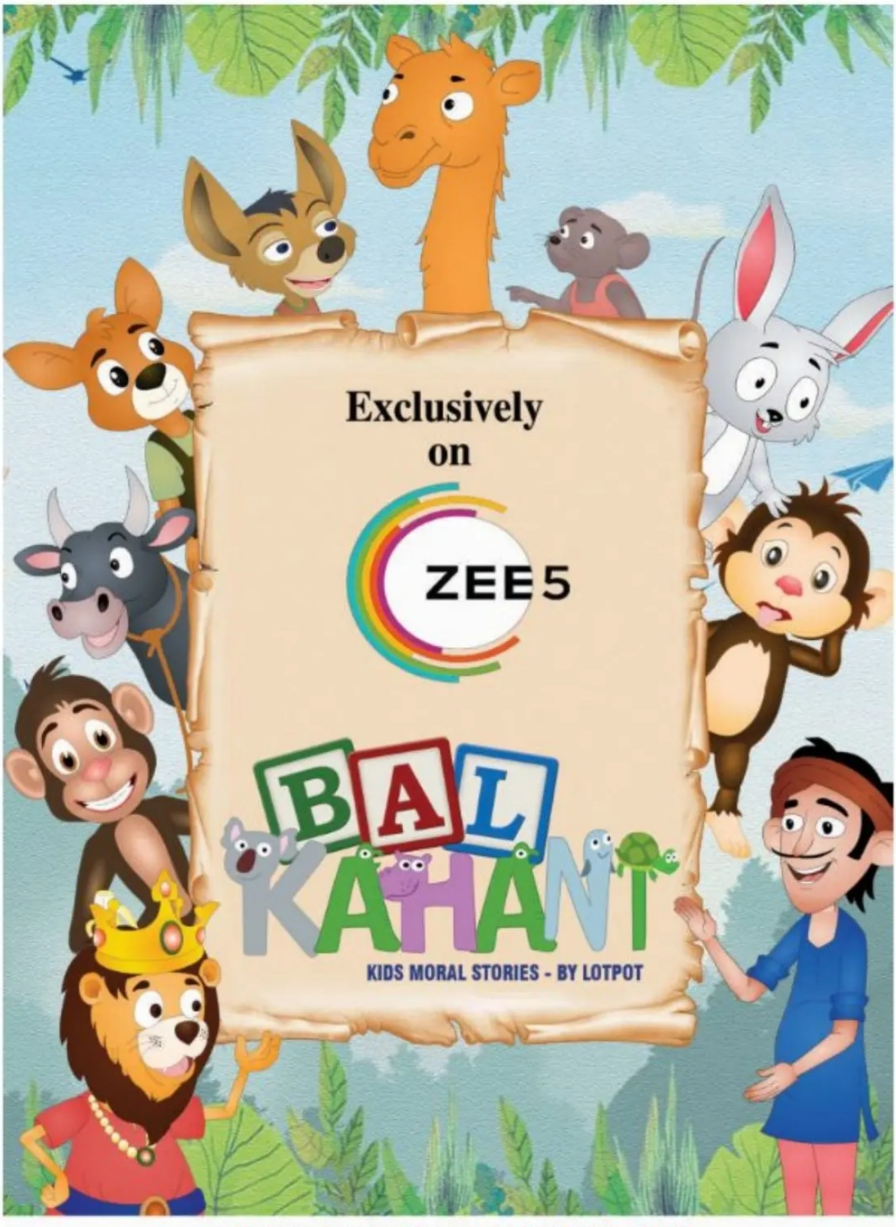

IN ASSOCIATION WITH INDIA'S #1 KIDS MAGAZINE LOTPOT

शर्लिन चोपड़ा ने ट्रोल करने वालों को दी कड़ी प्रतिक्रिया, ड्रग्स लेने के बजाय आधी रात को कसरत करना है बेहतर !

–मायापुरी प्रतिनिधि

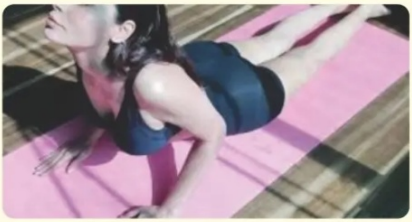

खूबसूरत और सेक्सी शर्लिन चोपड़ा ने हमेशा से ही अपने प्रशंसकों को स्वस्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित करती रही है। अभिनेत्री को हमेशा ही योग और वर्कआउट वीडियो साझा करते हुए देखा जा सकता है जो उनके फिटनेस के प्रति प्रेम को दर्शाता है। हाल ही में शर्लिन ने स्वस्थ जीवन शैली का नेतृत्व करते हुए धूम्रपान और पीने को छोड़ने के बारे में अपना राज खोला। अभिनेत्री अक्सर वर्कआउट वीडियो अपलोड करती है और संदेश देती रहती है कि स्वस्थ जीवन शैली का कितना महत्व है।

हाल ही में, शर्लिन अपने प्रशंसकों के साथ आधी रात को लाइव गई थीं। आधी रात को काम करने के लिए अभिनेत्री को ट्रोल किया गया, जिस पर शर्लिन चोपड़ा ने एक चौंका देने वाली प्रतिक्रिया दी, 'ड्रग्स लेने की बजाय आधी रात को कसरत करना बेहतर है।

अभिनेत्री ने हार्डकोर वर्कआउट वीडियो और तस्वीरों को साझा करने के अलावा अपना खुद का ओटीटी प्लेटफॉर्म 'रेडशेर' प्रस्तुत किया है, जिसे दर्शक काफी पसंद करते हैं। रेडशेर ओटीटी प्लेटफॉर्म है जिसमें शर्लिन चोपड़ा द्वारा निर्मित और लिखित और अभिनय की गई उच्च गुणवत्ता की लघु फिल्में और वेब सीरीज को दिखाया जाता हैं।

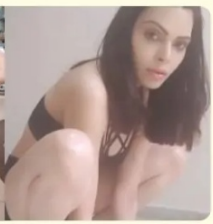

खूबसूरती ये नहीं है कि हम कैसे दिखते हैं बल्कि इस बात में है, कि बतौर इंसान हम कैसे हैं एक्ट्रेस श्वेता बसु प्रसाद

सुलेना मजुमदार अरोरा

'जी थिएटर' का टेली प्ले **'गुड़िया की शादी'**, खूबसूरती को लेकर, खासकर महिलाओं के लिए, समाज द्वारा निर्धारित मानदंडों पर हल्की–फुल्की चुटकी है, शो में गुड़िया की मुख्य भूमिका निभा रही **श्वेता बसु प्रसाद**, एक मजबूत और आत्मविश्वास से भरी हुई लड़की है, जिसको अपनी त्वचा के रंग पर नाज है और शायद ही कभी इस समाज की सोच से प्रभावित होती हैं। कहानी में ये भी है कि खुद की भोली गलती के कारण अपनी शादी के ठीक पहले गुड़िया अपनी भौंहें गवां देती है।

इस घटना के बाद, गुड़िया को न सिर्फ अपनी भौहें गवांने के सदमे से निपटना पड़ता है, बल्कि अपने परिवार के लोगों से भी भला–बुरा सुनना पड़ता है। अपने बेपरवाह व्यक्तित्व की वजह से गुड़िया जल्द ही इस घटना में हास्य और सकारात्मकता ढूँढ़ लेती है। वह अपने परिवार को समझाने की कोशिश करती है कि सब कुछ खत्म नहीं हो गया है।

गुड़िया का किरदार निभा रहीं श्वेता व्यक्तिगत तौर पर भी खूबसूरती की इस परंपरागत परिभाषा को नहीं पचा पाती हैं। वह कहती हैं,'एक समाज के तौर पर हमने खूबसूरती को बेहद सीमित दायरे में बाँध दिया है। यहां सुंदरता की परिभाषा यह है कि आप कैसे दिखते हैं बजाए इसके कि एक इंसान के तौर पर आप कैसे व्यक्ति हैं।

हालांकि शो ऐसे दुखद मुद्दे को उठाता है, लेकिन श्वेता इस 'गुड़िया' की भूमिका को अपने जीवन का सबसे सकारात्मक किरदार मानती हैं। वह कहती हैं, "एक एक्टर के तौर पर गुड़िया का किरदार मेरे द्वारा निभाया गया सबसे सकारात्मक और आशावादी कैरेक्टर है। इस प्ले का हिस्सा बनना मेरे लिए गर्व की बात है।"

अपने किरदार के साथ ही टेलीप्ले का कॉंसेप्ट भी श्वेता को बहुत पसंद है। वह मानती हैं कि कोविड–19 के दौरान ये एक राहत के तौर पर सामने आया है। जहां तक 'गुड़िया की शादी' की बात है, यह थिएटर के साथ उनकी पहली कोशिश थी, और यह प्ले उनके लिए हमेशा खास रहेगा।

जी थिएटर की यह पेशकश इस पूरे महीने डिश टीवी और डी 2 एच रंगमंच एक्टिव पर उपलब्ध है। वीरेंद्र सक्सेना, समता सागर, इश्तियाक खान, सरोज शर्मा, नेहा सराफ, विक्रम कोचर और अनवेशी जैन भी इसमें अहम भूमिकाओं में हैं!'

फिल्म 'इकबाल'

फिल्म 'मकड़ी'

फिल्म 'द ताशकंद फाइल्स'

फिल्म 'शुक्राणु'

फिल्म 'चन्द्र नन्दिनी'

NO ONE
CAN
SHINE YOUR BRAND
AS

DOES.

BRIGHT
OUTDOOR
PRINT TV RADIO PR DIGITAL
CELEBRITY EVENTS & CREATIVES

PAN INDIA & INTERNATIONAL OOH

info@brightoutdoor.com | www.brightoutdoor.com | +91 9320971103

योगेश लखानी की फिल्मी सितारों से शरारतें

छाया: राकेश दवे

जन्मदिन मुबारक हो यागेश जी, मुझे अभी आपका 'दिलवाले' वाला रोल याद है।

योगेश जी, आपके प्रचार की वजह से ही हमारी फिल्में हिट होती है। आपका भी जवाब नहीं।

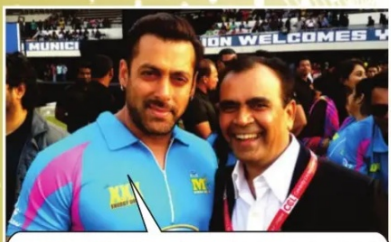

एक बात तो है योगेश जी, आप किसी भी चीज में पीछे नहीं रहते हैं चाहे वो फिल्म हो या क्रिकेट।

आपसे मिलकर दिल खुश हो जाता है। आप सभी के चेहरों पर मुस्कान बिखेर देते हैं।

मेरी फिल्में हिट होने में भी आपको बहुत योगदान है। इसी बात जी करता है आपकी किस्सी ले लूं।

हमारा ये एक्शन देखकर कोई ना कोई जरूर जल जायेगा। क्या कहते हो योगेश जी ?

25 SEP

Happy Birthday Dr. Yogesh Lakhani Ji